सम्पूर्ण गांधी वाङ्मय

८०

(२५ अप्रैल, १९४५ – १६ जुलाई, १९४५)

प्रकाशन विभाग
सूचना और प्रसारण मन्त्रालय
भारत सरकार

[illegible]

दस रुपये

निदेशक, प्रकाशन विभाग, नई दिल्ली-११०००१ द्वारा प्रकाशित और
जितेन्द्र ठाकोरभाई देसाई, नवजीवन प्रेस, अहमदाबाद-३८००१४ द्वारा मुद्रित

भूमिका

प्रस्तुत खण्डकी अवधि (२५ अप्रैल–१६ जुलाई, १९४५) के दौरान सितम्बर १९४४ में गाधी-जिन्ना बातचीतके विफल होने के फलस्वरूप जो राजनीतिक गतिरोध बना हुआ था वह आखिरकार समाप्त हो गया और गाधीजी ने एक बार फिर सवैधानिक चर्चाओमे भाग लेना शुरू कर दिया। १४ जूनको एक रेडियो-प्रसारणमे वाइसरायने घोषणा की "काग्रेस कार्य-समितिके उन सदस्योकी तुरन्त रिहाईके आदेश जारी कर दिये गये है जो अभी भी नजरबन्द है (पृ० ४६९)"। "मेरा इरादा है कि मै [शिमला सम्मेलनमे] भारतके केन्द्रीय और प्रान्तीय दलोके नेताओंको एक नई कार्यकारी परिषद्की स्थापनाके बारेमें, जोकि सगठित राजनैतिक मतका बेहतर प्रतिनिधित्व कर सके, विचार-विमर्शके लिए आमन्त्रित करूँ। . . यदि इस परिषद्की स्थापना हुई तो यह वर्तमान संविधानके अन्तर्गत अपना काम करेगी" (पृ० ४६७)।

लन्दनके जिद्दी नेताओको भारतके राष्ट्रवादी नेताओके साथ समझौता करने को राजी करने के लिए वाइसरायने कई महीनो तक जो जी-तोड़ प्रयत्न किये उसकी परिणति हमे बातचीतके लिए वाइसरायकी इस पहलमे देखने को मिलती है। मन्त्रि-मण्डलने भी इसका अनुमोदन किया क्योकि अनुदार दलके नेता भी यह नही चाहते थे कि आनेवाली जुलाईमे होनेवाले आम चुनावोसे पहले प्रगतिशील ब्रिटिश जनमतके प्रति इस प्रकार सद्भावनाका प्रदर्शन करने से उन्हें जो राजनीतिक लाभ प्राप्त हो सकता था उसे वे हाथसे जाने दे।

जिस समय वाइसरायने निमन्त्रण-पत्र भेजा, उस समय गाधीजी पिछले वर्ष नवम्बरमे हुई शारीरिक थकानसे छुटकारा पाने के लिए पचगनीमे विश्राम कर रहे थे। वाइसरायकी घोषणासे गाधीजी ज्यादा खुश नही हुए। क्योकि उसमे बहुत मौलिक कुछ नही था। तो भी उन्होने यह स्वीकार किया कि "यह स्वतन्त्रताकी दिशामे एक कदम है" (पृ० ४०५)।

गाधीजी को सबसे अधिक आपत्ति "मुसलमानो और सवर्ण हिन्दुओकी सख्याकी अनिवार्य समानता" पर थी। पहली बात तो यह कि "ऐसे कोई सवर्ण या अवर्ण हिन्दू नही हैं" और, वाइसरायके प्रस्तावसे "हिन्दुओके राजनीतिक मानसके मर्मस्थलपर आघात" पहुँचा (पृ० ३४५, ३४८)। दूसरे, भूलाभाई देसाई और लियाकत अली समझौतेमे, जिसमे गाधीजी की सहमति थी, काग्रेस और मुस्लिम लीगकी सख्याकी समानताकी बात कही गई थी (पृ० ४२९) और साम्प्रदायिक समानताकी बातसे काग्रेसके केवल "सवर्ण हिन्दुओ"का प्रतिनिधित्व करनेवाली एक साम्प्रदायिक सस्था बनने का डर था।

गाधीजी के मनमे यह बात स्पष्ट थी कि साम्प्रदायिक दावोमे तालमेल बिठाकर ही भारतकी समस्याओका समाधान नही हो सकता। परस्पर विश्वास और एकताका

वातावरण तैयार करने और जनताके कल्याणार्थ काम करने की दृष्टिसे कांग्रेसके लिए धर्म-निरपेक्षताको बनाये रखना आवश्यक होगा। यदि कांग्रेसने किसी भी तरह अपने-आपको केवल हिन्दुओंकी संस्था बना लिया तो "ऐसी स्वतन्त्रता एकपक्षीय, अवास्तविक और आत्मघाती" होगी और वह यही चाहते थे कि कांग्रेस "सभी वर्गोंके अच्छे-से-अच्छे स्त्री-पुरुष चुनने में स्वतन्त्र हो . . ." (पृ० ३६३)। गोविन्दवल्लभ पन्तको लिखे पत्रमें गांधीजी ने स्पष्ट किया कि यदि कांग्रेस जितने मुसलमान उतने ही हिन्दू चुनने का प्रयत्न करेगी तो देशमें साम्प्रदायिकताका जहर फैल जायेगा और देश कभी भी स्वतन्त्र नहीं हो सकेगा। "जितने हिन्दू उतने मुसलमान पसन्द करके" कांग्रेसके एक साम्प्रदायिक संस्था बनने की अपेक्षा गांधीजी को प्रस्तावित अन्तरिम सरकारके गठनमें कांग्रेसका अल्पमत में होना अधिक पसन्द था (पृ० ४०३)। वाइसरायने समझाया कि ऐसा कोई इरादा नहीं है और कांग्रेसको कार्यकारी परिषद्में गैर-हिन्दुओंको भी चुनकर भेजने की छूट होगी।

गांधीजी ने यह भी जता दिया कि वे कांग्रेसके सदस्य नहीं हैं और कांग्रेसका प्रतिनिधित्व केवल उसका अध्यक्ष ही कर सकता है। लेकिन वेवलका यह आग्रह था कि स्वयं प्रतिनिधि न होते हुए भी गांधीजी को चाहिए कि वे सलाह-मशविरेके लिए मौजूद रहें। इसीके फलस्वरूप गांधीजी ने शिमलाके लिए प्रस्थान किया। "प्रत्येक स्टेशनपर झुंड-के-झुंड" लोगोंने उनका स्वागत किया जो "प्रेमसे अथवा उत्साहसे मतवाले" थे और जो "किसीकी सुनते ही नहीं थे" (पृ० ३८७)। हालाँकि वह सो नहीं पाये लेकिन फिर भी उन्होंने नेताओंको दिये जानेवाले वातानुकूलित डिब्बेका बहिष्कार किया और कहा कि "मुझे प्राकृतिक गर्मीमें तपने दीजिए" और "मुझे तनिक असली भारतका अनुभव करने दीजिए" (पृ० ३८२)।

सम्मेलनका आरम्भ २५ जूनको आशाजनक ढंगसे हुआ जिसमें वाइसराय "सम्मेलनके नेताके रूपमें काम कर रहे थे, न कि ब्रिटिश सरकारके एजेन्टके रूपमें" (पृ० ४१३)। वाइसरायने प्रत्येक पार्टीके नेताओंसे कहा कि वे कार्यकारी परिषद्के लिए अपने सदस्योंकी सूची उन्हें भेजें। उनमें से चुनाव करनेके बाद वे उसे अनुमोदनके लिए फिर सम्मेलनमें पेश करेंगे। कांग्रेसने अपनी सूची दे दी। ऐसे ही प्रतिनिधि मण्डलके दूसरे नेताओंने भी किया, लेकिन जिन्नाने सूची देनेसे इंकार कर दिया। उन्होंने पहले तो उनसे ये आश्वासन माँगे: (क) परिषद्में नियुक्त सभी मुसलमान मुस्लिम लीगके नामजद सदस्य होंगे और (ख) मुसलमानोंको अमान्य कोई भी प्रस्ताव परिषद्के दो-तिहाई स्पष्ट बहुमत द्वारा ही पारित होना चाहिए। वाइसरायने इनमें से कोई भी माँग मानने से इंकार कर दिया और १४ जुलाईको जब दोबारा सम्मेलन हुआ तो उसमें सारा दोष अपने सिर लेते हुए उन्होंने सम्मेलनकी असफलताकी घोषणा कर दी।

गांधीजी ने वाइसरायको पत्रमें लिखा: "इस बार आपने असफलताकी जिम्मेवारी अपने ऊपर ले ली है। लेकिन दुनिया कुछ और ही सोचेगी। भारत निश्चय ही कुछ और सोचता है।" साथ-साथ गांधीजी अपना यह शक भी नहीं छिपा पाये कि

"असफलताकी तहमे यह बात थी कि शासकवर्ग अधिकार छोडने के लिए तैयार नही" था (पृ० ४५१)।

गाधीजी लगातार हिन्दुस्तानीको ही राष्ट्रभाषा बनाने की वकालत करते रहे, क्योकि उत्तरी भारतके आम लोग हिन्दी-उर्दूका यही सम्मिश्रण समझते और बोलते थे। जब उन्हे लगा कि हिन्दी साहित्य सम्मेलन उनके इस विचारका समर्थन नही कर रहा है तो उन्होने उससे त्यागपत्र देने की इच्छा जाहिर की (पृ० २४, ४८, १८७, ३३२-३३)। न्होने मुसलमानोसे भी यही कहा कि वे सीरिया और लेबनानके स्वाधीनता सघर्षके प्रति इसी प्रकारका धर्मनिरपेक्ष दृष्टिकोण अपनाये और इसे किसी विशेष तबके अथवा जातिका नही वल्कि "एक राष्ट्रीय प्रश्न" बनायें। मुसलमानोको "हिन्दुस्तानियोंकी हैसियतसे बोलना चाहिए"। यदि भारतके लोग अलग-अलग गुटोंमे बँटे हुए होंगे तो "अन्तर्राष्ट्रीय परिषदोमे उनका कुछ प्रभाव नही हो सकता" (पृ० २६०-६१)।

हालाँकि गाधीजी आध्यात्मिक दृष्टिसे एक सनातनी हिन्दू थे, लेकिन वर्णाश्रमके सम्वन्धमे उनके विचार सदैव आलोचनात्मक और गतिशील रहे, जैसाकि अस्पृश्यताके विरुद्ध उनके आजीवन संघर्षसे दृष्टिगोचर होता है। वर्णभेदके सम्बन्धमे उनके विचारोमें परिवर्तन होता रहा। इस विषयपर पूर्व लिखित लेखोंके संग्रहकी प्रस्तावना लिखते हुए उन्होंने लिखा कि "पाठकको यदि मेरे इन विचारोंके खिलाफ इस पुस्तकमे कुछ भी दिखाई दे, उतना सुधारकर पुस्तक पढे" (पृ० २३२)। "मनुष्य रोज आगे बढ़ता है या पीछे हटता है।" उन्होंने स्वीकार किया कि उनके विचारोंमे भी परिवर्तन हुआ है और भविष्यमे भी हो सकता है। किसीको यह दावा भी नही करना चाहिए कि जैसा वह कल था वैसा ही वह आज भी है। गांधीजी को विश्वास था कि "सत्य और अहिंसा मुझे रोज ज्यादा-से-ज्यादा साफ दिखाई दे रहे है" (पृ० २३१)।

यह परिवर्तन हमे अन्तर्जातीय विवाह, खास तौरपर सवर्ण हिन्दू और अस्पृश्योके बीच विवाहके सम्बन्धमे उनके विचारोंमे देखने को मिलता है। ऐसे विवाहोका समर्थन उन्होंने जितने जोरदार शब्दोमे करना शुरू किया, वैसा वे पहले नही करते थे। एक पत्र-लेखकको उन्होंने लिखा कि "मै एक ही जातिके भीतर किये विवाहोंका किसी प्रकार भी समर्थन नही करता" और हमे "अतिशूद्र और सवर्ण हिन्दुओंके बीच विवाहोंको प्रमुखता देनी चाहिए" (पृ० ८०)। उन्होंने अपने नवीनतम विचारोकी झाँकी इस रूपमे दी "विधर्मियोके बीच विवाहमे भी . . . कोई हर्ज नही माना जाना चाहिए। . बच्चे जिस धर्मका पालन करना चाहे करे" (पृ० ८०-८१)। उन्होंने तो इतना तक कहा कि "अगर शादी एक ही जातिमे है तो मेरे आशीर्वाद मत माँगना" (पृ० १०४)।

भारतमे एक ओर ब्रिटिश शासन चरमरा रहा था और दूसरी ओर भारतीय पूँजीपतियोंने युद्धसे सम्वन्धित ठेकोसे बहुत अधिक पूँजी बटोर ली थी। ऐसी स्थितिमे ब्रिटिश उद्योगपतियोके लिए यह आवश्यक हो गया कि वे भारतीय उद्योगपतियोके साथ कोई ऐसी व्यवस्था करें जिससे भविष्यमे दोनों मिलकर काम कर सकें।

अरदेशिर दलाल और दूसरे लोगोंने उद्योग-सम्बन्धी एक योजना तैयार की और भारतीय पूंजीपतियोंका एक शिष्टमण्डल इंग्लैंड और अमेरिकाकी यात्रापर वहाँके उद्योगपतियोंके साथ बातचीत करने के उद्देश्यसे जाने की तैयारी करने लगा। गाधीजी को यह कार्रवाई अच्छी नही लगी और साथ ही बेमौके भी लगी। समाचारपत्रोको दिये गये वक्तव्यमें उन्होंने बड़े तीव्र शब्दोंमें कहा, "बड़े-बड़े व्यापारी, पूंजीपति और उद्योगपति आदि सरकारके खिलाफ बोलते और लिखते हैं, परन्तु जब कार्यवाही करने का समय आता है तो वे सरकारकी मर्जीपर चलते हैं और ऐसे नफा भी कमाते हैं. . .।" उन्होने कहा कि वह स्वतन्त्रता "तभी मिलेगी जबकि छोटे-बड़े सभी हित अपने उस छोटे-मोटे लाभको, जो उन्हें ब्रिटिश शासकोंके साथ मिलकर भारतको लूटने से मिलता है, छोड़ने को तैयार हों।" उन्होने वक्तव्यके अन्तमें बड़े जोरदार शब्दोमें यह चेतावनी दी: "तथाकथित गैर-सरकारी शिष्टमण्डल . . . तबतक किसी जाँच-पड़ताल या शर्मनाक सौदेके लिए वहाँ जाने का साहस नही कर सकता, जबतक कि कार्य-समितिके कर्णधारोको उनपर बिना मुकदमा चलाये नजरबन्द रखा जायेगा" (पृ० ८३)। घनश्यामदास बिड़ला द्वारा विरोध करने पर और यह समझाने पर कि गाधीजी को जो यह डर है कि यह शिष्टमण्डल शायद भारतीय हितोंके लिए हानिकर होगा, वैसा शिष्टमण्डलका कोई उद्देश्य नहीं है, गांधीजी ने उनसे कहा कि "भूखे और नगे भारतका ध्यान करते हुए मैं तुम्हें आशीर्वाद देता हूँ और तुम्हारे लिए ईश्वरसे प्रार्थना करता हूँ" (पृ० ९८)। ये आशीर्वाद सशर्त और उपयुक्त थे, जिनके बारेमें उन्होंने कहा कि "जो कोई आशीर्वादकी शर्तोंको तोड़ेगा उसे मेरे आशीर्वाद भूतकी तरह लग जायेंगे" (पृ० ९८-९९)।

इस खण्डमें जिस समयकी सामग्रीका समावेश है उसमें से अधिकाश समय तो गाधीजी हालाँकि "विश्राम" ही करते रहे, लेकिन फिर भी उनका पत्र-व्यवहार इतना अधिक था कि उनके लिए तो "अपने कामसे सिर" उठा सकना भी मुश्किल था (पृ० २४३)। इस दौरान अन्य चीजोंके साथ-साथ उनका ध्यान सेवाग्राम आश्रमके प्रबन्ध की ओर भी गया। आश्रममें जिस तरहके लोग रह रहे थे उनको देखते हुए यह काम कोई सरल नही था। उनके विचारोंमें भेद था (पृ० ५), स्वभावोमें भेद था (पृ० २ और १८)। आश्रमके निवासियोंमें परस्पर इतने अधिक तनाव थे और हर एक अपनी जिम्मेदारीसे इतना जी चुरा रहा था कि गांधीजी को यह लगने लगा कि "सब कुछ छिन्न-भिन्न न हो जाये, तो अच्छा" (पृ० २०१)। एक बार तो गांधीजी को ऐसा लगने लगा कि "आश्रम बन्द कर देना चाहिए और प्रत्येकको अलग-अलग अपने-अपने विभागमें व्यवस्थित हो जाना चाहिए" (पृ० ४५)।

गांधीजी ने आश्रमकी कल्पना एक ऐसे स्थानके रूपमें की थी जहाँ वह लोगोको "संस्था धर्म" (पृ० ११०) सिखा सकें, जहाँके निवासी सेवामें "ध्यानस्थ" होकर सम्मिलित रूपसे जीवन बिताने की कला सीख सकें और उसे व्यवहारमें ला सकें (पृ० २७४)। एकताकी स्थापनाका महामन्त्र समझाते हुए उन्होंने मणिबहिन पटेलको लिखा: "जब हम अपने दोषोंको पहाड़के समान मानें और दूसरोके पहाड़ जैसे दोषोंको भी रजकणके समान मानें, तभी मेल बैठेगा" (पृ० २२)। एक अन्य आश्रमवासीको उन्होंने

लिखा : "जो अपने अस्तित्वको शून्य कर लेता है, उसीका अस्तित्व रहता है" (पृ० १२)। इसी भावनामे गाधीजी को रामराज्यके दर्शन हुए क्योंकि लोग वहाँ "स्वेच्छासे नैतिक संयमके नियमका पालन करते है" (पृ० ३१५)। नैतिक संयमसे परिपूर्ण ऐसे प्रजा-तन्त्रमे जरूरत है ऐसे नेताओकी जो अनासक्ति धर्मका पालन करे और जो अपने विचारोंके अलावा दूसरोके विचारोमे भी सच्चाईकी झलक देख सके। उन्होने लिखा : "मै सबको अपने जैसा नही बनाना चाहता। सब जैसे है वैसा व्यवहार करे, यही मेरी शिक्षा है" (पृ० ३२०)। 'हिन्द स्वराज' मे लिखे रेल-सम्बन्धी अपने विचारोपर कायम रहते हुए उन्होने लिखा कि "ऐसी चीजोंमे हमारी सहज स्थिति होनी चाहिए" क्योकि हमें समाजके विभिन्न लोगोके साथ मिलकर चलना है। "अनासक्ति ही सही धर्म है" (पृ० ३४१)।

अनासक्तिका तात्पर्य भावनाका अभाव नही है। "हर प्राणीके साथ तादात्म्य अनुभव करनेवाले व्यक्तिको हर प्रकारके दुःखकी अनुभूति तो होती है, पर वह दुःखसे विचलित नही होता" (पृ० ३१४)। इस अन्तःस्थिति और अनासक्तिकी स्थिति तक गाधीजी कहाँतक पहुँच पाये, इसका अनुमान शिमलामे हिमालय पर्वत श्रृंखलाका उन्होने जो वर्णन किया है उससे लगाया जा सकता है। उन्होने कहा कि जब मै इन हिमाच्छादित पर्वत शिखरोको देखता हूँ तो "मनमे परम शान्ति" अनुभव करता हूँ। इस दृश्यको देखकर उन्हे शिवजीके कैलाश पर्वतकी याद हो आती है। लेकिन हिमालयके इस सौन्दर्यसे विमोहित गाधीजी तत्काल जाग पड़ते है और कहते है कि "मेरा कैलाश तो सेवाग्राम है। मेरी जीवनदायिनी गगाका पानी भी वहीसे निकलता है" (पृ० ४१९)।

गांधीजी मे हर प्रकारके लोगोके साथ निभा लेने की कितनी अद्भुत क्षमता थी, इसका पता हमे कम्युनिस्टोके प्रति उनके दृष्टिकोणसे चलता है — उन कम्युनिस्टोके जिन्होने युद्धके दौरान अंग्रेजोंका समर्थन किया और भारत छोड़ो आन्दोलनका विरोध। हालाँकि कम्युनिस्ट पार्टीके मन्त्री पूरणचन्द्र जोशीने गाधीजी के पत्रका उसी भावनासे उत्तर नही दिया जिस भावनासे गाधीजी ने उन्हे पत्र लिखा था (देखिए खण्ड ७७ और ७८), फिर भी गाधीजी ने पार्टीके एक सदस्यको यही लिखा: "मै तुम्हे, बाटलीवाला, जोशी या लखनऊके हबीबको दोषी ठहराने का साहस नही कर सकता। . . . मै किसी राजनीतिक पार्टीके विरुद्ध फैसला नही सुनाना चाहता" (पृ० १८१)। और "मुझे कम्युनिस्टोके साथ-साथ काम करने मे कोई कठिनाई नही है" (पृ० २४७-४८)।

जब सान फ्रान्सिस्कोमे आयोजित सयुक्त राष्ट्रसंघ सम्मेलनमे अग्रेजो द्वारा नियुक्त भारतीय प्रतिनिधिमण्डलके सदस्य सर फिरोज खान नूनने एक ऐसा विषैला वक्तव्य दिया, जिसमे गाधीजी को जापानका पक्षपाती बताया गया था और यह सुझाव दिया गया था कि वे नेहरूको अपना उत्तराधिकारी बना दे, तो गाधीजी ने कहा कि ब्रिटिश शासकोने तो आरोप स्वयं वापस ले लिया है और जहाँतक नेहरूको अपना उत्तराधिकारी बनाने की बात है तो "हम दोनो दोस्त है — प्रतिद्वन्द्वी नही। हम दोनों जनताके

सेवक हूँ और सेवाका क्षेत्र पृथ्वीके समान विस्तृत है। इसमें इतनी भीड़ कभी नहीं होती कि औरोंके लिए जगह न रहे" (पृ० ६७)।

अपने दक्षिण आफ्रिका प्रवासके दौरान गांधीजी ने लोगोंके साथ जो सम्बन्ध बनाये थे वे अन्ततक कायम रहे। सोन्या श्लेसिनसे प्राप्त एक पत्रसे गांधीजी की पुरानी यादें फिर ताजी हो गई और उस पत्रका उत्तर देते हुए गांधीजी ने लिखा: "श्रीमती नायडूके बारेमें मुझे खुशी है। वे क्या कर रही हैं? उनके बच्चोंके क्या हाल हैं? क्या तुम मुझे तम्बीके परिवारका एक चित्र जिसमें वे भी हों, भेज सकती हो?" (पृ० १३०)।

सतीशचन्द्र दासगुप्तकी पुस्तकको प्रस्तावना लिखते समय गांधीजीको खेती-बाड़ीके व्यवस्थित तरीकोंपर जोर देने का अवसर प्राप्त हुआ। उन्होंने 'काउ इन इंडिया' की प्रस्तावनामें लिखा: "उन्होंने बताया है कि भारतके खेतोंमें हल चलाने के लिए इंजनोंकी अपेक्षा ढोर कहीं अधिक उपयोगी हैं। उन्होंने ढोरों और अन्य पशुओंमें तथा धरती और मनुष्यमें स्वाभाविक सम्बन्ध और अन्योन्याश्रयत्व प्रमाणित किया" (पृ० १५५)। नव बड़े उद्योगोंपर शासनका नियन्त्रण होने पर भी कोई फर्क नहीं पड़ेगा क्योंकि इससे मनुष्यकी इच्छाओंमें वृद्धि होगी और काम करने की इच्छा खत्म हो जायेगी। इसी कारण गांधीजी को यह सन्देह था कि "रूस कुछ अनोखी वस्तु ही कर बताएगा"। लेकिन अगर सचमुच गरीब लोगोंके हाथोंमें सब धन जायेगा और "उन लोगोंकी मानसिक और व्यक्तिगत स्वतन्त्रता सुरक्षित होगी तो . . . अहिंसाके बारेमें जो विचार मैं रखता हूँ उसे बदलना होगा" (पृ० १५८-५९)।

गांधीजी और राजगोपालाचारीजी, जो तुरन्त राजनीतिक समझौता कराने के लिए लगातार मुस्लिम लीगको सुविधाएँ देने के पक्षमें थे, के बीच बातचीत भी इस खण्ड का एक रोचक प्रसंग है। गांधीजी ने उनसे कहा: "आप हर कीमतपर अधिकार चाहते हैं। मैंने अदा की जानेवाली कीमतकी सीमा बाँध दी है। . . . जबतक वे अधिकार उस कीमतपर न मिलें जो मैं देना चाहता हूँ, तबतक मैं इंतजार कर सकता हूँ और मैं अपने उद्देश्यकी ओर बढ़ रहा हूँ, चाहे बहुत धीरे-धीरे ही सही . . ." (पृ० ११५)।

प्रस्तुत खण्डमें यत्र-तत्र 'अविस्मरणीय सूक्तियाँ' भी देखने को मिलती हैं। जैसे अमेरिकाके नीग्रो लोगोंको एक सन्देश देने की प्रार्थनापर गांधीजी ने कहा: "मेरा जीवन स्वयं एक सन्देश है" (पृ० २१८)। एक पत्र-लेखकको उन्होंने लिखा: "भीड़में ही हमारे लिए एकान्तवास है। क्रियामें ही निष्क्रियता है, लेकिन ऐसी क्रिया तो निष्काम होनी चाहिए" (पृ० २२४)।

नई तालीमके अन्तर्गत शिक्षा देने के साथ-साथ ज्ञान प्राप्त करने के सम्बन्धमें और कताईके महत्त्वकी चर्चा करते हुए गांधीजी ने नारायण देसाईको लिखा: "ज्ञान अनन्त है, फिर भी जाननेवाले ही जानते हैं कि उसका मूल एक ही है" (पृ० १५२)। यही विचार गांधीजी ने एक दूसरे पत्रमें भी प्रस्तुत किया: "एक शास्त्रका ठीक अभ्यास करने से दूसरा सुलभ होता है" (पृ० १६६)।

आभार

इस खण्डकी सामग्रीके लिए हम निम्नलिखित संस्थाओ, व्यक्तियों, पुस्तकोंके प्रकाशको तथा पत्र-पत्रिकाओंके आभारी हैं:

संस्थाएँ: साबरमती आश्रम सरक्षक तथा स्मारक न्यास और संग्रहालय, नवजीवन ट्रस्ट और गुजरात विद्यापीठ ग्रन्थालय, अहमदाबाद, राष्ट्रीय गाधी सग्रहालय और पुस्तकालय, राष्ट्रीय अभिलेखागार और नेहरू स्मारक सग्रहालय तथा पुस्तकालय, नई दिल्ली, भारत कला भवन, वाराणसी; महाराष्ट्र सरकार, वम्बई और तमिलनाडू सरकार, मद्रास।

व्यक्ति: श्रीमती अमृतकौर, श्री अमृतलाल चटर्जी; श्री आनन्द तो० हिंगोरानी, इलाहाबाद, श्री क० मा० मुन्शी, श्री कनु गाधी, सेवाग्राम, श्रीमती कमला लेले, वर्धा, श्री कान्तिलाल गांधी, वम्बई; श्री कृष्णचन्द्र, उरुलीकांचन; श्री घनश्यामदास बिड़ला, कलकत्ता, श्री चिमनलाल न० शाह, सेवाग्राम; श्री नन्दलाल पटेल, अहमदाबाद; श्री नरहरि द्वा० परीख, श्री नारणदास गाधी, राजकोट, श्री पुरुषोत्तम का० जेराजाणी, वम्बई; श्री प्यारेलाल, नई दिल्ली; श्री प्रभाकर; श्रीमती प्रेमलीला ठाकरसी, पूना; श्रीमती प्रेमाबहिन कंटक, सासवाड; श्री बलवन्तसिंह, जयपुर; श्री बी० जगन्नाथदास, श्रीमती मजुला म० मेहता, वम्बई; श्री मंगलदास पकवासा; श्री माणेकलाल अ० गांधी, अहमदाबाद; श्रीमती मीराबहिन, गाडेन, आस्ट्रिया, श्री मुन्नालाल गं० शाह, वर्धा; श्रीमती वनमाला म० देसाई, नई दिल्ली; श्री वालजी गो० देसाई, पूना; श्रीमती रामेश्वरी नेहरू, दिल्ली; श्रीमती लीलावती आसर, वम्बई, श्रीमती शरयू धोत्रे, सेवाग्राम; श्रीमती शान्ता पटेल, अहमदाबाद, श्री शान्तिकुमार न० मोरारजी, वम्बई; श्रीमती शारदाबहिन गो० चोखावाला, सूरत और श्रीमती हर्षदाबहिन दीवानजी, वम्बई।

पुस्तकें: 'इसिडेंट्स ऑफ गांधीजीज लाइफ'; 'काउ इन इंडिया'; 'कॉरस्पॉण्डेन्स विटवीन महात्मा गाधी ऐण्ड पी० सी० जोशी', 'गांधीजीज कॉरस्पॉण्डेन्स विद द गवर्नमेन्ट, १९४२-४४ और १९४४-४७'; 'गीतागीतमंजरी'; (द) ट्रान्सफर ऑफ पॉवर', जिल्द ३ और ४, 'पाँचवे पुत्रको बापूके आशीर्वाद'; 'वा बापुनी शीली छायामा; 'बापुना पत्रो – ४: मणिबहिन पटेलने'; 'बापुना पत्रो – २. सरदार वल्लभभाईने', 'बापुनी प्रसादी'; 'बापू: मैंने क्या देखा क्या समझा?'; 'बापूकी छायामे'; 'बापूके आशीर्वाद' (रोजके विचार), 'महात्मा — लाइफ ऑफ मोहनदास करमचन्द गाधी', जिल्द ७; 'महात्मा गाधी – द लास्ट फेज', जिल्द १, 'राजर्षि अभिनन्दन ग्रन्थ'; 'राष्ट्रभाषाके प्रश्नपर गाधीजी और टण्डनजीका महत्त्वपूर्ण पत्र-व्यवहार'; 'राष्ट्रभाषा विषे विचार'; 'रेमिनिसेंसेज ऑफ गांधीजी'; 'लेटर्स टु वी० एस० श्रीनिवास शास्त्री',

'वर्णव्यवस्था'; 'वेवल : द वाइसरायज जर्नल'; 'सरदार पटेल्ज कॉरस्पॉण्डेन्स'; 'हिस्ट्री ऑफ द इन्डियन नेशनल कांग्रेस', जिल्द २ और 'हूज हू — १९४५'।

पत्र-पत्रिकाएँ : 'इलस्ट्रेटेड वीकली ऑफ इंडिया'; 'ग्रामोद्योग पत्रिका'; 'बॉम्बे क्रॉनिकल'; 'भावनगर समाचार'; 'स्वराज्य'; 'हितवाद'; 'हिन्दुस्तान टाइम्स' और 'हिन्दू'।

अनुसन्धान और सन्दर्भ-सम्बन्धी सुविधाओंके लिए अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी पुस्तकालय; सूचना और प्रसारण मन्त्रालयका अनुसन्धान और सन्दर्भ विभाग, राष्ट्रीय अभिलेखागार, नेहरू स्मारक संग्रहालय तथा पुस्तकालय और श्री प्यारेलाल, नई दिल्ली हमारे धन्यवादके पात्र हैं। प्रलेखोंकी फोटो-नकल तैयार करने में मदद देने के लिए हम सूचना और प्रसारण मन्त्रालयके फोटो-विभाग, नई दिल्लीके आभारी हैं।

पाठकोंको सूचना

हिन्दीकी जो सामग्री हमे गाधीजी के स्वाक्षरोमें मिली है, उसे अविकल रूपमे दिया गया है। किन्तु दूसरो द्वारा सम्पादित उनके भाषण अथवा लेख आदिमे हिज्जोकी स्पष्ट भूले सुधार दी गई है।

अंग्रेजी और गुजरातीसे अनुवाद करते समय उसे यथासम्भव मूलके समीप रखने का पूरा प्रयत्न किया गया है, किन्तु साथ ही भाषाको सुपाठ्य बनाने का भी पूरा ध्यान रखा गया है। जो अनुवाद हमे प्राप्त हो सके है, उनका हमने मूलसे मिलान और सशोधन करने के बाद उपयोग किया है। नामोंको सामान्य उच्चारणके अनुसार ही लिखने की नीतिका पालन किया गया है। जिन नामोके उच्चारणमे सशय था, उनको वैसा ही लिखा गया है जैसा गाधीजी ने अपने गुजराती लेखोमे लिखा है।

मूल सामग्रीके बीच चौकोर कोष्ठकोमे दिये गये अश सम्पादकीय है। गाधीजी ने किसी लेख, भाषण आदिका जो अश मूल रूपमे उद्धृत किया है, वह हाशिया छोड़कर गहरी स्याहीमे छापा गया है। लेकिन यदि ऐसा कोई अश उन्होने अनूदित करके दिया है तो उसका हिन्दी अनुवाद हाशिया छोड़कर साधारण टाइपमे छापा गया है। भाषणोंकी परोक्ष रिपोर्ट तथा वे शब्द जो गाधीजी के कहे हुए नही है, बिना हाशिया छोड़े गहरी स्याहीमे छापे गये है। भाषणो और भेटकी रिपोर्टोंके उन अशोमे जो गाधीजी के नही है, कुछ परिवर्तन किया गया है और कही-कही कुछ छोड भी दिया गया है।

शीर्षककी लेखन-तिथि दाये कोनेमे ऊपर दे दी गई है, लेकिन जिन लेखो, टिप्पणियो आदिके अन्तमे लेखन-तिथि दी गई है उनमे उसे यथावत् रहने दिया गया है। जहाँ वह उपलब्ध नही है, वहाँ अनुमानसे निश्चित तिथि चौकोर कोष्ठकोमे दी गई है और आवश्यक होने पर उसका कारण स्पष्ट कर दिया गया है। जिन पत्रोमे केवल मास या वर्षका उल्लेख है, उन्हे प्रसगानुसार मास तथा वर्षके अन्तमे रखा गया है। शीर्षकके अन्तमे साधन-सूत्रके साथ दी गई तिथि प्रकाशन की है। गांधीजी की सम्पादकीय टिप्पणियाँ और लेख, जहाँ उनकी लेखन-तिथि उपलब्ध है अथवा जहाँ किसी दृढ़ आधारपर उसका अनुमान किया जा सका है, वहाँ लेखन-तिथिके अनुसार और जहाँ ऐसा सम्भव नही हुआ है, वहाँ उसकी प्रकाशन-तिथिके अनुसार दिये गये है।

साधन-सूत्रोमे 'एस० एन०' सकेत साबरमती संग्रहालय, अहमदाबादमे उपलब्ध सामग्रीका, 'जी० एन०' राष्ट्रीय गाधी सग्रहालय और पुस्तकालय, नई दिल्लीमे उपलब्ध

कागज-पत्रोंका, 'एम० एम० यू०' राष्ट्रीय गांधी संग्रहालय और पुस्तकालयकी मोबाइल माइक्रोफिल्म यूनिट द्वारा तैयार कराई गई रीलोंका, 'एस० जी०' राष्ट्रीय गांधी संग्रहालय, नई दिल्लीमें उपलब्ध सेवाग्रामकी सामग्रीके फोटोस्टेटोंका और 'सी० डब्ल्यू०' सम्पूर्ण गांधी वाङ्मय (कलेक्टेड वर्क्स ऑफ महात्मा गांधी) द्वारा संगृहीत दस्तावेजोंका सूचक है।

सामग्रीकी पृष्ठभूमिका परिचय देने के लिए मूलसे सम्बद्ध कुछ परिशिष्ट दिये गये हैं। अन्तमें साधन-सूत्रोंकी सूची और इस खण्डसे सम्बन्धित कालकी तारीखवार घटनाएँ दी गई हैं।

विषय-सूची

परिशिष्ट

१. तार : एन० जी० रंगाको

महाबलेश्वर
२५ अप्रैल, १९४५

प्रो० रंगा[1]
पोन्नूर
तुम्हारा कार्य ही सर्वश्रेष्ठ सन्देश है।[2]

बापू

अंग्रेजीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

२. तार : जयरामदास दौलतरामको

महाबलेश्वर
२५ अप्रैल, १९४५

जयरामदास दौलतराम
हैदराबाद (सिन्ध)
तुम्हारे यहाँ आने की प्रतीक्षा है। चिमनदाससे सहानुभूति है। स्नेह।

बापू

अंग्रेजीकी नकलसे : प्यारेलाल-पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. एक अर्थशास्त्री: अ० भा० किसान सभा और आन्ध्र प्रान्तीय कांग्रेस कमेटीके अध्यक्ष; केन्द्रमें कांग्रेस संसदीय दलके सदस्य: स्वतन्त्र पार्टीके संस्थापक-अध्यक्ष

२. प्रो० रंगाने कृषक संस्थानमें, जिसे गांधीजी ने १९३३ में शुरू किया था, ग्राम्य-कार्यका प्रशिक्षण आरम्भ करने के अवसरपर गांधीजी से सन्देश माँगा था।

३. तार : सिनाना कृपलानीको

महाबलेश्वर
२५ अप्रैल, १९४५

सिनाना कृपलानी
मार्फत इंडिया क्लब
पोर्ट ऑफ स्पेन
(ट्रिनिडाड, वेस्ट इंडीज)

आशा है कि अधिवासी भारतीय मातृभूमिके योग्य सिद्ध होंगे।

गांधी

अंग्रेजीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

४. पत्र : मुन्नालाल गंगादास शाहको

महाबलेश्वर
२५ अप्रैल, १९४५

चि० मुन्नालाल,

तुम्हारा १४ तारीखका पोस्टकार्ड मुझे आज ही मिला। मुझे लगता है, अब तो रामप्रसाद चले गये होंगे[1]; इसलिए तुम्हारे जाने की जरूरत नहीं है। रसोईघर अब तुम चलाना शुरू कर दो। सबका स्वभाव प्रफुल्ल मनसे सहन करना, इसीमें तुम्हारी जीत है। नौकर नौकर नहीं हैं, हमारे भाई-बहिन हैं। उनकी सहायतासे रसोईघर चलाना दुर्गुण नहीं सद्गुण है। लेकिन वैसा करना आना चाहिए। नौकरोंको अपने भाई-बहिन समझना चाहिए।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ८४५७) से। सी० डब्ल्यू० ५५७४ से भी; सौजन्य : मुन्नालाल गं० शाह

१. मीराबहिनकी मददके लिए; देखिए "पत्र : मीराबहिनको", ७-५-१९४५।

५. पत्र : चिमनलाल नरसिंहदास शाहको

महाबलेश्वर
२५ अप्रैल, १९४५

चि० चिमनलाल,

तुम्हारा पत्र पढकर खेद होता है। उसे तुम्हारे पास वापस भेज रहा हूँ। मै जब वहाँ आऊँ तब याद दिलाना। लिखकर तो मै कुछ नही कर सकता। तुम कमजोर हो किन्तु यदि तुममे काफी शक्ति आ गई हो तो रा० प्र०[1] को लिखना। देखना वह क्या जवाब देता है। अपनी तबीयत सुधार लेना। मुन्नालालको लिख रहा हूँ। वह यदि वहाँ शान्तिसे नही रह सकता हो तो भले यहाँ चला आये।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० १०६२६) से

६. पत्र : अकबर चावडाको

महाबलेश्वर
२५ अप्रैल, १९४५

चि० अकबर,

तेरा पत्र मिला।

शरावके बारेमें मै तुझसे पूरी तरह सहमत हूँ। वहाँका काम मुश्किल है, लेकिन मुश्किल समझकर ही तो तूने हाथमे लिया है। अब क्या वह छूट सकता है? और ऐसे समय जबकि मुसीबते सामने है?

मेरी इच्छा मईके अन्ततक यहाँ, और उसके बाद एक महीना पचगनीमे रहने की है। पूरी करना तो ईश्वरके अधीन है। मेरी तबीयत ठीक रहती है।

वसुमती[2] वहाँ रह जाये, तो मुझे अच्छा लगेगा। वह कही भी स्थिर हो जाये, तो अच्छा हो।

बादशाह खान[3] जो कहते है, वह आधा ठीक है। समौ तू अपनी इच्छासे गया है। यह ठीक है कि तेरा वहाँ जाना मुझे भी पसन्द था।

१. रामप्रसाद
२. वसुमती पण्डित
३. अब्दुल गफ्फार खाँ

तेरा सरहद जाना भी मुझे पसन्द है, शायद ज्यादा भी। लेकिन शर्त यह है कि तेरी खुद वहाँ जाने की इच्छा हो। अब तो मैं तुझे उसके लिए प्रेरित भी नहीं करना चाहूँगा। अतः तुझे ही बादशाह खानको लिखना चाहिए कि तेरे लिए समो छोड़ना अपना धर्म छोड़ने के बराबर होगा। अगर तू वहाँ व्यवस्थित रूपसे काममें न लग गया होता, तो सरहद जाता। हाँ, तू समोके कामके लिए किसीको तैयार कर ले तो सरहद जाये, यह इच्छा मेरी जरूर है। अभी तो मैं जोहराको[1] तेरे पास आने के लिए मना रहा हूँ न?

बादशाह खानको एक दूसरा पत्र लिख भेजना। एक वसुमतीको और एक उसे।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ३२३७) से

७. पत्र : सीताराम पुरुषोत्तम पटवर्धनको

महाबलेश्वर
२५ अप्रैल, १९४५

भाई अप्पा,

तुमने सत्याग्रहका वर्णन भेजा, यह ठीक किया। लगता है हरिजन भाइयोंने धीरज और हिम्मतका ठीक प्रदर्शन किया। संयोग ठीक थे, ऐसा देखता हूँ। जनताका भी सहयोग था, यह शुभ चिह्न है। इस जीतको कायम रखने के लिए बहुत-कुछ करना बाकी रहता है। जनताके सहयोगको कायम रखने के लिए हरिजन भाई-बहिनोंको पवित्रता और स्वच्छतामें खूब आगे बढ़ना चाहिए। यह कहना कि दूसरे लोग कहाँ पवित्र अथवा स्वच्छ हैं, उचित नहीं है। हरिजन भाइयोंको तो प्रवाहके विरुद्ध चलना है, इसलिए उन्हें आवश्यक शक्तिका विकास करना होगा।

इसका जो उपयोग करना चाहो करना, जिससे मुझे कुछ और लिखना न पड़े।

बापूके आशीर्वाद

साधकाश्रम
डाकखाना कनकवली
जिला रत्नागिरि

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. अकबर चावडाकी पत्नी

८. पत्र : मगनभाई प्रभुदास देसाईको

महाबलेश्वर
२५ अप्रैल, १९४५

चि० मगनभाई,

तुम्हारा पत्र मिला। मेरे ऊपर तुम जिम्मेदारी डाल रहे हो यह फिलहाल तो उचित नही है। मैं अब पूरी तरह ठीक होऊँगा भी या नही, यह भी नही कह सकता। मैं १२५ वर्ष जीने की आशा रखता हूँ, लेकिन रास्तेमें अड़चने बहुत है। लेकिन मान लो कि निभ गया तो भी मैं सलाहकार ही रह सकता हूँ, ऐसा लगता है। यह सच है कि अगर काग्रेसके हाथमें शासनकी बागडोर आती है तो मैं शिक्षा-विभागमे परिवर्तन करने के सुझाव दूंगा। लेकिन तुम्हारा धर्म तो स्पष्ट है। तुम्हारा काम साथियोको समझाकर आगे बढना है। इसीलिए मैंने भाई नरहरिका[1] पत्र तुम्हे भेजा। यदि उनकी राय भिन्न है तो तुम्हे सावधान हो जाना होगा। लोकसत्ताका रहस्य ही यह है कि साथियोको साथ लेकर आगे बढ़ना चाहिए। मेरी मदद तो मेरे प्रभावका उपयोग करने तक ही सीमित है। वह मदद तो मैं अगर अहमदाबादमे होऊँ, सारी बात सुनूं, तभी कर सकता हूँ। यहाँ बैठे हुए तो ऐसे पत्र ही लिख सकता हूँ।

मेरी मर्यादा समझ गये न? जबतक न समझ सको तबतक लिखते ही रहना।

बापूके आशीर्वाद

मगनभाई देसाई
गुजरात विद्यापीठ, अहमदाबाद

गुजरातीकी नकलसे . प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. नरहरि द्वा० परीखका

९. पत्र : सरोजिनीको

महाबलेश्वर
२५ अप्रैल, १९४५

बहिन सरोजिनी,[1]

तुमारा खत मिला। मेरी सलाह है कि जैसे चिमनलालजी कहें ऐसे करो। मेरा यहां से कहना योग्य नहीं होगा। तुम अच्छी रहो, शांत रहो और सबसे मिलजुल कर जैसे दूधमें सक्कर ।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१०. पत्र : देवप्रकाश नैयरको

महाबलेश्वर
२५ अप्रैल, १९४५

चि० देव,

तुमने आर्य[नायक]मजीके लिये निबंध लिख दिया सो अच्छा किया।

मेरा इसके पहलेका खत मिला होगा।

दंपति[2] तुमको पंजाब भेजना चाहते हैं। और तुमको आत्मविश्वास है तो जाओ। शर्त यह है कि एक थोडी मुदतके लिये और सब खर्च पंजाब उठा ले। अगर मध्यसे खर्च करना पडे तो जाना अच्छा नहीं होगा ऐसा मेरा मत है।

उसी खत आर्यमजीको और आशादेवीको बता सकते हो।

तबियत अच्छी होनी ही चाहिये।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. सरोजिनी सेवाग्राम आश्रममें कुछ महीने रहने के लिए उड़ीसासे आई थीं।

२. हिन्दुस्तानी तालीमी संघके मन्त्री ई० डब्ल्यू० आर्यनायकम् और उनकी पत्नी आशादेवी आर्यनायकम्

११. पत्र : होशियारीको

महाबलेश्वर
२५ अप्रैल, १९४५

चि० होशियारी,[1]

तू क्यो कहती है मैंने तुजको नही लिखा? मैंने तो एकसे क्या दो खत लिखे हैं। हमेशा नही।

तेरे अक्षर बहुत अच्छे है। भले मोटे रहे।

तू पिताजीको राजी रखने का प्रयत्न कर रही है, बच्चोको बुला रही है। अब शांत हो जा। काम कर। कोई रोज बच्चे आयेंगे। ब० सिंह लावेंगे।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१२. पत्र : वामनराव जोशीको

महाबलेश्वर
२५ अप्रैल, १९४५

भाई वामनराव,

तुम्हारा बहुत स्वच्छ और आनंददायक खत मिला है। तुमारी तबीयत अच्छी रही मुझे बहुत प्रिय लगता है।

बापुके आशीर्वाद

[पुनश्च :]

हाल तो यही हूं।

वीर वामनराव जोषी
अमरावती
बरार

पत्रकी नकलसे . प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. बलवन्तसिंहकी भतीजी

१६. पत्र : वी० आई० मुनिस्वामी पिल्लैको

महाबलेश्वर
२६ अप्रैल, १९४५

प्रिय मुनिस्वामी,

तुम्हारा पत्र इतनी देरसे मिला कि शादीकी तिथि निकल गई। नवदम्पतिको देश-सेवाके लिए दीर्घ एवं सुखी जीवन प्राप्त हो, यही कामना है।

हृदयसे तुम्हारा,
मो० क० गांधी

श्री वी० आई० मुनिस्वामी पिल्लै
सत विलास
ऊटी
दक्षिण भारत

अंग्रेजीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१७. पत्र : बालकृष्ण भावेको

महाबलेश्वर
२६ अप्रैल, १९४५

चि० बालकृष्ण,

अब तो रुस्तम भवनमें आ गये हो। वहाँ कैसा रहता है? डॉ० केलकर पूछते हैं कि क्या वे तुम्हारा उपचार करें? तुम्हारी इच्छा होती है क्या? यदि यह करवाना हो तो तुम्हें चण्डीप्रसादकी दवा छोड़नी चाहिए। केलकरके उपचारके बारेमें निर्णय मैं तुम्हारे ऊपर छोड़ना चाहूँगा।[1]

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. देखिए पृ० ९ भी।

१८. पत्र : अमृतलाल वि० ठक्करको

महाबलेश्वर
२६ अप्रैल, १९४५

बापा,[1]

आशा है कि भीलोका काम अच्छी तरहसे सम्पन्न करके तथा आँख अथवा शरीरको कोई भी नुकसान पहुँचाये बिना तुम वापस आ गये होगे। कुछ लिखने जैसा हो तो लिखना। मुझे लिखा स्वामीका[2] अन्तिम पत्र इसके साथ भेज रहा हूँ। उसकी माँगके बारेमे मुझे तुम्हारे साथ बात करनी थी, लेकिन हमेशा बात करना रह जाता था। लगता है मुझे कुछ-न-कुछ तो उसे लिखना चाहिए। लेकिन तुम्हे बताये बिना भला कैसे कुछ लिख दूँ?

झगड़ा घरेलू था, उसके साथ लोगोको कुछ लेना-देना नही है। स्वामीकी प्रकृतिके विरुद्ध अथवा उसके कामके विरुद्ध तुम्हे कुछ नही कहना है। क्या तुम यह नही कह सकते कि उसका काम बिलकुल निर्दोष था, आदि, आदि? मैं तो कह सकता हूँ।

बापू

अमृतलाल ठक्कर
सर्वेन्ट्स ऑफ इंडिया सोसाइटी
बम्बई ४

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य प्यारेलाल

१९. पत्र : मुन्नालाल गंगादास शाहको

महाबलेश्वर
२६ अप्रैल, १९४५

चि० मुन्नालाल,

तुम्हारे तीन पत्र एकसाथ मिले। ऐसा देखा गया है कि तुम इतने पत्र तभी लिखते हो, जब तुम अस्वस्थ होते हो। इस बार भी यही बात है। ऐसा क्यो? मैं आश्रममे होता हूँ, तब भी तुम अस्वस्थ रहते हो, और नही होता, तब भी।

१. कस्तूरबा गांधी राष्ट्रीय स्मारक न्यासके मन्त्री
२. स्वामी आनन्द

अस्वस्थताके प्रकार भले भिन्न हों, लेकिन तुम्हारे शरीरपर उनका प्रभाव तो समान ही पडेगा? इससे मालूम होता है कि तुम्हारा दुःख तुम्हारे भीतरसे आता है। बाह्य कारण तो तुम्हारी कल्पनामात्र है। तुम्हारे पुराने साथी ही तुम्हे तंग करे, यह कैसी बात है? यह तंग करना तो तुमने केवल मान लिया है। मतभेद रखना तग करना नही है।

मैं तुम्हें हुक्म दूं, उससे क्या होगा? काम तुम्हे साथियोके साथ करना है, तो वह तो तुम्हे उनसे मिलकर ही करना पडेगा। इसीका नाम है लोकमत। यही "डेमोक्रैसी" है। ऐसा काम बहुमतसे ही होता है, अथवा जिसे मुखिया नियुक्त किया गया हो उसके कहे अनुसार करने से। इसमे दु.ख कैसा? अपमान कैसा? सबकी सेवा तो ऐसी ही होती है—अपनी मनचाही नही, बल्कि जैसी वे चाहे वैसी। यह आनन्द-पूर्वक करोगे, तभी कुछ सीखोगे, ऊँचे उठोगे और अधिकसे अधिक सेवा कर सकोगे। इसलिए मेरी सलाह है कि तुम धीरज धारण करके उत्साहके साथ वही काम करते जाओ। मुझे तो यही पसन्द है कि अपने तथाकथित नौकरोको अपने भाई-बहिन समझकर ही उनसे काम लो। इससे तुम्हारी कीर्ति बढ़ेगी और सफल हो गये तो परिणाम शुभ होगा। नौकर नौकरके रूपमे तो शुरूसे ही रहे हैं। फर्क इतना ही है न कि अब हम उन्हे अपना साथी बना रहे हैं, उन्हे समय देने की बात सोच रहे हैं? इसमे अगर तुमने समझदारीसे काम नही लिया, तो असफल रहोगे। लेकिन *उससे भी क्या? असफलतामे सफलता छुपी हुई है। जो असफल होगा, वह आगे* कभी सफल भी होगा। जो असफलताके डरसे कुछ नही करता, वह कभी सफल होगा ही नही। जहाँसे भूले वहाँसे फिर गिनना शुरू करें, तो गिनती ठीक हो जाती है।

अपनेको खोकर ही अपनेको पाओगे। जो अपने अस्तित्वको शून्य कर लेता है, उसीका अस्तित्व रहता है। इसलिए तुम्हें अपने व्यक्तित्वके नष्ट हो जाने का डर क्यों है? नष्ट हो जाने दो।

कंचनका[1] पत्र आज आया है, तुम्हारे देखने के लिए भेज रहा हूँ। उसे वही रहने देना। वह वहाँ कुछ बनेगी। अमतुस्सलामने भी उसका उल्लेख किया है, इसलिए उसका पत्र भी भेज रहा हूँ।

तुम्हारे पत्र मैं फाड़े डालता हूँ। तुम्हे अपने पत्र जमा करके नही रखने चाहिए। इनमे तुम्हारे समय-समयके व्यंग होते है। इन्हे फिरसे पढ़ने या याद करने से कोई लाभ नही होता।

हमारे सब समाचार तुम सबको दिये जा चुके हैं। मैं यहाँ मईके अन्ततक रहूँगा, जूनमे पंचगनीमे, फिर सेवाग्राम आऊँगा। वैसे यह मेरा विचार है। इसमे से जो ईश्वर होने देगा वह होगा। यहाँ हमारा आतिथ्य सत्कार करनेवाले है प्रेमलीलाबहिन[2]

१. मुन्नालाल गं० शाहकी पत्नी
२. प्रेमलीला ठाकरसी

और शान्तिकुमार,[1] पचगनीमे नानजी सेठ[2]। और फिर बच्छराजभाई[3] तो दोनो जगह है ही।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ८४५६) से। सी० डब्ल्यू० ५५७५ से भी; सौजन्य : मुन्नालाल ग० शाह

२०. एक पत्र

महाबलेश्वर
२६ अप्रैल, १९४५

चि० . . .,[4]

तेरा पत्र मिला। चि० . . .[5] को तेरा काम पसन्द आ गया, इसलिए तुझे विचार करने की जरूरत ही नही रह जाती। तू निकटकी रिश्तेदार है, इस नाते मैंने तेरे कामकी जाँच नही की है। वह तो मैंने इसी दृष्टिसे देखा है कि तू पढ़ी-लिखी है तेरे मनमें कोई पाप नही था, तो भी तूने बाल-विवाहकी बात छिपाई, इसे मैं महादोष मानता हूँ। दूसरी जातिमें शादी की, यह तो मुझे अच्छा लगा। लेकिन बाल-विवाह को तूने या . . . ने[6] विवाह ही नही माना, यह बात औचित्यसे बिलकुल मेल नही खाती। . . .[7] बहुत भले लगते है। परन्तु मेरी नजरमे उन्होने अपनी स्त्रीकी सेवा नही की। तूने तो बिलकुल नही की। तू उस स्त्रीकी जगह होती, तो तुझे कैसा लगता? . . .[8] जैसे तो हिन्दू-समाजमें अनेक किस्से होते हैं। सब उन्हीकी तरह करने लगें तो विवाहिता लडकियोका क्या होगा? . . .[9] का धर्म उस लडकीके साथ रहकर उसका शिक्षक बनने का था। तूने परोपकारके नामपर यह काम करके अपने मोहको ही पोषित किया है। यह विश्लेषण स्वीकार करने के लिए तू बाध्य नही है। तुम दोनों यह मानते हो कि तुम दोनोने अपने धर्मका पालन किया है। तुम्हारे लिए यही काफी है। आदमी खुद जिसे माने वही उसका धर्म है।

चि० . . .[10] को अलग पत्र नही लिख रहा हूँ। इसको दोनोके लिए समझ लेना।

बापूके आशीर्वाद

[गुजरातीसे]
बा बापुनी शीली छायामां, पृ० २२६-२७

१. शान्तिकुमार न० मोरारजी
२. नानजी कालिदास
३. बच्छराज सेठ, जिन्होंने जमनालाल बजाजको गोद लिया था
४ से १०. नाम मूलमें छोड दिये गये हैं।

२१. पत्र : ख्वाजा साहब मुहम्मदको

महाबलेश्वर
२६ अप्रैल, १९४५

भाई ख्वाजासाहेब,

प्यारेलालजी पर आपका खत पढा। मैं आपका तरजुमा पढ रहा हूं। बहुत आस्ते आस्ते। समय नहीं मिलता, लेकिन मेरी राय क्या कामकी? सच्ची राय डा० महमूदकी[1]। मैं तो काम चलाउ उर्दु जानता हूं। आपने तरजुमा किया वही मेरे हिसाबसे अच्छी बात है इतना मैं कह सकता हूं।

आपका,
मो० क० गांधी

ख्वाजा साहब मुहम्मद
रिटायर्ड प्रिन्सिपल, इस्लामिया कालेज
दिल्ली गेटके बाहर
लाहौर[2]

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

२२. पत्र : दीप्ति दासगुप्तको

महाबलेश्वर
२६ अप्रैल, १९४५

चि० दिप्ती दासगुप्ता,

दीर्घायु बनो और देससेवा करो।

मो० क० गांधीके आशीर्वाद

श्री दीप्ति दासगुप्त
मार्फत श्री खगेन्द्रनाथ दासगुप्त
जलपाईगुड़ी, बंगाल[3]

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. सैयद महमूद, जो १९३७ से १९३९ तक बिहारके शिक्षा एवं विकास मन्त्री थे
२ और ३. पता अंग्रेजीमें है।

२३. पत्र : सुभद्राकुमारी चौहानको

महाबलेश्वर
२६ अप्रैल, १९४५

प्रिय भगिनी,

वरवधुको आशीर्वाद। देशसेवा खूब करे।

बापूके आशीर्वाद

सुभद्राकुमारी चौहान
५६९, राइट टाउन
जबलपुर सी० पी०

पत्रकी नकलसे . प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

२४. पत्र : होशियारीको

महाबलेश्वर
२६ अप्रैल, १९४५

चि० होशियारी,

तेरा दूसरा अच्छे अक्षरोमे लिखा हुआ खत मिला। ताऊजीका खत आया सो अच्छा है। 'लडका'[1] भी आवेगा। आखर बलवतसिंह तो उसे लावेंगे ही। तुमारे शुद्ध वर्तावका और तुमारे उद्यमका भी असर पडेगा ही।

बापूके आशीर्वाद

पत्रकी नकलसे . प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. गजराज

२५. पत्र : तोताराम सनाढ्यको

महाबलेश्वर
२६ अप्रैल, १९४५

भाई तोतारामजी,

तुम्हारा खत पाकर मै बहुत खुश हूआ। तुम्हारी तपश्चर्या भारी है। तुमने काफी सेवा की है।[1] अब तुम्हारा समय सेवा लेने का है। आराम लो और ईश्वर-भजन करो। हृदयसे ईश्वर भजन करना भी अपंगके लिये सेवा ही है।

तुम्हारे बारेमें मुझे खबर तो मिलती रहती थी।

चि० हरिप्रसादके[2] बारेमे ठीक खबर दी है। तुम्हारे दर्शनके लिये उनका आना धर्म है। मै तो सेवाग्राम जुलाई मासमें पहोचुगा। मेरे पास हरिप्रसादका आने का कोई धर्म नही है। मुसाफरी कठिन है और पैसे भी काफी लगते हैं। उनको खत लिखता हूं।[3]

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० २५३४) से

२६. पत्र : हरिप्रसादको

महाबलेश्वर
२६ अप्रैल, १९४५

चि० हरिप्रसाद,

तुम्हारे बारेमे पडितजीने[4] रोचक वर्णन दिया है। अच्छा है कि तुम पडितजीके दर्शनके लिये साबरमती चले जाओ। सेवाग्राम आने की जरूरत नही है। दूर है और किराया भी ज्यादा है। मै दो महीना तो बाहर निकालुगा। ऐसा आज तो निर्णय है।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. फीजीमें बसे भारतीयोंके लिए तोताराम सनाढ्यने काफी काम किया था।
२. तोताराम सनाढ्यके दत्तक पुत्र
३. देखिए अगला शीर्षक।
४. तोताराम सनाढ्य; देखिए पिछला शीर्षक भी।

२७. पत्र : अमतुस्सलामको

महाबलेश्वर
२६ अप्रैल, १९४५

बेटी,

तेरा खत मिला। तूझे पैसा न मिले तो काम मत कर। पैसा मगनवाडीसे नही मिलेगा। पैसा तो प्र० बाबु[1] ही देवे या भगीरथजी[2]। तू पैसे के लिये कोशीश मत कर। ऐसे ही मिले तो अच्छा है। घणी [घानी] के लिये आदमी तैयार है तो तू करवा सकेगी अथवा छोड़ दे। सेवा करना तेरा काम है। प्र० बाबू छोड़े तब आश्रम तो सेवा कामसे भरा है ना?

मैं माबलेश्वर [महाबलेश्वर] मे एक मास और दूसरा पंचगणीमे, फिर आश्रममे।

तेरी तबीयत अच्छी कर। लावण्यलता[3] अच्छी होगी। तूने खादी खूब बेची।[4]

बापुके आशीर्वाद

[पुनश्च :]

इसके साथ हैयातके दा० पर खत है। पढ़ और जो कह सकती है, मुझे लिख या हैयात उल्लाको या दाक्तरको।

बापु

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० ४७४) से

२८. पत्र : ओमप्रकाश गुप्तको

महाबलेश्वर
२६ अप्रैल, १९४५

चि० ओमप्रकाश,

आप आश्रमके सब नियम सुक्ष्मतासे नही पालोगे तो सिर्फ रहने से उत्तीर्ण नही होगे। तुमारे आश्रमवासीयोके प्रमाणपत्र पाना होगा। स्वभावमे उग्रता है तो निकालो।

१. सम्भवतः प्रफुल्लचन्द्र घोष

२. भगीरथ कनोडिया

३. लावण्यलता चन्दा, जिन्हें बादमें बंगालमें कस्तूरबा गांधी राष्ट्रीय स्मारक न्यासका एजेन्ट नियुक्त किया गया था

४. अमतुस्सलाम बंगालमें बरकामातामें कार्य कर रही थीं।

स्वभावदोषको जीतने की आश्रम भूमि है। सब नहीं जीतते है। तुम्हारे तो जीतना है। तुम्हारे आदर्शरूप बनना है। अगर आश्रम अच्छा न लगे तो वहीं रहना अनावश्यक समजो।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी नकल (सी० डब्ल्यू० ५८९६) से। सौजन्य : मुन्नालाल गं० शाह

२९. पत्र : बलवन्तसिहको

महाबलेश्वर
२६ अप्रैल, १९४५

चि० बलवंतसिह,

ओमप्रकाशको लाये उसमें दुःख मानने का कोई कारण नहीं। ऐसे लोग आ जायेंगे तो क्या करेंगे। जाणबूझकर तो नहीं लाये हो मैंने उनसे लिखा है।[1] शायद समझ जायंगे।

होशियारीका ठीक चलता है।

तुमको इंग्रेजी पढाने के बारेमें दा० केलकरने लिखा है। मैंने तो रोका है। सब ज्ञान हमारी भाषासे मिल सकता है। तुमारी इच्छा ही हो तो मैं रोकुंगा नहीं, उत्तेजन नहीं दूंगा।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० १९५९) से

३०. पत्र : कृष्णचन्द्रको

महाबलेश्वर
२६ अप्रैल, १९४५

चि० कृ० चं०,

रामनारायणकी[2] तबीयतके बारेमें पढ़कर खेद हुआ। मुझे लिखा करो। आशा रखें कि वे अच्छे हो जायेंगे।

बा० का वजन बहुत कम हो गया। खजूर आश्रममें अब नहीं है? मेरे कमरेमें देखो। अगर है तो बा० को दे दो। नहीं है तो रामेश्वरदास बिड़लासे चिमनलाल लिखे। खजूर आ जायगा।

१. देखिए पिछला शीर्षक।
२. रामनारायण चौधरी

ओमप्रकाशका समजा। हो सके इतना सहन करो।[1]

आशादेवीसे और बात करो। सहज हो सके वही कीया जाय। स्राव बंद हो जायेगा। गरम रेतपर सोना किसीका धर्म नही है। तुम्हारे मेरी पाट लेना। रेत पर थोड़ा पानी छीटकने से गरमी नीकल जायेगी।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० ४५११) से। सी० डब्ल्यू० ५८९७ से भी; सौजन्य : कृष्णचन्द्र

३१. पत्र : गंगी आनन्द हिंगोरानीको

महाबलेश्वर
२६ अप्रैल, १९४५

बेटी गंगी,

तेरा खत बहुत अच्छा है। आनंदने[2] चिट्ठी डाली तो अच्छा हुआ। दाक्तर की दवा ही चलनी चाहिये। चिट्ठीका अर्थ यही है। मुझे खत लिखा कर।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी माइक्रोफिल्मसे। सौजन्य : राष्ट्रीय अभिलेखागार और आनन्द तो० हिंगोरानी

३२. पत्र : आनन्द तोताराम हिंगोरानीको

२६ अप्रैल, १९४५

चि० आनंद,

मैं कैसे भूल सकता हू? तुमारे लिये रोज[3] लिखना ही पडता है ना? तुमारी बीमारी अच्छी नही लगती। अपने आप इलाज करने मे खतरा है ही। गंगीसे मैंने

१. देखिए पिछला शीर्षक भी।
२. गंगी हिंगोरानीके पति
३. देखिए "रोजके विचार", १६-७-१९४५।

लिखा है उसके मुताबिक करना। अब तो जब दा० राजुके[1] पास जाओ तब उनका इलाज करना। अब तो दाक्तरका करके अच्छे हो जाओ। महादेवका[2] क्या?

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी माइक्रोफिल्मसे। सौजन्य : राष्ट्रीय अभिलेखागार और आनन्द तो० हिंगोरानी

३३. पत्र : डी० रामस्वामीको

महाबलेश्वर
२७ अप्रैल, १९४५

प्रिय रामस्वामी,

तुम्हारा पोस्टकार्ड मिला। मुझे खयाल नहीं कि च० ने मुझसे तुम्हारे विषयमें कोई खास बात कही थी।

मुझे खुशी है कि तुम अच्छा कार्य कर रहे हो और नियमपूर्वक तकलीपर कातते हो।

तुम्हारी गति और अंक क्या हैं? क्या तुम अपनी पूनियाँ स्वयं बनाते हो?

बापू

श्री डी० रामस्वामी
मार्फत ईस्टर्न ड्रग कम्पनी
मचिलीपटनम, कृष्णा जिला
आन्ध्र

अंग्रेजीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

३४. पत्र : नारणदास गांधीको

महाबलेश्वर
२७ अप्रैल, १९४५

चि० नारणदास,

जो सुधार मुझे सूझे, वे कर दिये हैं। देख लेना। अब मुझे और कोई सुझाव नहीं देना है। बम्बईकी बात भी ठीक है। कनैयोका[3] नाम बम्बईके सम्बन्धमें है।

१. डॉ० कृष्ण राजू
२. आनन्द तो० हिंगोरानीके पुत्र
३. नारणदास गांधीके पुत्र कनु गांधी

इसका अर्थ यह हुआ उसे उतने माहतक बम्बईमें रहना चाहिए। इसमें मुझे कोई आपत्ति नही है। तुम दोनो इसपर विचार कर लेना। वह जहाँ भी रहेगा अपना नाम सुशोभित करेगा।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी माइक्रोफिल्म (एम० एम० यू०/२) से। सी० डब्ल्यू० ८६२३ से भी; सौजन्य : नारणदास गांधी

३५. पत्र : नारणदास गांधीको

महाबलेश्वर
२७ अप्रैल, १९४५

चि० नारणदास,

यह योजना[1] मुझे अच्छी लगी। इसमे दो कसौटियाँ है — सूत देने की और पैसा देने की। दोनोंमें महत्त्व दाताओकी सख्याका है। सूत बलका साधन है। 'धागे जितने ज्यादा होगे मजबूती भी उतनी ज्यादा होगी', यह कहावत भी इसी सत्यका संकेत करती है। सूतका एक धागा टूट सकता है। किन्तु अनेक धागोसे बनी हुई रस्सी उसके धागोंकी तुलनामें बहुत ज्यादा वजन खीच सकती है। रस्सीकी ताकत उसके धागोकी संख्यापर निर्भर है . . .[2] इसलिए कोई व्यक्ति कितना भी सूत दे वह और लोगोके जितना ही माना जायेगा। ७६ पैसेसे ज्यादा देनेवाले कई लोग मिलेगे। . . .[3] तुमने अधिक न लेनेका जो निर्णय किया है वह ठीक है। इसी प्रकार [इससे कम भी][4] नही लिया जा सकता। ऐसा न करे तो हमारा हिसाब गड़बड़ हो जायेगा। कम ही . . .।[5] हमारे इस गरीब देशमें ऐसे करोड़ों लोग है जो एक पाई ही दे सकते है। जिनके पास एक पाई भी नही है ऐसे भी करोड़ो होगे। इन गरीबोमे से जिनमें देनेका उत्साह है वे मिलकर किसी एक प्रतिनिधिके नामसे ७६ पैसे भर दे। इसी प्रकार किसी कुटुम्बमे जितने लोग हो उतने सब प्रति व्यक्ति ७६ पैसा भरें। इतना कहने के बाद भी मैं तो यही कहूँगा कि मेरी पसन्दगी सूतके लिए है।

बापूके आशीर्वाद

[गुजरातीसे]

बापुना पत्रो – ९ : श्री नारणदास गांधीने, भाग २, पृ० ३०४

१. गांधीजी की ७६ वी जन्मतिथि मनाने की योजना, जिसके अनुसार हर व्यक्ति गांधीजी को कमसे-कम एक गुंडी सूत और ७६ पैसे भेंट-स्वरूप देनेवाला था।

२, ३ और ५. साधन-सूत्रमें यहाँ छूटा हुआ है।

४. हिन्दू, १५-७-१९४५ से

३६. पत्र : मणिबहिन पटेलको

महाबलेश्वर
२७ अप्रैल, १९४५

चि० मणि,

तेरा पत्र मिला। पढ़ा। पढ़ते ही फाड़ दिया। इसे भूलसे रख लिया गया था, परन्तु निजी देखकर इसे तुरन्त ही मेरे पास पहुँचा दिया गया।

परन्तु तूने जो लिखा उसमें निजी क्या है? मैंने तो तेरी इच्छाका आदर करने के लिए और तुझे निर्भय करने के लिए ही फाड़ा है और इसे तेरे पास ऐसे ही भेज दूंगा।

हममें सबसे अधिक उपवास तो शायद मैंने किये होंगे। दक्षिण आफ्रिकामें तो मैं चाहे जिस बहाने उपवास कर डालता था। एक वर्षसे अधिकतक एकाशन भी किया। मेरी राय है कि उपवासकी अपेक्षा अल्पाहार ज्यादा कठिन चीज है। उपवासका स्थान है, मगर मृत्युके निमित्त हरगिज नहीं। जन्मके निमित्त क्यों नहीं? मैंने यह भी किया है, परन्तु विचार करके छोड़ दिया। इससे तू अपने एकाशनकी[1] बात समझ ले। शरीर ईश्वरका घर है और इसी रूपमें उसकी रक्षा होनी चाहिए।

तेरा सुघड़पन क्या मैं नहीं जानता? मोतीलालजीने[2] तो तुझे पहला नम्बर दिया था। परन्तु तुझे साथियोंके प्रति उदार रहना चाहिए। तू ऐसा नहीं करती इसलिए तेरा पड़ोसी-धर्म भंग होता है। फिर तू अपना दोष मान लेती है। दोष मानना या तो दोषको पकड़ रखने के लिए या दोषको दूर करने के लिए होता है। क्या तू अपने दोषको निकालना नहीं चाहती? तू अपनी सुघड़ता दूसरोंको दे और अपनी [सुघड़ता] की रक्षा तो कर ही। अपने आसपासकी जगह तू मेरी तरह अपने लायक साफ कर लेना। जेलमें रहकर भी तूने यह कला नहीं सीखी? महादेवके[3] पाससे तूने क्या लिया? उनकी उदारता तूने देखी थी?

इतना तो तेरे लिए बहुत हो गया। अगर पूरा जवाब मिल गया हो तो यहाँ आ जा। मेरे लिए मत आना। आये तो धर्म समझकर और मनको उदार बनाकर या उसे उदार बनाने के लिए आना। अगर तुझे बुरा लगा हो तो फिर यहाँ आकर क्या लेगी? जब हम अपने दोषोंको पहाड़के समान मानें और दूसरोंके पहाड़ जैसे दोषोंको भी रजकणके समान मानें, तभी मेल बैठेगा।

१. देखिए खण्ड ७९, पृ० ४४२।

२. मोतीलाल नेहरू

३. महादेव देसाई

यदि तू कुछ भी खानगी न रखने का नियम बनाने का निश्चय करे तो इस पत्रकी नकल भेज देना। यह बहुतोंके समझने लायक है।

बापूके आशीर्वाद

चि० मणिबहिन वल्लभभाई पटेल
मार्फत डॉ० कानूगा
अहमदाबाद, बी० बी० सी० आई० रेलवे

[गुजरातीसे]
बापुना पत्रो – ४ : मणिबहेन पटेलने, पृ० १३३-३४

३७. पत्र : सुशीला गांधीको

महाबलेश्वर
२७ अप्रैल, १९४५

चि० सुशीला,

तेरा पोस्टकार्ड मिला। यहाँका तो तुझे कड़वा अनुभव ही होगा क्योंकि देश कंगाल है। बा ने मेरे साथ लम्बा जीवन बिताया, इसलिए उसकी जगह खाली लगती है और लगनी ही चाहिए। इसके अतिरिक्त वह मुझमें एकरूप हो गई थी।

मणिलालका[1] पत्र आया था। वह कल अहमदाबाद जायेगा। वहाँसे जब वापस आयेगा तब यहाँके बारेमें विचार होगा। मैं समझता हूँ कि तू और बच्चे उसके साथ होंगे। माताजी[2] चंगी हो गई होंगी। उनके बुखारके बारेमें कि०[3] ने मुझे लिखा था। उम्मीद है चि० गोमती[4] ठीक हो गई होगी। मैं ठीक हूँ। आज खूब सर्दी पड़ रही है। सीतासे[5] कहना कि मुझे पत्र लिखना बन्द नहीं करना है।

बापूके आशीर्वाद

सुशीला गांधी
नानाभाईका बंगला
अकोला, बरार

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. सुशीला गांधीके पति
२. विजयाबहिन मशरूवाला
३ और ४. किशोरलाल घनश्याम मशरूवाला और उनकी पत्नी
५. सुशीला गांधीकी पुत्री

३८. पत्र : मोहनलाल भट्टको

महाबलेश्वर
२७ अप्रैल, १९४५

चि० मोहनलाल,[1]

तुम्हारा पत्र अच्छा है। स्पष्ट है। मेरी राय यह है। जिन्होंने हिन्दुस्तानी नही ली है और न जानते ही है वे आधी राष्ट्रभाषा पढते है। इसलिए मेरा पक्षपात तो हिन्दुस्तानीके प्रति है। हम जब राष्ट्रभाषाकी बात करते है तब हम उसमें उर्दू लिपिवालो को भी शामिल करते है। मैंने जो व्याख्या सम्मेलनके[2] सम्मुख रखी थी उसे स्वीकार कर लिया गया है। हिन्दी वह है जो हिन्दू-मुसलमान बोलते है और नागरी या उर्दू लिपिमें लिखते है। यदि यह बात सही है तो तुम्हे और मुझे दोनों लिपियों और दोनों रूपोंका ज्ञान प्राप्त करना होगा। यदि ऐसा है तो तुम्हें उर्दू लिपिका पुनरुद्धार करना चाहिए और उसका अभ्यास करना चाहिए। इसके अतिरिक्त वैमनस्यको दूर करने के लिए तुम्हें हिन्दुस्तानी प्रचारमे शामिल हो जाना चाहिए। यदि सभी लोग ऐसा करें तो वैमनस्य दूर हो जाये।

टण्डनजीके[3] साथ मेरा मेल ठीकसे नही बैठता है, हालाँकि अभी विचारोका आदान-प्रदान होता रहता है।

इन्दु[4] तो अब इतनी बड़ी हो गई होगी कि पहचानी न जा सके। तुम सबको आशीर्वाद।

बापू

मोहनलाल भट्ट
२५, नूतन सोसाइटी
एलिसब्रिज, अहमदाबाद

गुजरातीकी नकलसे . प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. हिन्दी प्रचार समिति, वर्धाके मन्त्री; नवजीवन प्रेसके भूतपूर्व प्रबन्धक

२. १९३५ में इन्दौरमें हुआ हिन्दी साहित्य सम्मेलन; देखिए खण्ड ६१, पृ० ३३-३४।

३. पुरुषोत्तमदास टण्डन, हिन्दी भाषा और साहित्यके समर्थक; १९३७ से १९४६ तक संयुक्त प्रान्त विधान-सभाके अध्यक्ष तथा १९५०-५१ में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेसके अध्यक्ष

४. मोहनलाल भट्टकी पुत्री

३९. पत्र : कान्तिलालको

महाबलेश्वर
२७ अप्रैल, १९४५

चि० कान्ति,

तेरा पत्र मिला। तू बम्बईमें आया था इसकी मुझे याद है। यह सच है कि मैं काममे बहुत व्यस्त था। सन्देश यह है:

दक्षिण आफ्रिकामें सब एक होकर रहे और हिन्दुस्तानका नाम रोशन करे। सब लोग सेवाभावसे रहें।

मणिलाल और सुशीला अभी नही आये। आयेंगे।

सबको मेरा आशीर्वाद कहना।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी नकलसे . प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

४०. पत्र : अमृतलाल चटर्जीको

महाबलेश्वर
२७ अप्रैल, १९४५

भाई अमृतलाल,

तुमारा खत मिला। चि० आभा[1] तो बोरिवलीका खतम होने पर कनुभाईके[2] साथ राजकोट जायगी। लडकिओको वजन खोना नही चाहीये था। आवश्यक होगा तो चि० वीणाको[3] मेरे पास बुला लुगा। दोनो लड़किओकी चिंता छोडो, सेलेन[4] अगर कलकत्तेमें अच्छा हो सके तो अवश्य ले जाओ। मेरा ख्याल है कि सेलेनने कुछ गलती की है। सुशीला बहिनकी दवासे बिलकुल अच्छा हो गया था, लेकिन

१ और २. अमृतलाल चटर्जीकी पुत्री और उनके पति कनु गांधी

३. अमृतलाल चटर्जीकी ज्येष्ठ पुत्री वीणा चटर्जी, जो आभा गांधीके साथ बोरिवली प्रशिक्षण शिबिरमें प्रशिक्षण प्राप्त कर रही थीं।

४. अमृतलाल चटर्जीके पुत्र

जो उचित लगे सो करो। अगर बंगालसे कागद[1] आ जावे तो शांतिकुमार भाईके साथ भेजो। आने की आवश्यकता मैं नहीं महसूस करता।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० १०४०२) से; सौजन्य : अमृतलाल चटर्जी। प्यारेलाल पेपर्ससे भी; सौजन्य : प्यारेलाल

४१. पत्र : जी० रामचन्द्र रावको

महाबलेश्वर
२७ अप्रैल, १९४५

भाई रामचंद्रराव,

तुमारा सबके मिलकर तीन खत मिले। अगर सचमुच सबको सेवाग्रामसे लाभ मिला है तो यश तुम लोगोंका है। चाहे वही लेते हैं। क्योंकि मैंने ऐसे लोगोंको भी पाये हैं जिनोंने कुछ नहि लिया। मुझे लिखा करो।

बापुके सबको आशीर्वाद

प्रो० जी० रामचन्द्र राव
एथीस्टिक सेन्टर
पो० ऑ० मुमुनूर
कृष्णा जिला
मद्रास प्रेजीडेन्सी[2]

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. अमृतलाल चटर्जी सेनामें उन व्यक्तियोंके बारेमें रिपोर्ट प्राप्त करने की प्रतीक्षा कर रहे थे जो अल्पवयस्क कन्याओंको अनैतिक जीवन व्यतीत करने के लिए बाध्य करते थे। यहाँ उसी रिपोर्टका उल्लेख है। देखिए खण्ड ७९, पृ० ३५०।

२. पता अंग्रेजीमें है।

४२. पत्र : रामभाऊ भोगेको

महाबलेश्वर
२७ अप्रैल, १९४५

भाई रामभाऊ,

तुम्हारा खत मिला। जो सजा मिली भले मिलि। तुमारी धर्मपत्नी और बच्चेकी देखभाल होती ही रहेगी ऐसा मैं मानता हू।

अच्छे रहो।

बापुके आशीर्वाद

डॉ० रामभाऊ भोगे
डिस्ट्रिक्ट प्रिजन
धूलिया, खानदेश[1]

पत्रकी नकलसे . प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य . प्यारेलाल

४३. सन्देश : श्रीलंकाकी जनताको[2]

महाबलेश्वर
२७ अप्रैल, १९४५

गांधीजी ने कहा कि भारत और लंका एक हैं; लंका भारत-रूपी लम्बी माला की लटकनके समान है।

उन्होंने कहा कि मुझे ऐसा लगा है कि लंकाके लोग भारतसे अलग होना चाहते है, हालाँकि दोनोंकी संस्कृति और समस्याएँ एक-जैसी हैं। फिर भी मुझे यह जानकर खुशी हुई कि लंकामें ऐसे लोग है जो इस एकताको अनुभव करते है। ऐसे लोगोंको मेरे किसी सन्देशकी आवश्यकता नहीं है। उन्हें केवल चरखे, खादी और रचनात्मक कार्यक्रमको, जिसमें ग्रामोद्धार और राष्ट्रभाषा-प्रचार आदि शामिल हैं, समझ लेना चाहिए। गांधीजी ने पन्द्रह वर्ष पहलेकी[3] अपनी लंका-यात्राकी चर्चा करते हुए कहा कि उस समय मुझे वहाँके लोगोंमें यूरोपवालों और विदेशियोंकी आदतें और रिवाज

१. पता अंग्रेजीमें है।

२. यह सन्देश मैसूरमें सीलोनीज यूनियनके भूतपूर्व प्रधान एन० ए० एफ० मीमनागेको दिया गया था।

३ नवम्बर, १९२७ में; देखिए खण्ड ३५।

४८. पत्र : आई० एच० सोनवणेको

महाबलेश्वर
२८ अप्रैल, १९४५

भाई सोनवणे,

तुमने मुझे ठीक लिखा है। जब नौकरीमे तुम्हारी शांति नही और पगार पूरा नही तब नौकरी छोडो और धंदेमें चढो। नौकरी छोडने के पहले 'मथुरादासजीसे'[1] सलाह ले लो।

क्या हुआ मुझे खबर देना।

बापुके आशीर्वाद

श्री आई० एच० सोनवणे
कमरा नं० ७८, दूसरी मंजिल
१९७-ए, लेडी हार्डिंग रोड
बम्बई २८[2]

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

४९. पत्र : भागलपुर जिला कांग्रेस कमेटीको

महाबलेश्वर
२८ अप्रैल, १९४५

भाइयो,

आप लोगोंका पत्र मिला। मेरा अभिप्राय है कि इस हडतालको चलने देना। कई केदी मरे तो मरने देना। हम भीतरकी हालत कैसे जाने? हम जीना न सीखें तो मरना सीखे। या दोनों सीखे। मेरे हाथोंमे कुछ रहता तो मैं जान लेता यह क्या है?

बापुके आशीर्वाद

मंत्रीजी
जिल्ला कांग्रेस
रचनात्मक दफ्तर
आदर्श भोजनालय, सुजागंज
भागलपुर, बिहार

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. मथुरादास त्रिकमजी
२. पता अंग्रेजीमें है।

५०. पत्र : ओमप्रकाश गुप्तको

महाबलेश्वर
२८ अप्रैल, १९४५

चि० ओमप्रकाश,

तुम्हारा खत पढ़ गया। साबका भी। पुस्तकोंके बारेमें लिखा है। ठीक लगता है। आश्रमके बारेमें तो मैंने काफी लिखा है।[1] सबसे मिल जाओ।

कनु आ गया सो अच्छा हुआ।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी नकलसे . प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

५१. पत्र : गोविन्ददासको

२८ अप्रैल, १९४५

भाई गोविंददास,

तुम्हारा खत मिला है। चक्करका दोरा बंध होना ही चाहिये। नैसर्गिक उपचारकी ओर ध्यान दो। अल्लाहबादमें तो कोई सज्जन है। दाक्तरलोग तो हैं ही।

बापुके आशीर्वाद

शेठ गोविंददास
जबलपुर सी० पी०

पत्रकी नकलसे · प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. देखिए पृ० १७-१८।

५२. पत्र : लक्ष्मीदेवीको

२८ अप्रैल, १९४५

चि० लक्ष्मीदेवी,

सोचने के लिये तुमारा खत रखा। मेरा ख्याल है कि इस बारेमें जैसे विचित्र-भाई और धीरेनभाई कहें वही किया जाय। तुमारा शरीर अच्छा रखो।

बापुके आशीर्वाद

लक्ष्मीदेवी हरदोइकी
कस्तुरबा निधि शिबिर
बोरीवली

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

५३. पत्र : कृष्णचन्द्रको

महाबलेश्वर
२८ अप्रैल, १९४५

चि० कृ० चं०,

तुमारे खत सब पढ़ गया हूं। मैंने काफी लिखा है इसलिए अब नहीं लिखुंगा। मेरे पास काम भी काफी बढ गया है।

बापुके आशीर्वाद

[पुनश्च :]

बाहरसे आनेवालोके बारेमें तुमने ठीक लिखा है। किसी भी उपायसे आश्रम आश्रम बन जाय और सब नियमबद्ध चलें तो अच्छा ही है।

बापु

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० ४५१२) से

५४. पत्र : चिमनलाल नरसिंहदास शाहको

२९ अप्रैल, १९४५

चि० चिमनलाल,

अगर चि० रामदास[1] कुछ महीनोके लिए मैसूर जाना चाहे, तो उसे जाने देना। गुड़ रखने के लिए एक कोठा बनवाने के बारेमें मै लिखवा चुका हूँ। यह कोठा आश्रमका होगा। मैं समझता हूँ, यह खर्च तुम तभी करोगे, जब पारनेरकरकी[2] वैसी इच्छा होगी। जिस घरके बारेमे तुम लिख रहे हो आश्रममें वह भी बनाना।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० १०६२७) से

५५. पत्र : मृदुला साराभाईको

महाबलेश्वर
२९ अप्रैल, १९४५

चि० मृदु,

तुझे बुखार आता रहता है और तू दवाएँ लेती रहती है, यह अच्छी बात नही है—ऐसा मैं पहले भी कह चुका हूँ और अब फिर कहता हूँ। इस तरह सेवा नही होती।

इसके साथ रेहाना बहिनका पत्र है। उसकी अनुमति लेकर ही इसे तुम्हें भेज रहा हूँ।[3] यह पत्र लिखने की तारीखके बाद स्थिति बदल गई, ऐसा मैं समझा हूँ। तथापि यह पत्र तेरे पढने और विचार करने-जैसा है। रेहानाको लिखना हो और समय हो तो लिखना। मुझे जो लिखना चाहो वह तो लिखना ही। उतावली न करना।

सारा ऑफिस वर्धा ले जाने की बात चल रही है। बापाकी [ऐसी ही] इच्छा है। शान्तिकुमार और श्यामलाल भी चाहते है। और जैसा कि मै समझता हूँ घनश्यामदास[4] भी यही चाहते हैं। मेरा विचार तो शुरूसे ही यह था। अब अपना

१. एच० सी० दासप्पाके पुत्र
२. यशवन्त महादेव पारनेरकर
३. देखिए पृ० ८।
४. घनश्यामदास बिड़ला

विचार बताना। जो व्यवस्था मैंने देखी उससे मुझे यह तो मालूम हो ही गया कि उससे ग्राम-भावना पैदा नही होती। काम कठिन है और आसान भी है। यदि हम इसे समझ सके और उसके अनुरूप नीव रखी जाये तो यह सरल है, अन्यथा कठिन है, तथा और भी कठिन हो जायेगा। बहुत-कुछ तुझपर निर्भर करता है। बिना सोचे-समझे मैं तुझसे कोई काम नही लेना चाहता। उसमें तेरा दुरुपयोग होगा। फुर्सतमें तू मुझे अपने विचार बताना।

बापूके आशीर्वाद

मृदुलाबहिन साराभाई

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

५६. पत्र : छोटूभाई सुथारको

महाबलेश्वर
२९ अप्रैल, १९४५

भाई छोटूभाई,

तुम्हारा पत्र और नक्शा मिले है। तुम्हारी टिप्पणीका अध्ययन कर रहा हूँ, इससे मुझे मदद मिलेगी। तुम्हे मौलिक चीज तैयार करनी है। मराठीमें तो उस तरहकी जराजरकी लिखी एक बहुत अच्छी पुस्तक है। सुना है कि बंगालीमे भी है। संयुक्त प्रान्तमें एक सज्जन अच्छा काम कर रहे हैं। 'हिन्दू' से पता चलता है कि दक्षिण भारतमे भी कुछ लोग है। अब तुम क्या करते हो, यह देखना है। इसका उत्तर देने की जरूरत नही।

बापूके आशीर्वाद

श्री छोटूभाई सुथार
तारक मण्डल
आनन्द.

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

५७. पत्र : दौलतराय दवेको

महाबलेश्वर
२९ अप्रैल, १९४५

भाई दौलतराय,

मेरे अन्तरंग कौन है? मेरी स्थिति जाने बिना तुम मेरी रक्षा करनेवाले लोगोपर नाराज होते हो। मै जो थोडा-बहुत काम कर सकता हूँ वह भी उन लोगोकी बदौलत कर सकता हूँ। अगर तुम्हे नाराज होना ही है- तो तुम्हे मुझपर होना चाहिए क्योकि मै सारे काम नही कर सकता और सब लोगोको सन्तुष्ट नही कर सकता। तुम्हारे लिए मुझसे जो हो सकता था वह मैने किया, लेकिन तुम्हारी जरूरतोकी कोई सीमा ही नही है कि मैं उन्हे पूरा कर सकूँ। यह मेरा दोष अवश्य है, लेकिन मै विवश हूँ।

बापूके आशीर्वाद

श्री दौलतराय दवे
मधुकुंज, चित्तरंजन रोड
ईस्ट विले पार्ले

गुजरातीकी नकलसे प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य . प्यारेलाल

५८. पत्र : पुरुषोत्तम गांधीको

महाबलेश्वर
२९ अप्रैल, १९४५

चि० पुरुषोत्तम,

तेरा पत्र पढ गया। जो-कुछ तूने लिखा है ठीक लगता है, लेकिन मै ओंकारनाथको[1] आशीर्वाद दे चुका हूँ। उसने अपना परिचय विष्णु दिगम्बरके[2] शिष्यके रूपमे दिया। उसे मालवीयजी[3] और राधाकृष्णनजीके[4] आशीर्वाद प्राप्त है। मैने जिन संशोधनोका सुझाव दिया था वह उसने कर दिये। तुम्हारे साथ मतभेद होने की उसने चर्चा तक नही की। वह तुमसे मिला था यह बात भी उसने मुझे बताई और मुझसे

१. ओंकारनाथ ठाकुरकी संगीत संस्थाके सम्बन्धमें; देखिए खण्ड ७९, पृ० ३८४।
२. विष्णु दिगम्बर पलुस्कर
३. मदनमोहन मालवीय
४. सर्वपल्ली राधाकृष्णन

आशीर्वादका पत्र लिया। उसका विद्यापीठ सर्वव्यापी है और तुम्हारा भी। ऐसा कैसे हो सकता है? इसके बारेमें विचार करना। मेरा आशीर्वाद तो एक ओर रहा, लेकिन तुमसे इस झगड़ेमें कैसे पड़ा जा सकता है?

तुम्हारे कामके लिए विष्णु [दिगम्बर] यूनिवर्सिटी ऑफ म्यूजिकका क्या काम? विष्णु दिगम्बर विद्यापीठ नाममें क्या बुराई है। अंग्रेजी नाम क्या अधिक सुन्दर लगता है? इस बातकी चर्चा मैंने ओंकारनाथसे भी की थी। सब-कुछ हिन्दुस्तानीमें करने का सुझाव भी दिया था। उसने स्वीकार तो किया था। फिर क्या हुआ, सो नहीं जानता।

जन्म दिवसके लिए: "खूब तरक्की करो।"

चि० नारणदासके मूल पत्रका उत्तर[1] तो मैंने उसी दिन दे दिया था। इसलिए इस बार तो कुछ भी लिखने को नहीं है।

पुरुषोत्तम नारणदास गांधी

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

५९. पत्र : गजानन नायकको

महाबलेश्वर
२९ अप्रैल, १९४५

ताड़गुड़के बारेमें मेरा अभिप्राय मक्कम है। जहां ताड़ या ताड़ी होते हैं वहां ताड़गुड़ बनाने की छूट्टी होनी चाहिये। इस गुड़से और गन्नाके गुड़से इस बारेमें हमारी सब हाजत पूरी हो सकती है और ताड़गुड़ गन्नाके गुड़से अच्छा है ऐसा मेरा मत है।[2]

चि० गजानन,[3]

यह तुम्हारे लिए है। ताड़गुड़के बारेमें सचमुच भूल गया था। उतावलीमें लिखा था। वह अन्तिम दिन था। तुम जोड़ सकते थे और मुझे तार दे सकते थे। मैंने "इत्यादि" लिखा है, इसमें गुड़ आ जाता है। गुड़ने कुछ खोया नहीं है। यह कहां कहवा है?

बापूके आशीर्वाद

श्री गजानन
मगनवाड़ी
वर्धा

हिन्दी और गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. देखिए पृ० २१।
२. इसके बादका अंश गुजरातीमें है।
३. अ० भा० ग्रामोद्योग संघके गुड़ विभागके

६०. पत्र : अमृतलाल नानावटीको

महाबलेश्वर
२९ अप्रैल, १९४५

चि० अमृतलाल,

तुम्हारा पत्र मिला। मूल पत्र प्यारेलाल पढ़ रहा है। टण्डनजीका[1] जवाब आयेगा तो भी तुरन्त नही आयेगा। हमे अपना काम करते जाना है। जो होना होगा सो होगा। डॉ० ताराचन्दके पत्रकी नकल तुम्हें भेजी है। तुम्हारे उत्तरकी प्रतीक्षा कर रहा हूँ।

चि० रामदासको साथ ले जाना। यशोधराबहिनको[2] अथवा रामदासको, उनका दिल दुखाकर कैसे रखूं? अपनी ओरसे मैंने उसे फूलकी तरह रखा है। मेरी तो दृढ राय है कि उसका विकास आश्रममें ही होगा। लेकिन यदि उसका मन न माने तो नही हो सकता। यदि वह वापस आता है तो प्रसन्न मनसे आये, जबरदस्ती नही। तुम स्वस्थ होकर आना।

बापूके आशीर्वाद

श्री अमृतलाल नानावटी
गुजरात विद्यापीठ
अहमदाबाद

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

६१. पत्र : प्रभाकरको

महाबलेश्वर
२९ अप्रैल, १९४५

चि० प्रभाकर,

चि० रामदास यशोधरा देवी और नाणावटीके साथ मैसूर जाना चाहता है तो उनको जाने दो। वापिस आयेगा तो उनको संभालेगें। तुम्हारा स्वयं मालिश कैसे चलता है।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० ९०२६) से। सी० डब्ल्यू० ९१५० से भी; सौजन्य : प्रभाकर

१. पुरुषोत्तमदास टण्डन
२. यशोधरा दासप्पा

६२. पत्र : यशोधरा दासप्पाको

महाबलेश्वर
२९ अप्रैल, १९४५

चि० यशोधरा,

मुझे चि० नाणावटीने चि० रामदास बारेमें लिखा है। जब रामदासका दिल मैसुर आने का है और उनकी तबीयत अच्छी नहीं रहती तो भले तुमारे साथ जावे, और अच्छा लगे तो वापीस आवे। मैं सेवाग्राम लिखता हूं। तुम शांत होगी।

बापुके आशीर्वाद

श्री यशोधरा दासप्पा
मार्फत श्री एन० एस० गुलाबी
सनीसाइड, जिमखाना रोड, माटुंगा, बम्बई[1]

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

६३. पत्र : कमलनयन बजाजको

महाबलेश्वर
२९ अप्रैल, १९४५

चि० कमलनयन,[2]

तुमारा खत मिला। वर्माका खत माने[3] दिया था मुझे याद है। अब हाथमें नहीं आता। शायद सेवाग्राममें पड़ा है। क्या था कुछ स्मरण है?

तुमारे और सत्यनारायणका आना हैं तब आ जाओ।

मेरा ठीक चलता है। उपचार शुरु नहीं हुआ है।

बापुके आशीर्वाद

श्री कमलनयन बजाज
५१, महात्मा गांधी रोड
फोर्ट, बम्बई

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. यहाँ पता अंग्रेजीमें दिया गया है।
२. जमनालाल बजाजके पुत्र
३. जानकीदेवी बजाज

६४. पत्र : एम० एस० केलकरको

महाबलेश्वर
२९ अप्रैल, १९४५

दाक्तर वरफ,

तुमारा खत मिला। बिर्ला धर्मशालामे तो महिना मास रह सकते है। वर्षामे तो मै कुछ नही कह सकुगा। सेवाग्राममे झुपड़ी बन सकती है। हरिइच्छा[1] अगर दुरस्त हो सकेगी तो मै बहुत मानुगा। बरफका इंतेजाम हो सकता है। लेपरको तो कही ग्राममे ही रखना होगा। आश्रममें रखना मुश्किल है। मेरी सलाह है कि इस बारेमे जो मनहरजी[2] कहे वही करना। उन्होंने सारा जीवन इस कामको दिया है। इसलिये उनकी इजाजत होनी चाहिये।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी नकलसे: प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य: प्यारेलाल

६५. पत्र : शान्ताको

महाबलेश्वर
२९ अप्रैल, १९४५

चि० शांता,

तुमारा खत मिला।

गुडघरके बारेमे मैंने चि०[3] भाइको लिखा है।[4] मै चाहता हूं कि तुम्हारा मार्ग साफ हो जाय। बात यह है कि वह भी तुमारी ही कृतिसे साफ होनेवाला है। इसीमे प्रौढ शिक्षण रहा है ना? यह काम शातिसे और अतर्ध्यान होने से होने-वाला है। "मै क्यो इस कार्य करा नही सकती हू" ऐसा प्रश्न बारबार अपनेसे करो। उत्तर मिल जायगा। मै तुम सबके साथ नही हू। मुझे चुभता है और नही

१. हरिइच्छा पटेल

२. मनोहर दीवान, जिन्होंने १९३६ में विनोबा भावेके ग्राम-पुनर्निमाण कार्यक्रमके अन्तर्गत ग्राम सेवा मण्डलमें कार्य करते हुए दत्तपुरमें कुष्ठरोगियोंकी सेवाके लिए महारोगी सेवा-मण्डलकी स्थापना की थी।

३. चिमनलाल नरसिंहदास शाह

४. देखिए पृ० ३३।

भी। एक दृष्टिसे अच्छा है कि मैं दूर बैठा हूं। अनाज बैंकके बारेमें देखो क्या हो सकता है। मैं जो कहूं वह अनुभवसिद्ध नहीं होगा। इसलिये अपने अनुभवसे जो रास्ता निकल सकता है सो निकालो। एक राजमार्ग मैंने बताया है उसे कभी मत छोडो। लोगोंको बुद्धि दो, धन नहीं। लोगोंको समजाने में भले कुछ देर भी लगे हानि नहीं होगी। एक वक्त काम चला तो दौडेगा।

चि० भाईका खत वापिस करता हूं।

बापुके आशीर्वाद

श्री शांताबहिन
हिंदुस्तानी तालीमी संघ
सेवाग्राम, वाया वर्धा

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

६६. पत्र : सतीशचन्द्र दासगुप्तको

महाबलेश्वर
२९ अप्रैल, १९४५

चि० सतीशबाबु,[1]

तुमारा खत मिला। मेरा आशीर्वाद तो तुमारे पास है ही, तुमारा सब काम मेरे ही लिये होता है ना? गायके बारेमें जो संग्रह[2] किया है और मौलिक लिखान किया, सो उसी वृत्तिका चिन्ह है जब तो थोडे दिनमें यहां आते हो तब औषधोंकी बात करेंगे।

सबको
बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० १९४२) से

१. बंगाल खादी प्रतिष्ठानके संस्थापक-अध्यक्ष

२. *काउ इन इंडिया*, गांधीजी ने इसकी प्रस्तावना २० मई, १९४५ को लिखी थी।

६७. पत्र : आनन्द तोताराम हिंगोरानीको

महाबलेश्वर
२९ अप्रैल, १९४५

चि० आनद,

तुमारा खत मिला। मेरा मिला होगा। भीमावरमका अब नामतक नही लुगा। बुखार आया दाक्तर आया अब तो बात ही नही हो सकती, अब तो जो दाक्तर कहे वही करो और अच्छे हो जाओ। जीवणजीसे पत्र-व्यवहार हो रहा है।[1] मै स्वतत्र नही हू। जो होगा तो निश्चयपूर्वक होगा।

बापुके आशीर्वाद

श्री आनन्द हिंगोरानी
अपर सिंघ कालोनी
कराची, सिंघ

पत्रकी माइक्रोफिल्मसे। सौजन्य · राष्ट्रीय अभिलेखागार और आनन्द तो० हिंगोरानी

६८. सन्देश : 'जवाहर जैन ज्योति' के लिए[2]

महाबलेश्वर
३० अप्रैल, १९४५

देशके जैन साघुओंको चाहिए कि वे 'युगधर्म' को और उसके प्रति अपने कर्त्तव्य को समझे। अन्यथा उनके उपदेश और शिक्षाएँ बेकार होगी।

[अंग्रेजीसे]
बॉम्बे क्रॉनिकल, १-५-१९४५

१. नवजीवन प्रेसके जीवनजी डा० देसाईसे **बापूके आशीर्वाद (रोजके विचार)** प्रकाशित करने के बारेमें। देखिए पृ० १९ भी।

२. साधन-सूत्रमें दिये समाचारमें कहा गया है कि यह सन्देश पंचगनीके वच्छराज ढोषीको **जवाहर जैन ज्योति** नामक उस पुस्तकके लिए दिया गया था, जो गांधीजी के एक अनुयायी जैन साधु "स्वर्गीय आचार्य जवाहरलालजी की जीवनी और उनकी शिक्षाओं" के बारेमें थी।

६९. प्रशंसा-पत्र : जयशंकर त्रिवेदीको

महाबलेश्वर
३० अप्रैल, १९४५

अध्यापक जयशंकर त्रिवेदीके साथ मेरा सम्बन्ध, मैं कह सकता हूँ, अनेक वर्ष रहा। उन सब वर्षोंमें मैंने उन्हें केवल परोपकारीके रूपमें ही जाना था। और इस प्रकार परोपकार करते उन्होंने स्वयं कभी नाम कमाने का विचार बिलकुल नहीं किया। वे मूक सेवक थे। उनका घर धर्मशाला हो गया था।

मो० क० गांधी

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ४७) से

७०. तार : सरोजिनी नायडूको

महाबलेश्वर
३० अप्रैल, १९४५

सरोजिनी देवी नायडू
हैदराबाद दक्षिण

तार तुम्हारे ही अनुरूप है।[1] मृत्यु मुक्ति है। स्नेह।

कर्तैया[2]

मूल अंग्रेजीसे: प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य: प्यारेलाल

१. यहाँ आशय सरोजिनी नायडूके छोटे पुत्र रणधीरकी मृत्युसे है।
२. सरोजिनी नायडूने गांधीजी को "मायका कर्तैया" उपनाम दिया था।

७१. पत्र : मुहम्मद अहमद सईद खाँको

निजी

महाबलेश्वर
३० अप्रैल, १९४५

प्रिय नवाब साहब,[१]

संलग्न[२] आपको भेज दूँ यही सबसे अच्छा होगा। यदि इसमे तथ्य सही रूपसे बताये गये है, तो वे भयावह है।

हृदयसे आपका,
मो० क० गांधी

नवाब साहब, छतारी
हैदराबाद दक्षिण

अंग्रेजीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

७२. पत्र : अमियनाथ बोसको

महाबलेश्वर
३० अप्रैल, १९४५

प्रिय अमिय,

क्या आपने हर घरके लिए बिजलीकी समस्यापर विचार किया है? कितना खर्च आयेगा? आपने मेरी जो बात उद्धृत की है, वह फिलहाल एक प्रश्न है। यदि वह सम्भव हो जाये तो वह प्रश्न नही रहेगा। मैसूरके गाँवोतक मे हर घरमे बिजली नही पहुँच पाई है। चूँकि आपका इसमे विश्वास है, इसलिए मैं चाहता हूँ कि आप हिसाब लगाये और भारतके सात लाख गाँवोके हर घरमे बिजली लगाने की भौतिक और आर्थिक सम्भावना सिद्ध करे।

१. सन् १९१९ से हैदराबादके निजामकी कार्यकारिणी परिषद्के अध्यक्ष

२. भारत ज्योति, २९-४-१९४५ में "गुलबर्गामें पुलिसकी जुल्म-जबरदस्ती" शीर्षकसे प्रकाशित समाचारकी कतरन

७६. पत्र : मुन्नालाल गंगादास शाहको

महाबलेश्वर
३० अप्रैल, १९४५

चि० मुन्नालाल,

प्रमुख यानी चिमनलाल। यदि कोई समयपर और ठीक निर्णय दे सके तो उसका तुरन्त विचार न कर सकना कोई दोष नहीं है। चिमनलाल सबसे अधिक योग्य हैं, इसलिए प्रमुख है। लेकिन दूसरा प्रमुख नियुक्त करने का आश्रमवासियोंको अधिकार है। आश्रमवासी कौन हैं, यह तय कर लेना।

यदि तुम अपनेको असमर्थ मानते हो, तब तो बहुमतका क्या एक मतका भी सवाल नहीं उठता। मान लो, सब आश्रमवासी अपनेको रसोईघर चलाने में असमर्थ मान लें, तो सामूहिक रसोईघर बिलकुल बन्द हो जाना चाहिए। फिर सब अपना-अपना रसोईघर चला लें। लेकिन ऐसे आश्रम नहीं चलेगा, यह मेरा निश्चित मत है। तब वह कोई दूसरी ही चीज होगी।

तुमसे चले जाने की प्रार्थना की जाये, यह सुझाव मैंने मान लिया था। अब, मैं उसे पूरा-पूरा वापस लेता हूँ। जहाँ हो वहीं रहो और फलो-फूलो।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ८४५५) से। सी० डब्ल्यू० ५५७६ से भी; सौजन्य : मुन्नालाल गं० शाह

७७. पत्र : टी० एन० शर्माको

महाबलेश्वर
३० अप्रैल, १९४५

भाई शर्मा,

तुमारा खत मिला। मुझे अच्छा नहीं लगता। वस्तुस्थिति बदलती है। अगर चक्रैया नैसर्गिक उपचारका काम करना चाहता है तो उसी जगहपर क्यों? भीमावरममें क्यों नहीं? आनंद निकेतन छोड़ दिया जाय। मकानपर खर्च करना अच्छा नहीं लगता है। पैसे वापिस किया जाय।

बापुके आशीर्वाद

श्री टी० एन० शर्मा
मार्फत कैमिकल्स लिमिटेड
निडदवोलु[1]

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. पता अंग्रेजीमें है।

७८. पत्र : घनश्यामसिंह गुप्तको

महाबलेश्वर
३० अप्रैल, १९४५

भाई घनश्यामसिंह,

आपका खत मिला। खेद और आश्चर्यकी बात है। जो मैं कर सकता हूं सो तो मैंने किया है।

बापुके आशीर्वाद

घनश्यामसिंह गुप्त
द्रुग

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

७९. पत्र : लक्ष्मी गांधीको

महाबलेश्वर
३० अप्रैल, १९४५

चि० लक्ष्मी,

मेरा तार मीला होगा।[1] तू और बच्चा अच्छे होंगे। अब तो ठीक दिन गये। राजाजी और देवदास[2] साथमें आवेंगे की राजाजी कुछ जल्दी आवेंगे? पापा[3] भी वहीं है क्या?

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० २०००) से

१. देखिए खण्ड ७९, पृ० ४४४।
२. लक्ष्मी गांधीके पति देवदास गांधी
३. लक्ष्मी गांधीकी बड़ी बहिन नामगिरि

८०. पत्र : सरोजिनीको

३० अप्रैल, १९४५

चि० सरोजिनीबहन,

तुमारे बारेमें बहुत शिकायत आती है। अपना खर्च भी मंत्रीको नही देती है। मेरी सलाह है कि अपना खर्च दे दो और आश्रम छोड़ो। आश्रममें रहने से तुम को कुछ भी लाभ नही पहोंच सकता है।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० ५८७०) से

८१. प्रस्तावना : 'राष्ट्रभाषा विषे विचार' की

भाई जीवनजीने[1] राष्ट्रभाषा-सम्बन्धी मेरे लेखों और भाषणोंका संग्रह ठीक समयपर प्रकाशित किया है। सब लेख तो नही पढ पाया, लेकिन पहले बीसेक पृष्ठ पढ़ गया हूँ। इस विषयपर मेरा पहला भाषण सन् १९१७ में दिया गया था।[2] तबसे समय-समयपर मैंने जो विचार व्यक्त किये है, वे ही विचार मेरे आज भी हैं। अन्तर केवल इतना है कि आज वे विचार दृढ़ हो गये हैं और उन्होंने अधिक स्पष्ट स्वरूप प्राप्त किया है। हिन्दी और उर्दूको मैंने एक माना है। मैंने हिन्दुस्तानी शब्दका प्रयोग भी धड़ल्लेसे किया है। इन्दौरके हिन्दी साहित्य सम्मेलनमें जो मैंने १९१८ में कहा[3] था, वही आज भी कह रहा हूँ। हिन्दुस्तानी यानी उर्दू नहीं, बल्कि हिन्दी-उर्दूका वह सुन्दर सम्मिश्रण, जिसे उत्तर हिन्दुस्तानके लोग समझ सकें, और जो नागरी या उर्दू किसी भी लिपिमें लिखी जाये। यही पूर्ण राष्ट्रभाषा होगी, बाकी सब अधूरी। पूर्ण राष्ट्रभाषा सीखनेवालेको आज दोनो लिपियाँ सीखनी चाहिए और दोनों रूप जानने चाहिए। राष्ट्रप्रेम उनसे यह निश्चयपूर्वक चाहता है। जो सीखेगा उसे लाभ होगा। जो नही सीखेगा वह घाटेमें रहेगा।

महाबलेश्वर, १ मई, १९४५

[गुजरातीसे]

राष्ट्रभाषा विषे विचार; प्यारेलाल पेपर्स भी। सौजन्य : प्यारेलाल

१. जीवनजी डाह्याभाई देसाई

२. भड़ौंचमें; देखिए खण्ड १४, पृ० १५-३९।

३. देखिए खण्ड १४, पृ० २७७-८१।

८२. पत्र : जीवनजी डाह्याभाई देसाईको

१ मई, १९४५

चि० जीवनजी,

संग्रह मेरे हाथमें आज ही आया है और मैं आज ही इसके पीछे "दो शब्द"[1] लिख रहा हूँ। इतना काफी होना चाहिए।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी नकलसे: प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य: प्यारेलाल

८३. तार : वासुदेव नारायणको

महाबलेश्वर
१ मई, १९४५

वासुदेव नारायण
कॉलेज
शान्तिनिकेतन

जूनके अन्ततक गैरहाजिर रहूँगा। मेरी गैरहाजिरीमें तुम्हारा सेवाग्राम जाना व्यर्थ होगा।[2]

गांधी

अंग्रेजीकी नकलसे: प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य: प्यारेलाल

१. देखिए पिछला शीर्षक।
२. देखिए पृ० ४५ भी।

८४. पत्र : एल० एन० गोपालस्वामीको

महाबलेश्वर
१ मई, १९४५

प्रिय गोपालस्वामी,[1]

तुमने इतनी सज्जनता और बुद्धिमत्ता दिखलाई है कि बापाको लिखे तुम्हारे गत मासकी २४ तारीखके पत्रके बारेमें तुम्हें लिखने का लोभ हो आया है। यदि जो मैं नीचे लिख रहा हूँ उससे तुम सहमत नहीं हो तो तुम उपर्युक्त पत्रमें प्रस्तुत किये अपने सुझावपर अमल कर सकते हो।

तुम वहांके हरिजन कोषके बारेमें इतने असहाय क्यों महसूस करते हो? तुम योग्य हो, तुम्हारा काम ठोस है और तुम्हारे पास हमेशा पर्याप्त हरिजन कोष होना चाहिए। अच्छे श्रमिकको उसके कामका फल अवश्य मिलता है, और वह श्रमिक तुम हो। जहांतक मेरा सम्बन्ध है, मैं तो चाहूँगा कि तुम सारी रकम कस्तूरबा कोषसे ही लिया करो। लेकिन आपत्ति इस बातपर होगी कि जबतक कोई महिला सचिव मिल सकती है — जैसा कि तमिलनाडुमें है — तबतक पुरुष सचिव केवल अवैतनिकसे अधिक कुछ हो। मैं चाहूँगा कि तुम इस मामलेमें अन्य लोगोंके लिए एक मिसाल बनो कि तुम्हारे यहाँ कस्तूरबा [निधि] के कर्मचारियोंमें महिलाएँ ही हों तथा पुरुष अवैतनिक हों और वे आवश्यकता होने पर केवल मार्ग-दर्शन ही करें। पुरुषोंकी तारीफ इसमें होगी कि उनसे अधिक योग्य नहीं तो उनके बराबर योग्य यदि महिला कार्यकर्त्ता मिल जायें, तो वे उन्हें अपना स्थान दे दें। ईश्वरने हमें यह बड़ा भारी मौका दिया है जब कि हम बड़े पैमानेपर गाँवोंमें पैर जमाने लगे हैं। इसलिए जो-कुछ भी कर सको, करो। मैं इससे अधिक कुछ नहीं कहता।

तुम्हारा,
बापू

श्री गोपालस्वामी
कस्तूरबा ट्रस्ट
एस० आई० एस० बिल्डिंग रायपेट्टा
मद्रास

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० १०५४८) से; सौजन्य : तमिलनाडु सरकार। प्यारेलाल पेपर्ससे भी; सौजन्य : प्यारेलाल

१ तमिलनाडु हरिजन सेवक संघके मन्त्री

८५. पत्र : गोपाल गुरुबख्शानीको

महाबलेश्वर
१ मई, १९४५

प्रिय गोपाल गुरुबख्शानी,

तुम्हारा पत्र विचित्र है। मै नही समझता कि तुम्हारे पिताजी या तुम कभी मुझसे मिले हो। क्या गोप गुरुबख्शानीसे तुम्हारा कोई सम्बन्ध है,[1] जो अपनी पत्नी सहित किसी समय आश्रममे थे और अब सिन्धमे है? बहरहाल, भोग-विलास व ऐशके बदले देश-सेवाके लिए समर्पित सुखी जीवनके लिए तुम दोनोको मेरा आशीर्वाद है। अपनी पसन्दके किसी जन-सेवा कार्यके लिए तुम्हारा २०० रुपयेका चेक मुझे मिल गया है।

तुम्हारा,
बापू

[मार्फत] प्रिन्सिपल एन० डी० गुरुबख्शानी
धर्मदास भोजराज लेन
शान्तिनिकेतन
जैकब रोड, हैदराबाद (सिन्ध)

अंग्रेजीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

८६. पत्र : बारबराको

महाबलेश्वर
१ मई, १९४५

प्रिय बारबरा,

तुम्हारा प्रसन्नता-भरा पत्र पाकर अच्छा लगा। आशा है कि इस परिवर्तनसे तुम्हारी तबीयत और भी बेहतर हो जायेगी और तुम पूर्ण स्वस्थ होकर वापस लौटोगी।

१. **रेमिनिसेन्सेज ऑफ गांधी**, पृ० १०९ पर गोप गुरुबख्शानी लिखते है कि "शिमलामें नेशनल वार फ्रन्टसे सम्बद्ध अवैतनिक युद्ध-प्रचार अधिकारी" का पद छोड़ने के बाद वह और उनकी पत्नी विमला रानी ८ फरवरी, १९४५ को सेवाग्राम आ गये थे, क्योंकि "अपने ही लोगों को कष्ट उठाते देखकर" उन्हें "उस कामसे घृणा" हो गई थी। गांधीजी ने उनका स्वागत किया और कहा: "मैं जानता हूँ कि आपके मामलेमें विचार-परिवर्तन होना सम्भव था, जैसे कि मेरे संग हुआ, क्योंकि प्रथम विश्व युद्धमें मैंने भी सरकारकी मदद की थी।"

तुम हिन्दुस्तानी जानती हो। मुझे और दूसरोंको जो हिन्दुस्तानी समझते हैं उन्हें हिन्दुस्तानीमें लिखने की कोशिश करो।

हाँ, यहाँका मौसम मुझे अपने अनुकूल लगता है।

स्नेह।

बापू

अंग्रेजीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

८७. पत्र : कानम गांधीको

महाबलेश्वर
१ मई, १९४५

चि० कानम,[1]

तेरा कार्ड पढकर बहुत प्रसन्न हुआ। तेरे आनेकी खबर मुझे पहले ही मिल गई थी। वहाँ भी ऐसे ही नम्बर प्राप्त करना जैसे नागपुरकी परीक्षामें लिये थे। सेवाग्राममें तो भलमनसाहत पर नम्बर मिलते हैं, ठीक है न? दूधमें जैसे शक्कर मिल जाती है, वैसे ही हमें समाजमें घुल-मिल जाना चाहिए।

कहना चाहिए, परीक्षामें तूने बहुत तारीफका काम किया। आगे कभी तू पहले नम्बरपर आयेगा। तुझे मालूम है न, हजारों लड़कोंमें वालजीभाईके नानुका[2] पहला नम्बर आया था? वह जैसा होशियार है, वैसा ही भला भी। तेरी लिखावट अच्छी नहीं कही जा सकती।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी नकल (सी० डब्ल्यू० ५८७४) से

८८. पत्र : श्रीमन्नारायणको

महाबलेश्वर
१ मई, १९४५

चि० श्रीमन्नारायण,

हुमायूं कबीरके 'इंडिया' के मार्च अंकमें सिकन्दर चौधरीने तुम्हारी पुस्तिकाकी[3] जो टीका की है, उसे देख लेना।

मदालसा[4] मजेमें होगी।

१. रामदास गांधीका पुत्र
२. विमलचन्द्र वा० देसाई
३. १९४४ में प्रकाशित **गांधियन प्लान ऑफ इक्नॉमिक डेवलपमेन्ट फॉर फ्री इंडिया**
४. श्रीमन्नारायणकी पत्नी

यह [पत्र] गुजरातीमें ही चल पडा, इसलिए चलने दिया।

बापुके आशीर्वाद[1]

[गुजरातीसे]
पाँचवें पुत्रको बापुके आशीर्वाद, पृ० ३०५

८९. पत्र : जयन्त श्रीधर तिलकको

महाबलेश्वर
१ मई, १९४५

चि० जयत,

कैसा आश्चर्य कि लोकमान्यका[2] पौत्र मुझे इंग्रेजीमें लिखे? हिंदीमे नही तो कमसे कम मराठीमें तो लिखे? मैं विवाहमें कही नही जाता हूँ। लेकिन तुमने मुझे याद किया अच्छा है। दोनो सुखी रहो और लोकमान्यकी तरह देशसेवा करो।

मो० क० गांधी[के] आशीर्वाद

श्री जयन्त श्रीधर तिलक
लोकमान्य तिलक मन्दिर
गायकवाड वाड़ा
५२८, नारायण पेठ
पूना सिटी[3]

पत्रकी नकलसे . प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

९०. पत्र : मगनभाई प्रभुदास देसाईको

महाबलेश्वर
२ मई, १९४५

चि० मगनभाई,[4]

तुम्हारी भेजी कतरन देखी। टण्डनजी ऐसा कहेंगे ही। अहिंसाकी गति गोकुल की गाय जैसी जानो। यह हमेशा गतिशील रहती है, लेकिन हमेशा धीमी चलती है। हमें अपना काम करते जाना चाहिए। क्या नदवी कोई पुस्तक नही लिख सकते?

१. पत्र गुजरातीमें है पर दस्तखत हिन्दीमें ही किये है।
२. बाल गंगाधर तिलक
३. यहाँ पता अंग्रेजीमें दिया गया है।
४. गुजरात विद्यापीठके कुलपति

नई पुस्तकें तो तैयार करनी ही पड़ेंगी। परीक्षा रोकी नही जा सकती। पुरुषोत्तम को दोनोंमें रहने के लिए मैंने लिखा था। पुरुषोत्तम परीक्षा तो लेता ही था। लेकिन यदि हिन्दी [साहित्य] सम्मेलनका दावा इससे उलटा हुआ तो मुझे इसमें से निकलना पड़ेगा। इसमे जल्दवाजी नही करनी चाहिए। लेकिन निखालस चीजको छोड़ना भी नही चाहिए। पुरुषोत्तमको तुम लिखना। कोसम्बीको[1] लेना।

बापूके आ[शीर्वाद]

मगनभाई देसाई
गुजरात विद्यापीठ
एलिसब्रिज, अहमदाबाद

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

९१. पत्र : ताराचन्दको

महाबलेश्वर
२ मई, १९४५

भाई ताराचंदजी,[2]

मेरे यहाके तीन साथीको आपके खर्चके अंदाज पत्रकका सख्त विरोध करते हैं। नवजीवन मुद्रणालय वडी संस्था है। छापने का कार्य तो सव उसके मार्फत हो सकता है।[3] हिन्दुस्तानी प्रचार सभाकी समिति भी मेरे ख्यालसे भडक उठेगी। जव मैं वर्धा पहोंचुंगा समितिके सामने इस प्रश्न रखेंगे। दरम्यान आप कुछ पाठ्यपुस्तककी लिखित प्रति भेज सके तो अच्छा होगा। दा० अवदुल हक नही आ सकते हैं वह भी विचारणीय है।

आपका,
मो० क० गांधी

दा० ताराचंद
हिन्दुस्तानी एकेडेमी
इलाहावाद

पत्रकी नकलसे . प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. धर्मानन्द पी० कोसम्वी (१८७६-१९४७); गोआके एक बौद्ध विद्वान, १९१२-१९ के दौरान बम्बईके नेशनल कॉलेज और पूनाके फर्ग्यूसन कॉलेजमें पाली पढाई; १९३० में सविनय अवज्ञा आन्दोलनमें भाग लिया और जेल गये।

२. अखिल भारतीय हिन्दुस्तानी प्रचार-सभाके साहित्य बोर्डके सदस्य

३. यहाँ उल्लेख 'हिन्दुस्तानी कोश' का है, जिसके सम्बन्धमें डॉ० ताराचन्द गांधीजी के साथ पत्र-व्यवहार कर रहे थे।

९२. पत्र : मगनभाई प्रभुदास देसाईको

महाबलेश्वर
२ मई, १९४५

चि० मगनभाई,

तुम्हारा पत्र मिला। मोहनलालका पत्र अच्छा है। मैंने तो उसे लिखा ही है। तुम्हारे सुझावके अनुसार हिन्दी साहित्य सम्मेलनके बारेमें स्पष्टीकरण कर रहा हूँ। इसमें थोड़ी देर तो लगेगी ही।

डॉ० ताराचन्दको मैं लिख चुका हूँ।[1] इतना भारी खर्च हमसे नहीं हो सकता। तुम्हारा और अमृतलालका कहना ठीक है।

मोहनलालका पत्र भेज रहा हूँ।

बापूके आशीर्वाद

मगनभाई प्र० देसाई
गुजरात विद्यापीठ
अहमदाबाद

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

९३. पत्र : कुसुम नायरको

महाबलेश्वर
२ मई, १९४५

चि० कुसुम,

तेरी साफ बात मुझे प्रिय है। तूने भले लिखा।

मैंने कल ही दवा शुरू की है। मेरे लिये अनजान दवा है उस बीच जितना ले सकु इतना आराम लेना है। दस दिनतक चलेगी। उस बीचमें नहीं बुलाऊँगा। बादमें क० बा० निधिकी समितिकी सभा है।[2] बादमें तू आ सकेगी।

दरम्यान तू मुझे सवाल भेज उसका मैं उत्तर भेजूंगा। अबके उत्तर तेरे ही लिये होंगे। मैं चाहता हूं कि तू मुझे समज ले। पीछे आजके सवालके जवाब तू ही देगी।

१. देखिए पिछला शीर्षक।

२. १७ मईसे; देखिए पृ० ६१ भी।

और किसी बाबतमें मेरी सम्मति चाहिये तो लेगी। ऐसे महादेव करता था, ऐसे ही प्यारेलाल करता है और तुझे आश्चर्य होगा की ऐसा कलकत्तेके 'इंग्लीशमेन' के मर्हूम संडर्सने मेरे साथ किया था, उसी तरह मद्रासके परमेश्वरन् पिल्लेने और सुब्रह्मण्यमने किया था। अगर मेरे विचारोंको पूरी तरह समझने का समय निकालेगी तो बड़ी बात नही होगी। समझने के बाद स्वीकार करना अलग सवाल है। तू जूदी राय रख सकती है। ऐसे ही हुआ तो हिम्मतसे मेरा विरोध कर सकती है। मुझे सच्चा विरोध भी प्रिय है।

अब रही बात फोनकी। जब तुझे कहा की मैं बाथमें या काममें हूं तो ऐसा ही था। तुझे धोका देने की बात नहीं थी। तुझे जानना चाहिये की मैं ७-३० से ११-३० तक नित्यकर्ममे डटा रहता हूं। तब तो जो काम करना हो इतना कर सकता हूं। नित्यकर्मके बाद सोता हूं। नतीजा यह होता है कि मैं मिलने के लिये २-३० बजे तैयार होता हूं। यह सामान्य कार्यक्रम है। बाकी तो मेरे पास बैठनेवाले कुछ बात खाने के समय पूछ लेते हैं। और समज कि जिस घरमें मैं रहता हूं वहांका फोन मेरी ही लिये करीब-करीब चलता है। इस बारेमें और भी पूछ सकती है।

बापुके आशीर्वाद

श्री कुसुमबहिन नैयर
७४, लक्ष्मी बिल्डिंग
सर फिरोज शाह महेता रोड
बम्बई

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

९४. पत्र : एम० एस० केलकरको

महाबलेश्वर
२ मई, १९४५

भाई बरफ,

तुमारी हिंदुस्तानी मुझे प्रिय लगती है। ऐसे ही लिखो। ऊपर और बाजूमें जगह खुल्ली रखो।

. . .[1] चुनकर सेवाग्राममें कहीं रखो उनके दूध और बरफका दो का खर्च निकालुगा। कुछ मुदत बंधे हरि इच्छा अच्छी होगी तो बहुत बड़ा काम होगा। बरफ सेवाग्राममें बनाने की कला ढूंढो।

१. यहाँ कुछ शब्द अस्पष्ट हैं।

तुमारा बराली पानी बनाने का काम आयगा? बालकृष्णका वैद्यपर . . .[1]

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० ५८७५) से

९५. पत्र : रघुवीर सहायको

महाबलेश्वर
२ मई, १९४५

भाई रघुवीर सहाय,

मुझे अंग्रेजीमें क्यों? तुम्हारी पुत्रीके विवाह निजी जातिमें ही है ना? ऐसे विवाहमें मेरे आशीर्वाद क्यों? तुम जानते हो न कि मैं विजातीय विवाहका समर्थन करता हूं। यह विवाह तो अच्छा लगता है। लेकिन मुझे बचा लो।

बापुके आशीर्वाद

श्री रघुवीर सहाय
एडवोकेट
बदायूं (यू० पी०)[2]

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

९६. पत्र : चक्रैयाको

महाबलेश्वर
२ मई, १९४५

चि० चक्रैया,

तुमारा खत मिला है। तुमारा आनंद निकेतनमें रहना निरर्थक समजता हूं। इसलिये तुमारे शर्माजीसे कह देना। जो पैसे तुमारे लिये भेजे हैं सो वापिस करो।[3] आनंद निकेतनका समार काम उस पैसेसे नहीं हो सकेगा।

मैं देखता हूँ कि तुमारे भीमावरममें रहकर नैसर्गिक उपचारका काम संपूर्ण सीख लेना। भीमावरममें तो अस्पृश्यताका कुछ भी अंश नहीं होगा। अगर ऐसा है तो वहाँ ही दा० राजुको पूरी मदद दे सकते हो। वहाँ अपने लिये तो कातना

१. यहाँ कुछ शब्द अस्पष्ट है।
२. यहाँ पता अंग्रेजीमें है।
३. देखिए पृ० ४६ भी।

बुनना रखोगे ऐसा समझता हूं। वहां शरीर अच्छा बना लो। बादमें देखेंगे क्या करना चाहीये। नैसर्गिक उपचारके पुस्तक भी पढ़ो। एक वर्ष तो कमसे कम भीमावरममें जायगा।

[पुनश्च :]

चि० चि [मनलाल] पढ़े और भेजे।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० ९११६) से। सी० डब्ल्यू० ९१८५ से भी

९७. पत्र : अंजना चौधरीको

महाबलेश्वर
२ मई, १९४५

चि० अंजना,

तुमारा खत मिला है। रामनारायणकी[1] मै फिकर नही करता हूं। वह बहादुर है। अच्छे हो जायेंगे। तुमने खत दिया सो अच्छा ही हुआ है। लडके सब अच्छे है सुनकर खुश होता हूं। अब तो सब बहुत मोटे लगते होंगे। उनका अभ्यास क्या हो रहा है लिखो। तुमने ठिकाना नही दिया है। तुम कैसी हो? मैं अच्छा हूं।

बापुके आशीर्वाद

बापू : मैंने क्या देखा, क्या समझा?, पृ० २१६

९८. तार : अमृतलालको

महाबलेश्वर
३ मई, १९४५

अमृतलाल
मार्फत एम० एल० उदेशी
बम्बई
मिलने आना अनावश्यक है।

गांधी

अंग्रेजीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. अंजना चौधरीके पति, जिन्हें जेलमें दिल्का दौरा पड़ गया था।

९९. तार : हरेकृष्ण मेहताबको

महाबलेश्वर
३ मई, १९४५

हरेकृष्ण मेहताब[1]
कटक

आशा है अच्छे होगे। २१ तारीखके बाद किसी भी दिन आ जाओ।

बापू

अंग्रेजीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१००. पत्र : मणिबहिन पटेलको

महाबलेश्वर
३ मई, १९४५

चि० मणि,

तेरा पत्र मिला। वह स्पष्ट है।

उपवासके बारेमें तू लिखती है अत मैं सूचित करता हूँ कि उसे केवल शरीर-शुद्धिके लिए ही कर। तब तुझे खुद ही अपना पता लग जायेगा। और उसका आध्यात्मिक फल मिलनेवाला होगा तो मिल जायेगा और तू वहम या आडम्बरसे बच जायेगी। महादेव या बा के लिए और कुछ नही तो उपवास तो करे, यह विचार बिलकुल गलत है। वे जानते हो तो उन्हे क्लेश ही हो। जब प्रियजन चल बसे तब हम उनके लिए उनका प्रिय और कठिन काम करे। इसलिए महादेव जैसे मीठे बनने की कोशिश करे। बा के समान आस्तिक बनने का प्रयत्न करे। ये दो उदाहरण तो जबानपर आ गये, इसलिए दे दिये। दूसरे और दिये जा सकते है। शरीर केवल ईश्वरके रहने या आत्माको पहचानने का घर है यह जान ले, तो सब-कुछ अपने-आप ठिकाने आ जाये। ऐसा हो जाये तो धर्मके नामपर चल रहा ढोंग मिट जाये। तेरा जीवन सरल है और बहुतसे प्रलोभनोको तू पार कर सकी है इसलिए मैं इतना परिश्रम तेरे लिए कर रहा हूँ। तू सब तरहसे ऊँची उठ जाये तो मैं जानता हूँ कि तू बहुत अधिक काम कर सकती है।

१. उड़ीसाके कांग्रेसी नेता

इसी कारणसे तुझे यहाँ अथवा आश्रममें खींच लाना है। बापू स्वयं यही चाहते हैं, इसलिए तुझे खींचने का मनमें अधिक उत्साह होता है। वे जेलके बाहर हो तब तो तू भी नहीं चाहेगी और मैं भी नहीं चाहूँगा कि एक घड़ी भी तू उन्हें छोड़कर कहीं रहे। यदि तू मेरे आसपास होगी तो तुझमें सहनशीलता बढ़ेगी, क्योंकि यह स्थल ऐसा है जहाँ विभिन्न स्वभाववाले अनेक लोगोंके अनुकूल बनने की और फिर भी अलिप्त रहने की जरूरत है। मतलब यह कि हमें गुणग्राही होना चाहिए। दूसरों का अवलोकन करके हम उनके गुणोंका अनुकरण करें, और अवगुणोंको सहन करें, क्योंकि अवगुणोंको दूर करने का सबसे अच्छा उपाय यही है। इसलिए जल्दी आना।

नन्दूबहिन, दीवान मास्टर[1] और [डॉ०] कानूगा वगैरहके समाचार तूने भेजे, यह ठीक किया।

अब तो सवेरा हो गया है और मैं रोशनी बुझा रहा हूँ, इसलिए बस।

वहाँ सबको आशीर्वाद।

बापूके आशीर्वाद

चि० मणिबहिन पटेल
मार्फत श्री डाह्याभाई पटेल
मैरिन लाइन्स, बम्बई

[गुजरातीसे]
बापुना पत्रो – ४ : मणिबहेन पटेलने, पृ० १३४-३५

१०१. पत्र : पूरणचन्द्र जोशीको

महाबलेश्वर
३ मई, १९४५

प्रिय जोशी,

आपका कृपापूर्ण नोट मिला।[2]

आपको समाचारपत्रोंमें निकलनेवाली झूठी खबरोंका जवाब देने के लिए हमारे पत्र-व्यवहारकी समाप्ति की राह देखने की आवश्यकता नहीं है। यह तो एक बात हुई।

१. जीवनलाल दीवान

२. १ मईका, जो इस प्रकार था: "जैसा कि आप जानते ही होंगे कि समाचारपत्रोंमें मेरी पार्टीके खिलाफ हमारे पत्र-व्यवहारके सम्बन्धमें झूठे बयान छपे हैं। चूँकि हमारे बीच पत्रोंका आदान-प्रदान अभी चल रहा है, इसलिए मैंने इन बातोंका जवाब नहीं दिया है। लेकिन . . . हम लोगोंको जितना जल्दी हो सके किसी समझौतेपर पहुँच जाना चाहिए। अतः इस मामलेमें बातचीत करने के लिए . . . बृहस्पतिवार १० मई अथवा बृहस्पतिवार १७ मईको दोपहरको मोहनको भेजना चाहूँगा।"

मोहन[1] चाहे तो २४ तारीखको आ सकता है, यदि वह सिर्फ बृहस्पतिवारको ही आ सकता है तो। १० तारीखतक तो मेरा डाक्टरी इलाज चल रहा है और १७ तारीखको मेरी एक बैठक[2] है जो तीन दिनतक चल सकती है।

हृदयसे आपका,
मो० क० गांधी

[अंग्रेजीसे]
कॉरस्पॉन्डेंस बिटवीन महात्मा गांधी ऐण्ड पी० सी० जोशी, पृ० ४१

१०२. पत्र : रंगाचारीको

महाबलेश्वर
३ मई, १९४५

प्रिय रंगाचारी,

मैंने तुम्हारा पत्र पढ़ लिया है। तुम्हारी पत्नी अस्पतालका काम करनेके लिए आश्रममें रह सकती है, बशर्ते कि तुम दोनों पति-पत्नीकी तरह न रहो [और] कमसे-कम कुछ नियत वर्षोंके लिए यहाँ रहो। अन्यथा तुम्हारी वर्तमान भावना एक क्षणिक विचार समझी जायेगी जिससे कोई स्थायी लाभ नहीं हो सकता।

तुम्हारा,
बापू

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० ९१०७) से

१०३. पत्र : मृदुला साराभाईको

महाबलेश्वर
३ मई, १९४५

चि० मृदु,

मैं मूलमें संशोधन करके संशोधित प्रति तेरी सुविधाके लिए भेज रहा हूँ। यदि बहुत देर हो गई हो तो इसे तू अलग रख सकती है। आशा है तेरी तबीयत अच्छी होगी।

बापूके आशीर्वाद

कस्तूरबा गांधी नेशनल मेमोरियल फंड
सिन्धिया हाउस
बलार्ड इस्टेट
फोर्ट, बम्बई

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. डॉ० पी० सुब्बारायनके पुत्र मोहन कुमारमंगलम्
२. कस्तूरबा स्मारक न्यास-समितिकी; देखिए पृ० ५५ भी।

१०४. पत्र : गजानन नायकको

३ मई, १९४५

चि० गजानन,

धीरेन मजमूदार यदि वहाँ आये तो कुमारप्पाको और सभीको अच्छा लगेगा। लेकिन उससे कैसे आया जा सकता है? सब लोग अपने-अपने कार्योंमे व्यस्त है। तुम्हें यदि विश्वास हो कि वह आयेगा तो उसे अवश्य लाओ। मेरी राय तो यही है कि किसी नये व्यक्तिको ही लाना चाहिए।

झवेरभाई क्या कहते है? वे दो व्यक्तियोंको ला सकते है। क्या उनमें से किसी एकसे काम नही चल सकता?

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१०५. पत्र : अमीनको

महाबलेश्वर
३ मई, १९४५

चि० अमीन,

तुममें दयाभाव और भक्तिभाव है ही। वस्तुत: देखा जाये तो दोनोंसे एक ही गुणका बोध होता है। लेकिन तुममें स्थिरता नहीं है इसलिए दोनो केवल भावना का रूप ले लेते हैं। स्थिरता नही है, क्योंकि आत्माको जानते हुए भी परमात्मा तुम्हारे सामने खड़ा नही होता और अगर परमात्मा नहीं है तो आत्मा कैसे हो सकती है? और यदि आत्मा नही है तो हम कैसे हो? अन्तमें तो यह श्रद्धाका विषय है। श्रद्धा रखो तो सब-कुछ ठीक ही हो जायेगा।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१०६. पत्र : अनन्तरामको

महाबलेश्वर
३ मई, १९४५

चि० अनंतराम,

तुमारे उर्दु हरफ बहुत अच्छे है। ऐसे ही लिखा करो। रामनाम दो अक्षर बिना मूल्यसे सब काम करते है तो तुमारी तो बात क्या? अब चलता है ऐसे ही चलेगा। मैं तो बहूत ही खुश हो जाउगा। तुमारे टाईम टेबलमे कुछ परिवर्तन नही चाहता।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (एस० जी० १३१) से

१०७. पत्र : सरस्वती गांधीको

महाबलेश्वर
३ मई, १९४५

चि० सुरू,

तेरा खत अच्छा है।

अगर तुम लोग हरिलालको जीत लोगे तो मै तुमारा बड़ा विजय समजुगा। उनको मत छोडो और ईस बगल मत लाओ। उसकी खासीयत ऐसी सख्त है कि बार बार वापिस आती है। सभव है कि तुम दोनोका और कहो बाल शातिका[1] निर्मल प्रेम उसे बाँध ले। मैं बहुत खुश हूंगा।

पृथुराज[2] इतना कमाता है तो भी बाली[3] जैसी थी ऐसी ही सीदी और सबल रहती है सुनकर आनद होता है। बाली शरीरसे अच्छी हो गई क्या? दोनोको आशीर्वाद। अब तो बेलाबहन[4] और आनदी[5] भी वही पहोचे होगे।

रामचन्द्रनके[6] बारेमे क्या लिखू? वह मेरे पास रहे मुझे अच्छा लगे लेकिन मैं त्रावणकोर छुडवा कर मेरे पास नही रखुगा मेरा अभिप्राय है कि त्रावणकोरमें

१. सरस्वती गांधीका पुत्र
२ और ३. पृथुराज आसर और उनकी पत्नी
४ और ५. लक्ष्मीदास आसरकी पत्नी और पुत्री
६. सरस्वती गांधीके मामा जी० रामचन्द्रन

उनका काम पूर्ण हो गया है ईस वक्त तो मद्रास ईलाकेमे है शायद तू मिलेगी। उनसे अधिक जान लेंगे।

तुम सबको
बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० ६१८७) से। सी० डब्ल्यू० ३४६१ से भी; सौजन्य : कान्तिलाल गांधी

१०८. पत्र : गोविन्द रेड्डीको

महाबलेश्वर
३ मई, १९४५

चि० गोविंद,

सुना है तू बहूत तुफान करता है। अगर ठीक है तो शर्मकी बात है। तुमको तो खास रखा है। तुमारे आदर्श लड़का बनना है। बनेगा न?

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० ५८७३) से। सौजन्य : मुन्नालाल गं० शाह

१०९. पत्र : प्रभाकरको

महाबलेश्वर
३ मई, १९४५

चि० प्रभाकर,

फिर तुम बीमार पड़े। इसे पाप समझो। तुमने ज्यादा काम किया, खाने पीने की दरकार नही की और न सोने की। ऐसा क्यों? शरीर सेवाके लिए है। उसे अच्छा न रखें तो सेवा कैसे हो सकती है?

अपने आप मालीश बलात्कारसे तो नहीं किया है? आराम लो। अच्छे हो जाओ। क्वीनिन लेना पड़े तो लेना। बराबर खाओ, फल खाना। बराबर सोना, मछेरी रखना। गोविन्दको लिखा है।[1] देखो।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० ९०२७) से। सी० डब्ल्यू० ९१५१ से भी; सौजन्य : प्रभाकर

१. देखिए पिछला शीर्षक।

११०. बातचीत : डी० एन० बालवेंकटरामके साथ

महाबलेश्वर
३ मई, १९४५

सेलम ताल्लुका कांग्रेस कमेटीके भूतपूर्व अध्यक्ष श्री डी० एन० बालवेंकटरामने गांधीजी से पूछा कि क्या अखबारोंमें छपी यह खबर सही है कि आप तबतक महाबलेश्वरके मन्दिरमें जाने का विचार नहीं करेंगे जबतक कि उसके दरवाजे हरिजनों के लिए नहीं खोल दिये जाते? महात्मा गांधीने कहा :

हाँ, अखबारोंमें छपी खबरें सच्ची हैं। जबतक मन्दिरोंके दरवाजे हरिजनोंके लिए नहीं खोल दिये जाते, तबतक मैं उनमें कदम नहीं रखूँगा।

क्या हरिजनोंके लिए मन्दिरोंके दरवाजे खुलवाने के लिए किसी दर्शकको आमरण अनशन करना चाहिए? इस प्रश्नके उत्तरमें गांधीजी ने कहा :

नहीं। वह तो हिंसात्मक कार्यवाही होगी।

फिर प्रश्न किया गया कि कब कोई अनशन हिंसात्मक होता है और कब उसे अहिंसात्मक कहा जा सकता है? गांधीजी ने कहा कि यह बात हर मामलेमें परिस्थितियोंपर निर्भर करती है।

[अंग्रेजीसे]
बॉम्बे क्रॉनिकल, ४-५-१९४५

१११. पत्र : हरजीवन कोटकको

महाबलेश्वर
४ मई, १९४५

चि० हरजीवन,

मुझमें जितना है तुम उससे बहुत ज्यादा मानते हो, यह ठीक नहीं है। सब-कुछ निर्धारित समयपर होता है और अन्तःकरणकी लगनपर भी निर्भर करता है। जुलाईमें आश्रम आना। मुझे लिखना।

बापूके आशीर्वाद

श्री हरजीवन कोटक
मार्फत सर्वश्री ब्रजलाल ऐंड कं०, जौहरी
६६/३, बीडन स्ट्रीट
कलकत्ता[1]

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. पता अंग्रेजीमें है।

११२. वक्तव्य : समाचारपत्रोंको

महाबलेश्वर
४ मई, १९४५

बताया जाता है कि सर फिरोज खान नूनने[1] सान फ्रान्सिस्कोमें ये बातें कहीं।

सर फिरोज खान नूनने कहा कि जब जापानी बर्माको तहस-नहस करते हुए भारतकी ओर बढ़ रहे थे, महात्मा गांधीकी पार्टीके कार्यकर्ताओंने ३३२ रेलवे स्टेशनों और ९४५ डाकखानोंको नष्ट कर दिया या भारी नुकसान पहुँचाया। उन्होंने यह भी आरोप लगाया कि गांधीजी ने स्वयं लोगोंको आज्ञाभंग करने के लिए उकसाया, क्योंकि "उन्हें विश्वास हो गया था कि ब्रिटेन हार गया है और वे जापानियोंको नाराज नहीं करना चाहते थे। गांधीजी प्रतिक्रियावादी और कट्टरपन्थी हिन्दुओंके हाथमें हैं। अगर वे राजनीतिसे हट जायें और कुछ कम उम्रके आदमीको आगे आने दें, तो वे देशका बड़ा भला करेंगे। मेरा खयाल है कि नेहरू गांधीके सबसे अच्छे उत्तराधिकारी होंगे। मुसलमानोंमें भी उनके बहुतेरे समर्थक हैं और वे गांधीकी तरह कट्टरपन्थी नहीं हैं। गांधीमें तो अब किसी नये रास्तेपर चलने की क्षमता नहीं रह गई है। अब एकमात्र समाधान यही है कि नेहरू आगे आवें। लेकिन नेहरूके दिलमें गांधीके लिए इतना आदर है कि वे आगे नहीं आयेंगे।"

यह मानते हुए कि सर फिरोजने सचमुच ये बातें कही हैं, मैं निम्नलिखित विचार व्यक्त करना चाहता हूँ:

एक समय था जब ब्रिटिश शासक मुझे जापानका पक्षपाती कहते थे, पर बाद में उन्होंने ये शब्द, जिनका तनिक भी आधार नहीं था, चुपचाप वापस ले लिये। मुझे यह देखकर जरा हैरानी होती है कि सर फिरोजने इस नाजुक मौकेपर ऐसी बातें कही हैं। शायद यह जाननेमें उनकी दिलचस्पी होगी कि जब कई जगह ब्रिटेनकी सख्त हार हुई थी, मैंने भारतीय जनतासे कहा था कि अंग्रेज इस तरहके लड़नेवाले हैं कि वे हारसे कभी भी निराश नहीं होते, अपनी असफलताओंसे खुश होते हैं और गलतियाँ किये बिना या बार-बार गलतियाँ किये बिना कभी नहीं सीखते।

१. अक्तूबर, १९४३ से वाइसरायकी कार्यकारिणी परिषद्में सुरक्षा सदस्य; वह सान फ्रान्सिस्को शान्ति सम्मेलनमें भाग लेनेवाले भारतीय प्रतिनिधि मण्डलके तीन सदस्योंमें से एक थे; अन्य दो सदस्य थे — ए० रामस्वामी मुदालियर और वी० टी० कृष्णमाचारी। नून सम्मेलनमें उपस्थित भारतीय पत्रकारोंको दी एक भेंट-वार्तामें प्रश्नोंके उत्तर दे रहे थे।

मै सर फिरोजसे सिफारिश करूँगा कि वे अगस्त, १९४२ से पहलेके मेरे लेख पढ़े। मैने "कांग्रेस रिस्पॉन्सिबिलिटी फ़ॉर द डिस्टर्बेन्सेज, १९४२-४३"[1] (१९४२-४३ के दगोके लिए कांग्रेसका उत्तरदायित्व) का जो जवाब दिया है, उसमे ये लेख उन्हे मिल जायेगे। मै शुद्ध भारतीय स्वतन्त्रता चाहता था। अतः मै, ब्रिटेनपर, जापान या किसी अन्य राष्ट्रकी विजयके प्रति उदासीन नही हो सकता था। मेरा उद्देश्य अहिंसक असहयोग और सविनय प्रतिरोधके द्वारा समस्त भारतमे ब्रिटेन या किसी भी अन्य देशके शासनको खत्म करना था।

काग्रेसके अन्दर मेरा कभी कोई अपना दल नही रहा। मै दिसम्बर, १९३४ मे उसकी सदस्यतासे अलग हो गया था। मेरी सेवाओकी जरूरत पडने पर काग्रेसको मुझे बुला भेजने का पूरा अधिकार था, क्योकि अहिंसक प्रतिरोधमे मुझे विशेष प्रशिक्षण प्राप्त था। १९४२ के अगस्तमे या उसके बाद सविनय प्रतिरोध या अन्य किसी तरहके प्रतिरोधसे न तो कांग्रेसका और न मेरा ही कोई वास्ता रहा। मुझे इस बातका पूर्ण अधिकार दिया गया था कि जब मै ठीक समय समझूँ, सविनय प्रतिरोध शुरू कर दूँ। लेकिन कोई कार्यवाही करने से पहले या कोई हिदायत जारी करने से पहले ही मुझे गिरफ्तार कर लिया गया। इसलिए न काग्रेसपर और न मुझपर ही १९४२ के दगोंकी जिम्मेवारी डाली जा सकती है। इसके अलावा, सर फिरोजने जो आँकड़े दिये है वे बिलकुल अप्रामाणिक है। यद्यपि इस विषयमे सरकारको कई बार चुनौती दी गई, फिर भी उसने असाधारण रूपसे बढ़ा-चढ़ाकर लगाये गये अपने आरोपोको किसी सक्षम अदालतमे साबित करने का कष्ट नही किया।

अब मै पण्डित जवाहरलाल नेहरू और मेरे बारेमे सर फिरोजके बयानको लेता हूँ। सर फिरोजको पता होना चाहिए कि मैंने पण्डित जवाहरलालको अपना उत्तराधिकारी कहा है। उन्हे आगे आने की जरूरत नही है। वह तो है ही आगे। भारत सरकार उन्हे अपने ढंगसे काम नही करने देती। हम दोनो दोस्त हैं — प्रतिद्वन्द्वी नही। हम दोनो जनताके सेवक है और सेवाका क्षेत्र पृथ्वीके समान विस्तृत है। इसमे इतनी भीड़ कभी नही होती कि औरोके लिए जगह न रहे। यहाँ तो औरोके लिए सदा जगह होती है। जहाँतक स्वतन्त्रताका सवाल है, हमारे बीच कोई मतभेद नही है। हम समान ध्येयके लिए लड़नेवाले भाइयोकी तरह हैं। बेशक यह बात उनके पक्षमे है कि वे युवा है।

सर फिरोजको चाहिए कि वे इस्तीफेकी धमकी देकर अपनी सरकारसे कहे कि वह पण्डित नेहरूको और उनके साथी कैदियोंको रिहा कर दे। तब सर फिरोज अपनी इच्छा पूरी हो गई देखेंगे। उसकी पूर्तिमें मै उन्हे हार्दिक सहयोग दूंगा।

उन्हे मेरी कल्पित धर्मान्धता या कट्टरतासे फायदा उठाने की कोशिश नही करनी चाहिए। उन्हे शायद यह पता नही कि मै अपनी युवावस्थासे ही धर्मान्ध कभी नही रहा हूँ और न किसीने मुझे ऐसा समझा ही है। और कट्टरपन्थी लोग मुझे अपने साथ मिलाने को तैयार नही होते, क्योकि छूतछात और आम सामाजिक

१. देखिए खण्ड ७७, पृ० १०३-२१३।

सुधारके विषयमें मैं आमूल परिवर्तन चाहता हूँ और इस विषयमें झुकने के लिए तैयार नहीं हूँ। हाँ, सर फिरोजने मुझपर यह जो आरोप लगाया है कि मैं समयको देखते हुए पिछड़ गया हूँ उसपर वे शायद अड़े रह सकते हैं। क्योंकि कोई यह नहीं जानता कि क्या और कौन पिछड़ा है। मैं मानता हूँ कि मैं इस विषयमें कुछ नहीं जानता।

मैंने एक टिप्पणी यह भी देखी है कि "अगर अन्तिम अवस्थामें गांधीजी दखल न देते तो क्रिप्स मिशनकी सफलताकी ज्यादा सम्भावना होती।" यह बड़ी आश्चर्यजनक बात है कि अगर कोई झूठी बात एक बार फैला दी जाये, तो उसका असर बहुत देरतक बना रहता है। मैं तो कार्य-समितिके साथ मिशनकी बातचीत शुरू होने से बहुत पहले ही दिल्लीसे चला गया था। मैंने तभीसे मिशनके काममें रुचि लेना छोड़ दिया था, क्योंकि मेरे पास उससे ज्यादा जरूरी काम करने को था।

[अंग्रेजीसे]
हिन्दू, ६-५-१९४५

११३. तार: गोपाल देवको

महाबलेश्वर
५ मई, १९४५

गोपाल देव
उप-मन्त्री, आर्य सम्मेलन
गुलबर्गा

आना व्यर्थ है। पूरी तफसील लिखिए।

गांधी

अंग्रेजीकी नकलसे: प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य: प्यारेलाल

११४. पुर्जा : म्यूरियल लेस्टरको[1]

महाबलेश्वर
५ [मई],[2] १९४५

तुम्हें तथा हमारे मित्रोंको सिर्फ अपना प्यार भेजने का ही समय है।

बापू

अंग्रेजीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

११५. पत्र : अप्पा पन्तको

महाबलेश्वर
५ मई, १९४५

प्रिय अप्पा,

मैं तुम्हें अंग्रेजीमें नहीं लिखना चाहता। तुम्हें इतनी हिन्दुस्तानी सीख लेनी चाहिए। बेशक २० तारीखके बाद तुम जब चाहो, आ जाना। चरखेवाले मित्रको अपने साथ मत लाना। जब मैं यहाँसे पूना जाऊँ तब वे मुझे चरखा दिखा दें।

स्नेह।

बापू

कुमार श्री अप्पा पन्त
२६४, नारायण [पेठ]
पूना

अंग्रेजीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

११६. पत्र : लीलावती आसरको

महाबलेश्वर
५ मई, १९४५

चि० लिली,

तेरा पत्र अच्छा है और खराब [भी]। तू बिना कामके कहीं न जाने का आग्रह रखती है, यह अच्छी बात है। लेकिन पढ़ाईमें मन लगाकर नहीं पढ़ती, यह

१. गांधीजी ने यह वाक्य म्यूरियल लेस्टरको लिखे प्यारेलालके पत्रमें जोड़ दिया था। १९३१ में लन्दनमें किंग्स्ले हॉलमें आवासके दौरान म्यूरियल लेस्टर गांधीजी की मेजबान थीं।

२. साधन-सूत्रमें यहाँ "अप्रैल" लिखा है जो स्पष्टतः भूलसे लिखा गया है, क्योंकि अप्रैलमें गांधीजी बम्बईमें थे।

खराब बात है। और इसी तरह यह भी खराब बात है कि मैं जो तुझे अपने साथ नहीं लाया इसका तुझे अब भी दुःख है। तू जानती है कि मैं तुझे तुझसे अच्छी तरह समझता हूँ। तेरी भलाई किस बातमें है, यह भी ज्यादा अच्छी तरह जानता हूँ। इसलिए मेरे साथ दलील करने के बाद मैं जैसा कहूँ उसे चुपचाप और आनन्द-पूर्वक स्वीकार कर तुझे उसके अनुरूप कार्य करना चाहिए। तुझे पहले ही प्रयत्नमें परीक्षामें उत्तीर्ण होना है।

बापूके आशीर्वाद

लीलावती उदेशी
एस० जी० एस० मेडिकल कॉलेज
लेडी स्टुडेन्ट्स हॉस्टल
परेल, बम्बई

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

११७. पत्र : कन्हैयालाल देसाईको[1]

महाबलेश्वर
५ मई, १९४५

भाई कानजीभाई,

तुम दुःखके सागरमें डूबे हुए हो। समाचार तो मणिबहिन ही देती है न! मनुष्यका विकास मुख्यतः दुःखसे और दुःखमें ही होता है। इसलिए दुःखको दुःख न मानना। वास्तविक दुःख तो नारायणको अथवा रामको भूलने में ही है। इसलिए इस नामको हृदयमें रखना और आनन्द-मग्न रहना।

बापूके आशीर्वाद

श्री मणिबहिन पटेल
मार्फत डाह्याभाई पटेल
६८, मैरिन ड्राइव
बम्बई

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. यह पत्र ५ मई, १९४५ को मणिबहिनको लिखे पत्रके साथ भेजा गया था; देखिए अगला पत्र।

११८. पत्र : मणिबहिन पटेलको

महाबलेश्वर
५ मई, १९४५

चि० मणि,

तूने पत्र लिखा, अच्छा किया। जो खबर तूने दी वह और कोई मुझे न देता। साथका पत्र[1] कानजीभाईको दे आना। अब तो तू यहाँ आनेवाली है, इसलिए अधिक नहीं लिख रहा हूँ। कल नरहरि,[2] मणिलाल,[3] कमलनयन[4] और सत्यनारायण[5] आये थे। आज मुन्शी आयेंगे। कमलनयन और मुन्शी तो जैसे आये वैसे चले जायेंगे।

तुम सबको
बापूके आशीर्वाद

श्री मणिबहिन पटेल
मार्फत श्री डाह्याभाई पटेल
६८, मैरिन ड्राइव
बम्बई

[गुजरातीसे]
बापुना पत्रो – ४ : मणिबहेन पटेलने, पृ० १३६

१. देखिए पिछला शीर्षक।
२. नरहरि द्वा० परीख
३. मणिलाल गांधी
४. कमलनयन बजाज
५. दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभाके मन्त्री; एम० सत्यनारायण

११९. पत्र : परमानन्द देसाईको

महाबलेश्वर
५ मई, १९४५

चि० परमानन्द,

तेरा कार्ड मिला।

जब आना हो तब आ जा। १५ तारीखसे कस्तूरबा स्मारक निधिकी बैठक होगी तब जगह बिलकुल भरी रहेगी। लेकिन उससे तेरा कोई सम्बन्ध नहीं है।

बापूके आशीर्वाद

परमानन्द देसाई
मार्फत रमण भाटिया
१७०, बाड़ा इमाम रोड
नल बाजार, बम्बई

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१२०. पत्र : कृष्ण वर्माको

महाबलेश्वर
५ मई, १९४५

भाई कृष्ण वर्मा,

तुम्हारा कार्ड मिला। तुम्हारे उपचारपर मुझे विश्वास है इसीलिए मैंने माधवदासको[1] तुम्हारे यहाँ भेजने की सलाह दी। उसका जो उपचार करना उचित जान पड़े वह बेझिझक करना। मैं चाहता हूँ कि वह ठीक हो जाये। इससे मुझे तो खुशी होगी ही लेकिन बड़ी बात यह है कि इससे बा की आत्माको शान्ति मिलेगी। उसपर होनेवाला सारा खर्च चि० मणिलाल देगा। यह काम तुम्हें मुफ्त नहीं करना है। तुम्हारा इस मामलेको हाथमें लेना ही एक बड़ी बात है।

चि० माधवदासको मेरी ओरसे कहना कि वह वहाँ रहकर ही बिलकुल स्वस्थ होने का संकल्प करे और तुम जो कहो वह सब करे। कितना खर्च होगा, यह बताना।

बापूके आशीर्वाद

डॉ० कृष्ण वर्मा
नैसर्गिक उपचार अस्पताल
मलाड

अंग्रेजीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. कस्तूरबा गांधीके भाई माधवदास कापड़िया

१२१. पत्र : वालजी गो० देसाईको

महाबलेश्वर
५ मई, १९४५

चि० वालजी,

तुम्हारा पत्र मैंने सहेजकर रखा है। वे [वर्ली] निकोलसका[1] तो यही हाल है। तुम्हे उत्साह हो तो अखबारमें लिखो। ग्रामोद्योगोके बारेमें मगनवाड़ीसे निकलनेवाली पत्रिकामें जो लिखा है, उसे देखना। गिनकर देखो, सेवाग्रामको आदर्श ग्राम बनाते कितने वर्ष बीत गये? भविष्य जानते हो तो यह भी बताओ कि और कितने वर्ष बीतेंगे। लेकिन यह प्रयत्न शुभ है, सच्चा है इसलिए फलकी इच्छा क्यों की जाये? अथवा यह कहें कि शुभका फल शुभ ही होता है। जब यह निरपवाद नियम है, तब चिन्ता क्या या इच्छा क्या? बस रामनाम लेते रहना चाहिए, क्योंकि यही कल्पवृक्ष है। "दोउ अक्षर सब कुछ तारे, और देव सब दामके।"

बापूके आशीर्वाद

प्रोफेसर वालजी गो० देसाई
गणेश वाड़ी
फर्गुसन कॉलेज रोड
पूना – ४

गुजरातीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० १०२२६) से। सौजन्य : वालजी गो० देसाई

१. **संडे क्रॉनिकल** के एक प्रमुख लेखदाता। इन्हें १९४२-४३ में भारतके प्रति ब्रिटेनके दृष्टिकोणके बारेमें लेख लिखने के लिए और भारतके सम्बन्धमें एक पुस्तक प्रकाशित करने के लिए भारत भेजा गया था। **भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेसका इतिहास**, भाग २ के अनुसार निकोलस भारत-विरोधी प्रचार कर रहे थे और उन्होंने **वरडिक्ट ऑन इंडिया** में गांधीजी, हिन्दू-धर्म और भारतीय समाचारपत्रोंके बारेमें अपमानजनक बातें कही थीं।

१२२. पत्र : पुरुषोत्तम कानजी जेराजाणीको

महावलेश्वर
५ मई, १९४५

चि० काकूभाई,

यह खत[1] पढ़ो। इसका क्या अर्थ है?

बापूके आशीर्वाद

श्री काकूभाई
अखिल भारतीय चरखा संघ
खादी भंडार
बम्बई

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१२३. पत्र : लक्ष्मीदेवीको

महावलेश्वर
५ मई, १९४५

चि० लक्ष्मी देवी,

यहां मैं मेरे मकानमें नहीं हूं। यहां मत आओ। खतसे संतोष रखो। मैं सेवाग्राम जाउं तब वहां आ सकेगी।

बापुके आशीर्वाद

लक्ष्मीदेवी (हरदोईकी)
कस्तुरबा शिविर
बोरीवली

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. पत्रमें एस० एस० अय्यरने शिकायत की थी कि दादर खादी भंडारमें रुई धुनने का काम बिजलीकी दो मशीनोंसे होता है।

१२४. पत्र : एम० सत्यनारायणको

५ मई, १९४५

सत्यनारायणजीको :-

व्यक्तिगत स्वावलंबन अगर समजे हो तो सामाजिक या सस्था बारेमें समजना चाहिये। अगर व्यक्ति माने कि वह शुद्ध महेनत करे तो उसे रोटी मिल जायगी तो ऐसे ही संस्थाको होगा। अर्थात् वह सेवा करे तो रोटी वगैर मागे घरमे आवेगी। यानि सब खर्च मिल जायगा। वास्तवमे यह खर्च पडोसीओसे मिलना चाहिये। अगर नही मिले तो समजना कि उस सेवाकी वहा दरकार नही है। ऐसे हो सकता है जैसे धर्मांध प्रदेशमें अंधकार नाबूद करना। इसका खर्च तो सुधारणा करनेवाले ही निकालेंगे। नियम तो वही लागु होगा। सुधारक आरंभमें भूखो मरेंगे, कुछ मर भी जाय। उसका निभाव ईश्वर किसी न किसी तरह करेगा ऐसा विश्वास रखना चाहिये। इसमे से पूरी बात नही समझोगे तो हम वार्तालाप करे, उससे आगे नही जायेंगे। लेकिन चाहोगे तो वार्तालाप करूंगा। मुझे प्रिय तो यही है।

बापुके आ[शीर्वाद]

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१२५. पत्र : रमेन चटर्जीको

महाबलेश्वर
५ मई, १९४५

चि० रमेण[1] (आश्रमके),

तुमारा खत अच्छा है। तुमारे परीक्षा तो देनी है। आश्रम काम बराबर करो। हिन्दी और उर्दू लपि सीखो और दोनो रुप। व्यायाम (कसरत) चाहीये। जब ठडक रहती है तब करना। शरीर वज्रसा होना चाहीये। मन दृढ और उद्यम सब सेवा भावसे। प्रार्थनामें दोनों बार हाजिर रहो। श्लोक भजन इ० अर्थके साथ पढो।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० १०३९६) से। सौजन्य : अमृतलाल चटर्जी

१. अमृतलाल चटर्जीके पुत्र

१२६. पत्र : सरोजिनीको

महाबलेश्वर
५ मई, १९४५

चि० सरोजिनी देवी,

तुमारा खत मिला। अक्षर मेरेसे भी ऐसे खराब है पढ़ा नहीं जाता। अगर हिंदुस्तानी जानना ही है तो पूरा जानो और अक्षर अच्छे करो। तुमारे पास तो बहूत समय पड़ा है।

तुमारे सब खर्च चुकाना है और जैसे चिमनलाल भाइ कहें ऐसे करना है या आश्रम छोड़ना है। मैं घर नहीं बनवा सकता। किरायेके घरमें रहो।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० ५८७८) से। सौजन्य : मुन्नालाल गं० शाह

१२७. पत्र : श्यामलालको

महाबलेश्वर
५ मई, १९४५

भाई श्यामलाल,

१७मीके रोज सभा है। उसका कार्यक्रम पढ़ गया हूं। मैं चाहता हूं कि हम चार तो कमसे कम एक मत जल्दी सब खतम कर लेंगे। इसलिये हर चीजपर हो सके तो तुम तीनका अभिप्राय भेजो। या जिनका हो सके उनका।

कार्यक्रम इंग्रेजीमें क्यों?

हिं० को कब पहोंचेंगे?

बापुके आशीर्वाद

श्यामलाल
कस्तूरबा निधि दफ्तर
सिंधिया हाउस
बलार्ड संस्था
बम्बई

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१२८. पत्र : कृष्णचन्द्रको

महाबलेश्वर
५ मई, १९४५

चि० कृष्णचंद्र,

तुमारा खत मिला। हा, तबीयत और दूसरा सबका आधार मनपर है। मन चंगा तो घरमे गंगा, सदैव सही है। किसी प्रकारकी भी सही सेवा जो हि० मिले उसे मन देकर करे तो वह पार उतरता है।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१२९. पत्र : हरिरामको

महाबलेश्वर
५ मई, १९४५

भाई हरिराम,

मुझे इंग्रेजीमें क्यों? 'भारत टेक' म तो भारतकी ही भाषा होनी चाहिये। लिखो नागरीमें या उर्दुमें। तुमारा काम खतपर तो अच्छा लगता है। यहां तो किसीको नहीं बुलाउंगा। तुमारा अखबार भेजते रहो। मैं सेवाग्राम वापिस जाऊं तब कोई आवे तो उनको आने देना संभव है। तब लिखो। दरम्यान मैं अखबार देखता रहूंगा।

मो० क० गांधीके आशीर्वाद

हरिराम एडवोकेट
'भारत टेक' प्रेस
रोहतक (पंजाब)[1]

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. पता अंग्रेजीमें है।

१३०. पत्र : सीता गांधीको

महाबलेश्वर
६ मई, १९४५

चि० सीता,[१]

तेरी लिखावट पेंसिलमें है, इसके लिए तुझे इस बार तो माफ करना चाहिए न? "सफाई ड्यूटी" नहीं बल्कि "सफाई काम" अथवा "सफाई धर्म" कह सकती है। ड्यूटीका अर्थ है धर्म। "भीन" नहीं बल्कि "भिन्न"। "शुवुं" नहीं बल्कि "सुवुं"। "बोधीक" नहीं वरन् "बौद्धिक", "ट्रीप" नहीं अपितु "फरवुं" (घूमना)।

यहाँ हम सब आनन्दपूर्वक हैं। मनु अभी कमजोर है। बुखार पूरी तरहसे नहीं गया है। कनु यहाँसे रविवारको गया। वह आभाको लेकर राजकोट जायेगा। मणिलाल आ गया है। यहाँ आबहवा बहुत अच्छी है। तुझे अब वहां [रहना] रास आ गया है, यह बहुत अच्छी बात है। अगर तू अपनी सेहत ठीक रखेगी तो तुझे बहुत लाभ होगा।

वहाँ सबको आशीर्वाद।

बापूके आशीर्वाद

सीता गांधी
राष्ट्रीय सेविका वर्ग
ओमरी, अकोला (बरार)

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१३१. पत्र : सीताराम पुरुषोत्तम पटवर्धनको

महाबलेश्वर
६ मई, १९४५

चि० अप्पा,

चि० हेमन्तकुमारको[२] लिखा तुम्हारा सारा पत्र दो बार पढ़ गया। मेरी रायको व्यर्थ मानो। तुमने जहाँ सच्चे मनसे जिस बातको सत्य माना और उसपर अमल किया वहीं वह सत्याग्रह हो गया। मैं तुम्हारे कार्यकी निन्दा करूँ तो भी उसका सत्याग्रहका स्वरूप

१. मणिलाल गांधीकी पुत्री
२. गुजरात हरिजन सेवक संघके संयुक्त सचिव

नहीं मिट जाता। यदि हम ऐसा न करे तो प्रगति ही न हो। मैंने किसी बातकी निन्दा नही की है। मैंने जो लिखा है यदि वह भविष्यके लिए मार्ग-दर्शनका काम करे तो अच्छा हो। तुम्हारे साथीने जो किया उससे मुझे असत्यकी बू आती है। उसने गंगापुत्रपर जो छाप डाली उसपर कायम नही रह सका। "नरो वा कुंजरो वा" से भी कुछ नीचे गिर गया जान पड़ता है। "नरो वा कुजरो वा" भी झूठ था।

बापूके आशीर्वाद

श्री अप्पासाहब पटवर्धन
पोस्ट ऑफिस कनकवली
जिला रत्नागिरि

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१३२. पत्र : मृदुला साराभाईको

महाबलेश्वर
६ मई, १९४५

चि० मृदु,

तूने तो बहुत जल्दी और पूरा जवाब दिया। यदि ऐसा तूने अपनी नीदमे खलल डालकर और रतजगा करके नही किया हो तो उत्तर लिखकर ठीक ही किया। रेहानाबहिनसे तू मिली होगी। तेरे जवाबसे सन्तोष होना चाहिए।

अब तो थोडे दिनोमे तू मुझसे मिलेगी इसलिए अधिक नही लिखता।

बापूके आशीर्वाद

मृदुलाबहिन
मार्फत सेठ अम्बालाल साराभाई
मलाबार हिल
बम्बई

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१३३. पत्र : चिमनलाल नरसिंहदास शाहको

६ मई, १९४५

चि० चिमनलाल,

इसे फाड़ डालने के बजाय मैं इसे तुम सबके पढ़ने के लिए भेज रहा हूँ। तुम स्वयं स्वस्थ होगे। प्रभाकरको आवश्यक उपचार करके स्वस्थ अवश्य हो जाना चाहिए। उसे भीमावरम जाना हो तो जाये। लेकिन उसका खाना-पीना, सोना-घूमना सब नियमबद्ध हो जाये तो उसकी तबीयत वहीं ठीक हो सकती है, ऐसा मेरा विश्वास है।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ९१०८) से। सी० डब्ल्यू० ९१७९ से भी; सौजन्य : चिमनलाल न० शाह

१३४. पत्र : नरहरि द्वा० परीखको

दुबारा नहीं पढ़ा

६ मई, १९४५

चि० नरहरि,

तुम्हारे 'कन्याने पत्रो' (कन्याको लिखे गये पत्र) ध्यानपूर्वक पढ़ गया। पत्र बड़ी मेहनतसे लिखे गये हैं, लेकिन कलम डरते-डरते उठी है ऐसा लगता है।

मिश्र विवाह-सम्बन्धी तुम्हारे विचार व्यवस्थित नहीं लगे। मेरी तो यह मान्यता है कि ऐसे विवाह जितने हों उतने कम हैं। इसलिए मैं एक ही जातिके भीतर किये विवाहोंका किसी प्रकार भी समर्थन नहीं करता। एक ही प्रान्तमें ऐसे मिश्र विवाह बड़ी संख्यामें होने चाहिए, यह बात भी मैं तुम्हारे पत्रोंमें नहीं पाता। अन्तर्प्रान्तीय विवाह तुम अपवाद-स्वरूप ही स्वीकार करते हो। मैं तो ऐसे विवाहोंको बढ़ावा दूंगा, और देना चाहिए। सुधारवादी — यानी जो धर्मकी ओरसे उदासीन हैं, वे — ऐसा करें तो उससे कुछ नहीं होगा। लेकिन हम जो धर्मको आगे रखकर चलते हैं कहाँतक जायेंगे, यह हमें तय कर लेना चाहिए। अगर हिन्दुस्तानी राष्ट्रभाषा हो जाये और जात-पाँत जैसी हम उन्हें जानते हैं लुप्त हो जायें — और होनी चाहिए — तो हमें निर्भय होकर अतिशूद्र और सवर्ण हिन्दुओंके बीच विवाहोंको प्रमुखता देनी चाहिए। फिर प्रान्तका प्रश्न ही नहीं उठेगा। विधर्मियोंके बीच विवाहमें भी, यदि

माँ-बाप समझदार हों, तो कोई हर्ज नही माना जाना चाहिए। हम तो सब धर्मोंको समान मानते है न? प्रार्थनामे जो अन्य धर्मोको स्थान दिया गया है, वह जान-बूझकर दिया गया है। बच्चे जिस धर्मका पालन करना चाहे करे। हमारी कल्पनाके दम्पति इस सम्बन्धमें बच्चोको शिक्षा भी उदार देगे। मेरी समझमे यह बात सरल होनी चाहिए। कन्याको जो पत्र लिखे जाये, उनमे यह बात दृढ़तापूर्वक और साफ-साफ आनी चाहिए।

महादेवका लेख जरा अस्पष्ट है। वनमालाकी शका ठीक है। हम लोगोमे जैन साध्वी क्या करती है? स्वामीनारायण पन्थकी साध्वी क्या करती है? अंग्रेजी साहित्य मे से बच्चोको उतना सब देना अजीर्ण उत्पन्न करेगा। तुलना समानोंके बीच होती है। हमारी सभ्यतामे पश्चिमी अतिशयताको स्थान नही है। हो सकता है बडे होकर हम उसे समझ सकेगे और तब दोनोकी तुलना कर सकेंगे। नन्हे बालकोको तो पहले अपनी प्राचीन परम्पराओको जानना चाहिए और उन्हे अपनाना चाहिए। लेकिन अब इसका अधिक विस्तार नही करूँगा।

एक बात छूटी जा रही थी। तुमने अपनी कोटिके यानी तीन जातियोके लोगोको और उनमें भी ब्राह्मणो और बनियोंको ही ध्यानमे रखा है। लेकिन राजपूतोका क्या? शूद्रोका? अतिशूद्रोंका? इनमे तलाक होता है, पुनर्विवाह होता है। फिर ऐसे समाज भी है, जिनमें विवाह जैसी कोई चीज नही होती, फिर भी शुद्धताका पालन होता है। इस बातका उल्लेख अवश्य होना चाहिए।

इसमें से जो पचे सो लेना। इसमे मेरे आज तकके विचारोकी झाँकी मिलेगी। यह पत्र महत्त्वका है। इसकी एक नकल आफिसको देना, या फिर हेमन्तकुमारको नकल करने को कहना।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (एस० एन० ९१३१) से

१३५. पत्र : गिरिराज किशोर भटनागरको

महाबलेश्वर
६ मई, १९४५

चि० गिरिराज,

तुमारा पो० का० ठीक मिला। मुझे नही मिल सकते उसमे कुछ दु:ख नही है। मुझे प्रिय काम कर रहे हो मेरे काफी है। हिंदी उर्दू ऐसा बढाओ जिसे दोनो एक बन जाय। देर लगेगी इसमे हरज नही है। हरि[1] विमलाके[2] ठीक खबर दिये।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० ८७७३) से

१ और २. गिरिराज किशोरके पुत्र और पुत्री

१३६. पत्र : घनश्यामदास बिड़लाको

महाबलेश्वर
६ मई, १९४५

चि० घनश्यामदास,

सुनता हूं कि तुमने १२ तारीखको जाने का निश्चय किया है।[1]

भाई दिनशा यहां है। दूसरी सब शर्त तो कबूल करते हैं लेकिन वह इतनी कबूलत चाहते हैं कि दस्तावेजमें दस्तखत होने के बाद वह कमसे कम पांच वर्ष तक तो ट्रस्ट-ग्राम नैसर्गिक उपचारके लिये कायम रहेगा। उसके बाद अगर प्रयत्न निष्फल होवे तो भले तालीमी कामके लिये ट्रस्टकी जायदाद स्थावर या जंगम उपयोगमे लाई जाय।

मुझे लगता है इतनी बात तो हमें कबूल करनी चाहीये।

तुमारी प्रकृति अच्छी होगी।

१२ तारीखकी बात सही हो सकती है क्या?

बापुके आशीर्वाद

[पुनश्च :]

तारसे जवाब दो।

मूल पत्र (सी० डब्ल्यू० ८०७०) से। सौजन्य : घनश्यामदास बिड़ला

१३७. वक्तव्य : समाचारपत्रोंको

महाबलेश्वर
६ मई, १९४५

मुझसे यह प्रश्न पूछा गया है:

सरकारने राष्ट्रवादी विचार रखनेवाले सर अरदेशिर दलाल[2] और भारत सरकारके तत्त्वावधानमें गैर-सरकारी रूपसे अमेरिका और इंग्लैंड जा रहे पूंजीपतियोंके जरिये

१. घनश्यामदास बिड़ला इंग्लैंड और अमेरिका जाने का कार्यक्रम बना रहे थे; देखिए पृ० ९८, पा० टि० १।

२. टाटा आयरन ऐण्ड स्टील कम्पनी, बम्बईके प्रबन्ध-निदेशक; १ अगस्त, १९४४ से वाइसराय की कार्यकारिणी परिषद्में योजना एवं विकास विभागके सदस्य

बड़े-बड़े शब्दोंका उपयोग करके भारतीय उद्योगोंके भविष्यको निर्णय करने की जो योजनाएँ बना रखी है, उनके बारेमें आपका क्या विचार है?

सरकारी दायरेके बाहरके लोगो द्वारा कही गई किसी बातका कोई महत्त्व नही है। उन्हे पता है कि हमारे अन्दर जो अच्छेसे-अच्छे लोग हैं वे बाते तो बड़ी-बड़ी करेगे पर अपने कार्योंसे उन्हे खुद ही झूठा साबित कर देंगे। बड़े-बड़े व्यापारी, पूंजीपति और उद्योगपति आदि सरकारके खिलाफ बोलते और लिखते है, परन्तु जब कार्यवाही करने का समय आता है तो वे सरकारकी मर्जीपर चलते है और ऐसे नफा भी कमाते है, फिर चाहे उनका नफा ५ प्रतिशत ही होता हो, जबकि सरकारका नफा ९५ प्रतिशत। जबसे ब्रिटिश व्यापारियोने तोपोका सहारा लेकर यहाँ कदम रखा है, तबसे इस देशमे मची गडबड़के लिए शायद परिस्थितियाँ ही जिम्मेवार है।

वर्तमान स्थितिमे एक अच्छी बात यह है कि सब बड़े-बड़े व्यापारी और पूंजीपति एक आवाजमे यह दावा करते है कि भारतको भारतकी जनता द्वारा निर्वाचित ऐसी राष्ट्रीय सरकारसे कम कोई चीज नही चाहिए जो ब्रिटेन या किसी दूसरेके नियन्त्रणके बिना अपने भाग्यका आप निर्णय कर सके। इस प्रकारकी स्वतन्त्रता माँगेसे नही मिलेगी। वह तभी मिलेगी जबकि छोटे-बड़े सभी हित अपने उस छोटे-मोटे लाभको, जो उन्हे ब्रिटिश शासकोके साथ मिलकर भारतको लूटने से मिलता है, छोडने को तैयार हो। जबतक उनकी यह साझेदारी खत्म नही होती, तबतक उनके मौखिक विरोधका कोई महत्त्व नहीं होगा।

तथाकथित गैर-सरकारी शिष्टमण्डल, जो कि विरोधियोके विचारमे, इंग्लैंड और अमेरिका जानेवाला है, तबतक किसी जाँच-पड़ताल या शर्मनाक सौदेके लिए वहाँ जाने का साहस नही कर सकता, जबतक कि कार्य-समितिके कर्णधारोको, उन-पर बिना मुकदमा चलाये नजरबन्द रखा जायेगा। उनका अपराध केवल इतना है कि वे अपनेको छोड़ किसी औरके खूनका कतरा बहाये बिना देशको स्वतन्त्र कराने की सच्चे दिलसे कोशिश कर रहे हैं।

[अंग्रेजीसे]

बॉम्बे क्रॉनिकल, ७-५-१९४५

१३८. सलाह : ब्रह्मचारी महावीरको[1]

महावलेश्वर
[७ मई, १९४५ या उसके पूर्व][2]

मेरी तुम्हें केवल यही सलाह है कि तुम अपने पड़ोसके गाँवोंमें जाओ और वहाँ गाँववालोंकी सेवा करो। मेरा पन्द्रह-सूत्री कार्यक्रम तुम्हारे सामने है। उसमें से किसी एक सूत्रको चुन लो और उसपर अमल करो। देवनागरी या उर्दू लिपिमें हिन्दुस्तानी भाषा सीखो और उसे गाँववालोंको भी सिखाओ। रुईका पींजना, कातना और उससे कपड़ा बुनना सीखो, और ये काम दूसरोंको सिखाओ। भाषणोंकी जरूरत नहीं है, परन्तु कामके द्वारा वास्तविक सेवाकी जरूरत है।

[अंग्रेजीसे]
हिन्दू, ९-५-१९४५

१३९. तार : अमृतलालको

महाबलेश्वर
७ मई, १९४५

अमृतलाल
मार्फत एम० एल० उदेशी
बम्बई

मैं लिख रहा हूँ। भेंट-वार्ता अनावश्यक है।

बापू

अंग्रेजीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. ब्रह्मचारी महावीर रामकृष्ण आश्रम, मद्राससे सम्बन्धित थे; उन्होंने गांधीजी की सलाह माँगी थी कि उन्हें क्या करना चाहिए।

२. यह समाचार युनाइटेड प्रेस ऑफ इंडिया द्वारा "महाबलेश्वर, ७ मई" तिथिके अन्तर्गत प्रकाशित हुआ था।

१४०. तार : मृदुला साराभाईको

महाबलेश्वर
७ मई, १९४५

मृदुलाबहिन साराभाई
कश्मीर हाउस, नेपियन सी रोड
मलाबार हिल
(बम्बई)

ताराबहिनके साथ आ जाओ।

बापू

अंग्रेजीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१४१. तार : 'वीरभारत' को

महाबलेश्वर
७ मई, १९४५

दैनिक 'वीरभारत'
लाहौर

उन्हें स्थानीय रूपसे निर्णय लेना चाहिए।

गांधी

अंग्रेजीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१४२. पत्र : एगथा हैरिसनको

महाबलेश्वर
७ मई, १९४५

प्रिय एगथा,

इस पत्रमें[1] पूरी तफसील है। मैं केवल अपना प्यार जोड़ता हूँ। मैं मजेमें हूँ — जितना परिस्थितियोमें सम्भव है।

बापू

कुमारी एगथा हैरिसन
२, क्रैनवोर्न कोर्ट
एल्बर्ट ब्रिज रोड
लन्दन, एस० डब्ल्यू० ११

अंग्रेजीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१४३. पत्र : मीराबहिनको

दुबारा नहीं पढ़ा

महाबलेश्वर
७ मई, १९४५

चि० मीरा,

कल रात तुम्हारा पत्र मिला। मुझे यह जानकर दु:ख हुआ कि तुम फिर बीमार हो अथवा पत्र लिखने के समय थीं। यहाँ मौसम बहुत सुहावना है। अगर रामप्रसाद कुछ दिनोंके लिए तुम्हारे कामको देख सके, तो मैं चाहूँगा कि तुम यहाँ आ जाओ और जूनके अन्ततक मेरे पास रहो।

इस बातकी फिक्र न करना कि रामप्रसादको जल्दी लौटना होगा। वह तब तक वहाँ रह सकता है जबतक कि मैं वर्धा न लौटूं। बल्कि अगर वहाँका मौसम उसके अनुकूल हो और काम उसे पसन्द हो, तो वह जूनके बाद भी वहाँ ठहर सकता है। वह बहुत योग्य आदमी है। उसने बड़ा परिश्रम किया है। लेकिन वह बीमार

१. यहाँ संकेत एगथा हैरिसनको लिखे प्यारेलालके पत्रकी ओर है।

पड़ गया था और कमजोर हो गया है। अगर वह सीखना चाहे तो उसे ढोरोंकी देखभालका काम सिखाओ। उसमें नया काम सीखने की पर्याप्त योग्यता है। सवाल यह है कि वह पर्याप्त तन्दुरुस्त है अथवा नही।

पशुओंकी देखभालके लिए तुम्हारे पास कोई ठीक आदमी भेजने की सबसे ज्यादा आशा परमेश्वरी प्रसादसे की जा सकती है। मै कमलनयनसे कहूँगा कि वह उसे लिखे। वह गाजियाबादमें है।

यदि बलवन्तसिंह आ जाये तो बहुत अच्छा हो। लेकिन वह अपनी भतीजीको तबतक नही छोड सकता जबतक कि मै सेवाग्राममें न होऊँ। मेरी अनुपस्थितिमें वह उसे जाने नही देगी।[1]

प्यारेलालके पास अपने सहायक हैं — एक शार्टहैंड लिखने और टाइप करनेवाला और एक अन्य सहायक। नरहरि भी उसकी सहायता करने के लिए यही है। दिनशा तो मेरी देखभाल करते है। फीनिक्सका मणिलाल भी यहाँ है और डॉ० सुशीला भी। शान्तिकुमार तो है ही।

स्नेह।

बापू

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ६५०६) से; सौजन्य : मीराबहिन। जी० एन० ९९०१ से भी

१४४. पुर्जा : नरहरि द्वा० परीखको

७ मई, १९४५

१. इन्स्पेक्टर एक हो सकता है।

२. भोजन एक प्रकारका।

३. नीतिकी शिक्षा एक ढंगकी जैसे कि अहिंसा और सत्यकी। प्रार्थना धर्मानुसार।

४. पन्द्रह-सूत्री कार्यक्रमके मूल तत्त्व।

५. संस्थाओंका सामान्य ज्ञान।

६. विद्यार्थियोंको चाहिए कि वे ऐसी संस्थाओंमें कमसे-कम पन्द्रह दिन बिताये।

७. मुख्य व्यक्तियोको इन संस्थाओंका संचालन करने की योग्यता (सामान्यत·) हासिल करनी चाहिए जिससे कि संयुक्त संस्थामे आवश्यकता पड़ने पर वे मदद दे सके।

८. [संस्थाएँ] यदि बचे हुए पैसेको अपने पास रख सकें तो रखे।

१. देखिए पृ० १२३ भी।

९. सब कार्यकर्ताओंको हिन्दुस्तानी (हिन्दी-उर्दू)का ज्ञान प्राप्त करना चाहिए।

१०. ऐसी टिप्पणियाँ सदस्योंमें घुमाई जानी चाहिए और उनसे पूछा जाना चाहिए कि उसमें उन्हे क्या पसन्द है और क्या नही; वे नये सुझाव [भी] दें। मिलने के लिए जूनके वाद किसी तारीखका सुझाव देना।

११. यह पुर्जा दूसरोंको भी भेजना।

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१४५. पत्र : वसुमती पण्डितको

महावलेश्वर
७ मई, १९४५

चि० वसुमती,

तूने जो अर्थ लगाया है वैसा अर्थ मेरे शब्दोका नही था। मेरे कहने का अभिप्राय मात्र इतना ही था कि मन अस्थिर नही होना चाहिए। लेकिन अब तू जो अर्थ निकालती है वह अर्थ मै भी करना चाहूँगा। बाहरके जंजालसे मुक्त हो जा और शरीर रहे या न रहे समौमे रम जा। यदि तू ऐसा कर सके तो तुझसे मैंने जो आशा रखी है वह फलीभूत होगी। चन्दूभाईके साथ भी साफ-साफ बात कर ले। सूरतसे सम्बन्धित सब बातें निपटा ले। लेकिन यदि ऐसा करने की तुझमें हिम्मत न हो और तू यह केवल मेरी खातिर करे तो यह शोभा नही देगा और यह कायम भी नही रहेगा। मैं चाहे कैसे सपने देखूँ उससे तुझे क्या?

इसलिए अपनी शक्तिको आँककर ही तुझसे जो बने सो करना।

मेरी कामना है कि तेरा शरीर ताँबे जैसा बने।

अब अकबरको मैंने पत्र लिखा है।[1] वह उसे मिल गया होगा।

बापूके आशीर्वाद

वसुमतीबहिन पण्डित
समौ
बरास्ता ओल्ड डिसा
उत्तर गुजरात

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. देखिए पृ० ३-४।

१४६. पत्र : मुन्नालाल गंगादास शाहको

महाबलेश्वर
७ मई, १९४५

चि० मुन्नालाल,

तुम्हारे दो पत्र मिले। तुम अपने ऊपर जोर डालकर १२ बजे लिखते हो, यह ठीक नहीं है। तुम्हे १० बजेतक सो जाना चाहिए और ४ बजे उठना चाहिए। दिनमे एक घन्टेकी नीद ले लेनी चाहिए।

सच्ची डेमोक्रेसी तिरस्कारकी वस्तु नहीं है, उसके मूलमे अहिंसा होती है। "पंचोकी वाणी परमेश्वरकी वाणी होती है", इस उक्तिमे बडा रहस्य छिपा है। [लेकिन] ये पंच परमेश्वरको भजनेवाले होने चाहिए।

तुम्हारी, मेरी और सबकी शान्तिका उपाय मूक सेवा और हृदयकी उदारता है।

कचनवाली बात समझा। कंचनको जैसे अपनी उन्नति करनी हो करने दो। अगर उसे सन्तोष नही है, तो उसे कोई नही रोक सकता; न मै, न तुम। तब अमतुस्सलाम कैसे रोक सकती है?

अगर हम सबके हृदय एक हो जाने की राह देखने बैठेंगे, तो राह देखते ही रह जायेंगे। 'आप भले तो जग भला', इस न्यायसे हमे तो सबके साथ एक हृदय होकर रहने का भरसक प्रयत्न करना चाहिए।

हीरामणिको मै खूब पहचानता हूँ। वह आश्रममे रहकर अनुभव प्राप्त करे, यह मुझे पसन्द है। शादी जब करनी होगी, तब वर मिल जायेगा। लेकिन वह इसकी चिन्ता ही क्यो करती है? वह काम आने जैसी लड़की है और अनेक प्रकारसे उपयोगी सिद्ध हो सकती है। वह मुझे लिखना चाहे तो लिखे।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ८४५४) से। सी० डब्ल्यू० ५५७७ से भी; सौजन्य : मुन्नालाल गं० शाह

१४७. पत्र : कृष्ण वर्माको

महाबलेश्वर
७ मई, १९४५

भाई कृष्ण वर्मा,

तुम्हारा पत्र मिला और मैं उसका तत्काल उत्तर दे रहा हूँ। तुम चि० माधवदास के साथ आदमी भेज रहे हो, और चौकसी रखते हो तथा खुराकके सम्बन्धमें नियमका पालन करवाते हो, यह सब बिलकुल ठीक है। माधवदास कुछ कहे अथवा विरोध करे, इसकी तनिक भी चिन्ता न करना। वह दृढ़ता खो बैठा है इसीसे तो मैंने [उसे] तुम्हें सौंपा है। मेरी उसके बारेमें क्या धारणा है, सो बताने के लिए यह पत्र उसे पढ़ाना। वह यह समझे कि यह पत्र उसके लिए भी है। तुम्हे खर्चके लिए पैसा लेना ही होगा।[1]

मुझे इस बारेमें बताना।

मुझे लिखते रहना।

बापूके आशीर्वाद

डॉ० कृष्ण वर्मा
नैसर्गिक उपचार अस्पताल
मलाड

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१४८. पत्र : भगवानलाल रणछोड़दास शाहको

महाबलेश्वर
७ मई, १९४५

चि० भगवानलाल,

चि० जयसुखलालकी मार्फत तुम्हारी ३०३ रुपयेकी हुंडी मिली है। उम्मीद है, तुम्हारा अच्छा चल रहा होगा।

बापूके आशीर्वाद

शाह भगवानलाल रणछोड़दास
मेहता मिल स्टोर्स, कराची
मार्फत जयसुखलाल गांधी
सिन्ध मार्केट, महात्मा गांधी रोड
कराची

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. देखिए पृ० ७२ भी।

१४९. पत्र : चिमनलाल नरसिंहदास शाहको

महाबलेश्वर
७ मई, १९४५

चि० चिमनलाल,

साथमे वच्छराज कं०, वर्धाके नामपर ३०३ रुपयेकी हुडी है। यह पैसा मेरे नामपर जमा करना। ब्योरा चि० जयसुखलालके पत्रके पीछे दिया हुआ है। मैने यहाँसे भाई भगवानलालको प्राप्ति-स्वीकार भेजा है इसलिए तुम्हे लिखने की जरूरत नही है।

तुम्हारे बारेमे डॉ० आइस जो लिखते है वह तुम्हे करना ही चाहिए।

बापूके आशीर्वाद

[पुनश्च :]

उनका कहना है कि यदि वे जैसा कहते है वैसे तुम आराम और इलाज करो तो ताकत अवश्य आयेगी। आराम लेना। तुम्हे बहुत चलने की भी जरूरत नही है। वे जो खाने की अनुमति दे सो खाना। पत्र चि० शकरीसे[1] लिखवाना। स्वस्थ हो जाना तुम्हारा धर्म है। यदि तुम आश्रम नही छोड़ना चाहते, तो मेरी सलाह है कि तुम्हे यह सब करना ही होगा।

बिड़ला कूआँ शारीरिक श्रमसे साफ नही होनेवाला है। इसके लिए ब्लास्ट[2] करना पड़ेगा। मैने इस बारेमे रामेश्वरदाससे कहा तो था। कामचलाऊ [प्रबन्ध] क्या होगा, सो मै नही जानता।

बापूके आशीर्वाद

चिमनलाल
सेवाग्राम आश्रम
वर्धा

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. चिमनलाल शाहकी पत्नी
२. यह शब्द अंग्रेजीमें है।

१५०. पत्र : नरहरि द्वा० परीखको

७ मई, १९४५

मैंने इनमें से एक पत्रका उत्तर सेवाग्राममें दिया था, ऐसा मुझे याद है। मैं मामलेसे वाकिफ हूँ। मेरी राय है कि भाई वशीने[1] इतने दिनों तक आदेशके अनुसार काम किया तो अभी थोड़े दिन और राह देख लें। लेकिन यदि वह सचमुच बहादुर है तो सब-कुछ त्यागकर स्पष्ट नोटिस देकर सविनय अवज्ञा करें। मेरे कहने से नहीं वरन् अन्तःप्रेरणासे।

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१५१. पत्र : रामप्रसादको

७ मई, १९४५

चि० रामप्रसाद,

तुम्हारा पत्र मिला। यदि तुम्हारी तबीयत अच्छी रहती है तो यह बहुत अच्छी बात है। मीराबहिन बीमार पड़ी हुई है। पशुओंकी देखभाल करनेका और अन्य काम भी यदि तुम सँभाल सको और मीराबहिन आराम कर सके तो उसे यहाँ भेज देना।[2]

चि० कान्ताका पत्र आया था। उसने अपनी तबीयतकी ठीकसे देखभाल नहीं की इससे [अब] दुःखी होती है। गर्भवती स्त्रीके लिए लापरवाही बरतना दुहरा पाप है। क्या वह नहीं जानती कि ऐसी लापरवाहीमें न कोई गुण है और न कोई बड़ाई है — बल्कि बेवकूफी ही है? यह बात उसे कैसे समझाई जा सकती है?

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. बापूभाई नारणजी वशी, जो खराब स्वास्थ्य होनेके कारण जेलसे तो रिहा कर दिये गये थे, लेकिन उन्हें अपने गाँवसे बाहर न जाने का सरकारी आदेश था।

२. देखिए पृ० ८६-८७ भी।

१५२. पत्र : सत्यवतीको

महाबलेश्वर
७ मई, १९४५

चि० सत्यवती,[1]

तेरा पो० का० और चमनलालका भी मिला। पेनिसिलिनसे भी तू अच्छी हो सके तो बडी बात होगी। चादका[2] आना मैंने चादपर छोडा है। अगर आवेगी तो हरिजनवासमे ही रहेगी। बोरवलीमे अच्छा काम किया है और सुश्रुषा काम सीखने मे उसका चित्त लग गया है। कर्त्तव्यपरायण लडकी है।

बापुके आशीर्वाद

श्री सत्यवती देवी
टी० बी० अस्पताल
किंग्स्वे [कैम्प], दिल्ली[3]

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१५३. पत्र : वियोगी हरिको

महाबलेश्वर
७ मई, १९४५

चि० वियोगी हरी,

संभव है कि बहन चादरानी देवी सत्यवतीके लिये वहां आये। अगर आवे तो उसे हरिजन निवासमे कही भी रखोगे। अच्छी और सादी लडकी है। आश्रममें सेवाकार्य सीखती है। पंजाबकी है। मैं ठीक हूं। सब हरिजन बालकोको आशीर्वाद।

बापुके आशीर्वाद

वियोगी हरि
हरिजन निवास (कोलोनी)
किंग्स्वे [कैम्प]
दिल्ली

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. स्वामी श्रद्धानन्दकी पौत्री और समाज-सेविका, जो १९३० से गांधीजी की अनुयायी बन गई थी और "भारत छोडो" आन्दोलनके दौरान उन्हें कैद हो गई थी। जेलमें ही उन्हें टी० बी० हो गई और स्वास्थ्य खराब होने के कारण वे रिहा कर दी गई।

२. चाँदरानी

३. यहाँ पता अंग्रेजीमें है।

१५४. पत्र : एम० एस० केलकरको

७ मई, १९४५

भाई बरफ,

तुमारा पत्र मिला। अच्छा है। सब कहते हैं भाजी और फल खाना चाहिये। तु कहते है 'नही'। उसका कारन बताओ। तुम नही खाते है? क्या सिर्फ दूध काफी खुराक है?

तुम अवश्य अलग पका लो। मैं तो दर्दी रखने के लिये दो कमरे देना चाहता हूं। बाहर हूं इसलिये मंत्रीके मार्फत ले लो। अगर मैं दूं उनमे से किसीको अच्छे करो तो मुझे संतोष होगा और दर माह बांध दूंगा।

बराली पानीके लिये जो बरतन करना चाहिये वह करो। ऐसा पानी हमे उपयोग देगा।

बालकृष्ण खुद तुमारा उपचार करे तो अवश्य करो। दा० सुशीलाके उपचारसे तो बालकृष्ण है वहां है।

हरिइच्छाके बारेमें चिंता लगी रहती है। उसे अच्छी करोगे तो मेरी श्रद्धा तुम पर बहुत बढेगी।

अब तो मैंने सब उत्तर दिये ना? रह गया है तो लिखो।

बापु

[पुनश्च :]

उपर और बाजुमें जगह रखो।

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१५५. पत्र : पूरणचन्द्र जोशीको

महाबलेश्वर
७ मई, १९४५

भाई जोशी,

भाई मोहन ता० २४ को भले आवे।[1] २ से ४ के बिचमें जब आवेगा तब मिलुंगा।

आपका,
मो० क० गांधी

श्री पी० सी० जोशी
कम्युनिस्ट पार्टी
राजभुवन
सेन्डहर्स्ट रोड
बम्बई–४

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१५६. पत्र : विद्याको

महाबलेश्वर
७ मई, १९४५

चि० विद्या,

पति गया, पुत्र भी गया तो क्या हुआ? हम सब वही जानेवाले है, जिधर वे गये है। सब अपना कर्जा अदा करके जाते हैं। कोई जल्दी कोई देरसे। शेष जीवन सेवामें ही हो। पीछे सुखदुख सब एक बात हो जाती है। ईश्वर कल्याण करे।

बापुके आशीर्वाद

श्री विद्याबहन
रामजस बिल्डीग
४, पार्क रोड
लखनौ (यू० पी०)

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. देखिए पृ० ६०-६१ भी।

१५७. पत्र : परचुरे शास्त्रीको

महावलेश्वर
७ मई, १९४५

भाई परचुरे शास्त्री,

तुम्हारा संस्कृतमें सुदर पत्र मिला। मृत्यशैय्यासे उठे हो। बिलकुल अच्छे हो जाओ। मनपर संपूर्ण विजय पाओ। मै अच्छा हु।

बापुके आशीर्वाद

श्री परचुरे शास्त्री
महारोगी सेवामंडल
दत्तपुर
पो० नालवाडी, वर्धा

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१५८. पत्र : शैलेन्द्रनाथ चटर्जीको

महाबलेश्वर
७ मई, १९४५

चि० सैलेन,

पिताजीने पूछा सैलेनको कलकत्ता अच्छा[1] होने के लिये ले जाउं? मैं 'हा' के सिवा दूसरा क्या कह सकता था। यहां लाने से तू अच्छा हो सके तो मै लाउं लेकिन ऐसा नहीं है। मैं तो तुझे कहूंगा मलाड नैसर्गिक उपचार इस्पीतालमें जा। अगर जाना चाहता है तो मैं डा० कृष्णवर्माके वहां भेज सकता हूं। वहांका खर्च देना होगा। रिषभदास रजा देवे तो अच्छा है। मलाडकी हवा अच्छी है, मुंबईका परा है।

बापुके आशीर्वाद

[पुनश्च :]

हिंदुस्तानीमे लिखने की आदत डालो।

पत्रकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० १०३९१) से। सौजन्य : अमृतलाल चटर्जी

१. शैलेन्द्रनाथ चटर्जी वायु-विकारसे ग्रसित थे; देखिए पृ० २५-२६ भी।

१५९. पत्र : अमृतलाल चटर्जीको

७ मई, १९४५

चि० अमृतलाल,

उन्हें लिखना है सो लिखे। यहां बुलना नही चाहता। मुझे फुरसद भी नही है। सैलनको मैंने मलाड सेनिटोरीयममें जाने की सलाह दी है।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० १०४०३) से। सौजन्य: अमृतलाल चटर्जी

१६०. तार: गोविन्द वि० गुर्जलेको

महावलेश्वर
८ मई, १९४५

निर्मलानन्द
मार्फत अप्लायेन्स
बम्बई

सेवाग्राम तब आओ जब मैं वहाँ पहुँच जाऊँ।

गांधी

अंग्रेजीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१६१. तार : सतीशचन्द्र दासगुप्तको

महाबलेश्वर
८ मई, १९४५

सतीशचन्द्र दासगुप्त
१५, कॉलेज स्क्वायर
कलकत्ता

आँखोके बारेमें अफसोस है। उनपर जोर मत डालो। यदि तुम आओगे तो शान्तिकुमारजीके[1] साथ जुहूमें ठहरोगे। शान्तिकुमारजी मार्फत जलनाथ बम्बईके नामपर तुम्हारा तार मिलने पर दादर स्टेशनपर तुम्हें कोई मिल जायेगा।

बापू

अंग्रेजीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. शान्तिकुमार न० मोरारजी

१६२. तार : घनश्यामदास बिड़लाको

महाबलेश्वर
८ मई, १९४५

सेठ घनश्यामदास
८, रॉयल एक्स्चेंज प्लेस
कलकत्ता

तुम्हारा तार मिला।[1] मेरा वक्तव्य[2] जरूरी था। उसमे एक कल्पनात्मक मामलेका जिक्र है। मैने जल्दबाजीमे अपनी राय नही बनाई। वक्तव्यमें जो राय दी गई है वह सदासे मेरी राय रही है। तुम्हे किसी बातपर खेद व्यक्त करने की जरूरत नही है। क्योकि तुम, टाटा और कस्तूरभाई बिलकुल गैर-सरकारी तौरपर जा रहे हो। भूखे और नंगे भारतका ध्यान करते हुए मैं तुम्हे आशीर्वाद देता हूँ और तुम्हारे लिए ईश्वरसे प्रार्थना करता हूँ।[3] दोनो तार समाचारपत्रोंको दे रहा हूँ।[4]

बापू

अंग्रेजीकी नकल (सी० डब्ल्यू० ७८७१) से। सौजन्य : घनश्यामदास बिड़ला

१. ७ मईके अपने तारमें घनश्यामदास बिड़लाने कहा था: "मुझे यह देखकर बहुत दुःख हुआ है . . . कि आपने मेरी, टाटा और कस्तूरभाईकी — जिन्हें आप इतनी अच्छी तरह जानते हैं — नेकनीयतीपर सार्वजनिक रूपसे अविश्वास व्यक्त किया और यह सोचा है कि हम भारतकी ओरसे कोई शर्मनाक अथवा किसी और तरहका सौदा करने जा रहे हैं। . . . हम जानते हैं कि हमें किसी तरहका सौदा — शर्मनाक सौदेकी तो बात ही अलग है — करने का अधिकार नहीं है। औद्योगिक शिष्टमण्डल केवल एक गैर-सरकारी दलके रूपमें, अपने खर्चपर और अपने अमलेके साथ इंग्लैंड और अमेरिका जा रहा है। और उसका उद्देश्य लोगोंसे मिलना तथा उत्पादनके नवीनतम तरीकोंमें वैज्ञानिक प्रगतिका पता लगाना है। . . . आपके वक्तव्यका निश्चय ही यह मतलब लगाया जायेगा कि आप हमारे उद्देश्यकी घोर निन्दा कर रहे हैं। . . . मैं १४ मईको कराचीसे रवाना हो रहा हूँ और आशा करता हूँ कि आप मुझे आशीर्वाद देंगे और मेरे लिए ईश्वरसे प्रार्थना करेंगे। . . ."

२. देखिए पृ० ८२-८३।

३ और ४. **महात्मा गांधी—द लास्ट फेज**, खण्ड १, भाग १, पृ० १०७ में प्यारेलालने स्पष्ट किया है कि एक मित्रने इस बातपर आपत्ति की कि गांधीजी को "उद्योगपतियोंको सशर्त आशीर्वाद" नहीं देना चाहिए। इसपर गांधीजी ने यह कहकर अपनी कार्यवाहीको उचित बताया कि "केवल इसी तरह अहिंसा अपना प्रभाव बता सकती है। . . . जो कोई आशीर्वादकी शर्तोंको तोड़ेगा, उसे मेरे

१६३. पत्र : अमृतलाल वि० ठक्करको

८ मई, १९४५

बापा,

तुम्हारा पत्र मिला। मेरा काम मेरे अपने तरीकेसे चलता है। आज हैदराबाद से सरकारका उत्तर आ गया है। देखता हूँ कि क्या हो सकता है। यहाँ आयेंगे तब [वह पत्र] देखना। आराम लेना।

बापू

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१६४. पत्र : श्रीमन्नारायणको

महाबलेश्वर
८ मई, १९४५

चि० श्रीमन्,

तुमारी सूचना सही है। हम कैसे निकले[1] सोचने की बात है। तुमको आवश्यकता होगी तो बुलाउंगा।

मदालसाने कटी स्नान छोडा है सो अच्छा नही है। दरीयाका पानी "टबमे" भरकर ले सकती है।

सबको आशीर्वाद। रसगुल्लाको[2] मीठी बुची।

बापुके आशीर्वाद

पाँचवें पुत्रको बापूके आशीर्वाद, पृ० ३०५-६

आशीर्वाद भूतकी तरह लग जायेंगे।" प्यारेलालके अनुसार "गांधीजी ने कहा कि ऐसा करके उन्होंने सभी सम्बन्धित पक्षोंकी, जिनमें ब्रिटिश सरकार भी सम्मिलित है, उनकी नैतिक जिम्मेदारी जतला दी है और उद्योगपति मित्रोंके लिए यह आसान बना दिया है कि वे अपने वर्गके अन्दर या बाहर हुई प्रतिक्रियाके विरुद्ध लड़ सकें और भारतीय हितोंके विरुद्ध उनपर कोई योजना लादे जाने पर उसका विरोध कर सकें. . .।"

घनश्यामदास बिड़लाने १० मईके तार द्वारा भेजे अपने उत्तरमें चैनका भाव व्यक्त किया है और कहा है कि वे "खुश दिलसे" जायेंगे। देखिए पृ० १०७-८ भी।

१. हिन्दी साहित्य सम्मेलनसे

२. श्रीमनजीका बड़ा लड़का भरत

१६५. श्रद्धांजलि : रवीन्द्रनाथ ठाकुरको[1]

महावलेश्वर
८ मई, १९४५

रवीन्द्रनाथ ठाकुर निर्विवाद रूपसे भारत अथवा एशियाके ही कवि नही, वल्कि विश्व-कवि हैं। हम लोगोमे यह प्रथा वन गई है कि हम दिवंगत महापुरुषोका मृत्यु-दिवस नही, वल्कि जन्म-दिवस मनाकर उन्हे श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं। शायद इसका कारण केवल यही है कि शरीरके भस्म होने के साथ उनका नाश नही होता। उनकी कृतियाँ उनकी स्मृतिको अमर वनाये रखती हैं। राम और कृष्ण अवतार थे। हम उनके जन्म-दिवस मनाते हैं। इसी प्रकार यद्यपि गुरुदेव शरीर-रूपसे आज हमारे बीच नही हैं, फिर भी उनका अमर काव्य उन्हे सदा जीवित रखेगा। समयके वीतने के साथ कवीन्द्रकी स्मृति अधिकाधिक समृद्ध होती जायेगी।

[अंग्रेजीसे]
हिन्दू, १३-५-१९४५

१६६. पत्र : अमृतकौरको

महावलेश्वर
९ मई, १९४५

चि० अमृत,

मैंने प्यारेलालके नाम तुम्हारा पत्र पढ़ा है।

गुरुवख्शानीकी पत्नीने अपनेको पतिमे एकरूप कर लिया है। इसलिए वह उसकी हर वात मानेगी। किन्तु हमारे काममे हमारे मानदण्डके अनुसार उनकी जितनी उपयोगिता है उससे अधिक देकर उन्हें विगाड़ना नही। और यह भी खयाल रखना कि इससे तुम्हारे सार्वजनिक काममे वाधा न पड़े। मैं सिर्फ इतना ही चाहता हूँ कि तुम उनके साथ हमदर्दी रखो और उन्हे सलाह दो।

हाँ, एम० के हाथ भेजा गया एगथाका पत्र मुझे मिल गया है। उसे पावती नही चाहिए थी, सो मैंने भी कष्ट नही किया।

१. गांधीजी कवीन्द्रकी ८५ वीं जयन्तीके अवसरपर सायंकालीन प्रार्थना सभामें बोल रहे थे।

तुम्हे अपना स्वास्थ्य ठीक रखना चाहिए। मुझे यह जानकर खुशी हुई है कि शम्मी[1] पहलेसे अच्छा है।

सबको प्यार।

बापूके आशीर्वाद

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ४१५५) से; सौजन्य : अमृतकौर। जी० एन० ७७९० से भी

१६७. पत्र : सैयद महमूदको

महाबलेश्वर
९ मई, १९४५

भाई महमूद,

तुम्हारे खतकी इंतजारमें था। आज आया। बहुत खुश हुआ। देखता हूं कि तुमको काफी कामयाबी मिल रही है।

हा, लंका जाओ।

मेरे पास तो दिल चाहो तब आओ। उम्मीद तो है कि मै यहां या पंचगनी (एक ही बात है) जूनके आखिरतक हूं। ठंडक है लेकिन बहुत नही।

तुम्हारी आंखका इलाज हो सके सो करो। सबकी दवा न की जाये। जिस जगह पूरा भरोसा किया जा सकता है जरूर इलाज करो। राजाजी मेरे साथ है। बाकी मिलने के बाद।

बापूकी दुआ

उर्दूकी फोटो-नकल (जी० एन० ५०९५) से

१६८. पत्र : कानम गांधीको

महाबलेश्वर
९ मई, १९४५

चि० कानम,

तेरा पत्र मिला। आज तेरी लिखावट ठीक है। सुधारकी गुंजाइश है। तू जब भी और जिस किसीको भी पत्र लिखता है यदि अच्छे अक्षरोंमे लिखे तो तुझे अच्छा लिखने कीं आदत पड़ जायेगी। वहाँ भी तू ठीक तरहसे सीख रहा है। यह पत्र कृष्णचन्द्रजीको पढ़ाना जिससे कि यदि उनके पास समय हो तो वे तुझे सिखाये।

१. अमृतकौरके भाई-शमशेर सिंह

मेरे पास तो तू जब आना चाहे आ जाना। तू यहाँ समा जायेगा। २० तारीख तक थोड़ी भीड़ रहेगी। बादमें फुर्सत मिलने की उम्मीद करूँगा।

डॉ० महमूद लंका गये होंगे। इनका पत्र दिल्ली, मार्फत डॉ० शौकत अली अन्सारी के पतेपर लिखना।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१६९. पत्र : कृष्ण वर्माको

९ मई, १९४५

भाई कृष्ण वर्मा,

तुम्हारा पत्र मिला। मैं यह मान लेता हूँ कि माधवदासका ठीक चल रहा है। मैं चाहता हूँ कि उसपर जो खर्च हो रहा है वह तो तुम अवश्य लो। जो न दे सके यदि वैसा मामला तुम्हारे पास भेजूँ तब तुम वैसा ही करना। वा के लिए मैंने तुम्हे कहाँ-कुछ दिया था? यदि तुम कुछ भी नहीं लोगे तो अन्य रोगियोंको भेजने में मुझे संकोच होगा।

यदि तुम स्वयं [पत्र] न लिख सको तो लिखवाने में तनिक भी संकोच करने का कोई कारण नही है। सवाल तो बस इतना ही है कि नैसर्गिक उपचारके सभी तरीके बिलकुल ठीक होने चाहिए।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१७०. पत्र : गजानन नायकको

महाबलेश्वर
९ मई, १९४५

चि० गजानन,

तुम्हारा पत्र मिला। यदि तुम भाई धीरेनके पास जाते हो तो भी वहाँसे अनुमति लेकर और पैसा लेकर ही जाया जा सकता है। क्या तुम्हें किसी कामसे जाना है? काम तो ग्रामोद्योग [संघ] का ही है ना?

तुम मुझे जो बात लिखने मे हिचकते हो वह बात लिखना भी तुम्हारा धर्म है। मुझे दुःख होता है अथवा सुख, इसका तुम्हें विचार तक नही करना चाहिए। सार्वजनिक प्रवृत्तिमें

सलग्न व्यक्तिने यदि दु खकी बात सुनने की शक्ति प्राप्त नही की है, तो उसने कुछ भी प्राप्त नही किया, ऐसा कहा जा सकता है। इसलिए मुझे नि शंक होकर लिखना।

बापूके आशीर्वाद

मार्फत सेवाग्राम आश्रम

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१७१. पत्र : चुगको

महाबलेश्वर
९ मई, १९४५

भाई चुग,

तुमारा तार मिला। मैंने लिखा है न कि मेरा इलाज मैं नीचे उतरुं तब करो। मूल इलाज तो कम्पन, खून दवाव और हुकवर्मका है। यहाकी हवा अनुकूल है। इसलिये फायदा हुआ तो हवाका कि दवाका सदेह रहेगा। अगर यहाकी हवाने कुछ नही किया तो तुमारा इलाज क्या करता है सो देखुगा। और सेवाग्राममे तो दूसरे दर्दीको भी देखोगे।

बापुके आशीर्वाद

डॉ० चुग
रावल बिल्डिग
लेमिंग्टन रोड (दक्षिण)
बम्बई–४[1]

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. पता अंग्रेजीमें है।

१७२. पत्र : कमला लेलेको

महाबलेश्वर
९ मई, १९४५

चि० कमला,[1]

तेरा पो० का० मिला। तू बिलकुल अच्छी हो गई, मुझे बहुत आनंद होता है। मुझेको न मिल सकी उसका कुछ नही। ज्योतिर्मय[2] नाम रखो। ऐसे संस्कृत नाम रखने का मोह क्यो? यह निकम्मी वायु है। यह बात भविष्यके लिए समज। अगर शादी[3] एक ही जातिमें है तो मेरे आशीर्वाद मत मांगना। यों लड़की कैसी भी अच्छी हो। अगर विजाती है तो आशीर्वाद है।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकलसे (जी० एन० ६१११) से। सी० डब्ल्यू० ३४२५ से भी; सौजन्य : कमला लेले

१७३. पत्र : मीर मुश्ताक अहमदको

महाबलेश्वर
९ मई, १९४५

भाई मुश्ताक अहमद,

आपका २ तारीखका खत मिला है। आपके सवालोंके जवाब नीचे दिये हैं।

(१) फिर्का दाराना नुमांइदगी बजाते खुद हर सुरतमें बुरी चीज है।

(२) आज इंडियन नेशनल कांग्रेसके मेम्बर भरती करने का किसीको हक्क नही।

(३) जिन कमिटियोंका आपने जिक्र किया है, वे कांग्रेसके जाब्तेके मुताबिक नहीं खडी की गई। खुद अपनेको उन्होंने खड़ा किया है। इसलिये हर कोई उन्हें तस्लीम करने से इन्कार कर सकता है।

(४) जहांतक मुझे इल्म है कांग्रेसके जाब्तेके नीचे ऐसी कोई रुकावट नही याने गुंडा भी आ सकता है।

१. एक समाज-सेविका; वे वर्धाके महिला आश्रममें अध्यापन कार्य कर रही थीं।
२. कमला लेलेका नवजात पुत्र
३. कमला लेलेके देवरकी शादी

(५) हां बशर्तेके वह आज सच्चे दिलसे कांग्रेसका काम करते है।

ऊपर दिये हुए जवाबोंका कुछ भी वक-अजज समझी जाय। वह मेरी जाती राय है। कानूनकी रूसे यह गलत हो सकती है और अगर सही भी हो तो वह ठुकरा दी जा सकती है क्योंकि मुझे कुछ इखत्यार नही है। इसलिये आप यह भी समझे कि वह शादा करने के लिये नही है।

आपका,
मो० क० गांधी

मुश्ताक अली
३४, प्रेम हाउस
कनाट प्लेस
नई दिल्ली

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१७४. पत्र : जे० आर० डी० टाटाको

महाबलेश्वर
१० मई, १९४५

भाई जहाँगीर,

आपका गुस्सेसे भरा पुर्जा मिला है—बशर्ते कि आप गुस्सेमे कभी कुछ लिख सकते हों।

अगर आप सब लोग किसी तरहका वायदा करने के लिए नही गये है, तो मेरी टिप्पणी[1] आपका बचाव करेगी। मैंने एक परिकल्पित प्रश्नका जवाब दिया है। यदि वह कल्पना ही गलत है तो स्वाभाविक है कि जवाब भी गलत है और इस तरह आप सबका बचाव होता है। आप लोगोंमें से किसीकी ओर इशारा करने का तो सवाल ही नही था, क्योंकि मै तो एक कोरी कल्पनासे निपट रहा था। आशा है मैंने अपनी बात स्पष्ट कर दी है।[2]

आपका[3],
मो० क० गांधी

अंग्रेजीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. देखिए पृ० ८२-८३ और ९८-९९।
२. देखिए पृ० १०७-८।
३. साधन-सूत्रमें यह गुजरातीमें है।

१७५. पत्र : एस० के० पाटिलको

महाबलेश्वर
१० मई, १९४५

भाई पाटिल,[1]

जो खबर तुमने प्यारेलालजीको दी है मुझे संतोष नही देती है। मैं चाहता था दलका जाहेरके लिये छपा हुआ कार्यक्रम। तो भी कुछ तो है। मेरी आशा है कि सब महेनत सफल होगी और रचनात्मक काम बढेगा।

बापुके आशीर्वाद

श्री एस० के० पाटिल, एम० एल० ए०, बम्बई
हीरा हाउस
३८१, सेंडहर्स्ट रोड
बम्बई

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१७६. पत्र : हीरालाल शास्त्रीको

महाबलेश्वर
१० मई, १९४५

भाई हीरालाल शास्त्री,

इसके साथ कु० बागलेके दो खत भेजता हूं। अखबार तो तुमने देखा होगा। कुछ उत्तर देना है तो दो। मेरे पर उनके खतका असर अच्छा नही पड़ा है। लेकिन रतनदेवीने इसमें क्यों हिस्सा लिया। वह इंग्रेजी जानती ही नही है ऐसी आशा थी और मेरा सर झुकता था। अखबारमें उनका खत पढकर हेरान हूआ। अगर इंग्रेजी उनका है तो भी और किसीने लिखा है तो भी इन जंजीरोको स्त्री जाती भी तोडने के बदलेमें चुमेगी तो तुमारी संस्थाका क्या उपयोग। सब लडकीया इंग्रेजी

१. बम्बई प्रदेश कांग्रेस कमेटीके १७ वर्षों तक मन्त्री रहे और १९४६ में उसके अध्यक्ष बने। १९५७ से १९६३ तक और १९६४ से १९६७ तक भारत सरकारके मन्त्री रहे।

लिखेगी और अखबारी झगडा मचावेगी। यह शिकायत तो मेरी ही है उसके साथ कु० वागले इ०से कोई सबंध नही। वह तो इग्रेजीमे डूबी हुई है।

बापुके आशीर्वाद

मूल पत्रसे: हीरालाल शास्त्री पेपर्स। सौजन्य : नेहरू स्मारक सग्रहालय तथा पुस्तकालय

१७७. पत्र : घनश्यामदास बिड़लाको

महाबलेश्वर
१० मई, १९४५

चि० घनश्यामदास,

तुमारा खत मिला। दो वार पढ गया।

तुमारा उत्साह मुझे प्रिय है। लाभके वारेमे मुझे शक है। सिर्फ देखोगे ही लेकिन कुछ प्रतिज्ञा नही करोगे तो हरज नही है। तुमने तार दिया है, ताताने लिखा है कि बधनमे पडने के लिये नही जाते हो, सिर्फ अनुभवके लिये तो ठीक ही है।

नूनके कहने का उत्तर[1] बिलकुल आवश्यक था।

तुमारा तार मैंने छपवाया है और उत्तर[2] भी। मैंने जो निवेदन[3] निकाला उस परसे जो तीखे उत्तर निकले वह बताता है हम कैसे विचारहीन रहते हैं। मेरा निवेदन सब जा रहे हैं उनका बचाव है अगर वे सरकारका काम करने के लिये नही जाते है तो। सरकारकी इच्छा और मदद तो है ही। उनका मतलब भी जानते है। उसकी मतलव पार नही करना है तो जाना क्या? उनको स्पष्ट सुनाया है कि और डर वगैरहकी आश, जबतक राजकारणसे पकडे गये है उनको मुक्त नही किए है, न करे, तो जाने मे हानी नही है। भले कुछ लाभ भी हो उसे भी छोड़ना है। जबतक प्रजाका हूकम नही है, न शासन है।

साथीओको समजाओ कि मेरा निवेदन विलकुल ठीक था अगर वे सच्चे सिद्ध होगे तो।

स्वास्थ्य अच्छा रखो और मुसाफरीमे और अच्छा करो।

दिनशाके बारेमे मैंने खत लिखा[4] सो मिला होगा। दिल्ली भेजा था उसीकी नकल इसके साथ रखता हू। कुछ भी सकोच रहे तो ट्रस्ट छोडने मे हरज नही है। दिनशाका दिल उसी चीजपर जमा है।

बापुके आशीर्वाद

१. देखिए पृ० ६६-६८।
२. देखिए पृ० ९८-९९।
३. देखिए पृ० ८२-८३।
४. देखिए पृ० ८२।

संलग्न :

१. दिनशाके बारेमें खतकी नकल।

[पुनश्च :]

फिर ताता[1] वगैराको ठंडे करो अगर मेरा निवेदन तुमको निर्दोष लगे तो।

मूल पत्र (सी० डब्ल्यू० ८०७१) से। सौजन्य : घनश्यामदास बिड़ला

१७८. पत्र : सोफिया वाडियाको

महाबलेश्वर
११ मई, १९४५

प्रिय बहिन,

व्हाइट लोटस डे (श्वेत कमल दिवस) पर हमेशाकी तरह भेजी गई तुम्हारी भेंट मेरे विभिन्न रचनात्मक सार्वजनिक कार्योंमें से किसीमें भी प्रयोग करने के लिए प्राप्त हुई।

तुम दोनोंको प्यार।

बापू

श्री सोफिया वाडिया
आर्यसंघ
२२, नारायण दभोलकर रोड
मलाबार हिल, बम्बई–६

अंग्रेजीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१७९. पत्र : ताराचन्दको

महाबलेश्वर
११ मई, १९४५

भाई ताराचंद,

पंडित सुंदरलाल यहां आये हैं। अच्छा हुआ। उनसे बातें हुई। उसका असर हम सबपर यह हुवा कि कमेटीके इलाहाबाद काम करने में धोका होने का डर है। पंडितजीने कहा कि बोर्डके[2] काम करनेवाले लोग वर्षा आने से डरेंगे और आने से

१. देखिए पृ० १०५ भी।

२. अखिल भारतीय हिन्दी प्रचार सभाका बोर्ड; देखिए "वक्तव्य: समाचारपत्रोंको", २६-६-१९४५।

इन्कार भी करे। इसका मतलब ही जहरी होता है। वर्धामे सभाका जन्म हुआ। वर्धामे ही सभाका काम हुआ। वर्धामें ही शब्दकोशका कार्य होना चाहिये। अगर मुझे यह काम करना है, शब्दकोषकी कुछ देखभाल करनी है तो भी बोर्डका दफ्तर वर्धामे होना चाहिये। सुभिताके लिये कुछ काम इलाहाबादमे हो तो चिंताकी बात नही होगी। वर्धामे इसी कामके लिये मकान बना है। काकासाहब स्थान वर्धामे है। इसलिये मेरी राय अवश्य यह है कि शब्दकोष बोर्डका केन्द्र वर्धा बने। भाई अखतर अगर हमारा काम करे तो उनको वर्धामे रहना चाहिये। आपका जो खास हिस्सा होगा और होना चाहिये सो भले बहोत करके इलाहाबादसे ही दिया जाय। इस दृष्टिसे खर्चकी बात गौण हो जाती है। जो बोर्ड बनाने का निश्चय हुआ है उसके नाम तो अब जाहिर किये जाय ना? पंडितजी उन उन लोगोसे खत लिख रहे है। हम कामके बारेमे आखरी निर्णय तो पहले कोईसे करवा लेगे और पीछे सभाकी कार्यकारिणीसे ना? कानून तो यही कहता है ना? आप अपना अभिप्राय लिखे। मै तो जून आखर तक यहा और पचगनी हूं।

बोर्डका प्रमुखमे . . .[1] होउ ऐसी राय पंडितजी रखते है। मै आवश्यक नही समझता हूं।[2]

आपका,
मो० क० गांधी

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१८०. पत्र : मगनभाई प्रभुदास देसाईको

११ मई, १९४५

चि० मगनभाई,

तुम्हारा पत्र मिला। पुरुषोत्तमके बारेमे तुम जो लिखते हो वह ठीक है। जो व्यक्ति उर्दू अंजुमनमे है वह हमारी सस्थामे भी रह सकता है न? तो फिर हिन्दी सम्मेलनवाले भी रह सकते है। और जबतक मै सम्मेलनमे हूँ तबतक मुझे इसी नीतिका अनुसरण करना चाहिए। तथापि यदि मेरी यह नीति सम्मेलनकी नीतिके विरुद्ध है तो मुझे सम्मेलनसे निकल आना चाहिए। इसपर मै विचार कर रहा हूँ।

कोसम्बीजीका मेरी ओरसे भी स्वागत करना।

डॉ० ताराचन्दके साथ मेरा पत्र-व्यवहार[3] चल रहा है। हमने विशेष समिति वर्धामे बनाई है। हम उससे और सभासे पूछकर ही सब करेगे।

१. यहाँ एक शब्द अस्पष्ट है।
२. देखिए अगला शीर्षक भी।
३. देखिए पिछला शीर्षक।

विद्यापीठके भावी कार्यके बारेमें मेरे विचार इस प्रकार है। नई तालीमके सम्बन्धमें मैंने जो विचार व्यक्त किये है उनके अनुरूप ही हमे काम लेना चाहिए। इसमे सब-कुछ आ जाता है। अतएव आज विद्यापीठोंकी जो योजनाएँ है उनमें तो विप्लव हो जायेगा। सारा ढाँचा ही बदल जायेगा। लेकिन यह कृत्रिम ढंगसे नहीं होगा। मेरे भाषणों और विचारोसे तुम्हें जो करना है वह तो हो ही जाना चाहिए। इससे क्या तुम्हे मेरे मनकी बात कुछ समझमें आती है? यदि ज्यादा समझना चाहो तो पंचगनीमे आ जाना।

नरहरिको समझा-बुझाकर अपने साथ लेना तुम्हारा धर्म है, क्योकि इसी तरह तुम्हे बहुत सारे लोगोंको लेना है। इसका नाम ही संस्था धर्म है। यदि ऐसा न हो तो केवल व्यक्तिगत काम ही हो। अब मैंने सभी सवालोका जवाब दे दिया।

बापूके आशीर्वाद

मगनभाई देसाई
गुजरात विद्यापीठ
अहमदाबाद

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१८१. पत्र : रामजी गोपालजीको

११ मई, १९४५

भाई रामजी,

तुम्हारा पत्र मिला। मुकदमेकी तारीख तो चली गई, इसलिए काम तो हो गया कहा जायेगा। इसमें मेरी सलाह न लेना। परीक्षितलाल[1] वहाँ है ही। उससे पूछकर जो करना समुचित हो, वह करना। व्यक्तिगत कार्योसे मुझे मुक्त रखना चाहिए। मै उन्हें पूरा कर सकूं, ऐसी मेरी स्थिति नही रही।

बापूके आशीर्वाद

रामजी गोपालजी
हरिजन आश्रम
साबरमती

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. परीक्षितलाल मजमूदार

१८२. पत्र : चिमनलाल नरसिंहदास शाहको

११ मई, १९४५

चि० चिमनलाल,

चाँदरानीको दिल्ली जाने के लिए जितना पैसा चाहिए, दे देना और उसे ठीक से पहुँचाना। उससे कहना कि मैंने वियोगी हरिको लिख दिया है।[1] वह बिना देर किये सीधी किंग्जवे [कैम्प] जाये और हरिजन आश्रममें उतरे। मुझे लिखे। वह जाये सही पर अपने स्वास्थ्यका ध्यान रखे।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० १०६२९) से

१८३. पत्र : शारदा गो० चोखावालाको

महाबलेश्वर
११ मई, १९४५

चि० बबुड़ी,

लगता है, तू भगवानको बहुत प्यारी है। तुझपर कोई-न-कोई आफत आती ही रहती है। आनन्दके[2] ऊपर कोई वजनी चीज गिर पड़ी थी न? अच्छा हुआ जो बच गया। क्या यह उसके उद्यमके कारण हुआ? तू उसे सिखाने की कला सीख। ईश्वर तेरी परीक्षा ले रहा है, इसमें पास हो जाना।

बापूके आशीर्वाद

मूल गुजराती (सी० डब्ल्यू० १००५७) से। सौजन्य : शारदा गो० चोखावाला

१. देखिए पृ० ९३.
२. शारदा गो० चोखावालाका पुत्र

१८४. पत्र : उमादेवी अग्रवालको

११ मई, १९४५

चि० ओम्,

तुमारी उर्दु वहुत अच्छी लगती है। अक्षर भी साफ है। मेरा खत ही तुम्हे शांति दे, आनंद दे और मानसिक खुराक भी, तो विचारणीय बात हो जायेगी। तुमारी शक्ति इतनी होनी चाहिये कि मेरी बात समजने के बाद न मेरे खतकी न मुझे पूछने की आवश्यकता होनी चाहिये। अर्थात मेरी बात हजम हो जानी चाहिये।

चि० कानमका अच्छा चल रहा है जानकर मै खुश होता हूं।

कसरतके बारेमे चिमनलाल इ० क्या कहते है? सामन तो है ना?

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१८५. पत्र : वीरबालाको

महाबलेश्वर
११ मई, १९४५

चि० वीरबाला,

मेरे पूराने खतका हवाला देती है। लेकिन जो आश्वासन मैंने उस समय दिया मैं आज नहीं दे सकता। मेरे पास तो स्थान है क्योंकि इच्छा वही है जो पहले थी। शक्ति नहीं है। मै सेवाग्राम वापिस जाउं तब मुझे फिर लिखना है तो लिखो। आज तो तुझे बुलाना असंभव-सा है।

बापुके आशीर्वाद

चि० वीरबाला
मार्फत ला० राधामोहनजी
२२७, वेस्ट स्टैंड रोड
केदार कुटीर, मीरठ

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१८६. पत्र : एम० एस० केलकरको

११ मई, १९४५

भाई बरफ,

तुम्मारा खत मिला। कैसा अच्छा होगा यदि हरिइच्छा बिलकुल अच्छी हो जायगी। सब यश तुमको जायगा। उससे अधिक यह कि उपरी सुमन वृष्टी होगी।

बापुके आशीर्वाद

[पुनश्च :]

वहाकी गरमी सहन करने योग्य बनाओ।

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य . प्यारेलाल

१८७. चर्चा : चक्रवर्ती राजगोपालाचारीके साथ[1]

महाबलेश्वर

[११][2] १२ मई, १९४५

राजगोपालाचारी : जो लोग इस समय यह कह रहे हैं कि वे आपका रचनात्मक कार्य कर रहे हैं, वे वस्तुतः संसदीय प्रणालीके अनुगामी हैं, लेकिन उसकी एक शाखा-मात्र हैं और वे आपके गैर-सरकारी प्रभावका लाभ उठाकर सत्ता प्राप्त करना चाहते हैं, जबकि उधर संसदके समर्थकोंकी दूसरी शाखाके लोग संवैधानिक तरीकोंसे सत्ता प्राप्त करना चाहते हैं। दूसरी ओर, जो आपके रचनात्मक कार्यको समझता है और कर सकता है, वह तो सिर्फ मैं हूँ।

गाधीजी : हाँ; यह बात सही है।

क्या आप कांग्रेसके कामको विभागोंमें बाँटने की सोच रहे हैं?

१ और २. यह चर्चा प्यारेलाल द्वारा लिखे "राजाजी : गाधीजीज आल्टर ईगो" से उद्धृत है। प्यारेलालने लिखा है कि यह बातचीत दो दिनोंतक चली थी। लेकिन १२ मई, १९४५ की तिथि-पंक्तिके अन्तर्गत लिखा केवल अन्तिम अनुच्छेद ही जी० एन० साधन-सूत्रमें उपलब्ध है। प्यारेलाल लिखते हैं कि क्योंकि गाधीजी "डाक्टरोंकी सलाहके अनुसार दिनके ज्यादा समयतक मौन रखते थे" इसलिए उन्होंने अपने उत्तर पर्चियोंपर लिखकर दिये थे।

मैं कार्योंके विभाजनकी नही सोच रहा। परन्तु एक स्वाभाविक विभाजन तो है ही। लेकिन मैंने ऊँचे और नीचे विभागोका विचार नही किया है।

यह तो वर्ण-व्यवस्थाकी तरह हुआ।

समतलीय विभाजन, ऐसा विभाजन नही जिसमे कोई ऊँचा होगा और कोई नीचा। लेकिन मेरी निश्चय ही यह धारणा है कि हम सफलता तभी प्राप्त कर सकते है, जब हम सब रचनात्मक कार्य करने लगे।

संसदीय कार्यसे रचनात्मक कार्यमें सहायता मिलेगी। लेकिन (रचनात्मक) कार्य पर ही हमें अपना सारा ध्यान नहीं लगा देना चाहिए।

ससदीय कार्य सशस्त्र गतिविधिका स्थान लेगा। किन्तु हम (केवल) ससदीय कार्यवाहीसे स्वतन्त्रता प्राप्त नही कर सकते।

अगर एक ओर जेलसे बाहर कोई भी व्यक्ति कांग्रेसकी ओरसे कार्यवाही नहीं कर सकता, और दूसरी ओर ब्रिटिश सरकार कार्य-समितिके सदस्योको तबतक रिहा करने को तैयार नहीं होती जबतक समझौतेका कोई आधार अधिकृत रूपसे तय न हो जाये — तब तो यह ऐसी गुत्थी है जो सुलझ नहीं सकती। किसीको कभी-न-कभी कांग्रेसकी ओरसे कार्यवाही करनी होगी और समझौतेकी योजना स्वीकार करनी होगी। और उस योजनाके अनुसार कैदियोंको रिहा किया जा सकता है। इसलिए, आपको कांग्रेसके नामपर कार्यवाही करनी चाहिए। आप जानते हैं कि आप ऐसी कार्यवाही करने का अधिकार रखते हैं। आप कहते हैं कि हर कांग्रेसीको अपनी जिम्मेवारीपर ही कार्य करना चाहिए, मानों वह (कांग्रेस) अध्यक्ष हो। लेकिन इस तरह तो गड़बड़ मच जायेगी। अब फर्ज कीजिए कि अध्यक्षके पदके लिए अनेक उम्मीदवार हैं। उनमें से जो सबसे अच्छा होगा, वही अध्यक्ष चुन लिया जायेगा। और वह हैं आप। जो आदमी वास्तवमें अधिकार सँभालने के लिए सबसे योग्य हो, उसे किसी-न-किसी समय जिम्मेवारी सँभाल लेनी चाहिए। अगर दूसरोंसे कहा जाये कि वे [सरकार से] बातचीत करें किन्तु कांग्रेसकी ओरसे कोई वायदा न करें, तो इससे कोई लाभ नहीं होगा। भूलाभाईकी[1] कोशिशोंमें कोई बल नहीं है, क्योंकि आपने उनके प्रस्तावोंको अपनी खुली और निस्संकोच मंजूरी नहीं दी है।[2] अगर आप एक ताना-शाहकी तरह अधिकार अपने हाथमें ले लें, तभी समझौतेकी कोई ठीक योजना सफल

१. केन्द्रीय व्यवस्थापिका-सभामें कांग्रेस दलके नेता; वे कांग्रेस तथा लीगकी एक साझी राष्ट्रीय सरकारके निर्माणके प्रश्नसे सम्बन्धित गतिरोधको केन्द्रीय सभामें मुस्लिम लीगके उप-नेता लियाकत अली खाँके साथ बातचीतके जरिये समाप्त करने का प्रयास कर रहे थे; वैसे वार्ता असफल हुई थी।

२. देखिए खण्ड ७९, पृ० ११।

हो सकती है। आपको कभी-न-कभी कांग्रेसके नामपर काम करने का अधिकार सँभाल लेना चाहिए।

शायद वह समय कभी आ जाये, पर अभी नही।

सम्भव है कि संसदीय कार्यसे रचनात्मक काम आगे बढ़ेगा और फिर उससे हमें अपने उद्देश्यमें मदद मिलेगी।

तब आप वही सोचते है जो मै — या मै वही सोचता हूँ जो आप[1]।

जैसा कि चर्चिल (या शायद प्रिट[2]?) ने कहा है, अदालते राजनीतिक प्रभावसे अछूती नही है। यह बात उन्होने कई वर्ष हुए विवादग्रस्त राजनीतिक मुकदमेके अवसरपर, जिसमे कई विधि-सम्बन्धी प्रश्न निहित थे, जज ग्रैनविलको लक्ष्य करके कही थी। (दक्षिण आफ्रिकामे) मेरे मुकदमेमे मताधिकारका प्रश्न था। मै हार गया, क्योकि प्रश्न राजनीतिक था। मैंने एस्क्विथको वकील किया था।[3]

अगर (बम्बईके गवर्नर) कॉलविलका[4] ऐसा आशय हो, तो वे कह सकते है कि 'अदालती कार्यवाही बन्द कर दी जाये और (कैदियोको) क्षमादान किया जाये।' मैंने एक बार दक्षिण आफ्रिकामे हर्टजोगके[5] द्वारा यह सब कराया है, अब क्षमादानसे जो बात बन सकती है, वह किसी और तरह नही बन सकती। आशा है भूलाभाई इस मामलेमे सतर्क रहेगे। अगर अब जाँच-पड़ताल आरम्भ कर दी जाये, तो मुझे कोई आपत्ति नही होगी . .।[6] मेरा यह दृढ विचार है कि अगर सरकार हमे कुचलने पर उतारू है, तो हमे यह सब-कुछ करना ही होगा। आपमे और मुझमे बहुत अन्तर नहीं है; लेकिन अन्तर महत्त्वपूर्ण है, यद्यपि वह देखने मे थोड़ा है। आप हर कीमतपर अधिकार चाहते है। मैंने अदा की जानेवाली कीमतकी सीमा बाँध दी है। आप सोचते है कि अगर हम अधिकार ग्रहण नही करते, तो कोई बात नही बनेगी। मै कहता हूँ कि जबतक वे अधिकार उस कीमतपर न मिले जो मै देना चाहता हूँ, तबतक मैं इंतजार कर सकता हूँ। और मै अपने उद्देश्यकी ओर बढ रहा हूँ, चाहे बहुत धीरे-धीरे ही सही . . .।[7]

१. प्यारेलाल लिखते हैं कि इसके बादकी चर्चा १२ मई, १९४५ को हुई, जोकि अष्टी-चिमूर के कैदियोंके बारेमें थी। उस मामलेमें सरकार जो-कुछ करनेवाली थी, उसे गांधीजी ने "ब्रिटिश सरकारकी नेकनीयतीकी सच्ची कसौटी" बताया। देखिए "पुर्जा : भूलाभाई देसाईको", ११-६-१९४५ भी।

२. डी० एन० प्रिट, क्यू० सी०; एक विख्यात अंग्रेज वकील

३. इसके बाद राजाजी ने गांधीजी से कहा कि आप समझौतेका रास्ता बतायें।

४. सर जॉन कॉलविल

५. जेम्स बी० एम० हर्टजोग, १९२४ से १९३९ तक दक्षिण आफ्रिकाके प्रधानमन्त्री

६ और ७. साधन-सूत्रमें यहाँ छोड़ दिया है।

अगर आप किसी और विषयपर बातचीत करना चाहते हो, तो मैं उसके लिए तैयार हूँ और खुशीसे समय निकाल लूँगा। मैं आपको केवल इसलिए कष्ट नही दे रहा हूँ, क्योंकि मुझे कुछ भी पूछना नहीं है। आपकी उपस्थितिसे मुझे शान्ति और बल मिलता है। मुझे और क्या चाहिए? मैं आपको समझता हूँ और आप मुझे।

[अंग्रेजीसे]

स्वराज्य, ११-१२-१९७१; अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० २१०५) से भी

१८८. पत्र : श्यामलालको

१२ मई, १९४५

चि० श्यामलाल,

तुमने ईंग्रेजी क्यो भेजा मैं समझा। जब तक हम पूरा आग्रह नही करेंगे बरसो का आवरण दूर नही होगा।

अब प्रात.कालके ६.४५ बजे है इसलिये बत्तीसे काम करता हूं। तुमने भेजे हुए कागजात पढ रहा हूं। हिंदी टाइप साफ नही है इसलिये पढने मे दिक्कत आती है। उपाय इंग्रेजीपर जाना नही है। लेकिन हिंदीके लिये कातिब चाहिये। कातिब सुवर्णाक्षर लिखे उसे क्रोमोपर या रोनियोपर निकालो जब कापीया निकालनी है।

बापुके आशीर्वाद

श्यामलाल
कस्तुरबा हाउस
सिंधिया हाउस
बॉम्बे

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१८९. पत्र : सीता गांधीको

१२ मई, १९४५

चि० सीता,

तेरी लिखाई सुन्दर है। अक्षर स्पष्ट हैं, लेकिन छोटे है। बड़े अक्षर लिखने की आदत डाल। बादमे तेरी, छोटे या बड़े, लेकिन एक ही प्रकारके सुन्दर अक्षर लिखने की आदत पड़ जायेगी। तू अब खूब व्यस्त हो गई है, यह मुझे अच्छा लगता है।

तेरी जो इच्छा है, वही मेरी इच्छा है। अरुण[1] और इलाके[2] लिए यह बहुत ही अच्छा अवसर है। वहाँकी गर्मी वे अनायास सहन नही कर सकेंगी। लेकिन उन्होंने 'माँ'[3] के बिना रहना नही सीखा है, और माँका प्रथम कर्त्तव्य है अपनी बीमार माँके पास रहना। यदि और जब, कुछ समयके लिए तारी[4] माँका स्थान ले, तो (और तब) वह बच्चोको लेकर यहाँ आये।

तू अपना स्वास्थ्य किसी भी आबहवामे ठीक रखने की कला सीख ले। सीखना आसान है।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ४९७९) से

१९०. पत्र : चिमनलाल नरसिंहदास शाहको

१२ मई, १९४५

चि० चिमनलाल,

क्या तुम हिसाब रख सकते हो? इसमे आश्रमकी जिम्मेदारी शामिल नही होगी। खर्चकी जिम्मेदारी मन्त्रीकी होगी। तुम बस हिसाब सँभालो। बाकी समयमें आराम करो।

"मुनि मन अगम यम, नियम, शम, दम, विषम व्रत आचरतको" यह गाने में सरल है, लेकिन आचरण करने मे विषम है। अगमका अर्थ अगम्य होता है न? नियममें पूरा जीवन आ जाता है। और जिसने शम-दमका अभ्यास कर लिया हो, उसे रोग कैसा, शिथिलता कैसी? इसके अर्थपर विचार करो। आश्रमकी जिम्मेदारी बारी-बारीसे मुन्नालाल और कृष्णचन्द्र सँभाले। जिम्मेदारियोकी सूची बना लो। बाकीका काम जाजूजी[5] जाने। आश्रमको न बन्द करना चाहिए, न उसका नाम बदलना चाहिए। अगर तुम्हे आश्रम छोडना पसन्द नही है, तो मै तुमसे छड़वाना भी नही चाहता। शक्ति-भर काम तो करना चाहिए, लेकिन शक्ति बढ सकती है या कम हो सकती है। तुम्हे अपनी शक्ति बढानी चाहिए।

[डॉक्टर] आइसकी बात समझा।

बाकी दूसरे पत्रमें होगा, उसे पढ लेना।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० १०६३१) से

१ और २. सीता गांधीके भाई और बहिन
३. साधन-सूत्रमें यहाँ 'बेन' है। गुजरातीमें बच्चे माँको 'बेन' कहकर भी पुकारते हैं।
४. सुशीला गांधीकी बहिन तारा मशरूवाला
५. श्रीकृष्णदास जाजू

१९१. पत्र : रमणलाल इंजीनियरको

महाबलेश्वर
१२ मई, १९४५

भाई रमणलाल,

तुम्हारा खरा पत्र मिला। तुम्हारी लिखावट इतनी सुन्दर है कि पेंसिलसे लिखी होने पर भी माफ करता हूँ। अन्यथा पेंसिलसे लिखना असभ्यता है और हिंसा है।

तुम्हारे पत्रमें स्पष्टता है, जो होनी चाहिए। अविनय नही है, और न होना चाहिए।

तुम्हारे कुछेक सुझाव मेरे गले नही उतरे हैं लेकिन इन सबकी चर्चा करने के लिए मेरे पास समय नहीं है। मेरी इच्छा है कि मेरी मान्यता गलत सिद्ध हो और तुम जो लिखते हो वही सच हो।

तुम्हारी रुचि जागी। जो तुम्हे रुचे वही अच्छा है। पुस्तक कल आई। मेरे हाथमें अभी आनी है।

बापूके आशीर्वाद

श्री रमणलाल इंजीनियर
भारतीय साहित्य संघ
दूसरी मंजिल, भीमराव बिल्डिग
कालबादेवी रोड
बम्बई–२

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१९२. पत्र : गुलजारीलाल नन्दाको

महाबलेश्वर
१२ मई, १९४५

चि० गुलजारीलाल,

तुम्हारा पत्र मिला। अम्बालाल सेठकी बात हमें समझ लेनी चाहिए। वे कहते है कि "सब प्रयत्न तो करते ही हो, लेकिन मजदूर केवल स्वार्थकी हदतक तो तुम्हारी बात सुन लेते हैं, किन्तु जब उनके धर्मपालनकी बात आती है तो तुम्हारी बात नही मानते और इसलिए अन्तमें हमारी योजनाको विफल ही हो जाना है।" सेठ स्वयं

अपना भाग पूरी तरहसे अदा करते है या नही, यह एक अलहदा बात है और हमारे लिए इसका महत्त्व गौण है। तथापि तुमने उनकी त्रुटियोके बारेमे जो मुझे लिखा है तो उन्हे भी उतने ही स्पष्ट शब्दोमे लिखना। मै तो तुम्हारे साथ हूँ ही।

मुझे विलायती दवासे तात्कालिक फायदा हुआ जान पड़ता है। मैने डॉ० चुग को लिखा है[1] कि यहाँकी आबहवाका क्या असर होता है, सो मै यही देखूँगा। और उनकी दवाका क्या असर होता है, यह मै नीचे उतरने पर देखूँगा। इसमे यदि तुम्हें कुछ कहना हो तो कहना।

बापूके आशीर्वाद

गुलजारीलाल नन्दा
मजूर महाजन
मिर्जापुर रोड
अहमदाबाद

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य . प्यारेलाल

१९३. पत्र : अमृतलाल वि० ठक्करको

१२ मई, १९४५

बापा,

सर्वेन्ट्स ऑफ इंडिया सोसाइटीका सुन्दर हिन्दुस्तानी अनुवाद हमारे पास है फिर भी हम इसका प्रयोग नही करते। तुम नामके भी (ऑफिशियली)[2] सदस्य हो और कामके भी। मै नामका तो नही लेकिन कामका तो हूँ ही। यह तो हँसते-खेलते करनेवाला मनचाहा काम है। इसे लिखने का उद्देश्य तो तुम्हारे पत्रका उत्तर देना है। धारवाडके सज्जनसे मै मिलने को तैयार हूँ। कहाँ मिलूँ? यहाँसे नीचे उतरने पर अथवा यही-कही? छगनलालको मैने समय दिया है।[3] मै उसका दु ख जानता हूँ। तुम्हारे सुझावके अनुसार दुबारा मिलूँगा। उसे लिख रहा हूँ। . . .[4]

बापूके आशीर्वाद

श्री ठक्कर बापा
हिन्द सेवक समाज
पूना–४

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य प्यारेलाल

१. देखिए पृ० १०३।
२. यह शब्द अंग्रेजीमें है।
३. देखिए अगला शीर्षक।
४. यहाँ एक वाक्य पढ़ा नही जाता।

१९४. पत्र : छगनलाल जोशीको

१२ मई, १९४५

चि० छगनलाल,

बापाको लिखा तुम्हारा लम्बा पत्र पढ़ा। बापाका सुझाव है कि मुझे तुमसे मिलना चाहिए। मैंने तो तुम्हे लिखा ही है। मैं तो तुमसे मिलने के लिए हमेशा तैयार हूँ। इसलिए जब और जहाँ मिलना हो तब मिल जाना। इतना समझ लो हम जिन्हें कठिनाइयाँ मानते है वे अन्ततः हमारी अपनी ही पैदा की हुई होती हैं।

वहाँ सबको आशीर्वाद।

बापूके आशीर्वाद

श्री छगनलाल जोशी
आनन्द भवन
राजकोट
काठियावाड़

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१९५. पत्र : रमालक्ष्मी और प्रवीणबालाको

१२ मई, १९४५

चि० रमालक्ष्मी और प्रवीणबाला,

तुम दो बहिनोंके हस्ताक्षरयुक्त पत्र और ४९ रुपयेका मनी आर्डर मिले हैं। कह सकते है कि सब बहिनोने अच्छा किया। मैं पैसा हरिजन कोषमें जमा कर रहा हूँ।

बापूके आशीर्वाद

श्री रमालक्ष्मी आसर
मार्फत श्री वल्लभदास रामदास
वियोग भवन, हबीब रोड
कांदीवली

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१९६. पत्र : सुमित्रा गांधीको

महाबलेश्वर
१२ मई, १९४५

चि० सुमी,

तेरा पत्र आज ही मिला। तुझे फुर्सत नही मिलती, लेकिन मुझे तो मिलती है। तेरी लिखावट अच्छी है। इसी तरह सावधानीके साथ लिखा करना। परीक्षाकी धुनमे इतनी उतावली करना अपराध समझ।

लक्ष्मीसे कहना कि जल्दी अच्छी हो जा। पापासे कहना कि अगर लक्ष्मी न लिखे तो उसे तो लिखना ही चाहिए। उम्मीद है, नरसिंहन[1] भी अच्छा होगा। मणिलाल यहाँ है। सुशीला, अरुण और इला नही आये।

बापूके आशीर्वाद

चि० सुमित्रा गाधी
हिन्दुस्तान टाइम्स बिल्डिग
नई दिल्ली

गुजरातीकी नकलसे · प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१९७. पत्र : रामदास गांधीको

१२ मई, १९४५

चि० रामदास,

तुम दोनो आलसी हो या मुझपर तरस खाते हो? यह तुम्हारे पढ़ने के लिए है। मै ठीक हूँ। मणिलाल यहाँ है। सुशीला और बच्चे नही आये। तू कैसा है? नीमु[2] कैसी है? कानमकी चिट्ठी आती रहती है। कदाचित् वह यहाँ आयेगा।

बापूके आशीर्वाद

[पुनश्च]

उषा[3] कैसी है?

श्री रामदास गाधी
टॉमको सेल्स डिपार्टमेन्ट
खलासी लाइन्स
नागपुर

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य . प्यारेलाल

१. चक्रवर्ती राजगोपालाचारीके पुत्र
२ और ३. रामदास गाधीकी पत्नी निर्मला और पुत्री

१८. पत्र : कृष्णचन्द्रको

महाबलेश्वर
१२ मई, १९४५

चि० कृ० चं०,

बा०ने[1] ठीक ही किया है। इसका मतलब हुआ न की वैद्यराजकी दवाने कायमी लाभ नही किया? उनका मन उस ओर गया तो मेरे घूम जाने की इंतजारी क्यो? आखरमे दा० केलकरके उपचारसे नुकसान तो होगा ही नही। उपचारका फल मुझे बताते रहो।

संस्कृतका ठीक ही किया। व्याकरण बराबर समज लो। ग्रिम्सलो[2] बा० कृ० भी देखे। बड़ी मदद देगा। उसीका ध्यान करने से लिपि सीखना भी आसान हो जायगा।

खादीशास्त्रका अभ्यास अच्छा है। घूमते घूमते कुछ पढ़ना नहीं, मनमे विचार करो। आंखको तकलीफ मत दो। विनोबाके प्रवचन अच्छे हैं। अखबार पढ़ने की कला हासिल की है तो पौन घंटा ज्यादा नही है। यह कला किसे कहें सो समज लो।

तूनाईके साथ जितना जरूरी है पिंजन रक्खो।

बुनाईके बारेमे रह गया। नागपुर मिलमे दोनों देखो कताई और बुनाई और सावलीमे भी दोनों क्रिया चलती है सो भी देख लो।

रात्रिको मिलना अच्छा है लेकिन चर्चाके लिये नहीं मौन धारण करके काम करो या सब मौनमे दिल चाहे सो पढ़े। बात यह है कि विभिन्न मत होते हुए भी एक काम चलता है। उसमे हार्दिक साथ देना धर्म है।

हस्तरेखा निकम्मी नहीं है। लेकिन उसको पढ़ने के प्रपंचमें मत पड़ो।

उर्दु रूपमे मुसलमान लिखते है। हिन्दी रूपमे संस्कृतज्ञ पंडित लिखते है। हिन्दुस्तानी दोनोंका मीठा संगम है।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० ४५७०) से। सी० डब्ल्यू० ५८७७ से भी; सौजन्य: कृष्णचन्द्र

१. बालकृष्ण

२. जर्मन वैयाकरण जेकब ग्रिम (१७८५-१८६३) द्वारा प्रतिपादित नियम, जो जर्मन मूल की तथा अन्य भारोपीय भाषाओंमें व्यंजनोंके प्रयोगके नियमनके सम्बन्धमें है।

१९९. पत्र : बलवन्तसिंहको

१२ मई, १९४५

चि० बलवर्तसिंह,

अब हुशियारीको मत सताओ। मेरे आने तक ठहर जाओ। मीराबहनको लिखो। हुशियारीका दु:ख मैं समज सकता हू। मैंने मीराबहनको एक खत[1] इसके पहले लिखा है।

जो प्रयोग मुन्नालाल 'नौकरो'के मार्फत करते है अच्छा है, ऐसे ही करना चाहीये। निष्फल हो सकता है। तो उसका अर्थ होगा कि हमारी अहिंसा बहूत अधूरी है। गलती समजमे है। नौकरको हम नौकर न समजे। हमारे सगे भाई समजे। कुछ बिगाडे कुछ चोरे, ज्यादा खर्च हो जाय। यह सब व्यर्थ नही होगा। अगर हम उनको कुटुबी समजे तो इसे सोचे।

मैंने सचालनकी सूचना चिमनलालको की है, उसे सोचो और हो सके तो सचालन प्रतिमास बदलो।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० १९६०) से। सी० डब्ल्यू० ५८७६ से भी; सौजन्य : बलवन्तसिंह

२००. पत्र : स्वामी रामानन्द तीर्थको

महाबलेश्वर
१२ मई, १९४५

स्वामीजी,

तुम्हारा खत मिला है। विनायक रावका भी। दु:खद प्रकरण है।[2] मेरेसे हो सकता है कर रहा हू। आखरकार इलाज तुम लोगोके ही हाथमे है।

बापुके आशीर्वाद

स्वामी रामानन्द तीर्थ
नान्देड, हैदराबाद जिला

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य . प्यारेलाल

१. देखिए पृ० ८६-८७।

२. यहाँ उल्लेख सम्भवत: गुलबर्गामें होनेवाली पुलिसकी ज्यादतियोंका है; देखिए अगले दो शीर्षक भी।

२०१. पत्र : विनायकराव कोरटकरको

महावलेश्वर
१२ मई, १९४५

भाई विनायकराओ,

तुमारा खत मिला है। सव विनासे मुझे दुःख हुआ है। मेरे ढंगसे मै चल रहा हूं। दो काम साथ साथ नही चलता।[1]

मो० क० गांधी[के] आशीर्वाद

श्री विनायक के० कोरटकर, वार एट ला
हैदरावाद (दक्षिण)

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

२०२. पत्र : दामोदरदास मूँदड़ाको

महावलेश्वर
१२ मई, १९४५

चि० दामोदर,

तुमने तो तवीयत ठीक रखी लगती है। तुमारा कार्यक्रम देखा। गुलवर्गाके वारेमें मैंने तुरत आरंभ तो कीया था। देखें क्या होता है। वहुत दुःखद है।

दोनोंको
वापुके आशीर्वाद

श्री दामोदर
महिलाश्रम
वर्धा

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. देखिए "पत्र : मुहम्मद अहमद सईद खाँको", १५-५-१९४५।

२०३. पत्र : वीणा चटर्जीको

१२ मई, १९४५

चि० वीणा,

तेरा खत मिला। अच्छा किया मुझे लिखा। शरीर और मन बराबर रखेगी। कैसी भी हिंदी हो मुझे लिखना। सब अनुभव बोरीवलीका दो। उर्दू कहा तक किया?

जोहराने नही लिखा है। वह भी सब लिखे। क्या सीखी? तबीयत कैसी रही है? और भी लिखे। सबके अलग अनुभव चाहिये।

मनु मुंबई गई है। शरीर अच्छा नही हुआ है।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी नकलसे: प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य: प्यारेलाल

२०४. पत्र : कमला और वासन्तीको

महाबलेश्वर
१२ मई, १९४५

चि० कमला[1] और वासती,[2]

तुम दोनोके खत मिले। अच्छे हैं। अच्छा काम कर रहे हैं। कोई दु:ख मानने का कारण नही है। डानल्ड ग्रीन अच्छे हो जायेंगे।

खूब अच्छे रहो और खूब सेवा करो।

बापुके आशीर्वाद

श्री कमलाबेन
फ्रेंड्स सेटलमेंट, रसूलिया
जिला होशंगाबाद

पत्रकी नकलसे: प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य: प्यारेलाल

१. मेरी बारकी मित्र मार्गरेट जोन्स; वे मेरी बारके आफ्रिका चले जाने के बाद खेड़ीमें कार्य कर रही थीं।

२. बारबरा।

२०५. पत्र : श्रीकृष्णदास जाजूको

महाबलेश्वर
१२ मई, १९४५

भाई जाजूजी,

तुमारा खत मिला। दा० राजन और गोपालस्वामी (हरिजन सेवक संघका) के नाम मुझको अच्छे लगते हैं। दूसरे कोई है तो बताइये।

बापुके आशीर्वाद

श्रीकृष्णदास जाजू
अखिल भारत चरखा संघ
पो० सेवाग्राम
द्वारा वर्धा (सी० पी०)

पत्रकी नकलसे: प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य: प्यारेलाल

२०६. पत्र : वियोगी हरिको

महाबलेश्वर
१२ मई, १९४५

भाई वियोगी हरि,

चांदराणीका खत कल आया। देवी सत्यवतीके लिये वहां आती है। उनको हरिजनवासमे रखो। यह उन्हें दो।[1]

बापुके आशीर्वाद

श्री वियोगी हरि
हरिजन निवास
किंग्सवे
दिल्ली

पत्रकी नकलसे: प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. देखिए अगला शीर्षक।

२०७. पत्र : चाँदरानीको

महाबलेश्वर
१२ मई, १९४५

चि० चाद,

तेरा खत मिला। तेरा निर्णय अच्छा है। वियोगीजीको मैंने तेरे खतके पहले ही लिखा था, सत्यवती कहे सो करो। वह अच्छी हो जाय। अगर सत्यवती राजी रहे तो तू जल्दी वापिस आवेगी। यही खत उनको पढ़ा दे। उनका पो० का० आया था। सत्यवतीका चिंतवन चलता है। वह अगर एक सिपाही है तो बहुत बड़ी सिपाही है। खुरशेदबहन[1] पचगनीमें है।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी नकलसे: प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य: प्यारेलाल

२०८. पत्र: एम० एस० केलकरको

१२ मई, १९४५

भाई बरफ,

तुमारे खतसे पाता हूं कि मैं अगर सिर्फ दूध पीउ तो अच्छी बात है। मैंने वह भी कर देखा लेकिन वजन एकदम गिरा। स्वादके ही लिये फल या भाजी या कुछ भी खाना गुनाह मानता हू। लेकिन जो खाना चाहिये उसमे भी स्वाद आवे तो उसे त्याज्य नही मानुगा। हाल तो केवल वैद्यकीय दृष्टिसे चर्चा होती है। किसी पुस्तकमे फल और भाजीका त्याग देखा नही है। अगर तुम कहते हैं सो सही है तो बड़ा लाभ होता है।

हरिइच्छा अच्छी होगी तो बड़ा काम होगा।

मैंने सुन लिया कि बालकृष्णका भी तुमने शुरु किया है। तुमारा जय हो।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी नकलसे: प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य: प्यारेलाल

१. दादाभाई नौरोजीकी पौत्री खुर्शेदबहिन नौरोजी

२०९. पत्र : इफ्तिखारुद्दीनको[1]

महावलेश्वर
[१३ मई, १९४५ के पूर्व][2]

प्रिय इफ्तिखार,[3]

अगर आजाद होना चाहते हो, तो अंग्रेजीमे लिखने और वोलने की आदत छोड़ दो।

मैने तुम्हारी चिट्ठी पढ़ी है। मेरी यह राय है कि किसीको भी कांग्रेसके नाम पर वोलने का अधिकार नही है, अखिल भारतीय कार्य-समितिके जो सदस्य जेलके वाहर है, उन्हे भी नही। पूरी कार्य-समितिके रिहा होने के वाद ही वे यह कर सकते है। न आपको और न किसी औरको कांग्रेसके नामपर कार्यवाही करने का अधिकार है। इसका यह मतलव नही है कि तुम खाली वैठे रहो और अपने प्रभावका उपयोग न करो। कोई तुम्हे अपने व्यक्तिगत अधिकारसे वंचित नही कर सकता। यही नियम काग्रेस कार्यकर्ताओकी असेम्वलीके सदस्योंपर भी लागू होता है। हर कोई स्वयं अपना नेता है। हर कोई अपने पीछे चलनेवालोका नेतृत्व करने मे स्वतन्त्र है। मेरे विचारमे यही सवैधानिक स्थिति है। इसलिए किसीको मेरे नामका इस्तेमाल नही करना चाहिए। मैने कोई परिपत्र[4] जारी नही किया है। जो वात मेरी कही वताई जाती है वह मेरे द्वारा अहमदावादमे किसीको लिखे पत्रमे व्यक्त किये गये विचारोंसे उद्धृत की गई होगी। इसका मतलव सिर्फ यही है कि कोई काग्रेसके नाम पर आदेश नही जारी कर सकता।

अव तुम्हारे ऊपर लगाई गई पावन्दियोंके सवालको लेता हूँ। अगर तुम अपने-आपको सरकारके वगमे नही समझते, तो तुमने (पावन्दी आदेशके जवावमे) जो-कुछ लिखा था, वह ठीक था। हमे कभी दवना नही चाहिए।

१ और २. यह पत्र "१३ मई, १९४५" की तिथि-पंक्तिके अन्तर्गत छपा था। समाचारमें कहा गया था कि पत्र "पंजाबमें कांग्रेसियोंके दो गुटोंके बीच झगड़ेका परिणाम था। दोनों गुटोंने पंजाब विधान-सभाके लाहौर निर्वाचन-क्षेत्रसे मध्यावधि चुनाव लड़ने के लिए अपने-अपने उम्मीदवार नामजद किये थे।"

३. पंजाब प्रान्तीय कांग्रेस कमेटीके अध्यक्ष

४. यहाँ उल्लेख दिल्लीके रघुनन्दन शरण द्वारा चक्रवर्ती राजगोपालाचारीको भेजे उस तारका है जिसमें उन्होंने २-५-१९४५ के **बॉम्बे क्रॉनिकल** में प्रकाशित गांधीजी के एक तथाकथित परिपत्रके बारेमें स्पष्टीकरण माँगा था। उस परिपत्रके वारेमें गांधीजी द्वारा खण्डन किये जाने की खबर प्यारेलालने ११-५-१९४५ के **बॉम्बे क्रॉनिकल** में प्रकाशित एक वक्तव्यमें दी थी; देखिए परिशिष्ट १।

तुम दोनोंको[1]
बापूके आशीर्वाद

[अंग्रेजीसे]
हिन्दू, १५-५-१९४५

२१०. तार : मनुभाई भीमानीको[2]

महाबलेश्वर
१३ मई, १९४५

भीमानी
मार्फत वहलोवलन
कलकत्ता

विडलाको भेजे मेरे तारको[3] तुमने गलत समझा है। फिरसे पढो।

गांधी

अंग्रेजीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

२११. पत्र : सोन्या श्लेसिनको

१३ मई, १९४५

प्रिय कुमारी श्लेसिन,[4]

तुम्हारा पत्र मिला। तुमने जो-कुछ लिखा है उसका मेरे लिए मूल्य है।

तुमने मुझे टिकट भेजकर अच्छा किया। जहाँतक मुझे मालूम है काठियावाड़में ऐसा कोई खलीफा परिवार नहीं है जिसे राहतकी जरूरत है।

१. इफ्तिखारुद्दीन और उनके मनोनीत उम्मीदवार वीरेन्द्र। साधन-सूत्रके अनुसार उन्होंने "गांधीजी के पत्रको ध्यानमें रखते हुए" अपनी उम्मीदवारी वापस ले ली थी और पंजाब कांग्रेस कार्यकर्ताओंकी असेम्बलीके केदारनाथ सहगलको हिन्दू महासभाके उम्मीदवारके खिलाफ चुनाव लड़ने के लिए छोड़ दिया था।

२. इस तारके साथ गुजरातीमें निम्नलिखित टिप्पणी भी दी गई है, जोकि सम्भवतः प्यारेलाल के लिए गांधीजी का निर्देश है : "आज इतवार होने के कारण हमें अधिक पैसा देना होगा। अतः इसे कल भेजना। यदि कल तारवालोंकी भी छुट्टी हो तो इस तारको परसों भेजना।"

३. देखिए पृ० ९८।

४. एक यहूदी महिला, जो दक्षिण आफ्रिकामें गांधीजी की सचिव थीं।

यहाँ मैट्रिककी पढ़ाई तुम्हारे यहाँसे अधिक आसान नहीं है। लेकिन सीताके लिए यहाँकी पढाई कुछ आसान ही रहेगी। वह अच्छी तरह कार्य कर रही है और उसे जो अनुभव हासिल हो रहा है, वह उसे वहाँ कभी नहीं मिल पाता। वह अपने-आपको सेवाके योग्य बनाना चाहती है। उसकी स्वतन्त्रतापर किसी प्रकारका नियन्त्रण नहीं है।

मणिलाल अपनी इच्छाके अनुरूप अपने-आपको ढालेगा। बेशक, वह यहाँ केवल एक सालके लिए ही आया है और वह भी मेरी सेवा करने के लिए। उसके लिए उसमें से चुनने के लिए अधिक कुछ नहीं है।

मैं तम्बी नायडूके[1] बारेमें सहमत हूँ। यहाँ किसी भी चीजसे उनका नाम जोड़ा जा सकता है, पर उसका कोई मतलब नहीं होगा। वहाँ ही कोई उपयुक्त कार्य किया जाना चाहिए। तुम्हें वहाँ इनके लिए कुछ करना चाहिए। तुम्हारे और मेरे अलावा भी वहाँ तम्बीके कई प्रशंसक होने चाहिए। श्रीमती नायडूके बारेमें मुझे खुशी है। वे क्या कर रही हैं? उनके बच्चोंके क्या हाल हैं? क्या तुम मुझे तम्बीके परिवारका एक चित्र जिसमें वे भी हों, भेज सकती हो?

तुमने देखा, सान फ्रान्सिस्को सम्मेलन तुम्हारे-मेरे बिना भी निपट ही गया है।[2] लेकिन तुम्हे यहाँ एक दिन आना है। हाँ, कैलेनबैककी[3] भतीजीने उनकी मृत्युके बाद मुझे एक लम्बा पत्र लिखा था। एक बहुत भला आदमी हमारे बीचसे उठ गया।

मैं १२५ वर्षोंकी कहानी लिखने की आशा रखता हूँ।[4] मेरे लिखने तक तुम धैर्य रखो।

स्नेह।

मो० क० गांधी

[पुनश्च :]

मैं एक पहाड़ी स्थानपर हूँ। मेरा पता सेवाग्राम, वर्धा ही होना चाहिए।

अंग्रेजीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. मारीशसके ढुलाई-कार्यके एक ठेकेदार जिन्होंने ट्रान्सवालके सत्याग्रहमें प्रमुख भूमिका निबाही थी।

२. **महात्मा गांधी—द लास्ट फेज**, खण्ड १, भाग १, पृ० १०१-२ पर प्यारेलाल लिखते हैं कि कु० श्लेसिनने गांधीजी को लिखा था कि उन्हें सान फ्रान्सिस्को शान्ति सम्मेलनमें गांधीजी से मिलने की और वहाँसे गांधीजी के साथ भारत जाने की उम्मीद थी। उन्होंने यह भी सुझाव दिया था कि "यदि आपके पास शान्ति सम्मेलनमें साथ जाने के लिए सचिवोंकी कमी है तो रास्तेमें मुझे यहाँसे बुला लीजिएगा, और मैं आपके साथ चलूँगी।"

३. हरमन कैलेनबैक, एक जर्मन यहूदी, जो दक्षिण आफ्रिकामें गांधीजी के साथ थे और २५ मार्च, १९४५ को जोहानिसबर्गमें उनकी मृत्यु हुई थी। देखिए खण्ड ७९, पृ० ३२४ भी।

४. गांधीजी की बीमारीकी खबरकी ओर संकेत करके कु० श्लेसिनने लिखा था: "आप जब बीमार थे तब मैं बहुत ज्यादा नहीं घबराई थी (मुझे आपकी तकलीफपर अवश्य ही अफसोस है) क्योंकि मुझे भरोसा था कि आप भारतके स्वतन्त्र होने तक दिवंगत होनेवाले नहीं हैं। . . . मुझे इसमें जरा भी शक नहीं है कि यदि आप चाहें तो १२५ वर्षतक जीवित रहेंगे।"

२१२. पत्र : अमृतलाल दोषीको

महाबलेश्वर
१३ मई, १९४५

भाई अमृतलाल,

तुम्हारा पत्र मिला। भले तुमने खादीको आजीविकाके साधनके रूपमे छोड दिया हो, लेकिन तुम अभी भी उसमे रस लेते हो, यह अच्छा है। जो उपाय मुझे आते हैं मै सब काममे ला रहा हूँ। काकूभाईसे[1] मिलकर जो वे माँगे और तुम दे सको ऐसी अपनी अमूल्य मदद दो। जहाँतक मुझे मालूम है, बीमेका काम करनेवालेको बहुत फुर्सत रहती है।

बापूके आशीर्वाद

श्री अमृतलाल दोषी
इंडियन ग्लोब इंश्योरेंस कम्पनी
३१५-३२१, हार्नबी रोड
फोर्ट, बम्बई

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ६३१६) से

२१३. पत्र : शामलदास गांधीको

महाबलेश्वर
१३ मई, १९४५

चि० शामलदास,[2]

संलग्न तेरे समाचारपत्रसे है। मै यह मानता हूँ कि जो विज्ञापन नीति-विरुद्ध अथवा संचालकों द्वारा प्रचारित या स्वीकृत रीतिके विरुद्ध हो वह नही लिया जाना चाहिए। बिना सूत दिये कोई प्रामाणिक भंडार खादी बेच ही नही सकता। यह बात तेरे ध्यानसे बाहर नही होनी चाहिए। इसलिए यह विज्ञापन नही लिया जाना चाहिए। तुझे इस व्यक्तिको बिलकुल इंकार कर देना चाहिए। इसके लिए विज्ञापनोंपर तेरा अंकुश होना चाहिए। इसके लिए कुछ त्याग [करना] होगा और कुछ निरीक्षण

१. पुरुषोत्तम कानजी जेराजाणी; देखिए पृ० १३२।
२. गांधीजी के भतीजे

[करना होगा]। लेकिन अन्तमें तुझे कुछ भी खोना नहीं पड़ेगा और खोना भी पड़ा तो केवल हाथका मैल[1] ही खोयेगा। इसे खोना।

बापूके आ[शीर्वाद]

[पुनश्च :]

पत्रके साथ बिना सूत दिये खादी बेचने का विज्ञापन करनेवाली दूकानके विज्ञापन की कतरन है।

चि० शामलदास गांधी
सम्पादक 'वन्देमातरम्'
बम्बई

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

२१४. पत्र : पुरुषोत्तम कानजी जेराजाणीको

महाबलेश्वर
१३ मई, १९४५

चि० काकूभाई,

मेरे पिछले पत्रका तुम्हारा तत्परताके साथ भेजा उत्तर मुझे मिला था। इसके साथ और भेज रहा हूँ। विज्ञापनवाली कतरन शामलदासकी भेजी है।[2] अमृतलाल दोषीको तुमसे मिलने के लिए लिखा है।[3] वह व्यक्ति होशियार तो है। उसने खादीका काम भी खूब किया है। तुम जैसी निःशुल्क सहायता चाहते हो वैसी यदि वह दे सके तो देने के लिए मैंने लिखा है।

भंडारको शिक्षणशाला बनाना। कुछ लोग तो वहाँ आयें, सीखें और कातें भी। कुछ सीखने के पैसे दें। गरीब [शिक्षार्थी श्रमके रूपमें] मेहनताना दें। सामान सारा अच्छा ही होना चाहिए। यह सब-कुछ तुम्हें बताने की जरूरत नहीं, लेकिन मेरा मोह मुझसे कहलाता है।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० १०८५४) से। सौजन्य : पुरुषोत्तम का० जेराजाणी

१. रुपये-पैसेसे तात्पर्य है।
२. देखिए पिछला शीर्षक।
३. देखिए पृ० १३१।

२१५. पत्र : लीलावती आसरको

महाबलेश्वर
१३ मई, १९४५

चि० लिली,

तेरा पत्र अभी-अभी पढ़ा। मुझे तो यह ज्यो-का-त्यो दे दिया गया था, लेकिन मै इसे नरहरि, प्यारेलाल, मुन्नालाल और हेमन्तकुमारसे पढवानेवाला हूँ। यह पत्र तेरे दिलकी आरसी है।

तू मूर्ख है और मूर्ख ही रही। 'ध्यायतो विषयान्पुस.'[1] को याद कर। विषय यानी गुजरातीके अर्थमें केवल व्यभिचार ही नही। जिनकी इच्छा की जाये, वे अनेक वस्तुएँ सब विषय हैं। उदाहरणके लिए, जो आँखोको अच्छा लगा उसकी इच्छा करना, कानोने सुना उसकी, नाकने सूँघा उसकी, इस प्रकार जो इन्द्रियोने चाहा उसकी इच्छा करना — ये सव विषय हैं। तेरा 'विषय' है पहाड़पर आना। यदि यह प्राप्त नही हुआ, तो इसे भूल जाना चाहिए। लेकिन भूल जाये, तो फिर तू लिली कैसी? और इसीलिए तू दुखी होती है। बाकी सच पूछा जाये तो फिर तेरे जैसी भाग्यवान स्त्रियाँ बहुत कम हैं। हालाँकि तेरी भरी-जवानीमे शादी हो गई; फिर भी तू इतने बरस कुँआरी रही कि अब उस क्षणिक सुखकी इच्छा ही बिलकुल भस्म हो गई है। तुझे सेवा पसन्द है और उसके अवसर तुझे मिलते रहते हैं। उसमे भी सर्वोत्तम सेवा तूने भणसालीकी की; उसके बाद रामप्रसादकी और उसके बाद कृष्णचन्द्रकी। बा की, महादेवकी, और मेरी सेवामे तो तेरा थोड़ा मोह भी था, इसलिए उसकी गिनती मै नही करता।

तू डॉक्टर होनेवाली है और वह भी केवल सेवा करने के लिए। अब इससे अधिक सात्विक सुख और क्या होगा? अब भी अगर तुझे सन्तोष नही है, तो तू मूर्ख नही तो और क्या है?

मेरे पास तो होशियारी आना चाहती है, वीणा आना चाहती है, और आने की इच्छा करनेवाले पुरुषोका तो कोई अन्त ही नही है। अब वे नही आ सकते, तो क्या वे सब अभागे हैं? तुझे अपनी इस इच्छाको जलाकर भस्म कर देना चाहिए। अत., यद्यपि एक दृष्टिसे तेरा पत्र उत्तम है, तथापि दूसरी दृष्टिसे तुझे उसे वापस लेना चाहिए, और वह भी सच्चे मनसे। तुझे निश्चित रूपसे पास होना है और वह भी अच्छी तरह। बादमे तो तू मन भरकर सेवा करेगी। इस बीच भी तुझे सेवाके अवसर तो

१. भगवद्गीता, अध्याय २, श्लोक ६२

मिलते ही रहते हैं, जैसे कि मामाकी। सु[शीला] वहाँ है। प्या[रेलाल] कल जा रहा है।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ९६०१) से। सी० डब्ल्यू० ६५७३ से भी; सौजन्य : लीलावती आसर

२१६. पत्र : सावित्रीको

महाबलेश्वर
१३ मई, १९४५

चि० सावित्री,

तू भीरु है। सगाई होने देना। तू भागकर अपनी बुआके लड़केके यहाँ रहती है। यह लक्षण अच्छा नहीं कहा जा सकता। तूने पुण्यका काम किया है न? इसमें भागना क्यों?

आश्रम तो मैं ठीक जुलाई महीनेमें जाऊँगा। जब वहाँ जाऊँगा तब यदि मुझे लिखना चाहे तो लिखना। तब भी तुझे रख सकूँगा, ऐसा मैं निश्चयपूर्वक नहीं कह सकता। आश्रमका कार्यभार मेरे हाथमें नहीं है। उन लोगोंकी सलाह लेकर ही कुछ किया जा सकता है।

क्या तू कातती है? खादी पहनती है? छुआछूत नहीं मानती? कुछ पढ़ती है क्या?

बापूके आशीर्वाद

चि० सावित्रीबहिन
मार्फत पुरुषोत्तमदास बीजलानी
प्रबन्धक, अंजार स्पिनिंग-वीविंग मिल्स
अंजार, कच्छ

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

२१७. पत्र : आर० के० नन्दक्योलियारको

महाबलेश्वर
१३ मई, १९४५

भाई नंदक्योलियार,

मैं जानता हूं तुम न आये सो मुझको वचाने के कारण। गिलास आ जाने पर प्रेमसे इस्तेमाल करूंगा। चि० मोहनदासके विवाहके लिये वरवधुके लिये तुमने और प्रियंवदाने आशीर्वाद मागे है। विवाह जातीके बाहर नही होगा ऐसा भय है। वधूने परदा तोडा है? दोनो खूब सेवा करेगे? वधूको प्रियंवदा घरकाममे ही लगा देगी कि सेवाके लिये समय रहने देगी? वधूके मातापिता लडकीको गुलाम बनाकर नही रखते है ना? इन सवालोंका उत्तर सतोषजनक दे सको तो खूब आशीर्वाद वरवधूके लिये ले लो।

बापुके आशीर्वाद

बारिस्टर नदक्योलियार
नन्द विलास
गया (बिहार)

पत्रकी नकलसे: प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य: प्यारेलाल

२१८. पत्र : हरिभाऊ जोशीको

महाबलेश्वर
१३ मई, १९४५

भाई जोशी,

तुमारा खत मिला है और पुस्तक भी। मै पढ लुगा और घटित करूंगा।

बापुके आशीर्वाद

श्री हरिभाऊ जोशी
'लोकशक्ति'
२९१, शनवार पेट
पूना–२

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

२१९. पत्र : ए० वी० वेंकटरामनको

महाबलेश्वर
१३ मई, १९४५

भाई वेंकटरामन,

तुमारा खत मिला है। मेरी आशा है कि तुम मेरी हिंदी समज लोगे।

तुम्हारा कार्य पढ़ने से तो अच्छा लगता है। मेरी आशा है कि ऐसे ही कार्य चलता होगा। इस मान्यतासे मेरे आशीर्वाद है। क्या बुनाई नया प्रकारकी होती है? कातनेवाले ही बिनोला निकालते हैं और तुनाई कर अपनी पुनीया बनाते है ना?

कपास कैसे उगता है? कितने एकडमे?

मो० क० गांधीके आशीर्वाद

श्री ए० वी० वेंकटरामन
ए० आई० एस० ए०
खादी वस्त्रालय
मायावरम, एस० आई०[1]

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

२२०. पत्र : डॉ० गोपीचन्द भार्गवको

महाबलेश्वर
१३ मई, १९४५

भाई गोपीचंद,[2]

दुखडीके हरिजनोंके बारेमे तुमने अच्छा किया। पूरी राहत मिलनी चाहिए। राजपूतोंको समजाना चाहिये। सिर्फ कोरटसे पूरा काम नही होगा। एक दुःखद मजा हुइ। मैंने तो माना था कि वही दुनिचंद[3] चले गये। जिसका स्वर्गवास हुआ उनके

१. पता अंग्रेजीमें है।

२. पंजाबमें १९१९ से कांग्रेसके एक कार्यकर्ता; पहले १९३७ में और फिर १९४६ में भी पंजाब विधान-सभाके लिए चुने गये; १९४७-५१ तक पंजाबके मुख्यमन्त्री

३. अम्बालाके एक प्रमुख कांग्रेसी; पंजाब विधान-सभाके सदस्य; देखिए अगला शीर्षक भी।

कोण है? उनको तो मैंने कुछ नही लिखा होगा। देखो। मुजे कुछ करना चाहिये तो करूं।

बापुके आशीर्वाद

डा० गोपीचन्द भार्गव
लाजपत भवन
लाहौर (पंजाब)

पत्रकी नकलसे प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य . प्यारेलाल

२२१. पत्र : दुनीचन्दको

महाबलेश्वर
१३ मई, १९४५

भाई दुनिचंद,

तुमने जो दुखैंडीके हरिजनोके बारेमे किया उससे समजा की तुम तो अबतक मौजुद है। कैसा अच्छा? मैंने तो तुमारी सहधर्मिणीको शोकका खत भी लिखा। वह बिचारी हसी होगी जवाब तो क्या लिखे? हो दुनिचंद रहे तो दोष तुमारा कि मेरा? मै तो मेरा ही दोष मानता हू। उसकी सजा यह कि मुझे तुमारे पूर्व जाना चाहीये। मै तो १२५ वर्ष काटना चाहता हू। तुम तो मेरेसे बडे हो तो रहना १२५ के भी बाद। देवीजीसे क्षमायाचना।

हरिजनोका देखा करो।

आपका,
मो० क० गांधी

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० ५५८७) से

२२२. पत्र : कैलाशनाथ काटजूको

महाबलेश्वर
१३ मई, १९४५

भाई काटजू,

प्या[रेलाल] पर तुमारा खत पढ़ा। देहाती प्रगतीके बारेमें सुनकर तुम राजी होगे कि मैंने उसे शुरू कई दिनोंके पहले कर दिया। मेरे कागजातके साथ रखा है। दूसरा भी पढ़ रहा हूं इसलिये देर होती है। मैं पूरा पढूंगा और तुमको लिखूंगा।

प्रकाशनारायण और उसकी पत्नीको मेरे आशीर्वाद हों। यों तो सजातीय विवाहमें वगैर खास कारणके मैं आशीर्वाद नहीं भेजता हूं। मुझे डर है कि यह विवाह सजातीय होगा। कुछ भी हो इस विवाहमें आशीर्वाद भेजने का खास कारण है ही। पूर्णिमा मुझे मिली थी। मुजपर अच्छा असर डाला।

बापूके आशीर्वाद

डा० के० एन० काटजू
एडवोकेट
९, एडमान्स्टन रोड
अलाहाबाद (यू० पी०)

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

२२३. पत्र : कुसुम नायरको

महाबलेश्वर
१३ मई, १९४५

चि० कुसुम,

तेरा सुंदर हिंदुस्तानीमें लिखा हुआ खत मिला। २० तारीखके बाद मुझे कुछ फुरसद मिलेगी। तब आओ। तेरे सवालोंका उत्तर देने की कोशिश करूंगा। ढोंडी मत पीटो कि तू मेरे पास आ रही है।

बापूके आशीर्वाद

श्री कुसुमबहिन नायर
एन० आई० पी० एन्ड पी० ब्यूरो
७४, लक्ष्मी बिल्डिंग
श्री फिरोजशाह मेहता रोड
बम्बई–१[1]

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. पता अंग्रेजीमें है।

२२४. पत्र : जीवाजीराव सिन्धियाको

महाबलेश्वर
१३ मई, १९४५

महाराजा साहेब,

आपने हरिजनोके बारेमे जो किया है उस बारेमे आपको धन्यवाद देता हूं। मुझे विश्वास है कि जो निर्णय आपने किया है उसका भलीभाति अमल हो सके ऐसे सब कदम आप उठावेंगे। अपना वहम निकालने की तालीम देना आप ही काम है। अन्यथा आपका निर्णय गझेटमे ही रह जायगा। आप जानते होंगे कि मैंने तो कहा है कि अगर किसी प्रकारकी अस्पृश्यता रही तो हिंदुधर्मका लोप होगा।

जिस पुत्रके जन्म निमितसे आपने यह शुभ काम किया है उसे ईश्वर दीर्घायु करे और उनका तन और मन दुरस्त रखे।

आपका,
मो० क० गांधी

महाराजा
ग्वालियर नरेश
ग्वालियर स्टेट

पत्रकी नकलसे . प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य: प्यारेलाल

२२५. पत्र : एन० जी० रंगाको

महाबलेश्वर
१३ मई, १९४५

भाई रगा,

निलगिरिकी जातियोके लिये तुमने लिखा है सो मै पढ गया। उस बारेमे लिखना चाहता था इतनेमे तुम्हारा खत आया।

निलगिरिवाला लेख अच्छा है। धन्यवाद। उसमें देशी शब्दोका कोष चाहिये था। जातियोको संख्याकी आवश्यकता थी। उन लोगोंकी भाषाके बारेमे भी कहना चाहिये था। उनके रीतरिवाजका ज्यादा वर्णन चाहिये था।

काम्युनिस्टवाले झगडेमे मुझे मत खीचो। तुम लोगोका यह कार्य है। मै अगर कुछ कहु तो उसके पहले मुझे उन लोगोसे बाते करनी चाहिये। मै वहातक जाऊ तो मेरा समय बहुत चला जाय। मेरा स्थान बड़े कामोमे मश्विरा देना है।

अब दक्षिणवालोको भी मै हिन्दुस्तानीमे लिखता हूं। यह बात निरपवाद तो नही हुई है। मेरी आशा है कि मेरे ऐसे खत पढ़ने में तुमको मुशीवत नही पडती होगी। तुम हिंदुस्तानीमे नही लिख सकते हो तो अवश्य अंग्रेजीमे लिखो। लेकिन हिन्दुस्तानीमे लिखने की आदत तुमारे डालनी चाहिए।

बापुके आशीर्वाद

प्रो० एन० जी० रंगा
निदुबराल्व
आन्ध्रदेश

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

२२६. पत्र : मनु गांधीको

१४ मई, १९४५

चि० मनुड़ी,

तेरी और युक्तिकी[1] लिखाईमे कोई अन्तर देख पाना मुश्किल है। कराची न जाने की बात सीधे तुझसे कहने के बजाय सु० बहिनसे कहने को कही, इसका कारण यह है कि तू यह न समझे कि मैं तुझे हुक्म दे रहा हूँ। तेरी कराची जाने की या पोरबन्दर जाने की इच्छा हो, तो जरूर जा। मुझे गरज इस बातकी है कि तू शरीर और मनसे मजबूत हो जाये। यह तू वहाँ जाकर प्राप्त कर सके तो मुझे अच्छा लगेगा। तेरी लापरवाहीके कारण मैंने चाहा था कि अगर अपने डरको जीत ले, तो पहाड़की हवामे रहने का पूरा और लम्बे समयतक टिकनेवाला लाभ ले सकती है। फिर भी मुझे पहाड़का भी कोई मोह नही है। तू मुक्त मनसे जहाँ रहेगी, वहाँ लाभ ही होगा। अतः जैसी तुम बहिनोंकी इच्छा हो, वैसा तू करना। इसमें मेरी सम्मति है।[2]

हम किसीका चेहरा देखें ही क्यो? चेहरेपर से निष्कर्ष निकालने में भूल भी हो सकती है। हम कोई परमेश्वर थोड़े ही हैं। ऐसेमे हम उस व्यक्तिके प्रति अन्याय भी कर सकते हैं। लेकिन जब हमें किसीसे डरना ही नहीं है, तब किसीका मन जानकर ही क्या होगा? बाकी प्यारेलालसे।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी माइक्रोफिल्म (एम० एम० यू०/२४) से

१. मनुकी बड़ी बहिन संयुक्ता
२. देखिए अगला शीर्षक भी।

२२७. पत्र : विनोदिनी गांधीको

१४ मई, १९४५

चि० विनोद,[1]

अच्छा किया तूने पत्र लिखा। मनुको तू जहाँ ले जा सके ले जा — कराची या पोरबन्दर कहीं भी।[2] शर्त यह है कि उसे काम मत करने देना, सीधी सोने को कहना और चबा-चबाकर धीरे खाना सिखाना।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी माइक्रोफिल्म (एम० एम० यू०/३) से

२२८. पत्र : डॉ० दिनशा मेहताको

१४ मई, १९४५

चि० दिनशा,

घनश्यामदासको [लिखा तुम्हारा] पत्र कलकत्ते गया। उनका जवाब यह है:

"दिनशा ट्रस्टके बारेमें आपका पत्र मिला। मेरा खयाल है कि उनकी माँग उचित है। लेकिन मैं सब आपपर छोड़ता हूँ।"[3]

इसलिए तुमने उद्देश्यके सम्बन्धमें जो सुझाव दिये हैं उनमें आवश्यक संशोधन करने के बाद मैं पकवासाको[4] लिखनेवाला हूँ कि वे [ट्रस्ट-सम्बन्धी] दस्तावेज तैयार करवा लें।

मावलंकरने, जो तुम्हारे यहाँ रोगीके रूपमें [रह] रहे थे, तुम्हारी प्रशासन-क्षमताके बारेमें मुझे पत्र लिखा है। उनकी शिकायतमें काफी वजन है।[5]

तुम तीनोंको
बापूकी दुआ

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. मनु गांधीकी बड़ी बहिन

२. देखिए पिछला शीर्षक भी।

३. यह अनुच्छेद अंग्रेजीमें है; देखिए "पत्र : घनश्यामदास बिड़लाको", पृ० ८२ और पृ० १०७-८।

४. मंगलदास पकवासा, बम्बईके सोलिसिटर; १९३७-४७ तक बम्बई विधान-परिषदके अध्यक्ष, १९४७ में मध्यप्रान्त और बरारके गवर्नर नियुक्त किये गये।

५. देखिए अगले दो शीर्षक भी।

२२९. पत्र : डॉ० दिनशा मेहताको

१४ मई, १९४५

चि० दिनशा,

इस पत्रको ध्यानके साथ पढ़ना। तुम्हे ज्यादातर पूनामे रहना चाहिए। मेरे लिए बाहर रहो, यह तो मुझे कतई अच्छा नही लगता। गन्दगी, लापरवाही, मालिश आदिके बारेमे जॉच करो। तुम्हारा स्वभाव रोगियोको कठोर नही लगना चाहिए। जवाब तो सब चीजोंका होगा। हमारा धर्म इसमे से सार ग्रहण करके बाकीका कूड़ा फेक देना है। कागजात वापस भेजना।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी नकलसे: प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य. प्यारेलाल

२३०. पत्र : बालकृष्ण भावलंकरको

महाबलेश्वर
१४ मई, १९४५

चि० बालकृष्ण,

तुमने लिखा, यह अच्छा किया। मै सब पढ गया हूँ। डॉ० दिनशाको सब कागज भेज दिये है। इसी तरह परिवर्तन करा सकूँगा—यदि परिवर्तन आवश्यक हुए तो। तुम्हारे पत्रमे कोई अविनय नही है। और भी लिखना चाहो तो लिखना। नतीजा जो होगा तुम्हे बताऊँगा।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० १२५३) से

२३१. पत्र : अमृतलाल वि० ठक्करको

१४ मई, १९४५

बापा,

तुम्हारा पत्र मिला है। रजिस्टर्ड पत्र मिल जायेगा। तुम १६ तारीखको तो आ रहे हो, लेकिन चाहते हो इसलिए यह पत्र लिख रहा हूँ।

बापू

श्री बापा
हिन्द सेवक मण्डल
पूना–४

गुजरातीकी नकलसे: प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य: प्यारेलाल

२३२. पत्र : शैलेन्द्रनाथ चटर्जीको

महाबलेश्वर
१४ मई, १९४५

चि० शैलन,

तुमारा खत मिला। मुंबईमें रहनेका स्थान तो है ना? मुंबई पहोंच जाओ। मलाडमें नैसर्गिक उपचार रूग्णालय है। दा० कृष्णवर्मा उसके मालिक है। वे तुमको ले लेंगे। मैं उनको लिखता हू। वह कहे ऐसा करो। अच्छे हो जाओगे। सब सीखो भी। जो मदद दे सकते हैं और शरीर करने दे तो करो। मुझे लिखा करो। रिषभदासकी इजाजत ले के ही वर्धा छोडना। यह पो० का० दा० कृष्णवर्माको बताओ।

बापुके आशीर्वाद

चि० शैलेन चेटर्जी
बीमा कम्पनी
बजाजवाडी
वर्धा (सी० पी०)

पत्रकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० १०३९१ ए) से। सौजन्य. अमृतलाल चटर्जी

२३३. पत्र : कृष्ण वर्माको

१४ मई, १९४५

भाई कृष्ण वर्मा,

मैंने जो लिखा था वही हुआ। भाई शैलेन चटर्जी बीमा कम्पनीमें नौकर हैं। जितना कमाते हैं उतना खा जाते हैं। मैंने उन्हें तुम्हारे यहाँ रहने की सलाह दी है। डाक्टरोंका कहना है अच्छे हो जाते हैं और फिर बीमार पड़ जाते हैं। उन्होंने तुम्हारे यहाँ आना कबूल कर लिया है। उनके खर्चकी बात विचारणीय है। माधव-दासकी बात बिलकुल अलग है। तथापि शैलेनको भी कुछ तो देना ही चाहिए। यदि मुफ्त अस्पताल चलाओगे तो सारा भर जायेगा और लाभ किसीको नहीं होगा। यह बातचीत तो फुर्सतके समय की जा सकती है। मैंने शैलेनको लिखा है कि वे तुम्हारे पास आये और मेरा पोस्टकार्ड तुम्हें दिखाये। वे वर्धामें रहते हैं।

बापूके आशीर्वाद

डॉ० कृष्ण वर्मा
नैसर्गिक उपचार गृह
मलाड, बरास्ता बम्बई

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

२३४. पत्र : रामेश्वरदास बिड़लाको

१४ मई, १९४५

चि० रामेश्वरदास,

इसे पढो और कुछ कहना है तो कहो। मैंने उत्तर दिया है कि ऐसे तहोमतके समर्थनमें कुछ भेजे तो मैं देखुंगा।

बापुके आशीर्वाद

श्री रामेश्वरदास बिड़ला
बिड़ला हाउस
माउंट प्लेजंड रोड
बम्बई

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

२३५. पत्र : ओंकारसिंह सेगरको

महाबलेश्वर
१४ मई, १९४५

भाई ओकारसिहजी,

आपकी पुत्री प्रेमलता कष्टमे है? उसने विजातीय पति निर्माण किया है और आप रोकते है? पति लायक है। जाति विजाति पुरानी बात है। आज तो योग्यता की ही कदर होनी चाहिये। प्रेमलता अनशन करना चाहती है। यह पो० का० उनको पढाओ और अनशनसे रोको। अगर कुछ और बात है तो मुझे लिखो।

मो० क० गांधीके आशीर्वाद

ठाकुर ओकारसिह सेगर
मदन खादी कुटीर
करोली स्टेट
राजपुताना

पत्रकी नकलसे. प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य. प्यारेलाल

२३६. पत्र : एल० एन० गोपालस्वामीको[1]

महाबलेश्वर
१५ मई, १९४५

प्रिय गोपालस्वामी,

तुम्हारा उदारतापूर्ण पत्र मिला। तुम बापाके आदेशानुसार काम करो। मै तुम्हारे अच्छे स्वभावसे अनुचित लाभ नही उठाना चाहता। जी-जानसे अच्छी स्त्रियोको आगे बढाओ।

आपका,
बापू

श्री एल० एन० गोपालस्वामी
कस्तूरबा गांधी राष्ट्रीय स्मारक निधि
एस० १३ बिल्डिग
रायपेट्टा
मद्रास

अग्रेजीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० १०५४९) से। सौजन्य. तमिलनाडु सरकार

१. यह पत्र ३ गोपापुरम्, तेन्नोर, त्रिचिनापल्लीके पतेपर अनुप्रेषित किया गया था।

२३७. पत्र : मुहम्मद अहमद सईद खाँको

महाबलेश्वर
१५ मई, १९४५

प्रिय नवाब साहब,

आपकी इसी ५ तारीखकी कृपापूर्ण टिप्पणीके लिए धन्यवाद। मेरे पास हैदराबादसे आये पत्रों और समाचारपत्रोंकी कतरनोंका अबार लग गया है। इनमे से कुछको पढ़कर दुःख होता है।[1] मुझे श्री विनायक रावका पत्र भी मिला है।[2] उन्हे यह भय है कि न्याय नही हो पायेगा। अतीतमे चाहे जो-कुछ भी हुआ हो, मुझे भरोसा है कि आप ऐसी कोई बात नही होने देगे।

हृदयसे आपका,
मो० क० गांधी

महामहिम नवाब साहब, छतारी
हैदराबाद

अंग्रेजीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य . प्यारेलाल

२३८. पत्र : के० नटराजनको

महाबलेश्वर
१५ मई, १९४५

प्रिय श्री नटराजन,

यह आपकी कृपा है कि उद्योगपतियोके बारेमे कही मेरी टिप्पणीके सम्बन्धमे आपने मुझे लिखा है और उनके सम्बन्धमे 'इंडियन सोशल रिफॉर्मर'[3] मे प्रकाशित अपनी टिप्पणीकी नकल मुझे भेजी है।

१. यहाँ पुलिसकी ज्यादतियोंकी ओर संकेत है। देखिए पृ० ४३।

२. देखिए पृ० १२४।

३. के० नटराजन १८९२ से १९४० तक इस पत्रके सम्पादक रहे थे।

आपको हिन्दुस्तानीमें लिखता तो मुझे कितना अच्छा लगता। बम्बईके अपने लम्बे आवासके फलस्वरूप आपको तो हिन्दुस्तानीमें पण्डित बन जाना चाहिए।

हृदयसे आपका,
मो० क० गांधी

श्री के० नटराजन
कामाक्षी हाउस
बान्द्रा, बम्बई — २०

अंग्रेजीकी नकलसे . प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य . प्यारेलाल

२३९. पत्र : चिमनलाल नरसिंहदास शाहको

१५ मई, १९४५

चि० चिमनलाल,

तुम्हारे एक पत्रका मैंने पूरा जवाब[1] नहीं दिया। शान्तिनिकेतनवाले सज्जनको अब बुलाना ठीक नहीं लगता। एक बार मना कर दिया है, तो अब हमें उसपर जमे रहना चाहिए।[2] जाजूजी बादशाह आदमी हैं। [आग्रह किया जाये तो] वे जवाब देने में नरम पड़ सकते हैं, लेकिन हम उससे फायदा क्यों उठायें?

सरोजिनी चली गई; अच्छा हुआ।[3] फिर लौटकर आयेगी ही। हम उनके मनपर थोड़े ही काबू पा सकते हैं।

शकरीबहिनको एक इलाज बताया है। दूसरा इलाज है डॉक्टर आइससे उपचार कराना। इसका इलाज वे आसानीसे कर सकते हैं।

सरोजको रोक लिया, अच्छा किया। अपनी इच्छा और शक्तिके अनुसार तुम जिसे चाहो रोक सकते हो — मुझे खुश करने के लिए नहीं, और वह भी मेरी गैरहाजिरीमें।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० १०६३२) से

१. देखिए पृ० ११७।
२. देखिए पृ० ४५।
३. देखिए पृ० ७६।

२४०. पत्र : किशोरलाल घनश्याम मशरूवालाको

महाबलेश्वर
१५ मई, १९४५

चि० किशोरलाल,

मणिलालको लिखा तुम्हारा पत्र मैंने सुना।

तुम स्वामी द्वारा पसन्द की गई जगहपर वहुत कम समय रहे। तुम्हारे [स्वास्थ्यमे हुए] सुधारमे वृद्धि हो। गोमतीका[1] ऐसे ही चलनेवाला है।

वर्णव्यवस्थाके बारेमे तुम मेरे आगे-पीछेके विचारोको उलट-पुलट जाओ। उनमे यदि संशोधन-परिवर्तन हुआ हो तो मुझे अवश्य बताओ। मैं इतना कष्ट नही उठाता, क्योंकि मुझे तो मै आज कहाँ हूँ, इतना बताने मे ही सन्तोष प्राप्त कर लेना है। मेरे पिछले विचार यदि [मेरी आजकी स्थितिके] विरोधी हों तो उन्हे स्वीकार न किया जाये। कुछ तो मेरी निन्दा करने के लिए लिखा गया है। कुछ केवल नासमझीमे और कुछ अज्ञानमे लिखा गया है। कुछ प्रकाशनके विचारसे और अधिकांशत: पैसेके विचारसे तो लिखा ही जाता है। मेरे उत्तरसे किसीका समाधान होता है या नही, इसे मै कोई महत्त्व नही देता। जिनकी आलोचनाका मैंने उत्तर दिया है उनका समाधान तो हो ही गया है। अपने लेखमे मैंने जो मर्यादा निर्धारित की है उसे यदि निकाल दूँ तो कई लोगोको वह ज्यादा पसन्द आयेगा। लेकिन उसे कैसे निकाला जाये? यदि हम वर्णव्यवस्थाके लाभोंसे परिचित नही हैं तो इसका अर्थ यह नही कि वह लाभकारी नही है। हाँ, वर्णके अर्थको अच्छी तरह समझने की जरूरत है, यह एक अलहदा बात है। तुमने जो भेद बताया है वह ठीक लगता है।

वर्ण आदि पर लिखे मेरे लेखोके प्रकाशित होने मे लाभ ही है। उन्हे काट-छाँट करके प्रकाशित नही किया जाना चाहिए। मै स्वयं समय होने पर भी काट-छाँट नही करता। लेकिन मैं अपनी आजकी स्थितिको ब्योरेवार बताऊँगा।[2] तुम्हे फुर्सत हो और इच्छा हो तो उनका अध्ययन करना। मै तो उसे पढ जाने के लिए तैयार रहूँगा। लेकिन तुम इस कामको करना कदापि अपना धर्म न समझना। शेष जो पूछना हो पूछना।

बापूके आशीर्वाद

किशोरलाल मशरूवाला
वसन्त निवास
बाबुलनाथ रोड
बम्बई–७

गुजरातीकी नकलसे: प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य: प्यारेलाल

१. किशोरलाल मशरूवालाकी पत्नी
२. देखिए "प्रस्तावना: **वर्णव्यवस्था** की", २१-५-१९४५।

२४१. पत्र : शामलदास गांधीको

१५ मई, १९४५

चि० शामलदास,

तेरा पत्र मिला। तूने अच्छा किया है। मुझमें शक्ति हुई और तू करने देगा तो इतनी चौकसी तो मैं करता ही रहूँगा।[1]

बापूके आशीर्वाद

श्री शामलदास गांधी
'वन्देमातरम्'
फोर्ट, बम्बई

गुजरातीकी नकलसे: प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य. प्यारेलाल

२४२. पत्र : चिमनलाल त्रिवेदीको

महाबलेश्वर
१५ मई, १९४५

भाई चिमनलाल,

तुम्हारा पत्र मिला। सर राधाकृष्णन्‌का जवाब स्पष्ट है। अच्छा कार्यक्रम बनाया जाना चाहिए। मेरा आशीर्वाद तो तुम्हें मिल ही चुका है न?

बापूके आशीर्वाद

श्री चिमनलाल त्रिवेदी
महेर विला
सुपर टाकीजके सामने
ग्रान्ट रोड, बम्बई

गुजरातीकी नकलसे: प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य · प्यारेलाल

१. देखिए पृ० १३१-३२ भी।

२४३. पत्र : केदारनाथ सांडिल्यको

महावलेश्वर
१५ मई, १९४५

भाई केदारनाथ,

जिस बारेमें तुम लिखते हैं उसमें तुमारे ही निर्णय करना चाहीये। मैंने सर्वसामान्य नियम तो बताया है। जितना अनुसरण कर सके किया जाय।

बापुके आशीर्वाद

श्री केदारनाथ सांडिल्य
मार्फत सब-पोस्टमास्टर
जहानाबाद
गया (बिहार)[1]

पत्रकी नकलसे: प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य: प्यारेलाल

२४४. पत्र : अमृतलाल चटर्जीको

महावलेश्वर
१५ मई, १९४५

चि० अमृतलाल,

आज वीरेन सतीशबाबूके साथ आ गया है। तुमारे ८ तारीखके खतसे लगता है कि भाई भीमानी औरतोंके बारेमे खबर देना चाहते थे। अगर ऐसा था तो उनको मैं विश्वासपात्र वर्णन देनेवाला नही मानता हूं। उस बारेमे तो मुझको वहांसे भी लिखित पुरावा भेज सकते हैं। मैं तुमारी बात नही भूला हूं लेकिन उसका पूर्ण समर्थन न मिले तो क्या काम की।

शैलनको मलाड भेजने का प्रबंध किया है।[2] रमेणने लिखा है ऐसे ही करेगा ऐसी उमेद है।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० १०४०४) से। सौजन्य: अमृतलाल चटर्जी

१. पता अंग्रेजीमें लिखा है।
२. देखिए पृ० १४३।

२४५. पत्र: सीता चौधरीको

१५ मई, १९४५

चि० सीता,[1]

तेरा खत अच्छा है। सुभद्रा[2] तो अब मुझे रामायण सुनायेगी। तेरा अभ्यास भी अच्छा लगता है। प्रतापने[3] बहुत अच्छा किया है। जुगलकिशोरजी कहा सीखे? माकी क्या चिकित्सा चलती है? मैं उत्तर दू या नही मुझे लिखा कर। जहांतक मुझे स्मरण है पारनेरकरजीने मुझे कुछ दिया नही। शायद बात की होगी। पिताजीको मेरे आशीर्वाद। मैं आशा रखता हूं वह बिलकुल अच्छे और ताकतवर हो जायंगे।[4]

बापुके आशीर्वाद

बापु: मैंने क्या देखा, क्या समझा?, पृ० २१६

२४६. तार: श्रीकृष्णदास जाजूको

महाबलेश्वर
१७ मई, १९४५

जाजूजी
चरखा सघ
सेवाग्राम, वर्धा

कृष्णदासने[5] तुम्हे यह तार भेजा है· "शाखाओने और अधिक अग्रिम राशि भेजने से इकार कर दिया है। कश्मीरमे पूंजीकी स्थिति स्वीकृत राशिसे भी कम है। कृपया कमसे-कम पचास हजार [रुपया] तार द्वारा पहुँचाने की व्यवस्था करे। कार्य पूरी तरह ठप्प पड गया है।" मेरी राय है कि मैं आपके फैसलेका अनुमोदन करूँगा।

बापू

अग्रेजीकी नकलसे प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य. प्यारेलाल

१ और २. रामनारायण चौधरीकी पुत्रियाँ
३. सीता चौधरीके भाई
४. देखिए पृ० ५८।
५. कश्मीर खादी भण्डारके

२२९. पत्र : डॉ० दिनशा मेहताको

१४ मई, १९४५

चि० दिनशा,

इस पत्रको ध्यानके साथ पढ़ना। तुम्हें ज्यादातर पूनामें रहना चाहिए। मेरे लिए बाहर रहो, यह तो मुझे कतई अच्छा नहीं लगता। गन्दगी, लापरवाही, मालिश आदिके बारेमें जाँच करो। तुम्हारा स्वभाव रोगियोंको कठोर नहीं लगना चाहिए। जवाब तो सब चीजोंका होगा। हमारा धर्म इसमें से सार ग्रहण करके बाकीका कूड़ा फेंक देना है। कागजात वापस भेजना।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

२३०. पत्र : बालकृष्ण भावलंकरको

महाबलेश्वर
१४ मई, १९४५

चि० बालकृष्ण,

तुमने लिखा, यह अच्छा किया। मैं सब पढ़ गया हूँ। डॉ० दिनशाको सब कागज भेज दिये हैं। इसी तरह परिवर्तन करा सकूँगा—यदि परिवर्तन आवश्यक हुए तो। तुम्हारे पत्रमें कोई अविनय नहीं है। और भी लिखना चाहो तो लिखना। नतीजा जो होगा तुम्हें बताऊँगा।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० १२५३) से

२४९. पत्र : चाँदरानीको

महाबलेश्वर
१७ मई, १९४५

चि० चाद,

तेरा पो० का० मिला। मैंने तो तुझको तुरत उत्तर दिया।[1] लेकिन डाक ही देरसे मिले उसका क्या किया जाय? तेरा काम तो हुआ। ऐसे ही हरिजन निवासमे जगह मिली होगी। मैंने वियोगी हरीको लिख भेजा था।[2] मेरा शरीरमे कुछ फरक तो नही हुआ है। लेकिन हवा वहुत अच्छी है। तुझे जव सत्यवती छोड़े तव आवेगी। जुनमे सीधी तो नागपुर नही जायेगी? लेकिन वहा गई है तो नागपुर छूट गया तो कृपा करेगे?

यह सव तुझे और सत्यवतीको सोचना है। है ना? मातपिताको तो मिलना नही है ना? ह० निवासमे सवको आशीर्वाद।

बापुके आशीर्वाद

श्री चादरानी
हरिजन निवास
किंग्जवे [कैम्प]
देहली

पत्रकी नकलसे . प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य प्यारेलाल

२५०. पत्र : गोप गुरुबख्शानीको

महाबलेश्वर
१७ मई, १९४५

चि० गुरवक्सानी,

दो वातमे से एक हुई। मैंने माना मैंने तुमको लिखा था या तुमने लिखा था कि पत्रका उत्तर देने की आवश्यकता नही है। तुमारा खत अच्छा था इसलिये मैंने सेवाग्राम भेजा। अव लगता है कि मैंने लिखा ही नही। अव समजो कि तुमारे तो लिखना ही है। मै लिखु या न लिखुं। विमला अच्छी होगी। अव नही लिखती

१. देखिए पृ० १२७।
२. देखिए पृ० १२६।

२३३. पत्र : कृष्ण वर्माको

१४ मई, १९४५

भाई कृष्ण वर्मा,

मैंने जो लिखा था वही हुआ। भाई शैलेन चटर्जी बीमा कम्पनीमें नौकर हैं। जितना कमाते हैं उतना खा जाते हैं। मैंने उन्हें तुम्हारे यहाँ रहने की सलाह दी है। डाक्टरोंका कहना है अच्छे हो जाते हैं और फिर बीमार पड़ जाते हैं। उन्होंने तुम्हारे यहाँ आना कबूल कर लिया है। उनके खर्चकी बात विचारणीय है। माधवदासकी बात बिलकुल अलग है। तथापि शैलेनको भी कुछ तो देना ही चाहिए। यदि मुफ्त अस्पताल चलाओगे तो सारा भर जायेगा और लाभ किसीको नहीं होगा। यह बातचीत तो फुर्सतके समय की जा सकती है। मैंने शैलेनको लिखा है कि वे तुम्हारे पास आयें और मेरा पोस्टकार्ड तुम्हें दिखायें। वे वर्धामें रहते हैं।

बापूके आशीर्वाद

डॉ० कृष्ण वर्मा
नैसर्गिक उपचार गृह
मलाड, वरास्ता बम्बई

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

२३४. पत्र : रामेश्वरदास बिड़लाको

१४ मई, १९४५

चि० रामेश्वरदास,

इसे पढो और कुछ कहना है तो कहो। मैंने उत्तर दिया है कि ऐसे तहोमतके समर्थनमें कुछ भेजे तो मैं देखुंगा।

बापुके आशीर्वाद

श्री रामेश्वरदास बिड़ला
बिड़ला हाऊस
माउंट प्लेजंड रोड
बम्बई

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

२५३. प्रस्तावित संशोधन : कस्तूरबा गांधी राष्ट्रीय स्मारक निधिके ७२ वें नियममें

महाबलेश्वर
१९ मई, १९४५

सफर खर्चके तौरपर तीसरे दर्जेका किराया दिया जायेगा, लेकिन स्थानीय प्रधानको यह अधिकार होगा कि वह बीमारी या कोई और वैध कारण होने पर दूसरे दर्जेके किरायेकी मंजूरी दे दे, और टिप्पणी-पुस्तिकामे कारण दर्ज कर दे।

यह मेरा सुझाव है।[1]

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० १२५८) से

२५४. प्रस्तावना : 'काउ इन इंडिया' की

श्री सतीशचन्द्र दासगुप्त, जोकि स्वर्गीय डॉ० प्रफुल्लचन्द्र रायके प्रारम्भिक और सर्वश्रेष्ठ शिष्योमे से है, गायके सम्बन्धमे, जिसे 'कामधेनु' का सर्वथा उचित नाम दिया गया है, समस्त उपलब्ध साहित्यको एक ग्रन्थमे एकत्र करने के लिए उपयुक्त व्यक्ति है। उन्होने अनेक ग्रन्थोके अध्ययनके आधारपर और उनके प्रासगिक अशोको उद्धृत करते हुए विश्वासजनक युक्तियोसे इस धारणाको, जिसमे विद्वानोकी भी आस्था रही है, दूर कर दिया है कि भारतके ढोर धरतीपर भार-स्वरूप है और धरतीकी उपजका इतना हिस्सा ले लेते है कि लोग उससे वचित रह जाते है। उन्होने गायकी उपयोगिता दर्शाते हुए कहा है कि वह दूध देती है, बैल पैदा करती है जोकि हल खीचते है, खेतोके लिए खाद जुटाती है, और मरने के बाद हमे चमड़ा और हड्डियाँ देती है। उन्होने बताया है कि भारतके खेतोमे हल चलाने के लिए इजनोकी अपेक्षा ढोर कही अधिक उपयोगी है। उन्होने ढोरो और अन्य पशुओमे तथा धरती और मनुष्यमे स्वाभाविक सम्बन्ध और अन्योन्याश्रयत्व प्रमाणित किया है। अन्तमे उन्होने भैसकी अपेक्षा गायकी श्रेष्ठता प्रमाणित की है। उनका मतलब यह नही कि भैसको खत्म कर दिया जाये या उसे भूखा मरने दिया जाये, बल्कि यह कि भैसको गायसे वरीयता न दी जाये, जैसा कि आजकल हो रहा है।

१. यह वाक्य गुजरातीमें है।

मै गायके प्रेमियोसे सिफारिश करूँगा कि वे इस ग्रन्थको पढे। मैं यह सिफारिश ऐसे हर व्यक्तिसे करूँगा जो यह जानना चाहता हो कि खाने के लिए ढोरोंको मारने मे आर्थिक हानि है और जो यह सीखना चाहता हो कि हमारी घोर उपेक्षा के कारण जो गाय आज हमे बहुत कम देती है, उसे समृद्धिका साधन कैसे बनाया जा सकता है।

पाठक यह जानकर खुश होगा कि लेखकने पूरा ग्रन्थ अपने हालके कारावासमे लिखा था।

मो० क० गांधी

महाबलेश्वर, २० मई, १९४५
[अंग्रेजीसे]
काउ इन इंडिया

२५५. पत्र : मुन्नालाल गंगादास शाहको

२० मई, १९४५

चि० मुन्नालाल,

अमतुस्सलामका पत्र आया है। उसने तुम्हे लिखा है कि तुम कचनको ले जाओ। वह कमजोर हो गई है। ऐसी हालतमें या तो तुम जाओ या किसीको भेजो। बोरकामातासे अमतुस्सलाम खुद पहुँचा जाये, तो सबसे अच्छा। लेकिन यह सब निर्णय मैं यहाँसे नही कर सकता। तुम्ही वहाँसे निर्णय करो। कंचन खुद भी थक गई है, इसलिए उसे वापस ही आ जाना चाहिए। अमतुस्सलामका पत्र इसके साथ है। मैं उसे ऊपर लिखे अनुसार लिख रहा हूँ, और कंचनको भी। अगर वह वहाँसे चल पडी हो, तो चिन्ता मत करना।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ८४५३) से। सी० डब्ल्यू० ५५७८ से भी; सौजन्य : मुन्नालाल ग० शाह

२५६. पत्र : कंचन शाहको

२० मई, १९४५

चि० कचन,

तू सचमुच बीमार हो गई, यह मुझे बिलकुल अच्छा नही लगता। फिर तू अशान्त भी हो गई है, इसलिए वहाँसे तो फौरन भाग आ। मैंने मुन्नालालको लिखा है। वह आकर तुझे ले जाये, या किसीको भेजे, या तू वहाँसे किसीके साथ चली आ। आश्रम पहुँचकर मुझे लिखना। अभी वही हो और वहीसे लिखे तो और भी अच्छा।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ८२६५) से। सी० डब्ल्यू० ७१८८ से भी, सौजन्य: मुन्नालाल ग० शाह

२५७. पत्र : अमतुस्सलामको

२० मई, १९४५

चि० अमतुल सलाम,[1]

तेरा खत मिला। ऐसी हालतमें कचनको जाना ही चाहीये। तू उसे ले जा, किसी को भेज या मुन्नालाल ले जाय या किसीको भेजे। यही रास्ता है ना?[2]

अकबर जोहराके बारेमे मैं निर्णय कैसे करू? अकबर समौमे बडा काम कर रहा है। हुकम करू तो जायगा। मैंने तो उनपर छोडा है। जोहराका तो पढना हो रहा है। इसमे भी तू सोच सकती है तो सोच। बडी दुख्वारीकी बात है।

तुझे वहाँसे अधूरा छोडकर कही नही जाना है।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० ४९५) से

१. सम्बोधन गुजरातीमें है।
२. देखिए पिछले दो शीर्षक भी।

२५८. पत्र : सतीशचन्द्र दासगुप्तको

महाबलेश्वर
२० मई, १९४५

चि० सतीशबाबु,

तुमारा सब कार्य मेरी ही नीतिके लिये चलता है तो उसके पीछे मेरे आशीर्वाद तो है ही। मेरी तीव्र इच्छा है कि तुमारे किसी प्रकारकी बेदरकारी शरीरके बारेमें नही रखनी। यही भी मेरी नीतिके विरुद्ध है और उसमें सूक्ष्म अभिमान है। कलकत्ता पहुँचने पर मुझे लिखो।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी नकलसे. प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य. प्यारेलाल

२५९. ग्रामोद्योगोंमे सुधार कैसे हो?

२१ मई, १९४५

मैने ग्रामोद्योगोंको खादीसे अलग करके उनको ग्रह कहा है और खादी अर्थात् चर्खा या चक्रको सूर्यकी उपमा दी है। सचमुच तो इस अलगपनका कारण नही है। खादी भी ग्राम उद्योग है फिर भी खादीका कुछ खास स्थान है और खादीने अपनी जगह ले ली तब तो दूसरे उद्योगोंकी हम बात कर सकें।

आज जो विचार करता है वह खादीकी खास जगह सिद्ध करने के लिए नही है लेकिन ये सब चीजे कैसे स्थायी बन सके उसे ढूंढ़ने के लिये है।

एक मार्ग है मनुष्येतर शक्तिके मार्फत यंत्र चलाकर एक जगहपर लोगोंकी हाजतकी चीजे बनाना और वह भी कमसे-कम लोगोंकी मजदूरी लेकर। इसका फल आता है कि धनिक वर्ग बढ़ता है और हाजत बढाना धर्मसा हो जाता है। सब बड़े उद्योग अर्थात् सब मनुष्येतर शक्ति राजसत्ताके अधीन की जाय तो भी मेरी नजरमें कुछ फरक नही होता है। क्योंकि हाजत बढ़ाने का धर्म राजसत्ताके लेने से बदलेगा नही, ज्यादा दृढ़ बन सकता है। हाजतोंके बढाने का धर्म छोटे-छोटे बनिकोंके हाथमें से राजसत्ता नामक बड़े बनिक[के] हाथमें जायगा और उस सत्ताके कामपर लोगोंकी मुहर लगेगी। ऐसा इंग्लांड, अमरिकामें चलता है। रूसको मैं जानबूझकर छोड़ता हूं क्योंकि उनका काम चल रहा है और फलकी परीक्षा करने का साहस मैं नहीं करुंगा। मैं आशा रखूंगा कि रूस कुछ अनोखी वस्तु ही कर बताएगा।

लेकिन मुझे कहना चाहिये कि मेरे दिलमें उसकी सही सफलताके बारेमें शक है। अर्थात् अगर सचमुच गरीब लोग मात्रके हाथोंमें सब धन जायगा और उन लोगोंकी मानसिक और व्यक्तिगत स्वतंत्रता सुरक्षित होगी तो मैं उसे बड़ी सफलता समझूंगा। अहिंसाके बारेमें जो विचार मैं रखता हूं उसे बदलना होगा।

अब अगली बातपर आता हूं। इंग्लंड अमरिकामें यंत्रिक शक्तिका साम्राज्य है। उससे उलटा हिंदुस्तानमें मनुष्यशक्तिका साम्राज्यके पुनरुध्धारककी निशानीरूप ग्रामोद्योग है। दूसरे शब्दोंमें कहें तो ग्रामोध्धारकी बात है। इसका अर्थ यह हुआ कि अंग्रेजी सभ्यतामें भौतिक शक्तिसे थोड़े मनुष्य दूसरोंपर सत्ता चलाते हैं। हिंदुस्तानमें चर्खा संघ ग्रामोद्योग संघ इ० द्वारा मनुष्य मात्रकी व्यक्तिगत शक्ति बढ़ाने का महत कार्य करने की कोशीश की जाती है। इस दृष्टिसे अंग्रेजी सभ्यताकी वृध्धि आसान काम लगता है। मनुष्यकी व्यक्तिगत शक्ति बढ़ाना और उसे संगठित करना बहुत कठिन लगता है।

दूसरी ओरसे देखें तो कहा जाय कि थोडे मनुष्य बाफ इ०के मारफत मनुष्यपर साम्राज्य चलावे वह अंतमें व्यर्थ ही होगा और उसमें अनीति इ० बढ़ती ही है। करोड़ों मनुष्यकी शक्तिसे ग्रामउद्योग चलाने से अनीति कम होती जाती है और व्यर्थताकी गुंजाइश ही नहीं रहती। इसमें हमारा आधार मनुष्यशक्तिके साथ ईश्वर शक्ति है। उसमें ईश्वर शक्तिका कुछ मुल्य ही नहीं रखा जाता है। इसका सार यह है। ग्रामउद्योगके बारेमें हम अगर ईश्वरकी सच्ची मदद लेकर न चलें तो निष्फलता ही है। अंग्रेजी रीतमें सफलता दीखती ही है। वस्तुत उसमें सिवाय निष्फलताके कुछ भी नहीं है। उद्यम मात्र नष्ट हो जाता है।

हिन्दीकी नकलसे. प्यारेलाल पेपर्स, सौजन्य प्यारेलाल। **ग्राम उद्योग पत्रिका**, जून, १९४५, भाग १, पृ० ३४४-४५ से भी

२६०. तार : जयरामदास दौलतरामको

महाबलेश्वर
२१ मई, १९४५

जयरामदास दौलतराम
हैदराबाद (सिन्ध)

महीनेके अन्ततक पचगनी पहुँचने की आशा है। जूनमें वहीं रहनेवाला हूँ।

बापू

अंग्रेजीकी नकलसे. प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

२६१. पत्र : भारतन कुमारप्पाको

महाबलेश्वर
२१ मई, १९४५

प्रिय भारतन,

मैं अपना लेख[1] तुम्हें भेज रहा हूँ जिसे मैंने कुछ चिन्तनके पश्चात् लेकिन अन्य बहुत-से कामोंके रहते लिखा है।

अभी-अभी तुम्हारा पत्र मिला है। तुम्हें उन लोगोंके नाम देने चाहिए जो सहमत हो गये हों। अन्य नामोंके लिए जाजूजीसे परामर्श करना। मैं उनके बारेमें विचार करूँगा। तुम मदुराके [ए०] वैद्यनाथ अय्यरसे अवश्य पूछ सकते हो। यदि वे अस्वीकार कर देंगे, तो कुछ अन्य नामोंका सुझाव भी देंगे।

तो तुम खूब सफर कर रहे हो। मुझे खुशी है।

अपनी आगामी पुस्तककी[2] टाइप की गई प्रति मुझे भेजना। बेशक मुझे उसके लिए दो शब्द तुम्हें भेजने हैं।

स्नेह।

बापू

अंग्रेजीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

२६२. पत्र : डॉ० पी० सुब्बारायनको

महाबलेश्वर
२१ मई, १९४५

प्रिय सुब्बारायन,

आपका पत्र पाकर खुशी हुई। आपको अपने पुत्रकी रिहाईपर जो खुशी हो रही है, उसमें मुझे भी सहभागी समझिए। ईश्वर करे वह शीघ्र ही आपके पास पहुँच जाये। मोहनको चाहिए कि इस सप्ताह मुझसे मिले। वह मुझे अच्छा लगता

१. देखिए पृ० १५८-५९।

२. *कैपिटलिज्म, सोशलिज्म ऑर विलेजिज्म*; गांधीजी द्वारा लिखित प्रस्तावनाके लिए देखिए खण्ड ८१।

है। जैसा कि आपका कहना है राजाजी के बारेमें अनुच्छेद फालतू था। वे १९ तारीख को ही चले गये थे।

स्नेह।

बापू

[पुनश्च :]

जब मैं वर्धा लौटूँ, तब आप आइएगा।[1]

अंग्रेजीकी नकलसे . प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

२६३. टिप्पणी : सेवकराम करमचन्दके पत्रपर[2]

२१ मई, १९४५

उसे बधाईका कार्ड लिखो। यदि सुधार कायम रहता है तो उसका प्रचार करने की जरूरत नही। [वे लोग] हिन्दू तो अवश्य हैं लेकिन उनकी पहचानके लिए कोई विशिष्ट नाम तो अवश्य होना चाहिए। (पिछले पत्रका क्या हुआ?)

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

२६४. पत्र : संयुक्ता गांधीको

महाबलेश्वर
२१ मई, १९४५

चि० युक्ति,

तेरा पत्र मिला।

दुखकी बात है कि मैंने मान लिया था कि मनु यहाँसे अच्छी होकर गई है, लेकिन उसे अभी भी बुखार आता रहता है। फिर भी आज सुशीलाबहिन वहाँ जा रही है—बहिनोंसे मिलने के लिए। जबतक उसकी इच्छा होगी, वहाँ रहेगी। उमिया[3] भी वही जायेगी न? यानी शायद चारों बहिनोका एकसाथ मिलन होगा। मनुकी इच्छा हुई तो वह कराची जायेगी और जबतक उसकी इच्छा होगी छुट्टीका

१. देखिए "पत्र : डॉ० पी० सुब्बारायनको", ३१-५-१९४५ और "पत्र : मोहन कुमारमगलम्‌को — अंश", २-६-१९४५ भी।

२. सेवकराम करमचन्दने गांधीजी को सक्खरमें साधुबेला मन्दिरोंके हरिजनोंके लिए खोले जाने के बारेमें सूचित किया था और यह भी सुझाव दिया था कि अबसे हरिजनोको केवल हिन्दू माना जाना चाहिए।

३. संयुक्ता गांधीकी बडी बहिन उमिया एस० अग्रवाल

उपयोग कर फिर मेरे पास आयेगी। तू उसे जल्दी स्वस्थ कर देना। वह बहादुर सेविका है, लेकिन जरा कुछ हुआ कि डर जाती है। मै उसे समझाता हूँ कि मेरे होते डरती क्यो है? मै तो सफल नही हुआ, अब तुम बड़ी बहिनोंको इस प्रयत्नमे सफलता मिले, ऐसा चाहता हूँ।

तुम सबको
बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी माइक्रोफिल्म (एम० एम० यू०/२४) से

२६५. पत्र : अन्नपूर्णा मेहताको

२१ मई, १९४५

चि० अन्नपूर्णा,

तेरा कार्ड कल मिला। तू २५ बरसकी हो गई, यह मै कैसे मानूँ? मैने तो तुझे बिलकुल बच्ची देखा था। तुझे अभी बहुत जीना है और बहुत काम करना है।

खादीकी धोती जब आयेगी, तब पहनूँगा। कोई जल्दी नही है। शब्द 'प्राण-दाई' है या 'प्राणदायी'?

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (एस० एन० ९४३७) से

२६६. पत्र : किशोरलाल घनश्याम मशरूवालाको

महाबलेश्वर
२१ मई, १९४५

चि० किशोरलाल,

संजानाका नाम लेकर उत्तर नही दिया जा सकता। इससे उत्पन्न होनेवाले प्रश्नोंका उत्तर यदि देने-जैसा लगे तो देना। अभी फिलहाल यदि तुम कुछ भी न करो तो भी उससे हम कुछ खोनेवाले नही है।

मेरा खयाल है सुरेन्द्रजीको मैने लिखा है। अगर मेरे वर्धा पहुँचने तक वे प्रतीक्षा न करना चाहें तो भले पंचगनी आ जायें। मेरा झुकाव तो वर्धाकी ओर ही रहेगा। लेकिन निर्णय मै उन्हीपर छोड़ता हूँ। तुम उनका मार्गदर्शन करना। यदि वे वर्धामें थोड़ा समय बितायें तो कुछ खोनेवाले नही हैं। खादी विद्यालय, गोशाला, ग्रामोद्योग आदिमे ठीक समय व्यतीत होगा।

गोमती कोई इलाज करवाये, यह बात मुझे तो बहुत अच्छी लगती है। चुग की सलाह लेना ठीक होगा। रेहाना तो उनके बारेमें बहुत लिखती है।

जून माससे पहले तुम सेवाग्राम न जाओ, ऐसी मेरी इच्छा है।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

२६७. पत्र : शरयू धोत्रेको

२१ मई, १९४५

तेरा खत कल मिला। पाच बजेके बाद, तब डाकमे जवाब नही भेज सकता था। आज रामेश्वरदासजीको लिखा तो है। देखें अब क्या होता है। हम गरीब हैं। कभी न भूलो। धनिक जैसे चलने का हमें अधिकार नही है।

हमारा अधिकार हमारे धर्मसे ही निकलता है। जो सहज मिले उसे 'त्यक्त करके भोगें'[1] यह समजमे आया?

बापुके आशीर्वाद

चि० शरयू (धोत्रे)
खादी विद्यालय

मूल पत्र (सी० डब्ल्यू० ८३९) से। सौजन्य : शरयू धोत्रे

२६८. पत्र : चिमनलाल नरसिंहदास शाहको

महाबलेश्वर
२१[2] मई, १९४५

चि० चिमनलाल,

तुम्हे आज विशेप रूपसे क्यो लिख रहा हूँ नही जानता। लेकिन चूँकि लिफाफेपर तुम्हारा नाम लिखा है, इसलिए तुम्हे यह लिख रहा हूँ। शरयू ताईने पता खादी विद्यालयका दिया है। इसलिए उसे पहुँचाने के लिए [साथमें] पत्र[3] है।

१. यहाँ संकेत ईशोपनिषद् के प्रथम श्लोककी ओर है।
२. तथापि जी० एन० साधन-सूत्रमें यहाँ "२५" लिखा है।
३. देखिए पिछला शीर्षक।

तुम्हारे लिए मनमें विचार आते रहते हैं। तुम्हें आग्रहपूर्वक आराम लेना ही चाहिए। फिर चाहे वहीं लो अथवा वहाँसे बाहर। मुझे तो तुम्हारा वहीं [आराम लेना] अच्छा लगेगा। तुम तो जानते हो मैंने पहले यही धन्धा किया। अब तो कहा जा सकता है कि मैं ऊँचे चढ़ गया हूँ अथवा कौन जाने नीचे उतर गया हूँ। इसलिए मैं पचगनी, महाबलेश्वर, नन्दी इत्यादि जानेका अभ्यस्त हो गया हूँ। यह तो तुम्हारे मार्गदर्शनके लिए है।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी नकलसे . प्यारेलाल पेपर्स; सौजन्य : प्यारेलाल। जी० एन० १०६३३ से भी

२६९. पत्र : वि० ना० आपटेको

महाबलेश्वर
२१ मई, १९४५

भाई आपटे,

पूनामें भी गोडबोले हैं। वे अमेरिका हो आये हैं। वे नैसर्गिक उपचार करते हैं। लेकिन तुम जो करते हो वह ठीक है। मेरे उपचारमें मेरी श्रद्धा मुख्य बात होती थी। ऐसा गम्भीर मामला डॉक्टरके पास ही जाना चाहिए, ऐसा सब कहते थे। ईश्वर करे तुम्हारा पुत्र स्वस्थ हो जाये। तुम्हारे श्वसुरको मैं तीन-चार घन्टे कहाँसे दे सकता हूँ? मेरे पास एक पल भी नहीं बचता। जो पूछने योग्य हों वे सवाल पूछे। फुर्सतके समय जवाब दूंगा।

तुम सबको
बापूके आशीर्वाद

वि० ना० आपटे
श्री गजानन मिल्स
सांगली

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य . प्यारेलाल

२७०. पत्र : अमृतलाल नानावटीको

२१ मई, १९४५

चि० अमृतलाल,

तुम्हारी दो पंक्तियाँ पढ़ी। जहाँ जाओगे वहाँ तुम्हे सेवा-कार्य तो अवश्य मिलेगा।

बापूके आशीर्वाद

[मार्फत] श्रीमती यशोधरा दासप्पा
वोन्टीकोप्पल
मैसूर

गुजरातीकी नकलसे . प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य . प्यारेलाल

२७१. पत्र : यशोधरा दासप्पाको

महाबलेश्वर
२१ मई, १९४५

चि० यशोधरा,

दास अप्पासे[1] कहो यहाकी हवा नदीसे कम नही है। सेवा तो मिलती ही है।
तुमारा सब अच्छा चलता होगा।
दासअप्पा शात हुआ? अगर नही हुआ है तो मुझे लिखे या तुम लिखना।
कस्तुरबा निधिका काम कठिन है। खूब ध्यानसे करो और करवाओ।
हिन्दुस्तानीका तो करेगी ही।
रामदास जहातक रहना चाहे रहे।[2]

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी नकलसे प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य · प्यारेलाल

१. यशोधरा दासप्पाके पति एच० सी० दासप्पा, मैसूर कांग्रेस कमेटीके अध्यक्ष
२. देखिए अगला शीर्षक भी।

२७२. पत्र : रामदास दासप्पाको

२१ मई, १९४५

चि० रामदास,

तुमने लिखा सो अच्छा किया। गलती तो है उसकी चिंता नहीं। हिंदुस्तानी अच्छा कर लेना और शरीर भी। कुछ भी छीपाना नही, दर्द होवे तो भी तुरन्त कह देना। जब दिल चाहे तब वापिस आओ। तुमने जन्मदिनके लिए लिखा। तुमारे दीर्घायु होना है और बहुत सेवा करनी है।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

२७३. पत्र : कृष्णचन्द्रको

२१ मई, १९४५

चि० कृष्णचन्द्र,

१. बालकोबाके[1] बारेमे ठीक कहा है। दूधके साथ भाजी और फल लेते रहें। दिनको कटी स्नान बराबर करे. बोलने का बहुत कम करें, थोड़ा ईच्छा होने तक टहलें। प्रात:कालमे तो वजन स्थिर हो जायगा. बढ़ भी सकता है। उनको अलग नही लिखुंगा।

२. ग्रिम्सलोका मनन करके लिपि भेदके नियम निकाल सकते हैं। एक शास्त्र का ठीक अभ्यास करने से दूसरा सुलभ होता है। ऐसा इसमें भी समजो। लिपिका नक्सा यहां उपयोगमे है। मेरे आने तक राह देखो।

३. अखबारके बारेमे दृष्टि स्पष्ट कर लो तो कम समयमें सब पढ़ लोगे।

४ व ५. तुताईका समजा।

६. आश्रम व्यवस्था मैंने तो एक २ मास रखा है। अनुभवसे या आरंभसे दो २ या तीन ३ करो। बलवंतसिंहका नाम अगर छोड़ा है तो इसलिये कि उनको दो तीन मास तक मीराबहिन के पास जाना होगा। नौकरोंको भाई बनाने से कष्ट ज्यादा उठाना होगा।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० ४५७१) से। सी० डब्ल्यू० ५८७९ से भी: सौजन्य : कृष्णचन्द्र

१. बालकृष्ण भावे

२७४. पत्र : अब्दुल गनी दरको

महाबलेश्वर
२१ मई, १९४५

भाई अब्दुल गनी,

तुमने लाहौरके झगडेके बारेमे तार दिया होगा तो मैने जवाब नही भेजा होगा। मै दखल देना नही चाहता था। नाराजगीकी कोई बात नही हो सकती थी, मौनके बारेमे। दूसरी तरहसे अच्छा ही हुआ कि मुलकके लिये प्यारी जान दी।

बापुकी दुआ

अब्दुल गनी डार
लुधियाना (पंजाब)

उर्दूकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

२७५. पत्र : कानम गांधीको

२२ मई, १९४५

चि० कानम,

तेरा कार्ड आज मिला। मणिलाल और देवदास आज सवेरे बम्बई गये। तुझे जब आना हो आ जाना। मै इस महीनेकी ३१ तारीखको महाबलेश्वरसे पचगनी जाऊँगा, इसलिए शायद अच्छा यह होगा कि तू जूनकी १ तारीखको पंचगनी आये। फिर भी अगर तुझे हर हालतमे महाबलेश्वर आना ही हो, तो यहाँ आ जाना। आशा है तेरी तबीयत ठीक होगी। यहाँ ठण्डा हे, लेकिन ठण्ड है ऐसा नही कहा जा सकता। धूप अच्छी लगती है। यहाँकी और पंचगनीकी ऊँचाईमे ५०० फुटका अन्तर है। लेकिन यहाँ बारिश इतने जोरकी होती है कि जूनमे बरसात शुरू होने पर यहाँ रहा नही जा सकता।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० ९५१७) से। सौजन्य कानम गाधी

२७६. पत्र : जयसुखलाल गांधीको

महाबलेश्वर
२२ मई, १९४५

चि० जयसुखलाल,

अन्तमे मनु वहाँ स्वस्थ होकर नही, वल्कि टूटकर पहुँची — मनसे भी और शरीरसे भी। दोनों अन्योन्याश्रित है। इसके लिए जिम्मेदार तो वह स्वयं ही है। वातावरण भी हो सकता है, लेकिन मनुष्यकी मनुष्यता वातावरणपर काबू पाने मे होती है। आखिर मै यह मनुको पूरी तरह नही सिखा सका। उसका भय उसे खाये जाता है। भयका कारण भी वह स्वयं ही है। दूसरोकी बाते सुनना, उनसे चिढ़ना, घबराना और रोना, यह उसका काम है। और इससे फुर्सत मिले तव पढ़ना। सेवा-भाव उसमे उत्तम है। सीखने का चाव है। वह प्रेमालु भी है। उसे अमीवा और हुकवर्म है, जैसे मुझे है। मै उन्हे नियन्त्रणमे रखता हूँ, मनु नही रखती। अव तुम्हे जो कुछ अच्छा लगे सो करना। मेरे पास तो वह है ही। मै उसे छोडनेवाला नही हूँ। वैसे वह स्वतन्त्र है। तुम मजेमे होगे।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी माइक्रोफिल्म (एम० एम० यू०/२४) मे

२७७. पत्र : मनु गांधीको

२२ मई, १९४५

चि० मनुड़ी,

तेरा पत्र मिला। इससे पहलेका भी मिला था, लेकिन उसका जवाव देने के लिए समय नही मिला। अव इसका जवाव तो फौरन भेज रहा हूँ। तू कराची अच्छी चली गई। अमीवा और हुकवर्म तो निकाल वाहर करने ही चाहिए। लेकिन अगर तू ४ को लौटनेवाली है, तो वहाँ तो कैसे निकाले जा सकेगे? जो हो उस वैद्यकी दवा तो तू बिलकुल मत करना। वहाँ रहने की इच्छा हो जाये, तो रोगको मिटाने के दृढ़ निश्चयके साथ ही वहाँ रहना। परीक्षा देने का लोभ मत करना। आरामसे थोड़ा-वहुत पढ़ा जाये तो चाहे पढ़ लेना।

तेरे पत्रसे देखता हूँ कि आसपासका डर तुझे खाये जाता है। जो डरता है, संसार उसे ज्यादा डराता है, इसलिए डर मात्रको अगर तू समुद्रमे फेक दे तो अच्छा

हो। इसके लिए रामबाण दवा तो रामनाम ही है। जो रामसे डरता है, वह किसी औरसे क्यो डरेगा? लेकिन यह तो जैसे उपदेश हुआ। बहिनोसे मिलकर भी तेरा मन शान्त बिलकुल नही हुआ। तुझे जब आना हो आ सकती है। इस मामलेमे तो तुझे अभयदान है।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी माइक्रोफिल्म (एम० एम० यू०/२४) से

२७८. पत्र : सुमति मोरारजीको

२२ मई, १९४५

चि० जमना उर्फ सुमति,

ससुराल जाती है, तो स्त्रीको अलग नाम क्यो दिया जाये, पुरुषको क्यो नही दिया जाता? यह रस्म मुझे बहुत खटकती है। तेरा असली नाम जमना है, यह तो लगता है मुझे यही मालूम हुआ।

यह पत्र लिखने का कारण तो साथका पत्र है। ये दोनो बहिने वहाँ हों तो यह पत्र उन्हे दे देना। या अगर चली गई हो, तो डाकसे भेज देना। तू दोनो पत्र पढ लेना। इनमे निजी कुछ नही है।

लडकियोको तूने बहुत खुश कर दिया। उन्होने कुछ सेवा भी की, या जो मिला उसका स्वाद ही चखती रही? स्वाद क्या तू बहुत कराती है?

माँको तू अब कैसे छोड़ सकती है? इसलिए मुझसे अब बम्बईमे ही मिला जा सकता है। तू ऐसी सेवाभावी है, यह मुझे अच्छा लगता है। लेकिन शरीरसे कमजोर है, यह अच्छा नही लगता।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ८४६) से

२७९. पत्र : कैलाश डाह्याभाई मास्टरको

महाबलेश्वर
२२ मई, १९४५

चि० कैलाश,

तेरा पत्र मिला। मैं जूनके अन्तमें अथवा जुलाईके आरम्भमें सेवाग्राम जाऊँगा। उस समय फिर लिखना। बन सका तो तुझे वहाँ रखवाने का प्रबन्ध करूँगा। इस बीच आश्रम जीवनके लायक बनने के लिए जो करना चाहिए वह प्रभुभाईसे जान ले। कोया फोड़ने से लेकर रुईकी सारी क्रिया सीख ले। श्रेष्ठतम सूत कातना। सब [बातों] में सफाई रखना। हिन्दुस्तानी अर्थात् उर्दू और नागरी लिपि सीख लेना। सब समझ सके इतनी हिन्दुस्तानी सीख लेना।

बापूके आशीर्वाद

श्री कैलाश डाह्याभाई
मार्फत डाह्याभाई वी० मास्टर
मंडलेश्वर रोड
बोरिवली

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

२८०. पत्र : प्रभुदास गांधीको

महाबलेश्वर
२२ मई, १९४५

चि० प्रभुदास,

तेरी टिप्पणी कैलाशके पत्रके नीचे देखी। मृदुलाबहिन अभी यहीं हैं। बापाको लिखा तेरा पत्र मुझे कुछ दिन पहले मिला था। पढ़ गया। चिमनभाईका भी मिला था। दोनों अच्छे हैं। उसका दूसरा पक्ष भी है। वह मुझे मिल गया है। फुर्सत हुई तो और भी प्राप्त करूँगा। तेरा कार्यक्रम मालूम हुआ। तूने ठीक निश्चय किया है। अम्बाको[1] तो वहीं अच्छा लगेगा। वहीं वह स्वास्थ्यकी देखभाल भी कर सकेगी।

१. प्रभुदास गांधीकी पत्नी

तू तो जहाँ जायेगा वही सुशोभित होगा और तेरी माँग निरन्तर रहेगी। तात्पर्य यह कि जहाँ काम होगा वही तेरा धाम होगा। लेकिन कुटुम्बका विचार भी तो करना होगा।

कैलाशको जो पत्र[1] लिखा है वह तू पढ जाना।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य . प्यारेलाल

२८१. पत्र : भूलाभाई देसाईको

महाबलेश्वर
२२ मई, १९४५

भाई भूलाभाई,

चिमूरके कैदियोको याद रखना।[2] उन्हे जीना चाहिए। यदि उन्हे फाँसी होगी तो सब-कुछ बिगड़ जायेगा।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी नकलसे . प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य प्यारेलाल

२८२. भाषण : हिन्दुस्तान स्काउट एसोसिएशनके प्रशिक्षण-शिविरमे[3]

महाबलेश्वर
२२ मई, १९४५

महात्मा गांधीने कहा कि मेरे स्वागतमें आपने जो राष्ट्रीय गीत गाया है उसमें 'भारतमाता 'की स्तुति की गई है और विजयकी भावना व्यक्त की गई है। लेकिन वर्तमान समय ऐसा नहीं है कि हम खुशियाँ मना सकें। भारतकी इस समय वैसी

१. देखिए पिछला शीर्षक।

२. मध्यप्रान्तमें भारत छोडो आन्दोलनके दौरान अष्टी और चिमूर गाँवोंमें हुए एक उपद्रवमें पुलिसके कुछ लोग मारे गये थे। इस मामलेमें कुछ लोगोंको फाँसीकी सजा सुनाई गई। सम्राटने उनकी दयाकी अर्जी नामंजूर कर दी थी; देखिए खण्ड ७९, पृ० ३६०। लेकिन बचाव पक्षके वकीलको आदेशमें एक त्रुटि नजर आई और फलतः फाँसी रोक दी गई। बादमें गांधीजी के प्रयत्नोंके परिणामस्वरूप १६ अगस्त, १९४५ को वाइसरायने फाँसीकी सजा बदलकर आजीवन कारावास कर दी।

३. शिविरका आयोजन शिवाजी ट्रूप ब्वाय स्काउट्स, पूनाने किया था और गांधीजी ने शामको स्काउटोंके बीच भाषण दिया था।

हो बुरी हालत है जैसी एक बार द्रौपदीकी हो गई थी। अतः हमें गम्भीरतासे सोचना चाहिए कि क्या हम ऐसी हालतमें खुशी मना सकते हैं। आपने जो गीत गाया है उसमें यह नीति-मन्त्र आता है कि 'करो या मरो'। इससे आपको मातृभूमिकी स्वतन्त्रताके लिए निरन्तर संघर्ष करते रहने की प्रेरणा मिलनी चाहिए। स्वतन्त्रताके लिए निरन्तर संघर्ष करना जवानोंका स्वाभाविक कर्तव्य है। लेकिन इसके साथ ही आपको चाहिए कि आप बूढ़ोंको भी आराम न करने दें।

[अंग्रेजीसे]
बॉम्बे क्रॉनिकल, २३-५-१९४५

२८३. पत्र : लक्ष्मी गांधीको

२२/२३ मई, १९४५

चि० लक्ष्मी,

तेरा खत मिला। बहूत खुश हुआ। नये पोतेका नाम गोविंद रखो, माधव भी रखो। एक ही रखना है तो अण्णाने[1] दिया है वही। बा गई, बा का प्यार रहा है। शरीर जिसे जाना ही है उसके जाने से शरीरधारीका प्यार नहीं जा सकता।

अण्णा १९ को गये। पापा और नरसिंहन दोनोंको मद्रास पहूंचना ही चाहीये। वे अन्नाके हाथ पैर मद्रासमें तो है ही। देवदास कल गया।

अब तेरे अभ्यासका क्या होगा? लडकोंमें से कोई तो मुझे कोई बार लिखे।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० २००२) से

२८४. पत्र : गुलबाई दिनशा मेहताको

महाबलेश्वर
२३ मई, १९४५

चि० गुलबहिन,[2]

तुम्हारा पत्र कल ऐसे समय मिला कि कल ही डाकसे मैं यह पत्र भेज नहीं सकता था। इसलिए यह पत्र अभी सवेरेकी प्रार्थनाके बाद लिख रहा हूँ। तुम अर्देशिरको लेकर यहाँ आ सकती हो। लेकिन यहाँ सर्दी काफी पड़ने लगी है। इसकी परवाह न हो तो यहाँ आ जाओ। मुझे पंचगनी ज्यादासे-ज्यादा ३१ तारीखको जाना होगा। जैसा ठीक लगे वैसा करना।

१. चक्रवर्ती राजगोपालाचारी
२. डॉ० दिनशा मेहताकी पत्नी

दिनशा अगर जान-बूझकर नही आये तो ठीक ही किया। मै ठीक हूँ। जब बहुत जरूरी लगेगा, तब तो मै उन्हे बुलाऊँगा ही और तब तो आना भी पड़ेगा। अन्यथा दिनशाकी जगह वही है। उनकी इच्छा हो तब तो वे आयेंगे ही।

घनश्यामदासके तारके बाद क्या करना है, यह भी विचारणीय है।

तुम तीनोंको
बापूके आशीर्वाद

श्री गुलबाई दिनशा मेहता
नैसर्गिक उपचार गृह
पूना सिटी

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स । सौजन्य . प्यारेलाल

२८५. पत्र : एस० सलेम्नाको

महाबलेश्वर
२३ मई, १९४५

प्रिय मित्र,

आपने जो मामला बतलाया है, वह अत्यन्त दुःखद है। आप स्थानीय रूपसे जो-कुछ कर सके वह सब आपको करना चाहिए। जो मै पहले करता था वह सब करने के लिए मेरी शक्ति अत्यन्त सीमित है।

हृदयसे आपका,
मो० क० गांधी

श्री एस० सलेम्ना
दलित वर्ग संघ
वाणी विलास
मंगलोर

अंग्रेजीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य . प्यारेलाल

२८६. पत्र : मार्गरेट स्पीगलको

२३ मई, १९४५

चि० अमला,[1]

तू कैसी है? अभी-अभी तो गई थी और लौट भी आई? पढ़ाने का काम तो तुझे मिल ही जायेगा।

खुर्शेदबहिन अभी मेरे साथ नहीं हैं, पंचगनीमें है।

बापूके आशीर्वाद

डॉ० मा० स्पीगल
३, वोडहाउस रोड
फोर्ट, बम्बई

मूल गुजरातीसे : स्पीगल पेपर्स। सौजन्य : नेहरू स्मारक संग्रहालय तथा पुस्तकालय

२८७. पत्र : सुमित्रा गांधीको

२३ मई, १९४५

चि० सुमी;

तेरा पत्र मिला। परीक्षाके लिए कमरतोड़ मेहनत नहीं करनी चाहिए। ऐसा मोह रखे बिना पढ़नेवाले व्यक्तिकी पढ़ाई बहुत पक्की होती है। परीक्षाको ध्यानमें रखकर पढ़नेवाला व्यक्ति परीक्षाकी वस्तु अनेक बार भूल जाता है। तू परीक्षाके लिए पढ़ती है कि ज्ञानके लिए? यदि परिणाम ज्ञान है तो परीक्षा एक प्रकारका माप-दण्ड है। बहुत सारे लोग कमाईके लिए परीक्षा देते हैं। यह नीच बात है। ज्ञानसे बुद्धिका विकास होता है। तेरे पत्रसे कई बार पता चलता है कि तू परीक्षाकी खातिर घोटा लगाती है और बादमें उसे भूल जाती है। बुद्धिका विकास करने के लिए पढ़ी हुई चीजपर मनन करना चाहिए।

१. यहूदी होने के कारण गवर्नमेंट कॉलेज, बर्लिनकी नौकरीसे बर्खास्त होने के बाद मई, १९३३ से दो वर्षोंतक साबरमती आश्रममें कार्यरत; शान्तिनिकेतनमें अध्यापिका रहीं; एलफिन्स्टन कॉलेज बम्बईमें जर्मनकी प्राध्यापिका और महारानी हाई स्कूल, बड़ौदाकी प्राचार्या

मणिलाल कल देवदासके साथ गया। बहुत विचार करने पर उसे लगा कि जब दूसरे लोग भी मेरी सेवा करेंगे ही तब उसके सेवाग्रामसे बाहर रहने पर एक मेहमान कम हो जायेगा। यदि यह दलील पूरी तरह सही हो तो मेरे साथ बहुत लोग नहीं रह सकते। कानमको लेकर . . . के यहाँ आ रहा है मैंने अनुमति . . .[1]

मूल गुजरातीसे : सुमित्रा गांधी पेपर्स। सौजन्य : नेहरू स्मारक संग्रहालय तथा पुस्तकालय

२८८. पत्र : निर्मला गांधीको

महाबलेश्वर
२३ मई, १९४५

चि० नीमू,

तेरा पत्र अभी-अभी मिला। तू आलसी है, ऐसा तो मैं नहीं कहूँगा। इस तरह मुझे पत्र लिखकर तूने अपने-आपको बचा लिया। आज तो लिखे बिना छुटकारा नहीं है, [यह सोचकर] तूने लिखा। यह ठीक है। तुम सबके पत्र मुझे अच्छे लगते है, लेकिन मैं आशा किसीकी नहीं करता।

मुझे सुमीका पत्र आया है। वह मैं तुझे भेजता हूँ। उसे मैंने परीक्षाके सम्बन्ध मे हल्केसे डाँटा है।[2] वह पत्र तू मँगवा लेना। उसे वहाँ नहीं बुलाना चाहिए। उसकी आँखें खराब होगी। दिल्लीमे सब-कुछ हो सकता है। उपाको लेकर तुझे जाना हो तो जा। कानम अपना देख लेगा। लेकिन रामदासको तू न छोडे यह भी मैं चाहूँगा। मेरी सलाह तो यह होगी कि तू सुमीको देवदास और लक्ष्मीपर छोड दे। यदि सुमी तेरे बिना चला सकती है तो भले चलाये। तुम लोगोके जाने पर देवदासपर भी कुछ बोझ तो पड़ेगा। लक्ष्मी बहुत भली और प्रेमालु है, लेकिन नाजुक है। अभी-अभी प्रसूतिसे उठी है। तू वहाँ जाकर रसोई आदि काम सँभाले तो यह अलहदा बात है। यह तुझसे नहीं हो सकता इसलिए तेरी जगह नागपुरमे रामदासके पास है। सुमी से तू यदि पढने का मोह छुड़ा सके तो यही बहुत है। बहुत ज्यादा पढ़ने से कोई व्यक्ति विचारशील थोडे बन सकता है। केवल तोतेकी तरह रटने से क्या लाभ? देवदास जैसे-तैसे निभा लेगा, लक्ष्मी भी ऐसी है कि निभा ले जायेगी। दिल्लीमे अच्छे डॉक्टर है। सुमीको वहाँ अच्छा लगता है, यह सन्तोषकी बात है।

रामदासको तुझे मनाना होगा। उसे मेहताके यहाँ लम्बे अर्सेतक रहना ही चाहिए। मेरे साथ तो उसने यही निर्णय किया था। तू चाहे तो उसे जीत सकेगी और अपना मनचाहा करवा सकेगी। दूसरे किसीमे ऐसी सामर्थ्य नहीं है। एक दिन

१. साधन-सूत्रमें पत्र अधूरा है। देखिए अगला शीर्षक भी।
२. देखिए पिछला शीर्षक।

मुझमें ऐसी सामर्थ्य थी, लेकिन अब नहीं है। क्योंकि मैं उसपर इतना ध्यान नहीं दे सकता। मेरा ध्यान तो अब बँट गया है।

कानम यहाँ आ जायेगा अथवा पंचगनी। उसका पत्र आया है। मैंने उसे अनुमति दे दी है।

मणिलाल, देवदास कल गये।

सुशीला बहुत करके पहाड़पर नहीं आयेगी। सेवाग्राम ही आयेगी।

बापूके आशीर्वाद

श्री निर्मलाबहिन गांधी
[मार्फत] रामदास गांधी
टॉमको सेल्स डिपो
खलासी लाइन्स, नागपुर

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

२८९. पत्र : उषा गांधीको

२३ मई, १९४५

चि० ऊषी,

तूने ठीक लिखा है। अक्षर भी अपेक्षाकृत अच्छे हैं। लिखती रहा कर। अब अधिक नहीं।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

२९०. पत्र : रणजीत आशेरको

महाबलेश्वर
२३ मई, १९४५

चि० रणजीत,

तुम्हें तो गुजराती आनी ही चाहिए, हालाँकि तुमने अंग्रेजी अच्छी लिखी है। तुमने जो लिखा है वह मुझे मालूम नहीं था। मेरी सलाह तो मैंने जो दी है वही है। अपने पिताजीको विनयपूर्वक समझाना। मेरी सलाह मानने में ही तुम्हारे लिए सच्चा सुख है, इस बारेमें मुझे तनिक भी सन्देह नहीं है। जो हुआ है वह तो जमानेकी खूबी है। जो

हुआ है अथवा हो रहा है, उससे हतबुद्धि होने की कोई जरूरत नही है। जो उचित उपाय हो वह करो, उसीसे शान्ति मिलेगी।

बापूके आशीर्वाद

श्री आर० के० आशेर
आशेर इस्टेट
नासिक रोड

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

२९१. पत्र : अमृतलाल वि० ठक्करको

महाबलेश्वर
२३ मई, १९४५

बापा,

अच्छा है तुम्हे बात जँची। मृदुलासे पूछने के लिए मै नही रुकनेवाला।[1] मैंने उसे क्या कहा मुझे कैसे याद होगा और क्यो याद होगा? मै इतना जानता हूँ कि "बापाकी राय जाने बिना मै कोई निर्णय नही देता।" बहुत सारे लोगोको वेतन पर रखने की बातपर मै तो कभी राजी नही हो सकता। इसलिए मै तुम्हारी रायसे सहमत हूँ।

डॉ० आज गये।

अम्बा और प्रभुदास यदि वहाँ रहे तो अच्छा होगा। कल ही मुझे उसका पत्र आया था। उसका मन हापुडमे रहने का जान पडता है। यदि उसे तुम [अपने काममें] खीच सको तो खीचो। वह बहुत कामका आदमी है। लेकिन वह अशक्त हो गया है। इसलिए उन दोनोंको मिलाकर तुम्हे शायद २०० रुपये देने पडेगे। क्योंकि प्रभुदास दूध, फल, घी और साग-भाजी अच्छी मात्रामे खाना चाहेगा। उसने काफी तंगी भोगी है। प्रभुदासकी तबीयतको देखते हुए अधिक गर्मीके दिनोमे उसे किसी अन्य स्थान पर जाने की अनुमति भी देनी पड़ सकती है। सम्भव है कि प्रभुदास कममे भी मान जाये। लेकिन इसे मै उचित नही मानूँगा। उसकी लड़कियाँ भी सयानी और मेरी दृष्टिमे होशियार हैं। इसलिए सबके बीचमे मै वेतन ज्यादा नही मानता। उसे पैसेके सम्बन्धमें आश्वस्त करने की जरूरत है।

अपनी आँखे खराब न करना। सेहत न बिगाड़ना। मै जानता हूँ कि तुम मुझसे भी ज्यादा लापरवाह हो। आजतक तुम्हारी निभ गई है। ईश्वर कदाचित् तुम्हे ललचाये लेकिन उसकी लालचमे पड़ना तनिक भी लाभदायक नही है। "ईश्वर

१. देखिए पृ० ३३-३४।

को मत ललचाओ,"[1] यह बात ईसामसीहने किसी अन्य प्रसंगमें कही थी। उसका हिन्दुस्तानी अथवा सस्कृत पर्याय इस समय याद नहीं आ रहा है।

ऐसा करके मैंने एक कोरा कागज भर दिया।

बापू

श्री वापा
भारत सेवक समाज (सर्वेन्ट्स ऑफ इंडिया सोसाइटी), पूना

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

२९२. पत्र : अमियनाथ बोसको

महावलेश्वर
२३ मई, १९४५

भाई अमीया,

तुम्हारा खत बताता है कि मेरे हिसाबसे विजलीकी योजना बेकार है।[2] मैं कैसे कमिटि बना सकता हू?

बापुके आशीर्वाद

श्री अमिय
१, वुडबर्न पार्क
कलकत्ता[3]

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

२९३. पत्र : हरेकृष्ण मेहताबको

महाबलेश्वर
२३ मई, १९४५

श्री महताबबाबु,

आपका ता १७ मे का पत्र मिला था। वह बापुजी ने देखा है। वे कहते हैं कि आपको बहुत जल्दी नहीं है तो पंचगनीमें स्थिर होने के बाद आयें। महाबलेश्वर

१. साधन-सूत्रमें यह अंग्रेजीमें लिखा है "दाउ शैल नॉट टेम्प द लॉर्ड, दाई गॉड" सेंट मैथ्यू, ४, ७।

२. देखिए पृ० ४३-४४ भी।

३. पता अंग्रेजीमें है।

३१को छोड़ना ही है। पानी जल्दी आवे तो उससे भी पहले जाना होगा। इसलिए महाबलेश्वर निकम्मा समझो।

विनीत,

प्यारेलाल

श्री हरिकृष्ण महेताब
कटक, ओरिस्सा

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य . प्यारेलाल

२९४. पत्र : घनश्यामसिंह गुप्तको

महाबलेश्वर
२३ मई, १९४५

भाई घनश्यामसिंह,

सिध्वाको[1] क्या लिखे? थोडी मुदत ठहरना चाहिये।

बापुके आशीर्वाद

श्री घनश्यामसिंह गुप्ता
स्पीकर
द्रुग

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य . प्यारेलाल

२९५. पत्र : तेजवन्तीको

महाबलेश्वर
२३ मई, १९४५

चि० तेजवंती,

तु मुझको काल्पनिक प्रश्न मत पूछो। कोई चीज है तो पूछ सकती है।

बापुके आशीर्वाद

श्री तेजवंती
चर्खा संघ (पंजाब शाखा)
आदमपुर, दोआब
पंजाब

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. आर० के० सिधवा, सिन्ध विधान-सभामें काग्रेस दलके नेता

२९६. पत्र : खुर्शेदबहिन नौरोजीको

महावलेश्वर
२४ मई, १९४५

प्रिय बहिन,

मैं तुम्हारे आने की आशा लगाये था। अब तुम्हारा पुर्जा मिला है कि चूंकि मैं ३१ तारीखको वहाँ पहुँच रहा हूँ, इसलिए तुम यहाँ आना स्थगित कर रही हो। अतः मैंने तुम्हारे नाम यहाँ जो पत्र रख छोड़े थे, उन्हें भेज रहा हूँ।

तुमने जो समाचार दिया है, उसे पाकर मैंने अपने-आपसे कहा : "यूनानियोंसे सावधान — चाहे वे भेंट लेकर आयें। हो सकता है कि यह सब बेबुनियाद हो। मिलनेवाली राहत वास्तविक हो सकती है।" हम आशा रखें कि ऐसा ही है।

तुम सबको प्यार।

बापू

अंग्रेजीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

२९७. पत्र : मोहन कुमारमंगलम्को – अंश[1]

महावलेश्वर
२४ मई, १९४५

मुझे तुमसे किसी समय भी मिलकर खुशी होती, और इसलिए मैंने जोशीको 'हाँ' कर दी। लेकिन इन दो सवालोंका जवाब तो दो पंक्तियोंमें दिया जा सकता है। जोशीके साथ मेरा पत्र-व्यवहार कभी गोपनीय नहीं रहा। बहरहाल उसे फौरन प्रकाशित किया जा सकता है। मेरा खयाल है कि मैंने एक पत्रमें ऐसा कहा भी था। मैं भूलाभाईसे जल्दी करने को नहीं कह सकता।[2] जो कागज-पत्र मैं भेज सकता था

१. गांधीजी और पूरणचन्द्र जोशीके बीच हुए पत्र-व्यवहारको प्रकाशित करने के लिए मोहन कुमारमंगलम्ने गांधीजी से पूरणचन्द्र जोशीकी ओरसे अनुमति माँगी थी। गांधीजीने यह पत्र उसी अनुरोधके उत्तरमें लिखा था।

२. भूलाभाई देसाई उन दिनों पहलेसे ही अन्य बातोंमें व्यस्त थे और उनका स्वास्थ्य भी ठीक नहीं चल रहा था। कम्युनिस्टों पर लगे आरोपोंकी जाँच करवाने के लिए जोशीने जिन लोगोंके नाम प्रस्तावित किए थे वे उनमें से एक थे। देसाईने २० अगस्त, १९४५ को अपनी राय प्रस्तुत करते हुए कहा था कि पूरणचन्द्र जोशीने यह स्वीकार किया कि जो युद्ध समाप्त हुआ था वह "जनताका युद्ध" था और ९ अगस्त, १९४२ से कम्युनिस्ट पार्टी जिन विचारोंका प्रचार कर रही थी, वे कांग्रेस विचारोंके प्रतिकूल थे।

वे मैंने उन्हें भेज दिये हैं। वे जिस दिन चाहें उनके सम्बन्धमे अपनी राय दे सकते है। लेकिन मुझे आशंका है कि वह राय कोई निर्णय नही होगा। वह तो मेरे कब्जेमे रखे कागज-पत्रोपर एक प्रसिद्ध वकीलकी राय होगी। लेकिन मैंने अपनी राय कायम नही की। मै जल्दबाजीमे कोई राय नही देना चाहता। विभिन्न प्रान्तोसे कई ईमानदार कांग्रेसी मेरे पास आकर कहते है या मुझे लिखते है कि कम्युनिस्टोका कोई सिद्धान्त नही है, सिवाय इसके कि अपनी पार्टीको जिन्दा रखा जाये और जिस तरह भी बन पडे अपने विरोधियोको पछाडा जाये। मै इस तरहके बयानोके आधारपर अपनी राय नही बनाना चाहता। मै तुम्हे, बाटलीवाला, जोशी या लखनऊके हबीबको दोषी ठहराने का साहस नही कर सकता। हबीब मेरे पास कोई महीना-भर रहा। वह अपने पिताकी[1] ओरसे मुझे मिलने आया था। वह मुझे बहुत अच्छा लगता है। कुल मिलाकर मै इस बातमे राजाजी से सहमत हूँ कि तुम्हे अपने-आपको एक अपराधीके रूपमे नही पेश करना चाहिए। मै किसी राजनीतिक पार्टीके विरुद्ध फैसला नही सुनाना चाहता। मै दोस्तोसे कहता हूँ कि वे अपनी जानकारीके अनुसार काम करे, न कि मेरी रायके अनुसार, क्योंकि मेरी राय तो पूर्ण साक्ष्यके अभावमे गलत भी हो सकती है।

[अंग्रेजीसे]

कॉरस्पॉन्डेन्स बिटविन महात्मा गांधी ऐंड पी० सी० जोशी, पृ० ४१-४२

२९८. पत्र : चिमनलाल नरसिंहदास शाहको

२४ मई, १९४५

चि० चिमनलाल,

आज आये सब पत्रोसे मालूम होता है कि मन्त्री तुम्हीको बने रहना है। तो बने रहो। लेकिन जिम्मेदारी बाँट देना, और काम वही करना जो बैठे-बैठे हो सके। हिसाब सँभालना और देखरेख उतनी ही करना जितनी कर सको। अगर कोई संचालक बनना चाहे, तो उसे बनने देना और उसकी मदद करना। कोई सचालक हो, ऐसी स्थिति कभी-न-कभी तो आयेगी ही। कभी तो मै मरूँगा ही, तुम भी मरोगे। तब तो किसीको होना पड़ेगा। जीते-जी किसी एकको ऐसा बना जाने मे ही तुम्हारी, और कहो तो मेरी भी चतुराई है। जबतक जिये, तबतक जैसे-तैसे थेगड़े लगाकर चलाये . . .।[2]

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० १०६३४) से

१. डॉ० सैयद महमूद

२. साधन-सूत्रमें पत्र अधूरा है।

२९९. पत्र : मुन्नालाल गंगादास शाहको

२४ मई, १९४५

चि० मुन्नालाल,

तुम्हारे दो पत्र साथ मिले। अगर जैसी तुम लिख रहे हो, वैसी ही स्थिति हो, तो तुम्हारा कर्त्तव्य है कि तुम चिमनलालसे[1] चिपके रहो, और किसीके साथ किसी भी बहसमे न पड़ते हुए चुपचाप काम करते रहो। कहते हैं, चुप रहने में नौ गुण होते हैं। मै कहता हूँ नौ सौ निन्यानवे गुण होते है। मनमे भी क्रोध नही करना चाहिए और करना ही हो तो अपने ऊपर करना चाहिए। जुलाईमें तो मै वहाँ आ ही जाऊँगा। मुझे लिखने की जरूरत हो तो छोटा पुर्जा भेज देना।

कंचनके बारेमें फिर अमतुस्सलामका पत्र आया है, इसे देखना। कंचन अगर न आई हो और वही रहना चाहे, तो जरूर रहे, यह मेरी राय है।[2]

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ८४५२) से। सी० डब्ल्यू० ५५७९ से भी; सौजन्य : मुन्नालाल गं० शाह

३००. पत्र : अमतुस्सलाम और कंचन शाहको

महाबलेश्वर
२४ मई, १९४५

बेटी,

तेरा खत मिला क्या कहना। कंचन एकाएक इतनी बिमार अब अच्छी और छोड़ना नही चाहती। मै खुश होता हू कि अच्छी है और वही रहना चाहती है। मेरे आने का पूछ रही है, यह तो तेरी इच्छा मेरी भी। लेकिन मै ऐसे नही ही आ सकता ईश्वर भेजेगा तो आऊंगा ही।[3]

१. देखिए पिछला शीर्षक।
२. देखिए अगला शीर्षक भी।
३. इसके बादका अंश गुजरातीमें है।

चि० कंचन,

अमतुस्सलामका दूसरा पत्र तो बहुत अच्छा है। तू दृढ़ होती जा। मेरी इच्छा है कि तुम दोनो बहिने [अपना काम] पूरा करके ही आओ। तू बिलकुल चंगी हो जाये तो कितना अच्छा हो!

दोनोंको

बापुके आशीर्वाद

वीवी अमतुस्सलाम
कस्तूरबा सेवा मन्दिर
बोरकामाता
बंगाल

हिन्दी और गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

३०१. पत्र : किशोरलाल घनश्याम मशरूवालाको

महाबलेश्वर
२४ मई, १९४५

चि० किशोरलाल,

तुम्हारा पत्र मिला। सुरेन्द्रजीका समझा। वह मुँह ही दिखा जायेगा तो मुझे अच्छा लगेगा। लेकिन धार्मिक अथवा तात्विक दृष्टिसे देखा जाये तो मुँह दिखाने में क्या रखा है? घूमने में एक कौड़ी अथवा एक मिनट भी क्यो खर्च किया जाये?

गोमतीको कोई इलाज माफिक आ जाये तो कितना अच्छा हो।

ट्रस्टियोंकी बैठकमे अथवा बाहर किसीने २० घन्टे काम नही किया तो फिर मै क्यों करूँ? इसी तरह सारी दन्तकथाएँ फैलती होगी क्या? यह सच है कि मैंने काम खूब किया। सरक्षकोकी एक सभामे मैं एक ही समय चार घन्टे बैठा। यह मेरे लिए बहुत हुआ। कहाँ २० घन्टे और कहाँ ४। डॉक्टरोंकी बात तो छोडो। मै इतना बैठ ही नही सकता। वे दिन तो अब लद ही गये।

बापूके आ[शीर्वाद]

गुजरातीकी नकलसे· प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

३०२. पत्र : लीलावती आसरको

२५ मई, १९४५

चि० लिली,

तेरा पत्र निष्प्राण और निरर्थक है। वह तो [तेरे] कामका लेखामात्र है और मैं हस्ताक्षर करके उसे वापस भेज रहा हूँ। तेरा अभिमान खत्म होना चाहिए। पत्रमें शरमाने जैसा कुछ नही था। तूने अपनी स्थिति सफलतापूर्वक बतलाई इसलिए मैंने अपने अधिकारका प्रयोग किया। मुझे गोपनीय रखने-जैसा कुछ लगेगा तो अवश्य रखूँगा, लेकिन जिसे ईश्वरपर विश्वास है उसे अपनी कोई भी बात गोपनीय रखनी ही नही चाहिए। खानगी अर्थात् खास अपनी। 'तेन त्यक्तेन भुंजीथा' मे खानगी भी आ जाता है। उसका त्याग करके ही भोग किया जा सकता है। यदि यह न समझ सके तो तेरी पढ़ाई मिथ्या है, विचारहीन है।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

३०३. पत्र : अमृतलाल वि० ठक्करको

महाबलेश्वर
२५ मई, १९४५

बापा,

तुम्हारा पत्र मिला। 'बम्बई' काटा हुआ नही था। यह बम्बई जाते-जाते रह गया क्योंकि मैंने कोनेमे 'पूना' देख लिया। यदि गुजरातीमे लिखो तो बादमें हिन्दी की जरूरत नहीं है। मेरी सलाह है कि तुम्हें [दूसरोंसे] पढ़वाना और लिखवाना चाहिए। अभी [स्वयं] पढ़ना-लिखना नही चाहिए।

[अब] हरिजीके सम्बन्धमें। तुम्हारा विचार सही है। यदि उन्होंने सब अधिकार प्राप्त कर लिया हो तो भी रामेश्वरीबहिनको[1] आने देना चाहिए। अभी लिखना। प्रभुदासका पता है: डाह्याभाई वि० मास्टर, मंडलेश्वर रोड, बोरिवली। वहाँसे

१. रामेश्वरी नेहरू, हरिजन सेवक संघकी संयुक्त सचिव

उसने मुझे डाह्याभाईकी लड़कीके[1] बारेमे पत्र लिखा था। [उसका] अपना पता भी यही था।

बापू

ठक्कर बापा
भारत सेवक समाज (सर्वेन्ट्स ऑफ इंडिया सोसाइटी)
पूना–४

गुजरातीकी नकलसे . प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य . प्यारेलाल

३०४. पत्र : मणिलाल गांधीको

२५ मई, १९४५

चि० मणिलाल,

तूने कार्ड लिखा, अच्छा किया। तेरे सामानके बारेमें नरहरिभाई देखेंगे। दिनशा बहुत विनम्र, नाजुक मिजाज और जल्दी नाराज हो जानेवाला आदमी है। धीरे-धीरे उसका वह दोष जाता रहेगा। मेरी खातिर गैरहाजिर होने की अभी तो जरूरत नही है। इन दिनो मालिश प्यारेलाल करता है। वही स्नान कराता है। वह जब व्यस्त हो, तो सुशीला[2] उसकी जगह ले लेती है। मेरी तबीयत ठीक है। मेरी चिन्ता करने की कोई बात ही नही है। सुशीलासे[3] मिलकर जो उचित लगे सो करना। तेरे पचगनी आने मे मुझे कोई हर्ज नही दिखाई देता। जबतक तू आयेगा, तबतक कनु और आभा भी आ गये होगे, ऐसा मान सकते है। लेकिन तू किसीके लिए बोझ हो जाये, ऐसा तो है नही। सुशीला और बच्चे तो आ ही सकते हैं। लेकिन तू जो उचित समझे वही करना। मुझे लिखते रहना।

बापूके आशीर्वाद

चि० मणिलाल गाधी
मार्फत मेसर्स बछराज ऐंड कम्पनी लिमिटेड
५, महात्मा गांधी रोड
फोर्ट, बम्बई

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ४९५०) से

१. कैलाश, देखिए पृ० १७०।
२. डॉ० सुशीला नैयर
३. मणिलाल गांधीकी पत्नी

३०५. पत्र : बलवन्तसिंहको

२५ मई, १९४५

चि० बलवंतसिंह,

तुमारा खत मिला। अब हुशियारीको शांति देना काम और अभ्यास करने देना।

नौकरके बारेमें जो मुन्नालाल करते हैं उसमें सलाह मेरी है। अच्छे हेतु रखते हुए उस मुताबिक हम न चलें तो दोष हमारा है, हेतु निर्मलता, मलीन नहीं होती है। मुन्नालालमें काफी दोष है लेकिन अपना बदनको कभी बचाता नहीं। काम कठिन है। मैं चाहता हूं कि सब उसमें मदद दे। नौकरोंको अपने आचारसे बतावें कि वे नौकर नहीं है लेकिन भाई बहन हैं। हम अपना काम करें, शरीरको आलस्यसे कभी न बचावें यह शिक्षणमें तनिक भी फरक नहीं हुआ है। धैर्यसे इसे समजो। न समज में आवे तो मुझे बार-बार पूछो।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० १९६१) से। सी० डब्ल्यू० ५८८० से भी; सौजन्य : बलवन्तसिंह

३०६. पत्र : होशियारीको

२५ मई, १९४५

चि० हुशियारी,

तेरा खत मिला। बच्चेके पास नहीं जाकर तु उसका भला करेगी। मेरी अवधी तो बहुत छोटी है। जुलाइमें तो मैं पहुंच ही जाऊंगा। खूब सीख और सबको कुटुंबीजन समझ।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

३०७. पत्र : पुरुषोत्तमदास टण्डनको

महाबलेश्वर
२५ मई, १९४५

भाई टंडनजी,

मेरे पास उर्दू खत आते हैं, हिन्दी आते हैं और गुजराती। सब पूछते हैं, मैं कैसे हिन्दी साहित्य सम्मेलनमें रह सकता हूं और हिन्दुस्तानी सभामें भी? वे कहते हैं, सम्मेलनकी दृष्टिसे हिन्दी ही राष्ट्र-भाषा हो सकती है जिसमें नागरी लिपि ही को राष्ट्रीय स्थान दिया जाता है, जब मेरी दृष्टिमें नागरी और उर्दू लिपिको स्थान दिया जाता है, और जो भाषा न फारसीमयी है न संस्कृतमयी है। जब मैं सम्मेलनकी भाषा और नागरी लिपिको पूरा राष्ट्रीय स्थान नहीं देता हूं तब मुझे सम्मेलनमें से हट जाना चाहिए। ऐसी दलील मुझे योग्य लगती है। इस हालतमें क्या सम्मेलनसे हटना मेरा फर्ज नहीं होता है? ऐसा करने से लोगोंको दुविधा न रहेगी और मुझे पता चलेगा कि मैं कहां हूं।

कृपया शीघ्र उत्तर दें। मौनके कारण मैंने ही लिखा है लेकिन मेरी अक्षर पढ़ने में सबको मुसीबत होती है इसलिए इसे लिखवा कर भेजता हूं। आप अच्छे होंगे।

आपका,
मो० क० गांधी

राष्ट्रभाषाके प्रश्नपर गांधीजी और टण्डनजीका महत्त्वपूर्ण पत्र-व्यवहार, पृ० १

३०८. पत्र : चोइथराम गिडवानीको

महाबलेश्वर
२५ मई, १९४५

भाई चोइतराम,

तुमारे खत परसे जो हो सकता है कर रहा हूं। तुमारा स्वास्थ्य अच्छा होगा।

बापुके आशीर्वाद

डा० चोइतराम गीडवानी
पो० बो० २६
करांची

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

३०९. पत्र : तुलसीको

महाबलेश्वर
२५ मई, १९४५

चि० तुलसी,

तेरी हिन्दी अच्छी नहीं है। अक्षर भी अच्छे नहीं है। दोनों दुरुस्त करो। खाने-पीने में नियम पालन करके तकड़ी बन जा।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

३१०. पत्र : शेख फरीदको

महाबलेश्वर
२५ मई, १९४५

भाई फरीद,

आपके खत पढ़ गया। मैं कैसे लिख सकता हूं। डाक्तर पटेल जिनका जिक्र आप करते है वे तो मर गये। वहां हस्पतालमें डाक्तर जसुदासन है। वे भले हैं। उनकी तरफ कोई खतकी जरूरत नहीं। आप वहां जाय। मेरा बेटा मनिलाल आज-कल हिन्दुस्तानमें है। आप अच्छे हो जाय।

आपका,
मो० क० गांधी

उर्दूकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

३११. पत्र : डॉ० दिनशा मेहताको

महाबलेश्वर
२५ मई, १९४५

चि० दिनशा,

तुम्हारा पत्र अभी शामको मिला। मावलकरके बारेमे समझा। हमारा धर्म तो [यदि कोई] रत्न कूड़ेमे भी मिला हो तो उसे ढूँढ लेना और उसे सहेजकर रखना है। पृथ्वीके गर्भमे से हजारो मन कचरेमे से थोडा औंस हीरा निकालते हुए मैंने खुद अपनी आँखोंसे देखा है। पैसेका सवाल अलहदा है। मावलंकरके पैसे तो आ गये, क्योंकि उसके पिता बहुत उदार और चौकस है।

तुमने शाहको ठीक जवाब दिया है। उसके पैसे तो तुमने फीसके खातेमे रख लिये होंगे। मैंने तो उसे लिखा ही है कि वह तुम्हें पैसा भेजे।

तुम नही आये यह मुझे अच्छा लगा। मै बीमार पड़ूंगा तो तुम्हे अवश्य बुलाऊँगा। लेकिन यदि मै ठीक होऊँ तो जैसी मालिश हो उससे मुझे काम चलाना चाहिए। मै तुमसे मालिश करवाऊँ इसकी अपेक्षा यदि तुम वहाँ रहकर रोगियोंकी खूब देखभाल करो और संस्थाको पूर्ण करो तो यह मुझे ज्यादा अच्छा लगेगा। मुझे मीठे वृक्षकी जडे नहीं खानी चाहिए।

गुलबहिनको मैंने तो आने का पत्र तुरन्त लिख दिया था।[1] अब फिर यहाँका मौसम सुधर गया है। मईके अन्तमे ऐसा ही हुआ करता है। लेकिन [वह भले] यहाँ आये अथवा पचगनी।

घनश्यामदासका मामला यदि तुम्हारे आने के बाद निपटाऊँ तो क्या ठीक नही होगा ?

तीनोंको
बापूके आशीर्वाद

दिनशा मेहता
नैसर्गिक उपचार गृह
पूना सिटी

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. देखिए पृ० १७२-७३।

३१२. पत्र : अमृतकौरको

बुधवार नहीं पढ़ा

२६ मई, १९४५

चि० अमृत,

तो पाबन्दियाँ हटा ली गई हैं! मैं इसके पक्षमें हूँ कि भाषण किये जायें। कोई बड़ी बात नहीं थी और चुभन अब भी है। बहरहाल वहाँके कामोंसे — जिनके बारेमें प्यारेलाल और सुशीलाके नाम लिखे तुम्हारे पत्रोंसे मुझे पता चला है — छुट्टी पाकर तुम मेरे पास आ सकती हो। निस्सन्देह तुमने जो परिस्थितियाँ बताई हैं उनमें मनु तुम्हारे पास नहीं रह सकती थी। वैसे भी वह अपने पिताके पास कराची चली गई है। मैं नहीं जानता कि वहाँ उसका क्या हालचाल है। तुम्हे चिन्ता करने की जरूरत नहीं है।

आहार-सम्बन्धी जो नियम तुम जानती हो उसे तोड़ने की क्या जरूरत है? खबरदार! ! !

मेरी तबीयत ठीक है।

स्नेह।

बापू

[पुनश्च :]

प्यारेलाल और सुशीलाके लिखे पत्र संलग्न है।[1]

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ४१५६) से; सौजन्य : अमृतकौर। जी० एन० ७७९१ से भी

१. यह अंश गुजरातीमें है।

३१३. पत्र : मणिबहिन नानावटीको

महाबलेश्वर
२६ मई, १९४५

चि० मणिबहिन,

तुम्हारा पत्र मिला। अच्छा हुआ। अरुणा तुमसे आकर मिल गई। दोनो बड़े हो गये है। तुम्हें उन्हे प्रेमपूर्वक सलाह देनी चाहिए और बादमे वे जैसा करे उसे सहन करना चाहिए। उदारता घरसे ही शुरू करनी चाहिए। बच्चोके प्रति यदि हम कजूस रहते है तो हमारी बाहरकी उदारतामे कुछ त्रुटि अवश्य रहेगी। यह तो हुई सीख। वापस आओ तब दोनोको पंचगनी ले आना। हम मिलेगे। मेरा मौन होगा तो भी कोई चिन्ता नही। आओगी तब देख लेगे।

स्वामीके बारेमे समझा।

मृदुलाको तो मै बचपनसे जानता हूँ। वह बहुत मेहनती है। सेवाभावसे भरपूर है। लेकिन शरीरकी तनिक भी परवाह नही करती, इसे मै बुरा मानता हूँ।

बापूके आशीर्वाद

श्री मणिबहिन नानावटी
पहलगाम, कश्मीर

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

३१४. पत्र : मंजुला मेहताको

२६ मई, १९४५

चि० मंजुला,

तू बीमार पड़ गई और . . .[1] यह बात ही मुझे दुःख देती है। यहाँ बीमार पड़ने का कारण? तू जा रही है, यह भी मुझे अच्छा नही लगता। लेकिन फिर यह भी समझता हूँ कि अपने पास तो मै तुझे नही रख सकता। और यही बात मेरे मनको काटती है।

१. यहाँ एक शब्द पढ़ा नहीं जाता।

मगनकी[1] वकालत तू मुझसे करती है? वह पढ़ गया है, लेकिन उसमें अक्ल नही आई है। धीरे-धीरे सीखेगा। मुझे नाराजी किस बातकी? लेकिन इसकी ओछी समझसे मुझे दुःख होता है। यह ओछी समझ धीरे-धीरे कम होगी। तू इसमें सहायता करना। यही एक भाई है जिसे डॉक्टरका[2] नाम रखना है और उसे गौरवान्वित करना है।

तुम सब जल्दी स्वस्थ हो जाओ और स्वस्थ बने रहो।

तेरी कविता मैं पढ़ गया। विचार उत्तम हैं।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० १०३३) से। सौजन्य: मंजुला मेहता

३१५. पत्र: गुलबाई टाटाको

महाबलेश्वर
२६ मई, १९४५

प्रिय बहिन,

तुम बीमार पड़ गईं, यह जानकर मुझे बहुत दुःख हुआ। जल्दी घूमने-फिरने लायक हो जाओ। आजकल मैं भी बाहर घूमने नही जाता। घरके आसपास ही जो सपाट हिस्सा है मैं वहाँ घूमता हूँ। आज कदाचित् निकलूँगा। तुम्हारी भेंटके लिए मैं आभारी हूँ। अंग्रेजी अथवा अन्य कोई संगीतकी स्वरलिपि पढ़नी मुझे नही आती। शब्द तुमने नही भेजे।

यह पत्र तुम्हें डॉ० सुशीलाबहिन देंगी।

मो० क० गांधीकी दुआ

बहिन गुलबाई टाटा
फाउन्टेन होटल
महाबलेश्वर

गुजरातीकी नकलसे: प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य: प्यारेलाल

१. मंजुला मेहताके पति मगनलाल मेहता

२. मंजुला मेहताके ससुर डॉ० प्राणजीवनदास जगजीवनदास मेहता

३१६. चर्चा: जी० जे० एम० लांगडेनके साथ[1]

महाबलेश्वर
२६ मई, १९४५

समझा जाता है कि मेजर लांगडेनने अन्य बातोंके साथ-साथ औपनिवेशिक स्वराज्यका दर्जा बनाम स्वतन्त्रता, हिन्दू-मुस्लिम प्रश्न, अगस्त, १९४२ में हुई गड़बड़ी की जिम्मेदारी और युद्ध-प्रयत्नमें कांग्रेसका सहयोग मिलने की सम्भावनाके प्रश्नोंको उठाया।

कहा जाता है कि महात्मा गांधीने उत्तर दिया है कि ब्रिटिश सरकार द्वारा भारतकी स्वतन्त्रताके सिद्धान्तको स्वीकार कर लेने के बाद ही औपनिवेशिक स्वराज्यका दर्जा बनाम स्वतन्त्रताके प्रश्नपर निर्णय किया जा सकता है।

हिन्दू-मुस्लिम प्रश्नपर समझा जाता है कि महात्मा गांधीने यह कहा कि जिन हिन्दुओंने धर्म-परिवर्तन करके इस्लाम ग्रहण किया है वे केवल धर्म-परिवर्तन होने के कारण पृथक् राष्ट्रीयताकी माँग नहीं कर सकते।

अगस्त, १९४२ की गड़बड़ीके बारेमें महात्मा गांधीने यह घोषणा की बताई जाती है कि स्वयं सरकारने उन्हें "विश्वासघात" करने और जापानियोंकी मदद करने की कोशिश करने के आरोपसे मुक्त कर दिया है।

महात्मा गांधीने मेजर लांगडेनको सूचित किया कि यद्यपि उन्हें प्रश्नोत्तरोंके प्रकाशित होने पर कोई आपत्ति नहीं होगी, लेकिन उनके खयालसे इस समय उन्हें प्रकाशित करना उपयुक्त न होगा। मेजर लांगडेन इसके लिए राजी हो गये।

[अंग्रेजीसे]
बॉम्बे क्रॉनिकल, २८-५-१९४५

३१७. प्रस्तावना: 'गीतागीतमंजरी' की

गीतोंमें संगीतका आस्वाद पाने की सरल युक्ति मुझे मिली ही नहीं, इसलिए उनके भीतरका रस मैं नहीं लूट पाता। कई बार ऐसा हुआ है कि किसीने कोई गीत इस प्रकार गाकर सुनाया है कि मुझे मधुर लगे, तब मैं उसका रस लूट

१. ब्रिटेनके आम चुनावमें मॉरपेथ (नॉर्दम्बरलैंड) के संसदीय क्षेत्रसे अनुदार दलके उम्मीदवार। ए० पी० आई० की खबरके अनुसार लांगडेनसे "महात्मा गांधीने कहा कि वे अपने मौन-व्रतके कारण बातचीत तो नहीं कर सकते, प्रश्नोंके जवाब लिखकर दे सकते हैं।"

सका हूँ और बादमें उसके रहस्यको समझ भी सका हूँ। कभी मैं स्वयं ही स्वर गुनगुना सका हूँ और तब मैंने उसके रस और रहस्य दोनोंका आनन्द लिया है।

ऐसे आदमीसे भाई जुगतरामने[1] आशीर्वादके दो शब्द डरते-डरते माँगे हैं। 'डरते-डरते' इसलिए कि मेरे समयकी कीमत उन्हें मालूम है और मेरी शक्तिकी सीमा भी वे जानते हैं।

फिर भी जो आशीर्वाद माँगे हैं, सो इसलिए कि मैं 'गीता' को आत्माका शब्दकोश मानता हूँ। 'मंजरी' मैं पूरी पढ़ नहीं सका, लेकिन इसपर नजर फेर गया हूँ। रचना मुझे अच्छी लगी है। लेखकका परिश्रम स्पष्ट दिखाई देता है। अध्यायोंमें से जो उन्हें अच्छा लगा है, उसीको भाई जुगतरामने अपने ढंगसे गाया है। 'मंजरी' की प्रस्तावनाएँ, बादमें दिया गया शब्दकोश, 'गीताबोध'[2] और 'अनासक्तियोग'[3] में से चुन कर निकाले गये प्रासंगिक वचन तथा 'गीता' के प्रासंगिक श्लोक—यह सब सामग्री ऐसी है जो अभ्यासीको सहायक सिद्ध हो सकती है।

भाई जुगतरामकी मंजिल पूरी नहीं हुई। अभी बस बारहवें अध्यायतक पहुँचे हैं। हम आशा करें कि वे अपनी मंजिल पूरी कर सकेंगे।

६० वीं मंजरीके बाद काकासाहबके 'बे केरी'[4] लिए लिखे गये गीत भी जोड़ दिये गये हैं। यह ठीक हुआ है।

अभ्यासी यह भी याद रखें कि भाई जुगतरामने जैसा 'गीता' को जाना है, वैसा वे उसपर अमल करते हैं तथा वे उससे प्राप्त हो रही दूधकी अखण्ड धाराके पान करनेवाले कुछ थोड़े-से व्यक्तियोंमें से एक हैं। अतः 'मंजरी' की सुगन्धका उपभोग करने की इच्छा करनेवाले, 'मंजरी' को तभी हाथ लगायें जबकि उन्हें 'गीता' के अनुसार अनासक्तियोगका आचरण करना हो अथवा अनासक्त कर्मके लिए शक्ति प्राप्त करनी हो।

मो० क० गांधी

महाबलेश्वर, २७ मई, १९४५

गुजरातीकी फोटो-नकल (एस० एन० १९३३६) से। गीतागीतमंजरी में भी

१. जुगतराम दवे

२. देखिए खण्ड ४९, पृ० ११०-४१।

३. देखिए खण्ड ४१।

४. दत्तात्रेय बा० कालेलकर द्वारा लिखित गुजराती नाटक "बे आम"; देखिए अगला शीर्षक भी।

३१८. पत्र : जुगतराम दवेको

२७ मई, १९४५

चि० जुगतराम,

यह काम तुमने मुझे खूब सौपा। ये रहे मेरे "दो शब्द",[1] अथवा जो भी नाम तुम इन्हे दो। यह काम करते-करते मुझे चार घन्टेसे ज्यादा लग गये। मेरे लिए यह समय वहुत माना जायेगा। लेकिन मेरे पास और कोई उपाय नही था। मुझे ऐसे काम अच्छे लगते है, लेकिन अब मै इनके लायक नही रहा। मैने खुद जो काम चुन लिये है, वे ही मेरा बहुत समय या जितना मिलता है उसका सारा समय ले लेते है। यह सब लिखने का उद्देश्य ऐसा काम सौपने के लिए तुम्हें उलाहना देना नही है, लेकिन तुम्हारी मार्फत मै दूसरोको ऐसा काम मुझे सौपने से जरूर रोकना चाहता हूँ। उलाहना मै कैसे दे सकता हूँ? अन्तत 'मजरी' जो तुमने रची, वह तो मेरा ही काम करने के उद्देश्य से न? और यह कथनमात्र शब्दजाल नही है। ९वी मजरीको तुमने "समता योग" नाम दिया है और ४०वीको "समता"। तुम देखोगे कि इन दो स्थानोमे "समता" के दो भिन्न अर्थ है। मै ९वीको "समता" कहूँगा, "योग" शब्दको निकाल दूँगा और ४०वीको "समत्व" अथवा "समभाव" कहूँगा। कारण स्पष्ट है। ६०वी मजरी तक १२ अध्यायोंका अवलोकन पूरा हो जाता है। अनुक्रमणिकासे देखता हूँ, कुछ अश 'बे केरी' से लिया गया है। इसका कुछ उल्लेख पृष्ठ १५२[2] पर होना चाहिए। इसपर विचार करना और किया जा सके तो सुधार करना।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (एस० एन० १९३३६) से

१ देखिए पिछला शीर्षक।

२. बे केरी से लिया हुआ पहला गीत **गीतागीतमंजरी** के इस पृष्ठपर है।

३१९. पत्र : बम्बई सरकारके गृह-विभागके सचिवको

'मोरारजी कासल', महाबलेश्वर
२७ मई, १९४५

सचिव, बम्बई सरकार
गृह-विभाग
बम्बई

प्रिय महोदय,

मैं नजरबन्दी कैम्पसे लिखे ९ मई, १९४४ के अपने पत्रके[1] सन्दर्भमें यह लिख रहा हूँ।

कुछ दिन पहले तक मेरी दिवंगता पत्नी और स्वर्गीय महादेव देसाईकी समाधियोंपर उनके मित्रों और सम्बन्धियोंको जाने देने में कोई रोक-रुकावट नहीं थी। लेकिन अभी हालमें एक बाधा उपस्थित हो गई है। अभीतक तो इस मामलेमें सरकारकी ओरसे सम्बन्धित लोग सूझबूझसे काम लेते थे जिससे दर्शकोंके लिए नियत समयके अन्दर श्रद्धांजलि अर्पित करना बहुत हदतक सम्भव था। अब यह अफवाह सुनने में आई है कि महाविभव आगाखाँके महलमें सेनाको ठहराया जानेवाला है। और अगर ऐसी बात हुई तो शायद श्रद्धांजलि अर्पित करने की बिलकुल इजाजत ही न दी जाये। मैं तो यही आशा रख सकता हूँ कि यह आशंका निर्मूल सिद्ध होगी।

मैंने सरकारको लिखे ९ मई, १९४४ के अपने पत्रमें अपने ये विचार लिखकर दिये थे। मैंने लिखा था :

> जिस स्थानपर पहले श्री महादेव देसाईके और फिर कस्तूरबाके शवका दाह-संस्कार हुआ था वह स्थल, जो बाड़से घेर दिया गया है, अग्नि-संस्कारोंके कारण पवित्र भूमि बन गया है। हमारे दलके लोग प्रतिदिन वहाँ दो बार जाकर उन दिवंगत आत्माओंको पुष्पांजलि अर्पित करते रहे हैं और प्रार्थना करते रहे हैं। मुझे आशा है कि सरकार उस स्थलको अपने हाथमें ले लेगी और महाविभव आगाखाँके अहातेमें से होकर वहाँ पहुँचने की सुविधा भी प्राप्त कर लेगी, ताकि जो भी सम्बन्धी और मित्रगण वहाँ जाना चाहें वे जब भी चाहें वहाँ जा सकें।

१. देखिए खण्ड ७७, पृ० २७९-८०।

उपर्युक्त पत्रका निम्नलिखित उत्तर मिला था

मैं आपको सूचित करना चाहूँगा कि सरकारके लिए उस स्थानको भूमि-अधिग्रहण कानूनके अधीन अनिवार्य रूपसे खरीदना असम्भव है। सरकारके विचार में यह मामला ऐसा है जिसपर आपके और महाविभव आगाखाँके बीच निजी तौरपर लिखा-पढ़ी होनी चाहिए। साथ ही मैं यह भी सूचित करना चाहूँगा कि महाविभव आगाखाँको आपके निवेदनके विषयमें सूचित कर दिया गया है और सरकारको पता चला है कि वे उसपर विचार कर रहे हैं। सरकारको यह भी पता चला है कि फिलहाल उन्हें इस बातपर कोई एतराज नहीं होगा कि श्रीमती गांधी और श्री महादेव देसाईके सम्बन्धी तथा आपके द्वारा बताये गये लोग महलके अहातेमें से होकर दाह-स्थलपर जायें; लेकिन यह समझ लेना होगा कि ऐसा उनकी स्वीकृति और अनुमतिसे किया जा रहा है।

मेरी दृढ़ आशा है कि महल चाहे किसीकी भी मिल्कियत हो और उसमें कोई भी रहता हो, जिस पवित्र भूमिपर दोनो समाधियाँ बनी हैं, वह सुरक्षित रहेगी और ऐसी व्यवस्था की जायेगी कि उसका उपयोग दोनों परिवारोंके सम्बन्धियो और मित्रोंके द्वारा श्रद्धांजलि अर्पित करने के लिए ही हो।

आपका,
मो० क० गांधी

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० ३९४०) से

३२०. पत्र : हर्षदा दीवानजीको

२७ मई, १९४५

प्रिय बहिन,

तुम्हारा पत्र मिला। जन्मके निमित्तसे, विवाहके निमित्तसे अथवा अपने प्रियके मरणके निमित्तसे, हरिजन-सेवाके लिए अथवा ऐसी ही किसी सेवाके लिए दान करना बहुत अच्छी बात है। तुम्हारा चैक मिला। मैं जूनके अन्तमे या उसीके आसपास पूना जाऊँगा। उस समय तुम आओ, तो तुम्हारे व्रतका पालन हो जाये। हो सका, तो हम दोनो साथ ही समाधिपर जायेंगे।

बापूके आशीर्वाद

श्री हर्षदाबहिन दीवानजी
खार

गुजरातीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० १०२२४) से। सौजन्य : हर्षदा दीवानजी

३२१. पत्र : प्रभावतीको

महाबलेश्वर
२७ मई, १९४५

चि० प्रभा,

तू रिहा हुई और राजकुमारीके ऊपरसे प्रतिबन्ध उठा लिया गया। ये दोनों खबरे मुझे एकसाथ मिली लेकिन कोई खुशी नही हुई। कारण जो तू लिखती है वही है। तेरा तार कल मिला, पत्र आज। मजबूरीमें पेंसिलका प्रयोग करती है तो इसमें तेरा क्या दोष? फिर भी लिखावट सुन्दर और शुद्ध है। पिताजीके पास जाना तेरा धर्म था। भले गई। वहांसे छूटने पर यहां आ जाना। इस बीच जयप्रकाशको मिलने की अनुमति मिली तो वहां जाना तेरा धर्म होगा। बादमें मेरे पास आना धर्म होगा। यहां तो जबतक रहना जरूरी होगा तबतक तू रहेगी। इसलिए जल्द आना। मैं ३१ तारीखको पंचगनी पहुँचूंगा। उसके ऊपर ही महाबलेश्वर है। चश्मेसे तू क्यों शर्माती है। खु[र्शेद] बहिन पंचगनीमे है। बाकी मिलने पर। क्या पिताजी ठीक है? उन्हें मेरा आशीर्वाद।

बापूके आशीर्वाद

श्री प्रभावतीबहिन
[मार्फत] विश्वनाथ प्रसाद
बिहार बैंक
डाकखाना लहेरिया सराय
दरभंगा, बिहार

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

३२२. पत्र : गिरिराज किशोर भटनागरको

महाबलेश्वर
२७ मई, १९४५

चि० गिरिराज,

मैंने तुमको तुरन्त उत्तर दिया था। यह दूसरा खत है। तुम अच्छा कर रहे हो। बच्चोंका सुनकर मैं राजी हुआ था। कुछ और खबर पूछे थे। तुमारा स्वास्थ्य बिलकुल अच्छा होगा। मैं ३१ तारीखको पचगनी जाउंगा। नाणावटी मैसुर पहोंच गये हैं।

बापुके आशीर्वाद

श्री गिरिराज
हिंदुस्तानी प्रचार वर्ग
अग्रेजी निशाल
नापाड, वाया आणद

पत्रकी नकलसे · प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य . प्यारेलाल

३२३. पत्र : भारतन कुमारप्पाको

२८ मई, १९४५

प्रिय भारतन,

तुम्हारा पत्र और पुस्तक[1] मिली। अप्पास्वामी आया और पुस्तक छोडकर चला गया। मैं उससे मिला नही। पता नही अब वह फिर कोशिश करके मुझसे मिलेगा या नही। वैसे तो मैं शामकी प्रार्थना तक सारा दिन मौन रखता हूँ।

पुस्तक भेजने के लिए तुम्हें मुझसे माफी माँगने की जरूरत नही। मैं उसे अवश्य पढ़ूँगा। जब वह मेरे हाथमे आई, तो उसे मैं एक नजर देख गया था। तुम कहते हो समाजवादका केन्द्र समाज और उसकी आवश्यकताएँ है और ग्रामवादका केन्द्र गाँव और उसकी जरूरते है। तो फिर तुम्हारे समाजवाद और ग्रामवादके इस वर्णनमे अन्तर क्या है? क्या तुम्हे कोई अन्तर दिखाई देता है? क्या गाँव और उसका कल्याण वही चीज नही है जो समाज और उसकी आवश्यकताएँ है? क्या अन्तर यह नही है: समाजवादमे उसकी प्राप्तिके साधनके रूपमे हिंसाका समावेश है, ग्रामवाद हिंसाका वर्जन करता है?

१. देखिए पृ० १६०।

मेरी अंग्रेजी निर्दोष नहीं है। हो सकता है, हिन्दुस्तानीकी अपेक्षा बेहतर हो। बहरहाल अगर मेरी हिन्दुस्तानी मेरी अंग्रेजी जितनी अच्छी नहीं है तो उसे उतनी अच्छी बनाने की कोशिश मुझे करनी है। मेरी हिन्दुस्तानी चाहे जितनी दोषपूर्ण हो, मैं उसीके माध्यमसे जन-साधारण तक पहुँचता हूँ — अंग्रेजीके माध्यमसे कभी नहीं, चाहे मेरी अंग्रेजी कितनी निर्दोष हो। अगर तुम उसे स्वीकार करते हो तो 'पत्रिका' केवल हिन्दुस्तानीमें ही होगी और विभिन्न प्रान्त उनके यहाँके लोग जिन प्रान्तीय भाषाओंको समझ सकते हैं उन भाषाओंमें उसका अनुवाद निकालेंगे। अलबत्ता विदेशी पाठकोंके लिए तुम आवश्यक अंशोंका अंग्रेजी अनुवाद दे सकते हो। यह तभी हो सकता है जब तुम दोनोंको यह बात जँचे और दोनों चाहे जितनी दोषपूर्ण हिन्दुस्तानीमें लिखना तय कर लो। ३१ मईको मैं पंचगनी जा रहा हूँ।

स्नेह।

बापू

अंग्रेजीकी नकलसे: प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य: प्यारेलाल

३२४. पत्र: नर्गिस कैप्टेनको

महाबलेश्वर
२८ मई, १९४५

प्रिय बहिन,

तुम्हारा पत्र कल आया।

प्यारेलाल और नरहरि वह जगह देख आये। उन्हें तो वहाँ कुछ खास जँचा नहीं। जो काम किया जा रहा है वह कामका बहाना ही है। समझ लो, कोई साधनहीन घर खैरात दे रहा है। और जैसा मैं समझता हूँ, यहाँकी भारी वर्षाके कारण महाबलेश्वर इस तरहकी संस्थाके लिए उपयुक्त स्थान नहीं है। स्वस्थ गरीब लोग यहाँ रह सकते हैं, बल्कि मजेमें भी रह सकते हैं। बाकी मिलने पर।

कल बुलका कोई पत्र नहीं आया। कहने की जरूरत नहीं कि वह जब भी चाहे मेरे पास आ जाये।

तुम सबको प्यार।

बापू

[पुनश्च:]

बुलको बता दो कि अभी-अभी उसका पत्र आया है। ऐसा नहीं है कि उसका उत्तर जल्दी देना जरूरी हो।

अंग्रेजीकी नकलसे: प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य: प्यारेलाल

३२५. पत्र : रमणलाल शाहको

२८ मई, १९४५

चि० रमणलाल,

तुम्हारा पत्र आज ही मिला। तुमने जो वर्णन भेजा है वह बहुत ठीक है। तुमने रसोईघरका काम अपने हाथमें ले लिया, यह मुझे बहुत अच्छा लगा। जमे रहना। धीरे-धीरे प्रार्थना आदि सब ठीक-ठीक सीख लेना। मैंने तुम्हें मूक सेवकके रूपमें जाना है। तुम ऐसे हो कि जहाँ जाओगे चमकोगे, लेकिन मेरा अपना मत यह है कि खामियाँ होते हुए भी सच्चा सेवक बनने के लिए, आश्रमकी बराबरी कर सके ऐसी अन्य कोई संस्था नहीं है।

बापूके आशीर्वाद

मूल गुजरातीसे. रमणलाल शाह पेपर्स। सौजन्य. नेहरू स्मारक संग्रहालय तथा पुस्तकालय। सी० डब्ल्यू० ५८८२ से भी

३२६. पत्र : मुन्नालाल गंगादास शाहको

२८ मई, १९४५

चि० मुन्नालाल,

तुम्हारा पत्र मिला। कंचनके बारेमें तुम्हें जो करना हो सो करो। मैं सब-कुछ कर चुका, लिख चुका। लगता है कि तुमने अपना चार्ज[1] छोड़ दिया है। अब जो बने सो करो। सब-कुछ छिन्न-भिन्न न हो जाये, तो अच्छा। यहाँसे अब मैं अधिक मार्ग-दर्शन नहीं कर सकता। काम बहुत ज्यादा बढ़ गया है। अतः अब तो मुझे जरूरी काम ही खोजकर उन्हींसे निबटना रहा।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ८४५१) से। सी० डब्ल्यू० ५५८० से भी; सौजन्य : मुन्नालाल गं० शाह

१ गांधीजी ने अंग्रेजी शब्दका ही उपयोग किया है।

३२७. पत्र : मार्गरेट स्पीगलको

२८ मई, १९४५

चि० अमला,

तेरा पत्र उत्तम है। अब आगे ऐसी बेवकूफी मत करना। अब तेरी काफी उम्र हो गई है। शान्त और स्वस्थ हो जा। खेती और मवेशीके बारेमें सतीशबाबूसे सोदपुर खादी प्रतिष्ठान, बरास्ता कलकत्ताके पतेपर लिखकर पूछ। वह मुझसे बहुत ज्यादा जानते हैं।

बापूके आशीर्वाद

डॉ० मार्गरेट स्पीगल
३, वोडहाउस रोड
फोर्ट, बम्बई

मूल गुजरातीसे : स्पीगल पेपर्स। सौजन्य : नेहरू स्मारक संग्रहालय तथा पुस्तकालय

३२८. पत्र : चिमनलाल नरसिंहदास शाहको

महाबलेश्वर
२८ मई, १९४५

चि० चिमनलाल,

अस्पतालके लिए जो दरवाजे आदि बनाये गये हैं उनकी लकड़ी रद्दी और अधिक कीमतकी है, ऐसी शिकायत मेरे पास आई है। इसमें कुछ सच्चाई है क्या?

मुन्नालालके बारेमें पढ़कर दुःखी हुआ। वह बहुत काम करनेवाला व्यक्ति है लेकिन अपने क्रोधको दबा नहीं सकता। जो बने, करना। अब तो मैं जल्दी ही वापस लौट जाऊँ तो अच्छा हो। लेकिन फिर अपने मनको समझाता हूँ।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

३२९. पत्र : लक्ष्मीदास आसरको

महाबलेश्वर
२८ मई, १९४५

चि० लक्ष्मीदास,

१९ मई, १९४५ का जाजूजीको लिखा तुम्हारा पत्र पढकर दु.ख हुआ। तुम्हारी तबीयत इतनी ज्यादा कैसे बिगड गई? तुम ज्यादा बोझ बिलकुल नही उठाना। चगे हो जाओ। तुम हो सकते हो। मुझे मन्त्रीके पदके लिए एकसे अधिक नाम सुझाओ तो अच्छा हो। पंचगनीके पतेपर लिखना। मैं ३१को वहाँ होऊँगा।

बापूके आशीर्वाद

श्री लक्ष्मीदास आसर
ग्रामोद्योग खादी हाट
भद्र, अहमदाबाद

गुजरातीकी नकलसे प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य प्यारेलाल

३३०. पत्र : चाँदरानीको

महाबलेश्वर
२८ मई, १९४५

चि० चांद,

तेरा खत मिला। तेरी शादीके बारेमे मै क्या हुकम करु? मै तो तुझे मार्ग बता सकता हू उससे अधिक मुझे या किसीको अधिकार नही है। इसमे तेरे दिलकी बात है। उसके विरुद्ध तु खुद भी नही जा सकती है। कोई औरत दो काम साथमे नही कर सकती। बच्चा पैदा करना और सेवा भी। बच्चा पैदा करना वह भी एक प्रकारकी सेवा बन सकती है। पिताजीका खत वापिस करता हूं। उनके पास तो तू जायेगी ही। सबका सुन बादमे तेरा दिल कहे सो कर।

९ जूनको सेवाग्राम पहोचेगी सो भी ठीक होगा। सुशीलाबहन ज्यादह लिखेगी। तू बिलकुल छोटी लडकी नही है जैसा तुझे उचित लगे ऐसा हर चीजमे कर।[1]

बापुके आशीर्वाद

चांदराणी
[मार्फत] वियोगी हरि
हरिजन निवास
किंगज्वे [कैम्प], दिल्ली

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. देखिए अगला शीर्षक भी।

३३१. पत्र : सत्यवतीको

महाबलेश्वर
२८ मई, १९४५

चि० सत्यवती,

तेरा खत मिला। थोड़ी भी अच्छी है ऐसा सुनता हूं तो मुझे अच्छा लगता है। दिल चाहे वहांतक बाद रह सकती है। तूं रोक सकती है। शादीके बारेमें चांदको लिखा है सो देख।[1] वही चीजको दुहराना क्या?

बापुके आशीर्वाद

[पुनश्च :]

३१ तारीखको मैं पचगनी जाता हूं। सचमुच तो दोनो एकजैसा है।

पत्रकी नकलसे . प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

३३२. पत्र : जयरामदास दौलतरामको

महाबलेश्वर
२८ मई, १९४५

चि० जैरामदास,

तुम्हारा खत मिला। पंचगनीका घर मेरा विस्तृत कुटुंबके लिये छोटा है। इसलिये मेरे कुटुंबीजन अलग प्रबंध कर सकते है तो मैं राजी होता हूं। इसका मतलब यह नहीं कि तुम्हारे या देवी[2] प्रेमी[3]को आना नहीं है। किसीके घरमें पंचगनीमें समास हो सके तो करना यही मतलब है। सब अच्छे होंगे।

सबको
बापुके आशीर्वाद

श्री जैरामदास दौलतराम
ज्ञानघर
१५मो रस्तो, खार
मुंबई – २१

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. देखिए पिछला शीर्षक।
२ और ३. जयरामदासकी पत्नी और पुत्री

३३३. पत्र : एम० एस० केलकरको

महाबलेश्वर
२८ मई, १९४५

भाई बरफ,

तुमारे खत मिले हैं। बालकृष्णको संतोष नही मिला। देवने थोडासा तुम्हारे पाससे लिया। बाकी तो अपना ही चलाता है। हुशियारी बहनको भी पूरा संतोष तो नही है। मैं तुमको सावधान करता हूं। जो दाक्तर मरीजोका दोष निकालता है वह दाक्तर नही है। कोई लोक है "मै अच्छा हुआ"।[1] अगर हरिइच्छा अच्छी हो गई तो मैं बहुत राजी हुंगा।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

३३४. पत्र : घनश्यामसिंह गुप्तको

महाबलेश्वर
२८ मई, १९४५

भाई घनश्यामसिंह,

तुम्हारा खत अच्छा लगता है। मैं भी काम कर रहा हू। असल बात यह है कि स्थानिक लोगोमे कुछ हौसला है या नही?

बापुके आशीर्वाद

श्री घनश्यामसिंह गुप्ताजी
स्पीकर
द्रुग

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. यह वाक्य अस्पष्ट है।

३३५. पत्र : श्यामलालको

महाबलेश्वर
२८ मई, १९४५

भाई श्यामलाल,

तुम्हारा खत मिला। लाला रामस्वरूप खन्नाके दानके बारेमें जो भेजे है ठीक है। ट्रस्टीओंको भेजो।

बापूके आशीर्वाद

श्री श्यामलालजी
कस्तूरबा स्मारक
सिंधिया हाउस
मुंबई

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

३३६. पत्र : शान्ताको

२८ मई, १९४५

चि० शान्ता,

तेरा सुंदर खत मेरे सामने है। देखने मे नहीं सही लेकिन तेरा वर्णन सफलताका सूचक है। कूवें अच्छे होवे और घरोंमें खिड़किया बने और प्रकाश आये तो प्रौढ शिक्षण सच्चा हो रहा है ऐसा कहा जाय।

तूने हमारा नया अर्थशास्त्री ठीक दिया है। श्रम बेन्कमें सफलता मिल जाय तो अनाज बेन्क इ० हस्तामलक बात हो जायगी।

तुझे शरीर अच्छा रखना है। रख सकेगी अगर सब काम पूर्ण अनाशक्तिसे कर सकेगी। ऐसा करना तेरा परम कर्त्तव्य है। जो तेरेमें नहीं होगा वह लोगोंको तू कभी नहीं दे सकेगी।

ईश्वर तुझे शक्ति दे, सफलता दे।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

३३७. पत्र : शैलेन्द्रनाथ चटर्जीको

२८ मई, १९४५

चि० शैलेन,

डा० कृष्णवर्माको लिखो, तारीख भेजो। वीणाका मलाडमे या कही कुछ भी काम नही। उनको सेवाग्राम जाना ही चाहीये।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० १०३९२) सें। सौजन्य . अमृतलाल चटर्जी

३३८. पत्र : शरयू धोत्रेको

२८ मई, १९४५

चि० शरयू,

तेरा खत मिला। मेरा रामेश्वरदासनको लिखना उचित ही था।

तुझको धर्म बताया वह तो प्रत्येकके दिलकी ही बात होती है। इसका मतलब ऐसे थोडा था कि मै तुझे छोड दू और कर सकता हू सो न करु? और मै खुद निर्धन होते हुए धनिक जैसे रहू। धर्मपंथ असि धारा है।

अच्छा है वत्सला[1] तेरे साथ ही है।

मुजे लिखा करेगी। मोहन[2] अच्छा हो जायगा तो ठीक होगा।

तू आजकल तो वही रहेगी।

बापुके आशीर्वाद

मूल पत्र (सी० डब्ल्यू० ८३८) से। सौजन्य: शरयू धोत्रे

१ और २. शरयू धोत्रेकी बहिन और पुत्र

३३९. पत्र : कृष्णचन्द्रको

२८ मई, १९४५

चि० कृ० चं०,

बालकोबाको स्राव हो गया उसकी चिंता न करें। यह पुराना रोग है। जिस तरह अच्छा हो सके सो करना। मुझे लिखा करो।

लिपिके बारेमें ग्रिम्स लोका उपयोग बता सका हूं।[1]

रामदासका खत (१४-५-४५ क) अच्छा है। वह यही दलील कर सकता है। खादी तो कभी नहीं छोड़ेगा। लेकिन अपना अनुभवको जल्दी नहीं भूल सकता है। श्रीमनकी दलील अंतीम बात है। आज तो असंभव है। रामदास प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूपसे सारा हिंदुस्तान नहीं जानते हैं। यह कुछ उनका दोष नहीं है। शास्त्रीय दृष्टिसे अभ्यास करने में हिंदुस्तानकी हालत जाननी चाहीये जो स्थिति बताते उसका कारण पश्चिमकी चढ़ाई है। रामदासके कथनके मूलमें हिंसा ही आयेगी। अहिंसाका चलना है तो बहुत सी बातें वरान इ० की शक्ति छोड़कर ही चल सकती है।

बड़े उद्योगके लिए प्रजाके तरफसे बड़े कारखाने चलना चाहीये सो भी आपत्ति की बात है आनंदकी नहीं। सारांश यह है कि रामदासको बहुत भीतरसे सोचना होगा। मैं जानता हूं कि अंतमें रामदास अपने मोहको छोड़ सकेगा।

तुमारे नागपुर तो जाना ही हैं। वहां जाकर खूब अनुभव लो।

इस खतको रामदासको भेजो या नकल।

बापुके आशीर्वाद

[पुनश्च :]

रमण और शान्ताबहनका खत उन्हें पहुंचा दिजियेगा।

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० ४५७२) से

१. देखिए पृ० १२२।

३४०. तार : रामेश्वरी नेहरूको

महाबलेश्वर
२९ मई, १९४५

रामेश्वरी नेहरू
वारिस रोड
लाहौर

यदि वे अवकाशपर चले गये तो तुम्हे जाने की आवश्यकता नही है, लेकिन तुम अपना विवेक इस्तेमाल करना।

बापू

अंग्रेजीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य . प्यारेलाल

३४१. पत्र : चक्रवर्ती राजगोपालाचारीको

२९ मई, १९४५

प्रिय सी० आर०,

गाड़ीमे लिखा तुम्हारा पत्र मिला।

मै कामके भारसे दबा हुआ हूँ। इसीलिए देरी हुई — अगर इसे देरी समझा जाये तो।

इस बुराईके अस्तित्वके बारेमे मै तुमसे सहमत हूँ। मेरी कठिनाई यह है कि इससे निपटा कैसे जाये। मै चाहूँगा कि तुम मुझपर भरोसा रखो कि ज्योही मुझे कोई तरीका सूझेगा, मैं इससे निपटूँगा। तब कोई चीज मुझे रोक नही सकेगी। न मैं इस विषयमें असावधान ही हूँ।

मुझे यह खुशी है कि तुम्हे महाबलेश्वरमे ठहरना अच्छा लगा।

मेरा खयाल है कि पापा और नरसिंहन तुरन्त ही तुम्हारे पास पहुँच गये होंगे और अब तुम ठीक-ठाक होगे।

तुम्हारी ताजी पुस्तिका[1] मुझे मिल गई है।

स्नेह ।

बापू

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० २१०६) से

१. अनुमानतः रिकन्सिलिएशन

३४२. पत्र : पोत्ती श्रीरामुलूको

२९ मई, १९४५

प्रिय श्रीरामुलू,[1]

यह ज्यादा ईमानदारीकी बात होगी कि तुम अपनी जरूरतकी खादी लेने के लिए अपना सूत बेचो, और अपना भोजन भिक्षा माँगकर प्राप्त करो तथा जो-कुछ तुम्हारे पास बचे उसे हरिजन-कार्यमे लगा दो। लोगोको तुम्हारी उपयोगिताका पता लगना चाहिए।

तुम्हारा,
बापू

[पुनश्च :]

मन्दिर-प्रवेश अस्पृश्यता दूर करने का एकमात्र उपाय नही है। यह अनेक उपायोंमे से एक है और सभी उपाय बरते जाने चाहिए।

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० १०६) से

३४३. पुर्जा : अमृतलाल वि० ठक्करको

२९ मई, १९४५

बापा,

यह तार आया है। उपर्युक्त उत्तर दिया है।[2]

बापू

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. नेल्लोरके एक कांग्रेसी जिन्होंने अस्पृश्यता-निवारणके लिए कार्य किया। १९५३ में उन्होंने पृथक् आन्ध्र प्रदेशके निर्माणके लिए मृत्युपर्यन्त अनशन किया।

२. देखिए पृष्ठ २०९; पृ० १८४-८५ भी।

३४४. पत्र : सीता गांधीको

२९ मई, १९४५

चि० सीता,

तेरी लिखाई अच्छी है। इसी तरह सबको लिखना चाहिए, सबको एक समान सुन्दर लिपिमें। 'शिविर-अग्नि'[1] प्रयोग ठीक लगता है। तू कह सकती है कि उस रोज हमने वहाँ जगह-जगह 'शिविर-अग्नि' प्रज्वलित की थी।

सबको
बापूके आशीर्वाद

चि० सीता गाधी
नानाभाई मशरूवालाका बगला
अकोला, बरार

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ४९५१) से

३४५. पत्र : जयाकुँवर देसाईको

२९ मई, १९४५

चि० जया,[2]

तेरा पत्र मिला।

चि० चन्दूका[3] विवाह मजेमे करो। लगता है दोनो एक-दूसरेके लायक है। लेकिन इस विवाहके लिए मै बधाई नही दे सकता। मुझे तो उस परित्यक्ता स्त्रीके लिए दु:ख होता है। उसका हृदय क्या कहेगा? मणिलाल बम्बईमे है।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी माइक्रोफिल्म (एम० एम० यू०/२३) से

१. कैम्प फायर
२. गाधीजी की भतीजी और जमनालाल गाधीकी बहिन
३. चन्द्रकला, जयाकुँवर देसाईकी पुत्री

३४६. पत्र : कृष्ण वर्माको

महाबलेश्वर
२९ मई, १९४५

भाई कृष्ण वर्मा,

तुम्हारा २० तारीखका पत्र मिला था। मेरा पत्र मामाको जरूर पढ़वा सकते हो। वह अच्छा हो जाये, यह हम सब चाहेंगे। और इसके लिए उसे जबतक वह बिलकुल ठीक न हो जाये तबतक तुम्हारे पास रहना ही चाहिए और जैसा तुम कहो वैसा करना चाहिए। अब तो उसकी तबीयतमें बहुत सुधार होगा।

भाई शैलेनको थोड़े दिनोंमें तुम्हारे पास आना चाहिए। वह सीधे तुम्हें लिखेगा।

बापूके आशीर्वाद

डॉक्टर कृष्ण वर्मा
नैसर्गिक उपचार गृह
मलाड

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

३४७. पत्र : नानजी कालिदासको

२९ मई, १९४५

भाई नानजी,

तुम्हारा पत्र मिला। शान्ताबहिन आ गई थीं। अब पंचगनी सारी तैयारी करने के लिए गई हैं। मेरी खातिर तुम्हें अथवा परिवारके किसी सदस्यको आने की कोई जरूरत नहीं। शान्ताबहिन अकेले ही सब-कुछ सँभाल सकती हैं। मेरे पास मण्डली भी बड़ी है। यहाँसे मैं ३१को रवाना होऊँगा। मेरी चिन्ता न करना। अपनी तबीयत अच्छी रखना।

बापूके आशीर्वाद

सेठ नानजी कालिदास
महाराणा मिल्स
पोरबन्दर, काठियावाड़

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

३४८. पत्र : रणछोड़दासको

महाबलेश्वर
२९ मई, १९४५

भाई रणछोड़दास,

आपका अंग्रेजी पत्र पढ गया। उसमे उठाये गये प्रश्नोकी चर्चामे मै पडना नही चाहता। आप अगर मिले होते तो आपसे वातचीत करने मे चन्द मिनट गुजारता। आपने जो सवाल किये है उन्हे समाचारपत्रोमे भेजने से मै आपको कैसे रोक सकता हूँ? मेरे द्वारा जवाब न दिये गये उन सवालोंका क्या अर्थ हो सकता है? आशा है, आप ठीक होंगे।

आपका,
मो० क० गांधी

गुजरातीकी नकलसे प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य · प्यारेलाल

३४९. पत्र : अमृतलाल वि० ठक्करको

महाबलेश्वर
२९ मई, १९४५

बापा,

१. तुम्हारा पत्र मिला। सर पुरुषोत्तमदासके विचारसे मै सहमत नही हो सकता। ऑफिस बम्बईमे नही होना चाहिए। लेकिन मैंने तो इसपर जोर नही दिया। असलमे तो तुम्हे ही विचार करना है।

२. यदि कोई ठोस काम करके दिखाया जाये तो बहुत अच्छा हो। देवदासके सुझावका मैंने स्वागत किया है। वह करके बताये, मैंने यह भी उससे कहा है। अपनी राय तो मैंने बताई ही है कि उतावलीमे आम नही पकते[1]। यह काम नया है। मुर्देमे प्राण फूंकने है।

३ पैसे सरकारकी छत्रछायासे जितने दूर रखे जाये उतना अच्छा। किसी अच्छी पेढीमे रखने मे मुझे कोई आपत्ति नही है।

१. एक गुजराती कहावत

४. छोटी-छोटी बातोंमें मैं मगजपच्ची नहीं करना चाहता और योजनाओंमें भी। सच पूछो तो मुझे केवल सिद्धान्तोंपर ही चर्चा करनी चाहिए थी।

५. भाई कामलेके बारेमें तुम जो लिखते हो वह सही है।

बापू

श्री ठक्कर बापा
भारत सेवक समाज (सर्वेन्ट्स ऑफ इंडिया सोसाइटी)
पूना सिटी

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

३५०. पत्र : शामलदास गांधीको

महाबलेश्वर
२९ मई, १९४५

चि० शामलदास,

तेरे दोनों पत्र मिले। तूने लम्बा पत्र लिखकर अच्छा किया। तूने जो आशाएँ व्यक्त की हैं यदि वे पूरी होती हैं तो मेरी भी हुई समझो। तेरे पिताने[1] तो अपने अन्तिम पत्रमें तुम सबको मुझे सौंप दिया। उन्हें रणछोड़से[2] बहुत आशाएँ हैं लेकिन तेरे और शान्तिके[3] बारेमें भी उन्होंने खूब लिखा है। रणछोड़ तो नहीं ही मिला। शान्ति तो अन्तमें जो करेगा सो करेगा। अभी तो मैंने तुझसे आशा बाँध रखी है।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. गांधीजी के भाई लक्ष्मीदास गांधी
२ और ३. शामलदास गांधीके भाई रणछोडदास और शान्तिलाल

३५१. पत्र : बी० जगन्नाथदासको

२९ मई, १९४५

भाई जगन्नाथदास,

आपका खत मिला। दिल चाहे तब पचगनी आओ। दिवान बहादुर आने से मुझे और हर्ष होगा। इतना जानो कि पचगनीमे मैं किसीके घरमे रहूंगा। घर बड़ा नही है। इसलिये आप लोग किसी और जगहपर ठहरने का प्रवध कर लेगे। हिंदुस्तानीमें लिखने की आदत रखो।

मो० क० गाधीके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० ९७६०) से। सौजन्य: बी० जगन्नाथदास

३५२. पत्र : पीर इलाहीबख्शको

२९ मई, १९४५

भाई पीरसाहेव,

आपका खत मिला है।[1] आप जानते होगे कि मैं उर्दु हरफ जानता हू। उसमे [सिन्धीमें] और उर्दू हरफमे बहूत कम फरक है। आप यह भी जानते होगे कि मैं हिंदुस्तानी उस जबानको मानता हू जो देहाती हिंदू और मुसलमान शुमाली (उत्तर?) हिंदुस्तानमें वोलते हैं और नागरी या उर्दु हरफोमे लिखते हैं। इसलिये अगर मै आपको सलाह देता हूं तो कहूंगा कि आप सब मद्रसामे दोनों लिपिमें (एकमे ही नही) हिंदु मुसलमान लडकोको हिंदुस्तानी सीखावें। यह बात पुरानी है, चली नही। अब तो ऐसी सभा बनी है जिसमे इसी चीजका फैलाव होता है।

इस आशयका उत्तर देना [और उसपर] मेरे हस्ताक्षर ले लेना।[2]

आपका,

मूल पत्रसे : प्यारेलाल पेपर्स । सौजन्य : प्यारेलाल

१. उन्होंने पूछा था कि सिन्धमें कौन-सी भाषा किस प्रकार पढ़ाई जानी चाहिए।
२. यह वाक्य गुजरातीमें है।

३५३. पत्र : सुशीलाको

महाबलेश्वर
२९ मई, १९४५

चि० सुशीला,

मातपिता जिसके साथ शादी कराना चाहते हैं उसका तो दृढ इन्कार करो। जिसके साथ इतना प्रेम हो गया है उसके साथ मातपिताको कहकर शादी करो। मेरे आशीर्वाद इसमें मत मांगो। मेरी सलाह और आशा तो यह रहेगी कि दोनों सेवापरायण बनकर एक दूसरोंको भूल जाओ। मैं जानता हूं कि यह कठिन काम है।

मो० क० गांधीके आशीर्वाद

श्री गुरुप्रसाद श्रीवास्तव
आर० एम० एस० आफिस
चारबाग जंक्शन
(लखनौ)

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

३५४. पत्र : श्यामलालको

महावलेश्वर
२९ मई, १९४५

भाई श्यामलाल,

दफ्तरके बारेमें खत मिला। मैं सम्मत हूं। वर्धाका अर्थ करता हू वर्धा या वर्धाके इर्दगिर्द। उसका सबब स्पष्ट है।

मो० क० गांधी

श्यामलाल
कस्तूरबा [ट्रस्ट] आफिस
मुंबई

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

३५५. पत्र : मुहम्मद हमीउद्दीन खाँको

महाबलेश्वर
२९ मई, १९४५

भाई महमद हमीउद्दीन,

आपका खत मिला। मुझे दिलगीरी है कि आठवे से आपका एक बच्चा मसूद जीन्दा है और चार सालका है। उसकी खुदा उमर दराज करे। आपकी मुरादकी बेटा मसूद मुल्की सेवा करे और हिंदु मुस्लीममें इत्तहाद बढाने के काममे अपना वक्त दे, बर आये। आप मेरे जैसेको अग्रेजीमे क्यो लिखे? और कागजपर नामठामकी छपाई अग्रेजीमे क्यों?

आपका,
मो० क० गांधी

श्री हमीउद्दीन खा
महाराजा कालेज
जयपुर[1]

उर्दूकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य प्यारेलाल

३५६. भेंट : डेंटन जे० ब्रूक्स जूनियरको[2]

महाबलेश्वर
[३० मई, १९४५ या उसके पूर्व][3]

प्रश्न : गांधीजी, क्या आप अमेरिकाके नीग्रो लोगोंको कोई विशेष सन्देश देना चाहेंगे?

१. यहाँ पता अंग्रेजीमें है।

२. साधन-सूत्रके अनुसार भेंटकर्ता एक नीग्रो पत्रकार थे और **शिकागो डिफेंडर** के सुदूर पूर्व स्थित संवाददाता थे। **शिकागो डिफेंडर** में यह भेंटवार्ता १० जून, १९४५ को छपी थी। ब्रूक्सने समाचारमें लिखा था : "... पिछले सप्ताह मोरारजी कासल, महाबलेश्वरमें मुझे... दी एक विशिष्ट भेंटवार्तामें... गांधीजी शामकी प्रार्थनाके बाद एक घन्टेको छोड़कर बाकी समय मौन रखे हुए थे...। मैंने प्रश्न पूछे और उन्होंने जल्दीमें उत्तर लिखकर दे दिये।" ब्रूक्सने लिखा था कि वे "बादमें शामकी प्रार्थना" में शामिल हुए।

३. गांधीजी ३१ मई, १९४५ की शामको पंचगनी पहुँचे थे।

उत्तर : मेरा जीवन स्वयं एक सन्देश है। और अगर नहीं है, तो ऐसी कोई बात जो मैं अब लिख सकता हूँ, सन्देशका काम नहीं देगी।

भविष्यमें जातियोंके आपसी सम्बन्ध कैसे-क्या रहेंगे, इस विषयपर अपने विचार प्रगट करने का अनुरोध किये जाने पर गांधीजी ने उत्तर दिया :

आज मेरी आस्था पहलेसे दृढ है, इतनी दृढ़ कि जितनी अतीतमें कभी नहीं हुई। वह समय जल्दी आ रहा है जबकि जातियोंके परस्पर सम्बन्धोंकी विकट समस्याका समाधान हो जायेगा।

गांधीजी का विचार था कि वर्तमान निराशाजनक लक्षणोंके बावजूद भी यह काम हो जायेगा। उनका अब भी यह विचार था कि जिन जातियोंको कम अधिकार या सुविधाएँ मिली हुई हैं उनके लिए अहिंसा ही सबसे अच्छा हथियार है।

गांधीजी ने पिछले दिनों सान फ्रान्सिस्को सम्मेलन आरम्भ होने के समय जो वक्तव्य[1] दिया था, उसकी चर्चा करते हुए उन्होंने कहा कि भारतकी स्वतन्त्रताका कम अधिकारोंवाली दूसरी सभी जातियोंके कल्याणके साथ घनिष्ठ सम्बन्ध है। उस समय उन्होंने कहा था :

> भारतकी स्वतन्त्रतासे दुनियाकी सभी शोषित जातियोंको इस बातका प्रमाण मिलेगा कि उनकी स्वतन्त्रता निकट है और भविष्यमें तो उनका शोषण कदापि नहीं किया जायेगा।

[अंग्रेजीसे]
हिन्दू, १५-६-१९४५

३५७. प्रस्तावना : 'गीता आणि गीताई' की–मसौदा

मेरे कई साथी ऐसे हैं जो मुख्यतः मेरा ही काम करते हैं इसलिए उनका मुझपर अधिकार रहता है। लेकिन यह अधिकार अव्यक्त रहना चाहिये। अन्यथा मुझे जो काम करना है वह मैं नहीं कर सकूंगा। "गीता आणि गीताई" और "गीताध्यायसंगति" पर कुंदरजी मेरे दो शब्द मांगते हैं। मैं इन्कार कैसे करूं? स्वीकार कर लिया तो गीताध्यायसंगति और कुंदरजीकी प्रस्तावना पढने का धर्म हो गया और इसमें मेरा एक घंटा चला गया। ऐसे घंटे चले जायं तो काम बिगड़े और गीता मेरा आध्यात्मिक शब्दकोश मिट जाय।[2]

१. देखिए खण्ड ७९, पृ० ४२०-२२।
२. साधन-सूत्रमें इस और अगले अनुच्छेदके बीच गीताध्यायसंगति की प्रस्तावना दी गई है; देखिए अगला शीर्षक।

'गीताई' की विशेषता यह है कि अर्थ और सगीत ऐसी खूबीसे मराठीमें[1] आया है कि जो मूल गीता नही जानता है वह भी मूल जानने जैसा रस पी सकता है।

मो० क० गांधी

महाबलेश्वर
३० मई, १९४५

पत्रकी नकलसे प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य प्यारेलाल

३५८. प्रस्तावना : 'गीताध्यायसंगति' की

आश्रम कोचरवमें[2] खोला तबसे ही विनोबा मेरे साथी रहे है। उन्होने बहुत काम किया है जो मैंने चाहा है या मुझे प्रिय था। गीताध्यायसगतिको ही ले। मैंने मागा था बहुत कम विनोबाने बहुत दिया। वाचक यह भी समझे कि १४ दिनमे गीतापारायण करने की प्रथम कल्पना और बादमे सात दिनकी यरोडा मंदिरमे ही उठी और मैंने विनोबाको मेरा काम बताया और उनकी मुहर मागी अथवा सुधारणा। उसके अवेजमे गीताध्यायसगति उन्होने भेजी। यह वस्तु सामने रखने से वाचक जो गीतामे ध्यानावस्थित होकर उसके शिक्षणका जिवनमे उपयोग करना चाहता है उसे लाभ होगा।[3]

महाबलेश्वर, ३० मई, १९४५

गीताध्यायसंगति

३५९. तार : आसफ अलीको

महाबलेश्वर
३० मई, १९४५

बैरिस्टर आसफ अली
कूचा चेलान
दिल्ली

तार द्वारा सही स्थिति बताइए। अफसोस है कि आप बीमार है।

गांधी

अंग्रेजीकी नकलसे · प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य · प्यारेलाल

१. विनोबा भावे द्वारा अनूदित
२. मई १९१५ में अहमदाबादके पास
३. प्रस्तावनाके मसौदेमें अन्तमें यहाँ लिखा है: "ऐसा मैं मानता हूं"।

३६०. पत्र : सुधीर घोषको

महाबलेश्वर
३० मई, १९४५

प्रिय सुधीर,

तुम्हारा दिलचस्प पत्र मिला। मैं जूनके अन्ततक पंचगनीमें रहूँगा। डॉ० जॉन एवर्टन पंचगनीमें जूनमें किसी भी दिन दोपहर बाद मुझसे अवश्य मिल सकेंगे। बेशक मैं मौन रहूँगा, लेकिन उससे कुछ हर्ज नहीं होगा। अवश्य ही वे मुझे पूर्वसूचना दे दें।

तुम दोनोंको प्यार।

बापू

श्री सुधीर घोष
१, अपर वुड स्ट्रीट
कलकत्ता

अंग्रेजीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

३६१. पत्र : मीराबहिनको

महाबलेश्वर
३० मई, १९४५

चि० मीरा,

यह पत्र तुम्हें सिर्फ यह बताने के लिए है कि तुम मददके बारेमें चिन्ता मत करो। बापाका कहना है कि उन्हें तुम्हारे लायक आदमी नहीं मिलेगा। बलवन्तसिंह मेरे सेवाग्राम पहुँचने के बाद ही आ सकता है। बलवन्तसिंहके पहुँचने तक रामप्रसाद तुम्हारे पाससे नहीं जायेगा। तबतक वही करो जैसा कि तुम [भजन] गाती हो "रॉक ऑफ़ एजेज, क्लेफ्ट फॉर मी, लेट मी हाइड माइसेल्फ इन दी"[1] (हे युग-युगके शरणागत-वत्सल, मुझे शरण दे)।

स्नेह।

बापू

श्री मीराबहिन
किसान आश्रम
डाकघर बहादराबाद
ज्वालापुर, हरिद्वारके पास

अंग्रेजीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. **आश्रम भजनावलि** में शामिल ए० एम० टॉपलेडी (१७४०-७८) का एक भजन

३६२. पत्र : वालजी गो० देसाईको

३० मई, १९४५

चि० वालजी,

बापाके पास कामका ढेर लगा है। वे मुझ-जैसे नही है। मुझे आदमी न मिले, तो मै किसीसे भी सेवाकी भीख माँग लूँ। उनकी आँखे खराब है। उन्हे किसी गुजराती और हिन्दी लिखनेवालेकी जरूरत पड़ेगी। अत यदि तुम, या कोई लडका, या और कोई, इसमे उनकी सहायता करने की स्थितिमे हो, तो बापासे मिलना और उन्हे बताना। इस समय बापा पूनाके [भारत] सेवक समाजमे है। वही सहायता करने की बात है। कोई जाना-पहचाना आदमी मिले तो ज्यादा अच्छा।

पशु-चिकित्सा विज्ञानकी कोई मराठी या गुजराती पुस्तक तुम्हारे ध्यानमे हो, तो बताना।

कल [हम लोग] पचगनी [जायेगे]।

बापूके आशीर्वाद

प्रो० वालजी गो० देसाई
गणेश वाड़ी
फर्गुसन कॉलेज रोड
पूना

गुजरातीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० १०२२७) से। सौजन्य वालजी गो० देसाई

३६३. पत्र : जयसुखलाल गांधीको

३० मई, १९४५

चि० जयसुखलाल,

विनोदिनीके पत्रके नीचे तुम्हारा लिखा हुआ पढ़ा। तुम्हे आँव कैसे हो गई? आदर्श खुराक वह होती है, जिससे मनुष्यके स्वास्थ्यमे उत्तरोत्तर वृद्धि होती रहे। तुम्हारी खुराकमे कही कोई दोष तो नही है? इसका पता तुम्ही लगाओ। मनु वहाँ

पहुँच गई, यह अच्छा ही हुआ। जबतक वह पूरी तरह अच्छी नहीं हो जाती, तबतक मेरी चिन्ता बनी रहेगी।

बापूके आशीर्वाद

श्री जयसुखलाल गांधी
सिन्ध मार्केट नं० ३५
महात्मा गांधी रोड
कराची

गुजरातीकी माइक्रोफिल्म (एम० एम० यू०/२४) से

३६४. पत्र : नन्दलाल पटेलको

३० मई, १९४५

चि० नन्दलाल,

तुम्हारा ३० अप्रैलका पत्र मुझे यहाँ ५ मईको मिला। उसका जवाब आज ही लिख पा रहा हूँ। हरिइच्छाके[1] समाचार तो मुझे लगभग हर दूसरे दिन मिलते रहते हैं। मेरा जी उसमें लगा रहता है। मनमें ऐसा होता रहता है कि वह बच जाये तो कितना अच्छा हो। होगा वही जो ईश्वरने सोच लिया होगा। उपाय भी उसीकी इच्छाके अनुसार प्राप्त होगा। अभी तो डॉ० केलकरके सिवाय और कोई सूझता नहीं। वे भले आदमी हैं।

मैं तो वहाँ कहीं जुलाईमें जाकर पहुँचूंगा।

मुझे फिर लिखना। हरिइच्छाको स्वयं कैसा लगता है?

वहाँके मकानोंकी देखभाल करना।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ९२५३) से। सी० डब्ल्यू० २७१६ से भी, सौजन्य : नन्दलाल पटेल

१. नन्दलाल पटेलकी पुत्री

३६५. पत्र : चिमनलाल नरसिंहदास शाहको

३० मई, १९४५

चि० चिमनलाल,

तुम्हारे एक पत्रका जवाब देना रह गया था। रामस्वामीको उसके माता-पिताके लिए अप्रैल और मईका पैसा भेज दिया, अच्छा किया। अब तो कुछ रह गया हो, ऐसा नही लगता।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० १०६३५) से

३६६. पत्र : बरजोरजी फरामजी भरूचाको

महाबलेश्वर
३० मई, १९४५

भाई भरूचा,

आपका कार्ड मिला। ऐसे काममे मुझे घसीटना अनुचित समझे।

आपका,
मो० क० गांधी

बरजोरजी फरामजी भरूचा
बम्बई – १

गुजरातीकी नकलसे . प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

३६७. पत्र : अमीनको

महाबलेश्वर
३० मई, १९४५

चि० अमीन,

तुम प्रयत्न करते हो यही बात तुममे दोनो गुणोके होने की परिचायक है। प्रयत्नमे ही मनुष्य-प्रयत्न समाहित है। सफलताका आधार ईश्वर कृपापर है। भीडमें[1] ही हमारे लिए एकान्तवास है। क्रियामे ही निष्क्रियता है, लेकिन ऐसी क्रिया तो निष्काम होनी चाहिए। तुम वैसा ही तो कर रहे हो। रामकृष्ण परमहस निष्क्रिय नही थे, यह याद रखना। तुम कहाँ दुनियादारीमे पडते हो ?

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य प्यारेलाल

३६८. पत्र : वसुमती पण्डितको

महाबलेश्वर
३० मई, १९४५

चि० वसुमती,

तेरे पत्रका उत्तर आज ही दे पा रहा हूँ। तू ठीक लिखती है। सब अपनी सामर्थ्यानुसार ही करते है। तू और मै इसके अपवाद नही हो सकते। स्वास्थ्यको सँभालते हुए जो करना पड़े वही करना। ईश्वर सबकी देखभाल करता है, यह विश्वास हमे कभी नही खोना चाहिए। अकबरसे[2] पूछना।

बापूके आशीर्वाद

श्री वसुमतीबहिन
मार्फत दौलतराम काशीराम
करेलवाड़ी
ठाकुरद्वार रोड
बम्बई

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. गुजरातीमें यहाँ अर्थ स्पष्ट नहीं है।
२. अकबर चावडा

३६९. पत्र : रामप्रसाद व्यासको

३० मई, १९४५

चि० रामप्रसाद,

तुम्हारी तबीयत अच्छी होगी। जबतक मैं ब[लवन्त] सिंह अथवा किसी अन्य व्यक्तिको न भेजूँ तबतक वहाँसे नही खिसकना।[1] भले तुम्हे दो महीने लग जायें। वहाँ मैंने जो माँग की है उसके अनुसार करना चाहो तो यह अलहदा बात है।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

३७०. पत्र : सीताराम पुरुषोत्तम पटवर्धनको

महाबलेश्वर
३० मई, १९४५

चि० अप्पा,

तुम्हारे पत्रका उत्तर आज ही दे पा रहा हूँ। मैं स्पष्ट निर्णय नही कर सकता। जाजूजी की कठिनाइयोंको मैं समझता हूँ। वहाँके तुम्हारे कामकी कीमत मैं जानता हूँ। बालासाहब वगैरह तो जैसा मैं कहूँगा वैसा ही करेंगे। यह जानकारी मेरी जिम्मेवारी बढ़ाती है। ऐसी स्थितिमें यदि तुम भी निर्णय न कर सको तो लाटरी डालकर निश्चय कर लो और उसके अनुसार करो। यह रास्ता अज्ञानका नही है। मैं तो इसे ज्ञानसे भरपूर मानता हूँ। इससे लाभ तो है ही।

बापूके आ[शीर्वाद]

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. देखिए पृ० २२०।

३७१. पत्र : सरस्वती गांधीको

३० मई, १९४५

चि० सुरू,

तेरे खतका उत्तर आज ही दे सकता हूं। तू और वाली जब दिल चाहे तब आ सकते हैं लेकिन सिर्फ मिलने के कारण ईतना खर्च करना मैं पसंद नही करूंगा। तू वही अच्छा काम कर रही है। खतसे मिलती है। हरिलालको तुम दो अच्छा करोगे तो वहूत बडा काम किया ऐसा मानुंगा।

बापुके आ[शीर्वाद]

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० ६१८६) से। सी० डब्ल्यू० ३४६० से भी; सौजन्य : कान्तिलाल गांधी

३७२. पत्र : प्रभाकरको

३० मई, १९४५

ची० प्रभाकर,

तुमारे खतका उत्तर न देने का बड़ा कारण सभाएं थी। अब खतोंको निकाल रहा हूं। कुछ उत्तर रह जाये तो फीर पुछना।

तुमने उपवास किया उसका दुःख नही है। आशा रखु की जो वजन गमाया है फीर कमाओगे आस्ते २ ही बड़ेगा। माधो सुधर जाय तो ठीक ही होगा। चौरी करने की आदत हो जाती है तब मुस्केल होता है। आदमी जानता नहीं है कि उसने चोरी की है। यह दयापात्र है। ऐसे मौकेपर उपवास दयाका काम न करे। जितने दफा ऐसा करे उसको प्रेमसे कठोर शब्दोंसे नही सावधान करना चाहिए।

ब० सिंहने कहा वेटरन[री] किताबोंकी तलाशमें हूं।[1] अब सब खत देख चुका। तुम्हारा खास प्रश्न तो नही देखता।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० ९०२८) से। सी० डब्ल्यू० ५८८३ और ९१५२ से भी; सौजन्य : प्रभाकर

१. देखिए पृ० २२१।

३७३. पत्र : कुन्दर दीवानको

महाबलेश्वर
३० मई, १९४५

भाई कुंदर,

ये रहे मेरे दो शब्द।[1] ऐसे कामोका लायक मै नही रहा हूं। मैं जिन्दा रहना चाहता हूं तो और कुछ मौलिक काम करके स्वतंत्रताके यज्ञमे हिस्सा लू। ऐसी प्रस्तावना वह हिस्सा नही है, इसलिए तुम्हारे तो बहूत लिखना है मुझसे कुछ मत मागो।

गीता प्रवचन मेरे लिए रसिक है तुम जो कह सकते है मै नही कह सकता। मेरा अभ्यास कहा। मेरे दो शब्द अगर निरुपयोगी समझो तो छोड सकते है।

बापुके आशीर्वाद

कुन्दर दिवान
म० सं० मडल
दत्तपुर
नालवाडी, वर्धा

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

३७४. पत्र : रामेश्वरी नेहरूको

३० मई, १९४५

चि० रामेश्वरी बहन,

पिताजीके बारेमें तुमारा खत पडा है।

उनके स्मरणके[2] लिये मै निवेदन नही करुगा। वह होना चाहिये पजाबसे पंजाबी मार्फत। अगर कोई निवेदन निकाले और जिम्मेवारी न लेवे तो जो होवे सो होने दो। आखर मै पिताजीकी सेवा कोई मेमोरीयलसे थोड़ी अचलित होनेवाली है। सेवा मे ही अमर यह रहा है। कौलका नाम ठाम इसके नीचे दिया जायगा।

१. देखिए पृ० २१८-१९।
२. देखिए खण्ड ७९, पृ० ४५०।

बालिका आश्रम बारेमें तुमारा खत मिला है। मैंने तार दिया है,[1] सो काफी है। तुमारा खत तुमारे तारपर प्रकाश डालता है।

बापुके आशीर्वाद

श्रीमती कौलका पता:
लेडी सी० कौल
कैम्प वाया संगरूर
(जींद स्टेट, पंजाब)

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० ८००८) से। सी० डब्ल्यू० ३१०८ से भी; सौजन्य: रामेश्वरी नेहरू

३७५. पत्र: देवप्रकाश नैयरको

३० मई, १९४५

चि० देव,

तुम्हारे सब खतोंका उत्तर नहीं दिया है। आज पुराने निकाल रहा हूं। उसमें एक सवाल है। गायनको नयी तालीममें स्थान है ही। गायनमें स्वर ज्ञान आता है वह होना चाहीये।

बापुके आशीर्वाद

मूल पत्रकी माइक्रोफिलमसे। सौजन्य: राष्ट्रीय अभिलेखागार। प्यारेलाल पेपर्स से भी; सौजन्य: प्यारेलाल

३७६. पत्र: ओमप्रकाश गुप्तको

३० मई, १९४५

चि० ॐ प्रकाश,

तुम्हारा सुंदर खत मेरे सामने है। आज पुराने खतोंको समाप्त कर रहा हूं। तुम्हारा अच्छा चलता होगा। मेरे आने के बाद क्या करना है मुझे बताओ।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी नकलसे: प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य: प्यारेलाल

१. देखिए पृ० २०९।

३७७. पत्र : लक्ष्मीनारायणको

महाबलेश्वर
३० मई, १९४५

चि० लक्ष्मीबाबू,

चि० शशीके विवाहके बारेमे १३ मईको लिखते हो। खत १७ को मिलता है। विवाह २१ को। उसी रोज मै लिखु तब शायद खत मिले। लेकिन मै तो खत आज ही पढा सका। काम इतना। कुछ परवा नही। विवाह तो गया। तो भी मेरे आशीर्वाद वरवधूको दे दो। मै आशा करता हू कि दीक्षामे सपूर्णतया उत्तीर्ण होगे।

बापुके आशीर्वाद

[पुनश्च :]

पंचगनी लिखो।

श्री लक्ष्मीनारायण
खादी भंडार, नया बाजार
मजफरपुर (बिहार)

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

३७८. पत्र : श्रीकृष्णदास जाजूको

महाबलेश्वर
३० मई, १९४५

भाई जाजूजी,

तुमारे ता० १५का खतको आज ही पहोचता हूं।

काश्मीर कर्ज करना अच्छा नही लगता। शर्त कठोर लगती है। पाच साल देने को इन्कार करते हैं। पुरानेका सूत देखने मे हर्ज नहीं पाता हूं। लेकिन हम वगैर कर्जके चला सके तो अच्छा है। यह तो निजी राय हुई। अगर पैसा उस शर्तसे लेने में आप सम्मत है और हमारे काश्मीरवाले भाई चाहते हैं और हम दूसरी तरह पैसे नही दे सकते है तो कर्ज कर लो। जब लेना ही है तो और मेरे दस्तखतकी जरूरत पडेगी तो मै दूगा।

बापुके आशीर्वाद

[पुनश्च :]

कागजात वापिस [कर रहा हूं।]

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

३७९. पत्र : रामस्वामीको

३० मई, १९४५

चि० रामस्वामी,

तुमारे दो खतका उत्तर मैंने नही दिया है। कारण काम।

पी० का उत्तर देने की आवश्यकता नही। एप्रिल मे के पैसे मील गये होंगे। मुझे दुःख है कि कुछ अव्यवस्था हो गई। कारण मैं ही हूं। तुमारा अनिश्चय हुआ तब तुमारे प्रति आश्रमका धर्म क्या है उसका शीघ्र निश्चय मैं नहीं कर सका हुंगा। मुझे ठीक तो स्मरण नही है तुमारे मातपीताको थोडासा भी दुःख दीलमें हुआ उसका मुझे दुःख है।

सच्ची और शुद्ध आकांक्षा गरीबको ही होती है। वह उसे ऊंचे ही ले जाती है। राक्षस या असुरके हाथमें डालती है।

डेविल ऍंड द डीप सी' का यह अनुवाद है। तुमारा वचन ठीक नहीं है। जब शैतानके हाथमें जाना पडे ऐसा लगे तब उस कामको ही छोडना चाहीये। मैंने इस वारेमें तुमको कुछ ज्यादा कहना उचित नही माना है। तुमारा कर्तव्य तुमारे ही समज लेना चाहिये।

तुमारे पैसेसे प्राप्त होती है वह ख्याति चाहीये तो जमीदारका दोष मत निकालो। वे भी भले बुरे रहते हैं। जैसे गरीब भी। सब गरीब भले नहीं होते। सब धनिक बुरे नहीं। नये जीवनमें प्रवेश करते हो तो मौलिक वस्तुका विचार अंतरसे करो।

मेरी यह वोली समजने में मुसीबत नहीं होगी। तुमारे हिंदुस्तानी बोलना लिखना समझना चाहिये। मुझे लिखा करो। मुझे पंचगनी लिखो।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. यह अंग्रेजीमें लिखा है।

३८०. प्रस्तावना : 'वर्णव्यवस्था' की[1]

यह पुस्तक फिरसे पढ़ने की मेरे पास फुर्सत नहीं है। फिरसे पढ़ने की इच्छा भी मैं नही रखता। मेरे पास दूसरा बहुत काम है।

मेरी धारणा है कि मनुष्य रोज आगे बढता है या पीछे हटता है, कभी एक जगह स्थिर नही रहता। समस्त संसार गतिमान है। इसमे कोई अपवाद नही है, कोई चीज इस नियमसे परे नही है। इसलिए अगर मै यह दावा करूँ कि मै जैसा कल था, वैसा ही आज हूँ या वैसा ही रहूँगा, तो यह दावा झूठा है। मुझे ऐसा मोह भी नही रखना चाहिए।

यह सही है कि मेरे लेख या वचन ऐसे होने चाहिए, जिनसे किसीको कोई भ्रम न हो। मै ऐसा न लिखूँ, जिसके दो या ज्यादा अर्थ हो सके। अर्थात् तात्पर्य यह है कि मेरा लिखना, बोलना और आचरण सत्य और अहिंसाको नजरमे रखकर ही हो। मै कह सकता हूँ कि जबसे मैंने अपनी माँको वचन दिया, तभीसे मै ऐसा करता आया हूँ। सच पूछा जाये तो जबसे मै समझने लगा, तभीसे मै सत्यका पुजारी रहा हूँ।

लेकिन इसका अर्थ यह नही है कि सत्य और अहिंसाको मैंने पूरी तरह देख लिया है, या आज भी देखता हूँ। सत्य और अहिंसा मुझे रोज ज्यादासे-ज्यादा साफ दिखाई दे रहे है। ऐसी मेरी मान्यता है। इसलिए वर्णाश्रमको जैसा मै आज देखता हूँ, वैसा ही मैंने उसे हमेशा देखा है, यह नही कहा जा सकता। वर्ण और आश्रम हिन्दू धर्मकी देन है, ऐसा मैंने कहा है। और आज भी मै अपने इस कथनपर कायम हूँ। परन्तु मेरी मान्यताके न तो वर्ण रहे और न आश्रम। दोनोका पालन धर्मके रूपमे होना चाहिए। लेकिन कह सकते है कि इनमे आश्रम तो आज गायब ही हो गये है। वर्ण केवल अधिकारके रूपमे देखने मे आते है। ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य होने का दावा ही अहकार है। जहाँ धर्म हो, वहाँ अहकार कैसा? शूद्रकी तो गिनती ही कहाँ है? शूद्र अर्थात् नीच। और अतिशूद्र या अछूत अर्थात् नीचसे भी नीच। इसे धर्म नही, अधर्म कहना चाहिए।

'गीता' के चार वर्ण आज कहाँ है? वर्णसे जाति अलग चीज है। जातियाँ असंख्य है। जातियोके लिए 'गीता' मे या दूसरे ग्रन्थोमे कोई आधार है सो मै नही जानता। 'गीता' मे चार वर्ण बताये गये है और वे गुण तथा कर्मके आधारपर है। चार तो उदाहरणके तौरपर है। इसलिए चारसे ज्यादा भी कह सकते है और कम भी। आज तो एक ही वर्ण है और वह शूद्रका कहिए या अतिशूद्रका, हरिजन

१. मूल गुजराती प्रस्तावनाका शीर्षक "मेरे लेख पढ़ने की कुंजी" था।

का या अछूतका। इसमे मुझे तनिक भी सन्देह नही कि जो वात मैंने कही है वह सही है। यह वात सव हिन्दुओको समझा सकूँ, तो हिन्दू जातिमे होनेवाले सव झगड़े मिट जायें। हिन्दू, मुसलमान आदिके साम्प्रदायिक झगडे भी मिट जायें और हिन्दुस्तानकी जनता दुनियामे वहुत वड़ा दर्जा पा जाये। जिस तरह ऊँच-नीचपन मानना धर्म नही, अधर्म है, उसी तरह रग-द्वेष अधर्म है। ऊँच-नीचपन या रंग-द्वेष यदि किसी शास्त्रमें देखने में आये तो वह शास्त्र नही है। शास्त्र धर्मके विरुद्ध कोई वात कह ही नही सकता, ऐसा निश्चय करके ही मनुष्यको शास्त्रको छूना चाहिए।

जातपाँतके भेदने इतनी जड़ जमा ली है कि उसके छीटे मुसलमान, ईसाई आदि सभी धर्मावलम्बियोंको लगे है। इतना तो सही है कि सभी धर्मोमें थोड़ी-वहुत वाड़ावन्दी रही है। इसपर से मै इस निर्णयपर पहुँचा हूँ कि मनुष्य-मात्रमे यह दोप मौजूद है। शुद्ध धर्मसे ही इस दोपको धोया जा सकता है। ऐसे वाड़े और ऊँच-नीचपन मैंने तो किसी धर्मग्रन्थमें नही देखे। धर्मकी दृष्टिसे मनुष्य-मात्र समान है। ज्यादा पढ़ा हुआ, ज्यादा वुद्धिवाला या ज्यादा धनवान आदमी अनपढ़, मूर्ख या गरीवसे ऊँचा नही है। अगर वह संस्कारी यानी धर्मसे शुद्ध हो चुका है, तो अपनी पढ़ाई, अपनी वुद्धि और अपने धन-वैभवसे अपने अनपढ़, अज्ञानी तथा गरीव भाई-वहिनोकी सेवा करेगा, और उसने जो-कुछ पाया है, उसे अपने भाई-वहिनोको अर्थात् समस्त संसारको देने की कोशिश करेगा। यदि धर्मकी यह स्थिति है, तो इस अधर्मकी स्थितिमें विशेप रूपसे और स्वेच्छया अतिशूद्र वनने मे ही धर्म है। अपने पासकी सम्पत्तिका वह मालिक नही, वल्कि न्यासी अथवा रक्षक है। उसका उपयोग वह जगतके लिए करेगा। अपने मेहनतानेके रूपमें उसके हिस्सेमें जो आयेगा वह उसीका उपभोग करेगा। यदि ऐसा हो तो न कोई गरीव हो, न कोई अमीर। ऐसी व्यवस्थामें सहज ही सव धर्म समान समझे जायेंगे। तात्पर्य यह है कि धर्मके, जात-पाँतके, अमीर-गरीवके भेद और झगड़े मिट जायेंगे।

यहाँ एक और वातका विचार करना उचित होगा। परतन्त्र जातिका एक सर्वोपरि धर्म यह है कि मौका मिलते ही पहले उसे अपनी गुलामीकी वेड़ियाँ तोड़ डालनी चाहिए। जो परतन्त्र है, वे जवरदस्ती वनाये गये अतिशूद्र हैं। फिर भले ही उन्हें पदवियाँ प्रदान की गई हों, न्यायाधीश वनाया गया हो अथवा चपरासी वनाया गया हो या वे राजा हों या रंक। जितनी ज्यादा उपाधियाँ, उतनी ही परा-धीन राज्यमे अधिक परतन्त्रता। इस तरह आजादीको धर्मके साथ जोड़ने और धर्मको सर्वव्यापी रूप देने से पिछले अनुच्छेदमें वताई हुई स्थिति सहज ही उत्पन्न होनी चाहिए।

जो अपने धर्मका पालन करना चाहते है वे इसके झगड़ेमें नही पड़ेंगे कि यह सुन्दर स्थिति आज आयेगी या कल। और अगर वहुत सारे लोग उस धर्मका पालन करे तो केवल परतन्त्रता ही नही मिटे, वल्कि हमारी स्वतन्त्रतामें भी अन्धाधुन्धी न रहे। मेरे सपनोंका स्वराज्य यही है। इसकी मुझे लगन है। इसे प्राप्त करने के लिए मैं जीना चाहता हूँ, और मैं ऐसी कोशिश कर रहा हूँ कि इस प्रयत्नमे ही मेरी हर साँस निकले।

पाठकको यदि मेरे इन विचारोंके खिलाफ इस पुस्तकमें कुछ भी दिखाई दे, उतना सुधारकर पुस्तक पढ़े।

मेरी मेहनत बचाने के लिए मेरे विचारोका जिन्होने खुलासा किया है और इसके लिए खूब मेहनत की है, उन्होंने मेरे आजके विचारोके बारेमें टिप्पणी भेजी है। श्री किशोरलालका उद्देश्य यह है कि अगर मैं इस टिप्पणीपर दस्तखत कर दूँ, तो इससे मैं अपना समय बचा लूँगा। उसमे संशोधन-परिवर्तन करने की तो मुझे सहज ही छूट थी, मगर उसे पढ़कर मैंने देखा कि अपने स्वभावके अनुसार श्री किशोरलाल पूरी पुस्तक पढ गये, उसपर उन्होंने विचार कर लिया और मेरे मौजूदा विचारोकी साक्ष्य के रूपमे एक टिप्पणी तैयार कर दी। यद्यपि मैं उसपर हस्ताक्षर नही कर सकता, फिर भी उसे इसके साथ प्रकाशित करना उचित है। उसमे और मेरी कुजीमें विरोध नही है। श्री किशोरलालकी टिप्पणी पुस्तकको ध्यानसे पढ़कर लिखी गई है, इसलिए शायद पाठकको वह अधिक सहायक हो सके। सत्यकी जय हो।

मोहनदास करमचन्द गांधी

महाबलेश्वर, ३१ मई, १९४५

[गुजरातीसे]
वर्णव्यवस्था, पृ० ५-८

३८१. पत्र: मणिलाल गांधीको

३१ मई, १९४५

चि० मणिलाल,

तेरा पोस्टकार्ड मिला। इसका उत्तर किस पतेपर भेजा जाये, यह तूने नही लिखा। जो लगातार घर बदलता रहता हो, उसे अपना नया पता पत्रके शीर्षपर या अन्तमे जरूर लिखना चाहिए।

सुशीला कई वर्षोके बाद यहाँ आई है, इसलिए उसे सभी सगे-सम्बन्धियोसे मिल लेने की लालसा लगी है। हो सकता है कि इसीलिए वह गर्मीकी परवाह न करती हो। लेकिन मुझे तो बच्चोकी पडी है। ये लस्त-पस्त न हो जाये, तो गनीमत मानूँ। मैं आज पचगनी जा रहा हूँ। भीड तो वहाँ होगी ही। लेकिन मैंने बच्चो समेत तुम दोनोके समावेशकी गुजाइश रखी है। एक और मकान प्राप्त करने की तजवीज भी मनमे तो है। फिर भी, क्योकि अब बम्बईमे हवा चलनी शुरू हो गई है, वहाँ भी ठडक ही होगी। बम्बईमें तुम सब एक महीना बिता सकते हो, इस बीच वहाँ काफी ठंड रहेगी।

सम्भव हो तो जयरामदाससे फिर मिलना।

राजाजी सम्बन्धी लेख मैंने ध्यानपूर्वक नही पढा। तू उनका विचार मत कर। वे जो भी करे, मुझे उसका दुःख नही होता। वे अपने ढगसे चलते है।

अखवारसे सवकुछ सच ही नहीं होता। मेरे विचार तो तू जानता है। असल चीज तो आचरण ही है न?

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ४९५२) से

३८२. पत्र: किशोरलाल घनश्याम मशरूवालाको

महाबलेश्वर
३१ मई, १९४५

चि० किशोरलाल,

तुम गजब करते हो। तुम्हारी प्रस्तावना[1] अथवा उसे जो-कुछ कहो, वह मैं पढ गया। ठीक है। लेकिन मेरा विचार इस ढंगसे लिखने का नहीं था। मैं इस झंझटमें नहीं पड़ता और पाठकोंको भी नही डालता। मैं तो अपने लेखोंको पढने की कुंजी देने के लिए प्रयत्न करूँगा। तुमने तो [मेरे] लेखोंके आधारपर लिखा है इसलिए यदि यह लेख वैसे-का-वैसा तुम्हारे नामसे प्रकाशित हो तो कदाचित् ठीक हो। यह तो मुझे मेरे लिख चुकने के बाद मालूम होगा।

परिचर्याके बारेमें समझा। इसमें ऐसा है। मैंने तो लिखा है न कि शब्दोका मनुष्यकी तरह विकास होना चाहिए। जैसे-जैसे ज्ञान बढ़ता जाता है वैसे-वैसे शब्दार्थ विस्तृत होना चाहिए। आलोचकों द्वारा दिये अर्थसे हम क्यो चिपके रहे? इसके बावजूद तुम जो कहते हो भाषाकी दृष्टिसे वही उचित है। दुःख यह है कि मै कभी भाषाशास्त्री नही रहा और इसलिए जिस समय मनमें जो भाव आया वैसा लिख दिया। अब तो घूमने जाने का समय हुआ इसलिए अब बस करता हूँ।

बापूके आ[शीर्वाद]

[पुनश्च:]

साथका पत्र[2] तुम्हे भेजने की हिम्मत कर रहा हूँ, क्योकि मणिलालने अपना पता नही दिया।

गुजरातीकी नकलसे: प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य: प्यारेलाल

१. वर्णव्यवस्था की
२. देखिए अगला शीर्षक।

३८३. पत्र : मंगलदासको

महाबलेश्वर
३१ मई, १९४५

भाई मंगलदास,

यह मेरी पावती है। आपकी हुडी मिल गई है। और कायदेके अनुसार जमा कर दी जायेगी।

मो० क० गांधीके आशीर्वाद

शाह मंगलदासकी पेढी
प्रकाशक और विक्रेता
भागातालाव
सूरत

गुजरातीकी नकलसे प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

३८४. पत्र : आर० वी० पण्डितको

महाबलेश्वर
३१ मई, १९४५

भाई पडित,

तुम्हारे खत अच्छे नही है। एक हिन्दुस्तानीमे दूसरा अग्रेजीमे क्यो? तुमपर जो इलजाम लगाया गया है उसमे मैंने कभी रस नही लिया है न बहुत सुना है। कलाकार अपनी कला हिन्दमाताको अर्पित करे उसमे से द्रव्योपार्जन न करे। पदर विध योजनामे से जो चीज जिस जगह लागू हो सकती है उसे लेवे। तुम्हारे रोज एक घंटा चर्खा चलाना, पूनी अपने हाथसे, तुनाई धनुष्यसे बनाना।

बापूके आशीर्वाद

आर० वी० पडित
द्वारा डा० पी० जी० घार्से
महाबलेश्वर

पत्रकी नकलसे प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

३८५. पत्र : अमृतलाल नानावटीको

[महावलेश्वर][1]
३१ मई, १९४५

चि० अमृतलाल,

तुम्हारा पत्र मुझे अभी-अभी मिला। सब-कुछ तो जब मुझसे मिलो तब कहना। सम्मेलनसे निकल जाने के इरादेके बारेमें मैंने टण्डनजीको लिखा है।[2] रामदासको मैंने पत्र तो लिखा है। अब वह स्वस्थ हो जाये। श्री सेनके बारेमें जो तुमने बताया वह मैं समझ गया हूँ। मैं जानता हूँ कि वह बहुत सेवा कर सकते हैं और ऐसी ही सेवा-भावना रखनेवाले हैं। तुम्हें वहाँ जितना अनुभव मिले, प्राप्त करना।

आज पंचगनी पहुँचूंगा।

तुम सबको
बापूके आशीर्वाद

श्री अमृतलाल टी० नानावटी
मार्फत श्रीमती यशोधरा दासप्पा
बोण्टीकोप्पल, मैसूर

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

३८६. पत्र : डॉ० पी० सुब्बारायनको

पचगनी
३१ मई, १९४५

प्रिय सुब्बारायन,

तुम्हारा पत्र मिला। तुम जो-कुछ कहते हो मैं वह समझता हूँ और मानता हूँ। मेरा खयाल है कि मैंने तुम्हें बता दिया था कि मोहन आया था और चला गया। उसने फिर मेरे मनपर अपनी अच्छी छाप छोड़ी। मैंने उसे अपने विचारोंका

१. साधन-सूत्रमें यहाँ "पंचगनी" है।
२. देखिए पृ० १८७।

बनाने की कोशिश भी नही की। मैंने उसे केवल यह देखने दिया कि मुझे उससे कितना स्नेह है।

स्नेह।

बापू

डॉ० सुब्बारायन
व्हाइल्स गार्डन
रायपेट्टा
मद्रास

अंग्रेजीकी नकलसे . प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

३८७. पत्र : रामदेवको

पंचगनी
३१ मई, १९४५

भाई रामदेव,

पंडित विनायकरावका उत्तर इ० मिला है। मै सब ध्यानसे पढ रहा हू। हो सके सो कर रहा हू।

आपका,
मो० क० गांधी

श्री रामदेव
द्वारा प० विनायक राव, बैरीस्टर
जामबाग
हैदराबाद

पत्रकी नकलसे . प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

३८८. पत्र : धर्मदेव शास्त्रीको

पंचगनी
३१ मई, १९४५

भाई धर्मदेव शास्त्री,

तुमारा खत मिला। जितनी जल्दी हो सकता है इतना जल्दी किया जायेगा। यू० पी० की कमिटिसे पता आने का है और कुछ प्रश्न भी वापाने पूछा है ऐसा स्मरण है। हां तुमारा काम[1] कठिन है। ईश्वर तुमको सफलता दे। जिसके पास धर्म है उसका धन तो दास है।

बापुके आशीर्वाद

श्री धर्मदेव शास्त्री
अशोक आश्रम
कालसी

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

३८९. टिप्पणी : 'ग्रामोद्योग पत्रिका' के लिए

मई, १९४५

मुझे एक सज्जन कहते है, जैसे तुमने खादीका कहा है ऐसे ही अन्य ग्राम-उद्योगोके बारेमे कहो।

खादी एक ही व्यापक उद्योग है। दूसरे मैंने उसे सूर्यकी उपमा दी है।[2] अन्य उद्योगोंको ग्रहकी। सूर्य तो एक ही है—ग्रह अनेक हैं और नये मिलने जाते हैं। आज तो इतना करो—कागद्, चक्कीका आटा, हाथछड चावल, घानीका तेल, जिंदा मक्खीसे शहद, मृत जानवरका चमडा और उसकी चीजे जो गांवोंमें बनती है, ग्राम छड़ी, ग्राम बुनाण इ०।

१. धर्मदेव शास्त्री मसूरीके पास नगथाटमें अशोक आश्रममें जौनसार-बावरके आदिवासियोंके बीच काम कर रहे थे। उन्होंने कस्तूरबा गांधीकी स्मृतिमें एक पाठशाला और औषधालय आरम्भ किया था। वे १९४२ में गिरफ्तार कर लिये गये थे और जेलसे छूटने के बाद आश्रमको ग्रामोद्योग प्रशिक्षण-केन्द्रके रूपमें विकसित कर रहे थे।

२. देखिए पृ० १५८-५९।

सच्ची बात तो यह है कि खेती तो देहातोमें ही होती है इसलिये अनाज और फल और उसमें से बनती चीजें भी देहाती हो सकती हैं। साराश जब देहात समृद्ध होंगे तब शहर देहातपर निर्भर रहेंगे। समजो की टुथब्रश शहरी है, दतून देहाती है और बेहतर है, टुथ पावडर शहरी मसी या चाक या नमक देहाती।

उसी तरह जब मन देहाती होगा असंख्य चीजें देहाती मिलेगी।

टिप्पणीकी नकलसे प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल। **ग्रामोद्योग पत्रिका,** भाग १, पृ० ३४३ से भी

३९०. पत्र : चिमनलाल नरसिंहदास शाहको – अंश

मई, १९४५

चि० चिमनलाल,

तुम्हारी चिट। मैंने चाँद सम्बन्धी पत्र सुशीलाबहिनको दे दिया। उसके जाने के वाद मैं यह लिख रहा हूँ। डॉ० आडसका इलाज जारी रखो। हठ मत करना। वह जो कहे ध्यानपूर्वक सुनना। . . .

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० १०६३०) से

३९१. तार : नानजी कालिदासको

अविलम्बनीय

पचगनी
१ जून, १९४५

सेठ नानजी कालिदास
पोरबन्दर

यहाँ आने के लिए कृपया स्वास्थ्यका वलिदान न करें। शान्ताबहिन[1] टोलीकी देखभाल कर रही है।

बापू

अंग्रेजीकी नकलसे प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य प्यारेलाल

१. "दिलखुश", पंचगनी में गांधीजी की मेजवान

३९२. तार : एन० जी० रंगाको

पंचगनी
१ जून, १९४५

प्रोफेसर रंगा
मार्फत एस० के० पाटिल
३८१, सैंडहर्स्ट रोड
वम्बई

काम वहुत अधिक है। भीड़ है। वेहतर होगा कि पत्र लिखो अथवा पन्द्रहके वाद आओ।

बापू

अंग्रेजीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

३९३. पत्र : कंचन शाहको

१ जून, १९४५

चि० कंचन,

तेरा पत्र मिला। तू मजेसे सेवाग्राम जा। इसमें विलकुल कोई वुराई नहीं है। लेकिन इसके वाद जो-कुछ भी वोलना हो, खूव तौलकर वोलना। और फिर उसका पालन किया जाये, चाहे फिर मरना ही क्यों न पड़े। तुझे तार भेजा गया है कि तुझे खादी प्रतिष्ठान जाना चाहिए। अगर तेरा स्वास्थ्य वहाँ ठीक रहे, तो वहाँ रहकर सीखना। वहाँ सीखने को वहुत है। लेकिन अगर वह जगह तुझे पसन्द न आये तो अकेली वर्धा चली जाना, और खूव सोच-विचार करके वहाँ किसी काममें लग जाना।

मुझे लिखना।

वापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ६१८) से

३९४. पत्र : अमृतलाल वि० ठक्करको

१ जून, १९४५

बापा,

तुम्हारा लम्बा पत्र मिला। इसमे रोष नही है, केवल व्यवहार है। व्यवहार ही यह बताता है कि तुमने जो पद ग्रहण किया है वह छोडना नही चाहिए। गोखले जब इग्लैंडसे वापस लौटे थे और उन्होने उदारतापूर्वक माफी माँगते हुए जो पत्र लिखा था दक्षिण आफ्रिकामें वह पत्र मैने कई बार पढा था।[1] उसमे एक वाक्य इस प्रकार था, "जिस पदको मैंने किसीके दबावसे ग्रहण नही किया है, किसीके दबावमें आकर उस पदका त्याग कैसे किया जा सकता है?" इसी तरहकी तुम्हारी स्थिति है। फर्क केवल इतना है कि तुमपर तो किसी तरहका दबाव ही नही है। इसलिए पदका अथवा मुफ्तकी चाकरीका त्याग करना कायरता ही मानी जायेगी और जो तुम्हे कायर कहे उसकी तो जीभ ही कट जायेगी। और फिर इस चाकरीको छोड़ने का अर्थ होगा मृदुलापर अर्थात् स्त्री जातिपर दबाव डालना। ऐसा तुम क्यो करो? जब मै कहूँ तब और मै जो कहूँ वह तुम्हे अच्छा लगे, तब इसे छोड़ना। बात यह है कि मृदुला नही चाहती कि तुम कुछ छोड़ो? मै चाहता हूँ कि जब वह इतनी कुशल हो जाये कि हम सब छोड सके तभी हम सबको छोड़ देना चाहिए।

इस बीच हम उसे जाने न दें और उसका उत्साह बढायें। तुम मेरे जिन शब्दोको उद्धृत करते हो वही सच है। जबतक तुम्हारी स्वतन्त्र मुहर नही लगती तबतक मैंने उसके किसी कामको पास किया है, ऐसा उसे नही मानना चाहिए। लेकिन यदि वह ऐसा न करे तो तुम्हे भूल जाना चाहिए, लेकिन मनमे जो निश्चय किया हो वह करना चाहिए। २,००० रुपयेके बारेमें मुझे स्पष्ट रूपसे याद है कि मैंने उसे कहा था कि जबतक बापा स्वतन्त्र रूपसे विचार करके उसपर अपनी सहमति नही देते, तबतक उसे कुछ पास हुआ नही समझना चाहिए। दो-तीन बहिनो को रखने की बात हो तो उन्हे रहने देने के पक्षमे तो मै अवश्य हूँ, लेकिन यदि तुम इसपर भी अपनी सहमति न दो तो मैं भी वैसा ही करूँ।

१. गोखलेने १८९७ में इंग्लैंडमें वेल्बी कमीशनके समक्ष कुछ वक्तव्य दिये थे। इनका आधार पूनासे प्राप्त कुछ पत्र थे जिनमें महामारीके कीटाणु-ग्रस्त घरोंको अनिवार्य तौरपर खाली करने के लिए तैनात किये गये ब्रिटिश सैनिकोंके आचरणकी आलोचना की गई थी। लेकिन बादमें जब पत्र-लेखकोंने गोखले द्वारा लगाये गये आरोपोंको सिद्ध करने के लिए आवश्यक साक्ष्य देने से इंकार कर दिया तो गोखलेने अपने वक्तव्य वापस ले लिये और उनके लिए काफी क्षमा-याचना की।

मुझे तुम कष्ट देते हो, ऐसा नहीं लगता। चाहे जो हो अब कष्टोंका अन्त होगा। मैं यह करूँगा।

अन्तमें, ऑफिसका प्रश्न रह जाता है। बहुत-कुछ तो तुम्हारे हाथमें है।

भावनगर और काठियावाड़के बारेमें देखूँगा। अनन्तराय[1] यहीं है, यह ठीक है। तुम्हें यदि वायु-परिवर्तनके लिए आना हो, तभी आना। मुझे समझाने अथवा समझने के लिए नहीं। और फिर अभी तो तुम्हें [भारत] सेवक समाजके लिए काम करना है। वह खुशीके साथ करो। मुझसे बन पड़े तो मैं तुम्हारी सहायताके लिए भी आऊँ। ऐसी तो कितनी ही सद्इच्छाओंको मैं दबा देता हूँ। अब तो बहुत हुआ।

बापू

भारत सेवक समाज (सर्वेंट्स ऑफ इंडिया सोसाइटी)
पूना

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

३९५. पत्र : कान्तिलाल गांधीको

पचगनी
१ जून, १९४५

चि० कान्ति,

तेरा २८ अप्रैलका पत्र आज ही मिला, क्योंकि कनु राजकोट आदि घूमकर आज ही आया। सरस्वतीके पत्र परसे मैं समझता हूँ कि तुम लोग अभी त्रावणकोर में ही होंगे। तथापि मैं यह पृथुराजके पतेपर ही भेजता हूँ। हरिलाल यदि सुधरेगा तो सारा यश तुम दोनोंके प्रेमको ही मिलेगा। भगवान करे ऐसा ही हो।

"किसी अन्यायकी वह व्याख्या सबसे सही होगी जो उसका लेखक करता है, बशर्ते कि वह व्याख्या लेखनके व्याकरण और वाक्य-विन्याससे संगत हो।"[2] जिन शब्दोंको मैंने रेखांकित किया है वे मैंने जोड़े हैं। दूसरा अर्थ तो बेकार है।

मूर्तिपूजाको मैं प्रोत्साहन नहीं देता यह तो सही है, लेकिन यह भी उतना ही सही है कि उसके सम्बन्धमें मैं उदासीन हूँ।

आज कानम भी आया है। वह खूब बढ़ा है।

तुम सबको
बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. भावनगरके दीवान अनन्तराय पट्टणी
२. यह वाक्य अंग्रेजीमें है।

३९६. पत्र : किशोरलाल घनश्याम मशरूवालाको

पंचगनी

१ जून, १९४५

चि० किशोरलाल,

तुम्हारा लेख मै पढ गया। मेरी 'कुजी' मे तुम उसका उल्लेख देखोगे।[1] वह अच्छी लगे तो अपना लेख अपने नामसे प्रकाशित होने देना। इसमे मैने सर्वनाम बदले है और थोड़ा-सा हिस्सा काट डाला है, यह बात तुम सहज ही समझ जाओगे।

अपनी 'कुजी' भी मैने तुम्हारी पसन्दके लिए भेजी है। मै तो कलसे ही इस कामके पीछे पड़ा हुआ हूँ। और यह आज अभी-अभी पूरा हुआ है। यदि तुम मेरे लेखमे सशोधन सुझाओगे तो वे मुझे देखने पड़ेगे। ऐसा हो तो उसे मुझे वापस भेजना। यदि उसके लिए समय न हो और यदि पुस्तक मेरे लेख (कुंजी) के बिना प्रकाशित हो तो उसमे मै कोई हर्ज नही देखता। तुम्हारा सार चला जाये, इसे मै पर्याप्त समझूंगा। जैसा उचित जान पड़े, वैसा करना।

बापूके आशीर्वाद

किशोरलाल मशरूवाला
भारत भुवन
१०वाँ रास्ता, खार

गुजरातीकी नकलसे. प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

३९७. पत्र : मर्चेन्टको

पचगनी

१ जून, १९४५

भाई मर्चेन्ट,

यदि तुम्हे मुझसे मिलना ही है तो जरूर आ जाओ। मै तो अपने कामसे सिर नही उठा सकता। मुझे कही ले जाने के लिए तो नही कहोगे। बीमार कहा जानेवाला व्यक्ति प्रार्थनामे अथवा ऐसी किसी जगहमे मुश्किलसे ही जा पाता है।

बापूके आ[शीर्वाद]

गुजरातीकी नकलसे प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य · प्यारेलाल

१. देखिए पृ० २३२-३३।

३९८. पत्र : मंगलदास पकवासाको

पचगनी
१ जून, १९४५

भाई मगलदास,

तुम्हारी तबीयत बिलकुल ठीक होगी। इसके साथ नैसर्गिक उपचारवाला दस्तावेज [ट्रस्ट डीड] है। इसमें किये गये सुधार इसीमें हैं तो जरूर, लेकिन अलगसे टाइप करवाकर इसके साथ रख रहा हूँ। उन्हे जोड़कर जो संरक्षक यहाँ हैं उनके हस्ताक्षर ले लेना। घनश्यामदास जब आयेगा तब हस्ताक्षर करेगा। उद्देश्योंमें जो सुधार किया गया है वह घनश्यामदासके साथ हुई बातचीतसे बाहर है। इसलिए उसकी अनुमति प्राप्त कर ली है। यदि तुम्हे उसे देखने की जरूरत हो तो मैं भेज दूंगा।

मैं यह जरूर चाहूँगा कि इस दस्तावेजकी हिन्दी करवाकर इसे हिन्दीमें ही पजीकृत (रजिस्टर्ड) किया जाये तो अच्छा होगा। यदि वहाँ इसकी हिन्दी न करवाई जा सके तो इसे पक्का करके मेरे पास भेजना, मैं करवा दूंगा। मैंने तो जैसी ढील की वैसी तुम न करो, ऐसी मेरी इच्छा है।

बापूके आ[शीर्वाद]

श्री मगलदास पकवासा
डुंगरसिंह रोड
मलाबार हिल
बम्बई

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

३९९. पत्र : नृसिंहप्रसाद कालिदास भट्टको

पंचगनी
१ जून, १९४५

चि० नानाभाई,

बापाको तुमने कैसा पत्र लिखा है? कमेटीके सदस्यके रूपमें तुम्हें जो करना हो सो करो। भावनगरकी ही मुश्किल है न? उसका हल यहीं कर लेने का मेरा इरादा है। छोटे पट्टणी यहीं हैं। उनके पास नरहरिको भेजता हूँ। आवश्यकता हुई

तो वह मुझे मिलेंगे। राज्यमें जो पैसे इकट्ठे हुए हैं वे उसके गाँवोंमें उनके हिस्से के अनुसार हमारी मार्फत खर्च किये जायेंगे। यदि राज्य सरकार ऐसा नहीं करने देगी तो पैसे पड़े रहेंगे। उसकी [अर्थात् राज्यकी] कमेटी बहुत हुआ तो पैसे वापस माँग लेगी। इसलिए हमारा रास्ता सीधा है। काम जरा पेचीदा है। थोड़ा समय लग सकता है, वह हमें सहन करना चाहिए। जहाँ लोकतन्त्र हो वहाँ समय लगता ही है। उसमें मैं कोई हर्ज नहीं देखता। उम्मीद है, तुम सबकी तबीयत अच्छी होगी।

बापूके आशीर्वाद

श्री नानाभाई भट्ट
ग्राम दक्षिणामूर्ति
डाकखाना आंबला
बरास्ता सोनगढ

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य . प्यारेलाल

४००. पत्र : सुशीला गांधीको

पचगनी
१ जून, १९४५

चि० सुशीला,

तेरा पत्र आया है। मणिलाल मुझे समाचार देता रहता है, सीता तो देती ही है। वह तो खूब घुलमिल गई है, यह बहुत अच्छा है। दूसरे बच्चे अभी तो सहन कर रहे हैं, यह भी ठीक है। जब तेरी इच्छा हो तब तू आ। मणिलाल भले अपनी पुस्तकोंका प्रबन्ध करे।

तुम सबको
बापूके आशीर्वाद

सुशीला गांधी
नानाभाई मशरूवाला
अकोला (बरार)

गुजरातीकी नकलसे प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य . प्यारेलाल

४०१. पत्र : तारा मशरूवालाको

१ जून, १९४५

चि० तारी,

पीछे पूरा लिखने के वाद तेरा पत्र पढा। चार काम करनेवालोमें तू सवसे ज्यादा मेहनती निकली, यह पढ़कर हँसी आई। मुझे यह दिखाये तव मानूँ। सुशीला कितनी दुष्ट है — अपने वुखारकी वात नही लिखती!!! सीताको तो पिछड़ना ही था। उसने ऐसी मेहनत कहाँ की है?

वापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

४०२. पत्र : अमृतलाल वि० ठक्करको[1]

पंचगनी

१ जून, १९४५

वापा,

तुमको मै लिख चुका हूं[2] कि हमारे पास जो दस लाखसे उपर पैसे है उसे सरकारी संवंध छोडकर किसी वेंक या पीढीमें छ मासतक या अधिक समयपर रख सकते हो।

मो० क० गांधी

ता० क०

ओफिसके वारे मै श्यामलालका खत पढा। मै जानता हूं कि वापा आफिस वर्धा ही चाहते है लेकिन नालवाडीमे मकान मिले तो? मैने तो सव खयाल करके ही इर्दगिर्दमें वढाया। लेकिन वापाको इतनी छूट न चाहिये तो मुझे हरकत नही है।[3]

श्यामलालजी
कस्तूरवा ट्रस्ट
सिंधिया हाऊस
मुंवई

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. सम्भवतः यह पत्र श्यामलालके पतेपर वादमें लिखे अंशकी ओर उनका ध्यान आकर्षित करने के लिए भेजा गया था।

२. देखिए पृ० २१३-१४।

३. देखिए पृ० २१६।

४०३. भाषण : प्रार्थना-सभामें[1]

पंचगनी
१ जून, १९४५

प्रार्थनाके बाद लोगोंके सामने हिन्दुस्तानीमें भाषण करते हुए महात्मा गांधीने उनसे हरिजन कोषके लिए चन्देकी अपील की।

पंचगनीमें दूसरी बार आने की चर्चा करते हुए उन्होंने कहा कि महाबलेश्वरमें एक महीने से अधिक ठहरने से मुझे कुछ फायदा हुआ है और अब मेरा विचार महीने-भर पंचगनीमें ठहरने का है। लेकिन ऐसा तभी हो सकता है जब मुझे निर्विघ्न रूपसे काम करने दिया जाये। जो लोग मुझसे मिलना चाहते हों, उन्हें पता होना चाहिए कि मेरे पास अपने दिन-प्रतिदिनके कामके लिए भी — जोकि अखिल भारतीय महत्त्वका है — पर्याप्त समय नहीं है। यह काम मैं ५० बरससे कर रहा हूँ।

आज तीसरे पहर कुछ नौजवान लड़के गांधीजी से मिलने आये, लेकिन उस समय वे उनसे मिल नहीं सकते थे। उन्होंने [गांधीजी से] पूछा कि उन्हें क्या तकलीफ है। उन्होंने जवाब दिया कि मैं ७६ वर्षका हो गया हूँ और तुम्हारी तरह नौजवान नहीं हूँ, लेकिन इसका यह मतलब नहीं कि मैं अपंग हो गया हूँ। मुझमें बल है। तभी तो मैं प्रार्थना तथा हरिजन-कार्य करने के लिए यहाँ उपस्थित हूँ।

[अंग्रेजीसे]
बॉम्बे क्रॉनिकल, २-६-१९४५

४०४. पत्र : मोहन कुमारमंगलम्‌को — अंश

२ जून, १९४५

जो भी कांग्रेसी नेता मेरे पास आता है, मुझे (भारतीय कम्युनिस्टोंके बारेमें) यही सब कहता है। मैं उनकी बातोंके आधारपर अपना निर्णय नहीं बनाऊँगा, परन्तु उनकी बातका मुझपर अनजाने प्रभाव तो पड़ता ही है जिससे मैं बचना चाहूँगा। मैं अपने मनमें उठते विचारोंको कहता जा रहा हूँ। जहाँतक (कम्युनिस्टोंसे सहयोग करने के बारेमें) एल० का सम्बन्ध है, मैं उससे सहमत हूँ। जहाँतक मेरा सम्बन्ध है, मैं सहमत नहीं हूँ, क्योंकि मुझे कम्युनिस्टोंके साथ-साथ काम करने में

१. प्रार्थना-सभा वाडीलाल आरोग्य-भवनके अहातेमें हुई।

कोई कठिनाई नही है। हर व्यक्तिको अपने अनुभवपर निर्भर करना चाहिए।

[अंग्रेजीसे]

महात्मा गांधी – द लास्ट फेज, खण्ड १, भाग १, पृ० ११०

४०५. पत्र : मीराबहिनको

पंचगनी
२ जून, १९४५

चि० मीरा,

तुम्हारा पिछले माहकी २७ तारीखका पत्र मिला। मैं आशा करता हूँ कि तुम्हारी दिल्ली यात्रा सफल रही होगी। ईश्वरका धन्यवाद है कि तुम्हारा स्वास्थ्य फिर ठीक हो गया है। आशा है कि व्यायाम-शिक्षकसे तुम्हे सन्तोष होगा।

स्नेह।

बापू

श्री मीराबहिन
किसान आश्रम
बहादराबाद डाकखाना, ज्वालापुर
हरिद्वारके पास, संयुक्त प्रान्त

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ६५०७) से। सौजन्य : मीराबहिन। जी० एन० ९९०२ से भी

४०६. पत्र : लेडी अब्बास अली बेगको

'दिलखुश'
२ जून, १९४५

प्रिय बहिन,

आपकी शुभकामनाओं और आमोंके लिए धन्यवाद, जिनके साथ आशा है कि मैं न्याय करूँगा। मैं यह देख लूँगा कि स्थानका नाम सुधार दिया गया है।

हृदयसे आपका,
मो० क० गांधी

लेडी अब्बास अली बेग

अंग्रेजीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

४०७. पत्र : अमृतलाल वि० ठक्करको

पचगनी
२ जून, १९४५

प्रिय बापा,

ये पत्र मैं पढ गया। फिलहाल मेरे कहने को कुछ नही रहा है। मै लिख चुका हूँ कि रामेश्वरीबहिन भले ही छोटी-सी नियमावली बनाये और मुझे भेजे।

बापू

गुजरातीकी नकलसे प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य प्यारेलाल

४०८. पत्र : अमृतलाल वि० ठक्करको

पचगनी
२ जून, १९४५

बापा,

तुम्हारी चार मासकी तालीमके खर्चकी टीकाके बारेमे समझा। मुझे ऐसा याद पड़ता है कि १७५ रुपयेका वेतन केवल एक ही व्यक्तिका है। ७२ रुपयेके बजाय ११० [कर] दो। लडकी मिले तो तुम्हे रख लेनी चाहिए। इसमे हमारे सब विभाग भी शामिल है। जान पडता है कि इस खर्चके बारेमे तुम्हारी मृदुलाके साथ बातचीत नही हुई। तालीमी शिक्षकके सम्बन्धमे मैंने आपत्ति उठाई थी। लेकिन इतनी बडी संख्याको एक शिक्षक नही सँभाल सकता, ऐसा हमारा खयाल है। खर्चकी राशि उदारतापूर्वक तय की गई है, इसके पीछे विचार यह था कि यदि खर्च बढ़ जाये तो और माँगना न पडे। तुम्हारे २५ वर्षके अनुभवके साथ इसकी तुलना करना कदाचित् उचित न होगा। मेरा अनुभव सरकारी विभागका न होने के कारण भिन्न ठहरता है। लेकिन इसकी फिक्र नही। ट्रस्टीको जो जाये वह हमारी तरफसे अन्तिम होना चाहिए। अपनी टिप्पणी यदि मृदुलाको भेजो तो ठीक होगा।

बापू

श्री ठक्कर बापा
भारत सेवक समाज (सर्वेंट्स ऑफ इडिया सोसाइटी)
पूना

गुजरातीकी नकलसे · प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य · प्यारेलाल

४०९. पत्र : ओंकारनाथ ठाकुरको

पंचगनी
२ जून, १९४५

भाई ओंकारनाथ,

मुझे चि० पुरुषोत्तम गांधीने पत्र लिखा है। वह कहता है कि स्वर्गीय विष्णु दिगम्बरजी के शिष्योंने मिलकर प्रयागमें संगीत विद्यापीठ स्थापित करने का इरादा व्यक्त किया है। उसमें वे लोग मेरा आशीर्वाद माँगते हैं। मैंने उन्हे लिखा है कि तुम भी उन्ही के शिष्य हो और तुम्हारी योजनाको मै अपना आशीर्वाद दे ही चुका हूँ। इसलिए और लोगोंको कैसे दूं? उसका कहना है कि तुम्हे शिष्य मण्डलमे खीचने का प्रयत्न पंडित खरेके जीवनकालमें ही किया गया था, लेकिन वह निष्फल गया।

चि० पुरुषोत्तम पंडित खरेका प्रिय शिष्य था। वह सच्चा गुरु-भक्त है। इस मंडलके चन्द लोगोंको मैं इतना ज्यादा जानता हूँ जितना मैं तुम्हे भी नही जानता। तुम्हारे निकट सम्पर्कमे तो मैं अभी-अभी आया हूँ। इस समस्यापर प्रकाश डालो।

बापूके आशीर्वाद

पंडित ओंकारनाथ
संगीत मार्तण्ड
वाळुलनाथ रोड
वम्बई

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

४१०. पत्र : कृष्णचन्द्रको

२ जून, १९४५

चि० कृ० चं०,

कनु तुमारे लिये ठीक लिख रहा है। अक्षर सुधारने का मैंने कहा है। आशा तो है कि वह रामदास स्वामीके आदर्शको अक्षर वारेमे पहोंच जायगा।

आजसे यहां पानी शरु हो गया है। अब भी वरस रहा है।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० ४५१३) से

४११. पत्र : रामकिशोर नन्दक्योलियारको

पचगनी
२ जून, १९४५

भाई नंदक्योलियार,

तुमारा खत मिला। मेरी राय है कि तुम्हारे साफ लिख देना कि यू० पी० के हुकमकी पाबद नही हो सकेगी। तुमने कुछ गुनाह नही किया है। तुम्हारा विश्वास अहिंसामें ही है। वगैर जरूरतके यू० पी० मे जाना भी नही चाहते है लेकिन जरूरत होगी तब यु० पी० सरकारको नोटिस नही देगे और प्रवेश करेगे ऐसा खत लिखो और खामोश रहो। जब यु० पी० कामके लिये जान पडे तब चले जाओ। जव उत्तर दो तब अखबारोमे भी दे दो।

तुम दोनोको
बापुके आशोर्वाद

श्री रामकिशोर नन्दक्योलियार
नन्दविलास
गया (विहार)

पत्रकी नकलसे प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य प्यारेलाल

४१२. पत्र : जयरामदास दौलतरामको

पचगनी
२ जून १९४५

भाई जेरामदास,

मैने यह लिखना शुरू किया इतनेमे तुम्हारा खत आया। मैंने कलसे ही तुम्हारे लिए घरकी तलाश की। सफल भी हुआ हू। मदद दिनशाह महेताकी थी। अब बोज नही, आ जाओ। मेरे साथ ही रहोगे। बाहर भी। यहा आने पर देख लेगे। देवीबहन और प्रेमी भी आवे। उनको भागने की आवश्यकता नही होगी। मैंने सुना है कि पडितके वहा जगह नही है। हो तो भी नही चाहिये। मुझे यहा आने पर ही खबर मिली कि तुम बीमार भी हो गये। यहा अच्छा हो जायगा।

बापुके तीनोंको आशीर्वाद

श्री जेरामदास दोलतराम
जानघर
१५ रस्तो, खार

पत्रकी नकलसे . प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य प्यारेलाल

४१३. पत्र : शान्ताबाई कालेको

पंचगनी
२ जून, १९४५

चि० शांताबाई,

तुम्हारा सविस्तर खत पाकर आनंद हुआ। गोपालराव अच्छे हो जायेंगे। आशावादी है, बहादूर है, सरल है, मुझे लिखा करो। गोपालरावको मेरे आशीर्वाद।

बापुके आशीर्वाद

श्री शांताबाइ काले
विक्टोरिया हास्पीटल
जबलपुर

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

४१४. पत्र : श्रीकृष्णदास जाजूको

पंचगनी
२ जून, १९४५

भाई जाजूजी,

मुझे लगता है कि सरदारके आने तक या हाल तुरतके लिये लक्ष्मीदास कहते है वही करे।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य . प्यारेलाल

४१५. चर्चा : श्रीमन्नारायणके साथ[1]

पचगनी

२ जून, १९४५

प्रश्न : मेरे विचारसे इस समय हमारे सामने सबसे बड़ी समस्या यह है कि हमारे बाजारको विदेशी उपभोक्ता मालसे पाटकर सुनियोजित ढंगसे किये जानेवाले आर्थिक शोषणसे कैसे लड़ा जाये। इससे भारतीय औद्योगीकरणके लिए, जो चाहे लघु पैमानेपर हो अथवा बृहद् पैमानेपर, भारी संकट पैदा हो जायेगा। अफसोस तो यह है कि हमारे ही व्यापारी और उद्योगपति विदेशी निर्माताओंके प्रशंसा-प्राप्त एजेंट बनने के लिए एक-दूसरेसे होड़ लगाते नजर आते है। क्या आपका ऐसा विचार नहीं है कि विदेशी मालके विरुद्ध जनताकी चेतनाको जाग्रत करने की तात्कालिक आवश्यकता है? मेरे खयालसे रचनात्मक कार्यकर्त्ताओंको यह कार्यक्रम तत्काल शुरू कर देना चाहिए। गाँवोमें बनी और स्वदेशी वस्तुओंके इस्तेमालके लिए देशव्यापी प्रचार भी विदेशी शासनके विरुद्ध एक जोरदार आर्थिक हथियार सिद्ध हो सकता है। आपकी क्या राय है और आप क्या सलाह देते है?

उत्तर कठिनाई प्रचारसे दूर नही हो सकती, चाहे प्रचार कितना ही व्यापक और जोरदार क्यों न हो। पहला काम तो यह प्रदर्शित करना है कि विदेशी मालका इस्तेमाल आर्थिक दृष्टिसे गलत है। हमे यह भी मान लेना चाहिए कि उद्योगपति जान-बूझकर देशसे द्रोह नही करते। वे सच्चे दिलसे यह मानते हैं कि उनका तरीका जनताको खुशहाल बना देगा। वे गलतीपर हैं। लेकिन यह कैसे साबित किया जाये कि वे गलतीपर हैं? इसका सिर्फ यही तरीका है कि सारे मामलेका धैर्यपूर्वक अध्ययन किया जाये और उस अध्ययनके परिणामोको प्रकाशित किया जाये और इस तरह काम किया जाये जिससे आम लोग कामके लिए तैयार हो जाये और सचमुच खुशहाल हो जाये।

इसके लिए गहरे सोच-विचार, गहरे अध्ययन और लोगोमे जाकर बडी मेहनत से रचनात्मक कार्य करने की आवश्यकता है। उन्हे अपने इस्तेमालकी चीजे स्वय बनानी होगी। तनिक कल्पना करो कि हरएक गाँव अपने इस्तेमालके लिए हर चीजका उत्पादन अथवा निर्माण कर रहा है। इसका परिणाम यह होगा कि कुछ अतिरिक्त माल बचा रहेगा जो भारतके गाँवोसे शहरोमे जायेगा। इसका परिणाम

१. वर्धाके गोविन्दराम सक्सेरिया कॉलेजके प्राचार्य

यह भी होगा कि सब तरहका शोषण अपने-आप खत्म हो जायेगा और बाहरी दुनियाका शोषण किये बिना खुशहाली आ जायेगी।

[अंग्रेजीसे]
बॉम्बे क्रॉनिकल, ४-६-१९४५

४१६. सन्देश : भारती स्मारकके लिए[1]

पंचगनी
[३ जून, १९४५ के पूर्व][2]

भारतीकी स्मृति कायम रखने के प्रयत्नकी सफलताके लिए मेरे आशीर्वाद।

मो० क० गांधी

[अंग्रेजीसे]
बॉम्बे क्रॉनिकल, १३-६-१९४५

४१७. चर्चा : हरेकृष्ण मेहताबके साथ[3]

पंचगनी
१/३ जून, १९४५

प्र० : आपके खयालमें देशमें क्या कोई ऐसा परिवर्तन हुआ है जिसके कारण युद्धके प्रति कांग्रेसजनोंके उस रवैयेमें जो उन्होंने १९३९ में अपनाया था, कोई परिवर्तन उचित होगा? अगर आप समझते हैं कि कोई परिवर्तन नहीं हुआ है, तो इसका क्या यह मतलब नहीं होगा कि आपकी रायमें कांग्रेसजनोंको वर्तमान परिस्थितियोंमें फिर मन्त्रिमण्डल नहीं बनाने चाहिए?

उ० : तुम मेरी व्यक्तिगत राय पूछते हो। मैं अपनी राय देता हूँ, फिर चाहे उसका जो भी मूल्य हो। मेरी राय किसी भी अर्थमें अधिकृत राय नहीं हो सकती। तुम्हें कांग्रेसके १९३९ के रवैयेका नहीं बल्कि १९४२ के रवैयेका विचार करना चाहिए। जहाँतक मुझे मालूम है कांग्रेसने १९४२ में कुछ शर्तोंपर सहायता

१ और २. बॉम्बे क्रॉनिकल, ४-६-१९४५ में दिये समाचारके अनुसार चक्रवर्ती राजगोपालाचारी ने स्मारककी आधारशिला ३ जूनको रखी थी। स्मारक भवन एक पुस्तकालयके लिए था जो प्रसिद्ध तमिल कवि सुब्रह्मण्य भारतीकी समस्त कृतियोंको रखने के लिए उनके जन्मस्थान तमिलनाडु स्थित एट्टायापुरम्‌में बनना था। गांधीजी ने सन्देश तमिलमें भेजा था।

३. ए० पी० आई० की खबरके अनुसार हरेकृष्ण मेहताबने "तीन दिनोंतक गांधीजी से पूरी तरह विचार-विमर्श करने के बाद लिखित प्रश्नोत्तर" अखबारोंको प्रकाशनार्थ दिये थे।

देने का प्रस्ताव किया था। अब शासनाधिकार स्वीकार करने के लिए भी कांग्रेसको शर्तें रखनी चाहिए। इन शर्तोंका सम्बन्ध आजादीसे होना चाहिए।

प्र० : आजकल सविनय अवज्ञा आन्दोलन नहीं चल रहा और आपने बहु-सूत्री रचनात्मक कार्यक्रम देशके सामने रखा है। क्या आप रचनात्मक कार्यक्रमकी निम्न परिभाषाको ठीक समझते हैं : आम लोगोंकी तात्कालिक समस्याओंको हाथमें लेना और उन्हें आपके बताये अहिंसात्मक तरीकेसे सुलझाने की कोशिश करना। इस परिभाषाके अन्तर्गत चोर-बाजारी और मुनाफाखोरीको रोकने की कोशिश करना, और आम जरूरत की स्वदेशी चीजोंके इस्तेमालपर जोर देकर विदेशी मालके आयातको रोकने की कोशिश करना भी आ जाता है।

उ० : तुम मेरी कल्पनाके रचनात्मक कार्यक्रमको अंशतः ही समझ पाये हो। यह कार्यक्रम सर्वांगीण और सर्वव्यापक है। चोर-बाजारी, मुनाफाखोरी और आम जरूरतकी विदेशी चीजो [के आयात] को रोकने का काम रचनात्मक कार्यक्रमसे पहले होना चाहिए। यह काम रचनात्मक कार्यक्रमका अंग नहीं है, लेकिन जैसे सफल खेती के लिए जमीनको निराना जरूरी होता है उसी प्रकार इस कार्यक्रमको सफल और व्यापक बनाने के लिए इन हानिकारक तत्त्वोंको निकाल देना जरूरी है। स्वदेशीमें सारे कार्यक्रमका समावेश हो जाता है।

प्र० : क्या आप कांग्रेसजनोंसे कहेंगे कि वे रचनात्मक कार्यक्रम करने के लिए दूसरी पार्टियोंका और सरकारी संस्थाओंका भी सहयोग प्राप्त करें? इस बातका क्या उपाय हो सकता है कि चुनावों या अन्य उद्देश्योंकी दृष्टिसे पार्टीकी स्थितिको दृढ़ बनाने के लिए रचनात्मक कार्यक्रमका उपयोग न किया जाये?

उ० : मैं गला फाड़-फाड़कर कांग्रेसजनोंसे कहता रहा हूँ कि वे पार्टीके हित या किसी और स्वार्थका ख्याल किये बिना रचनात्मक कार्यक्रमको सच्चे दिलसे अपनाये। रचनात्मक कार्यक्रम अपने-आपमें एक उद्देश्य है। मैं तो रचनात्मक कार्यक्रमके लिए सारी कौमका और सरकारका भी सहयोग प्राप्त करना चाहता हूँ, लेकिन सहयोग स्वभावतः हमारी शर्तोंपर होना चाहिए।

अगर सरकार ईमानदारीसे सहयोग करे, तो इसका परिणाम यह होगा कि हमें अपनी स्वतन्त्रता बिना किसी हिंसा और हंगामेके प्राप्त हो जायेगी। अगर रचनात्मक कार्यक्रमको चुनावोंके खयालसे कार्यान्वित किया जाये तो उसमें अपनी असफलताके बीज विद्यमान रहेंगे। लोग दुष्ट व्यक्तियोंको उत्तम चीजें निकृष्ट उद्देश्यों के लिए इस्तेमाल करने से रोक सकते हैं।

प्र० : कांग्रेसजनोंका उन सब लोगोंके प्रति क्या रवैया होना चाहिए जो इस समय एक ऐसा संगठन बना रहे हैं जिसकी भविष्यमें कभी-न-कभी कांग्रेसके साथ टक्कर हो सकती है?

उ० : कांग्रेसका रवैया यह होना चाहिए कि जो लोग देशका अहित करने की कोशिश करें उनके साथ पूर्णतया अहिंसात्मक असहयोग किया जाये।

[अंग्रेजीसे]
बॉम्बे क्रॉनिकल, ४-६-१९४५

४१८. पत्र : टी० आई० केदारको

पंचगनी
३ जून, १९४५

प्रिय श्री केदार,

मैंने पिछले माहकी १२ तारीखका आपका पत्र जवाब देने के लिए रख लिया था। तबसे बहुत कुछ हो चुका है। इस समय मुझे कुछ कहने की जरूरत नहीं है। अष्टी-चिमूरके आपके महान साहसिक कार्यकी सफलताके लिए मेरी भरपूर शुभकामना है।

हृदयसे आपका,
मो० क० गांधी

[पुनश्च :][1]

यह सब गलती। पुरानी आदत। मुझे लिखना चाहिए था हिन्दुस्तानीमें — नागरी लिपिमें लेकिन हुआ। क्षमा।

डॉ० टी० आई० केदार
सिविल स्टेशन
नागपुर

अंग्रेजीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

४१९. पत्र : मनु गांधीको[2]

पंचगनी
३ जून, १९४५

निर्भय होकर इतनी हिम्मत करना। डॉ० गिल्डरको तू खूब पहचानती है। उनके पास जा और वे अनुमति दें तो नागपुर जा।[3] यहाँ तो जब चाहे आ ही सकती है। वर्धा जाने की सलाह मैं तुझे नहीं दूँगा।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी माइक्रोफिल्म (एम० एम० यू०/२४) से

१. आगेका अंश हिन्दीमें है।
२. यह मनु गांधीको सुशीला नैयर द्वारा लिखे पत्रपर लिखा गया था।
३. नर्सिंगका प्रशिक्षण लेने के लिए; देखिए अगला शीर्षक भी।

४२०. पत्र : मनु गांधीको

३ जून, १९४५

चि० मनुड़ी,

तू फिर बीमार पड गई। अब तो चेत। अगर तू धीरजसे काम ले, तो अच्छी नर्स बन जायेगी। बुखार उतरने के बाद तुरन्त नही जाया जा सकता। सुशीलाबहिन कहती है कि तुझे दिनशाजीके आरोग्य मन्दिरमें रहना चाहिए। बहुत करके वनमाला भी वहाँ जायेगी। तुझे बार-बार बुखार आ जाता है, यह मुझे बिलकुल ठीक नही लगता। तू अपनी तबीयत सँभालना सीख जाये और फौलाद जैसी मजबूत हो जाये, तो सब ठीक हो जायेगा। "उतावली करने से आम नही पकते।"[1] यहाँ आना हो तो चली आ। नागपुर जाने का मोह छोड़ दे।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी माइक्रोफिल्म (एम० एम० यू०/२) से

४२१. पत्र : घनश्याम जेठानन्दको

पचगनी
३ जून, १९४५

भाई घनश्याम,

तुम्हारा खत मिला है। मै तो इतना ही कहु जेलमे मै पैसा नही लूगा और बाहर भी ७५ से अधिक नहीं, लेकिन दूसरे अपने मतिके अनुसार ही कर सकते है। धर्म कोई किसीके पाससे नही ले सकता है।

मेरी तबियत अच्छी है ऐसा कहा जाय।

आपका,
मो० क० गाधी

श्री घनश्याम जेठानद
२९, अमिल कालोनी न० १
कराची

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. एक गुजराती कहावत

४२२. पत्र : हेमप्रभा दासगुप्तको

पंचगनी

३ जून, १९४५

चि० हेमप्रभा,

तुम्हारा खत मिला। अब तो सतीशबाबु तैयार हो गये होंगे। गरीब लोगोंको बिना सूतके खादी अवश्य दो। उन लोगोंके पास पैसा लेती है, और लेती है तो बाजार दाम या कम? इस जानने के बाद कुछ कहना होगा तो लिखूंगा।

गायका पुस्तक[1] प्रायः रोज कातने के समय सुनता हूं।

बापुके आशीर्वाद

हेमप्रभादेवी
खादी प्रतिष्ठान
सोदपुर
वाया कलकत्ता

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

४२३. पत्र : तेजवन्तीको

पंचगनी

३ जून, १९४५

चि० तेजवन्ती,

तेरे नामसे खत तो आया लेकिन न उसमें भाषा तेरी है न अक्षर तेरे हैं और न तेरे दस्तखत ही आखिरमें है। इस परसे यह भी शक उठता है कि शायद यह खत ही तेरा नहीं है। इसलिए सिवाय पहुंचके मैं कुछ उत्तर देना नहीं चाहता हूं।

बापुके आशीर्वाद

श्री तेजवंती
चर्खा संघ कार्यालय
आदमपुर दोआब
जि० जालंधर

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. गांधीजी को प्रस्तावना लिखने के लिए दी गई सतीशचन्द्र दासगुप्त द्वारा लिखित पुस्तक **काउ इन इंडिया**, देखिए पृ० १५५-५६।

४२४. पत्र : अमृतकौरको

पचगनी
३. जून, १९४५

चि० अमृत,

इस समय शामके ५ बजकर ५० मिनट हुए हैं। मैंने तुम्हारी लिखी "भारतके ईसाइयोंसे अपील" अभी खत्म की है। अपील पुरजोर है पर सारगर्भित नही है। मैं यहाँ ब्योरेवार आलोचना नही करना चाहता। मैं जानता हूँ कि ज्योही तुम्हे वहाँके कामकाजसे छुट्टी मिलेगी, और ऐसी स्थिति होगी कि यहाँ आ सको, तो तुम फौरन यहाँ चली आओगी। इसलिए जब तुम यहाँ मेरे पास होगी, तब हम मिलकर इस अपीलको पढ़ेंगे और यह फैसला करेंगे कि इसका क्या करना चाहिए।

खुर्शेद यहाँ है। वह नर्गिसके साथ ठहरी है। ज्योही नर्गिस चली जायेगी, वह 'दिलखुश' मे जाकर ठहरेगी।

मेहताब और श्रीमन् भी यहाँ मेरे पास थे।[1] श्रीमन् आज चला गया है। मेहताब कल जायेगा। सबको प्यार।

बापू

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ४१५७) से, सौजन्य : अमृतकौर। जी० एन० ७७९२ से भी

१. श्रीमन्नारायण और हरेकृष्ण मेहताबके साथ गांधीजी की चर्चाके लिए देखिए पृ० २५३-५४ और २५४-५५।

४२५. वक्तव्य: सीरिया और लेबनानके प्रश्नपर[1]

पंचगनी

[३ जून, १९४५ या उसके पूर्व][2]

मैंने सीरिया और लेबनानके प्रश्नपर जान-बूझकर कुछ नही कहा है। यह इसलिए नही कि वहाँ जो-कुछ हो रहा है उसे मैंने अन्य लोगोंसे कम महसूस किया है बल्कि इसलिए कि मैंने बहुत ज्यादा महसूस किया है। जो अन्याय हुआ है वह बिलकुल स्पष्ट और प्रत्यक्ष है।

मुझे यह देखकर दु.ख होता है कि हमारे देशवासी मुसलमान भाई यह समझते है कि सीरिया और लेबनानके लोगोके लिए न्यायकी माँग वे इस आधारपर कर सकते हैं कि वे मुसलमान है और मानते है कि इस तरह उनकी माँग ज्यादा पुरअसर होगी। सीरिया और लेबनानकी आबादी मिश्रित है।[3] उनकी स्वतन्त्रताको जो खतरा है, उसका ताल्लुक उनके एक अलग राष्ट्र होने की हैसियतसे है, मुसलमान होने की हैसियतसे नही।

सीरिया और लेबनानके स्वाधीनता सघर्पके प्रति सारे भारतको सहानुभूति होनी चाहिए और यह प्रश्न किसी विशेष तबके या जातिका होनेके बजाय एक राष्ट्रीय प्रश्न बनाया जाना चाहिए।[4]

मुसलमानोंको हिन्दुस्तानियोंकी हैसियतसे बोलना चाहिए और सारे हिन्दुस्तानका, सभी धर्मोंके लोगोका, सहयोग प्राप्त करना चाहिए। मिसालके तौरपर अगर भारत

१. सीरिया और लेबनानके राष्ट्रवादियों और फ्रांसीसी शासकोंके बीच चल रहे संघर्षने हिंसक रूप ले लिया था। फ्रास लीग ऑफ नेशन्सके आदेशके अधीन इस प्रदेशपर १९२० से शासन कर रहा था। फ्रासने बातचीतका सुझाव दिया था और साथ ही सैनिकोंकी दो टुकड़ियाँ भेज दी थीं। बहुत बड़े पैमानेपर झड़पें हुईं और अन्तमें फ्रासने २९-३० मईको दमिश्कपर बम गिराये। यह वक्तव्य भारतके "ओरिएन्ट प्रेसके विशेष संवाददाताको एक विशिष्ट भेंट-वार्तामें" दिया गया था।

२. "हमारे देशवासी मुसलमान भाई यह समझते हैं", गांधीजी ने यह बात सम्भवतः मु० अ० जिन्नाके ३ जूनके बयानके सन्दर्भमें कही थी। मु० अ० जिन्नाने उस बयानमें सीरिया और लेबनानके लोगोंसे "भारतके १० करोड़ मुसलमानोंकी ओरसे" मददका आश्वासन दिया था और चेतावनी दी थी कि अगर सीरियाको आजादी न दी गई तो "केवल मध्य-पूर्व और मुस्लिम भारत ही नहीं बल्कि अखिल मुस्लिम जगत भड़क उठेगा।"

३. वास्तवमें लेबनानमें ईसाइयोंकी आबादी बहुत ज्यादा है।

४. प्रस्तुत अनुच्छेद *हिन्दू*, ८-६-१९४५ से उद्धृत किया गया है, जिसमें इसे दिनाक "पंचगनी, ६ जून" की तिथि-पंक्तिके अन्तर्गत एक पृथक् समाचारमें दिया गया था।

के ईसाई दूसरे हिन्दुस्तानियोसे अलग होकर ईसाइयोकी हैसियतसे आवाज उठाये तो अन्तर्राष्ट्रीय मामलोंमे उसका कोई असर नही हो सकता। सब देशोके इतिहाससे यही शिक्षा मिलती है। और मेरे विचारमें भारतमे खिलाफतके सवालने भी इसी बातपर जोर दिया था। लेकिन लगता है कि हम उसे भूल गये है।

स्वर्गीय हकीम साहबके नेतृत्वमें मुसलमानोने सारे भारतका सहयोग प्राप्त करने की कोशिश की और खिलाफतका सवाल राष्ट्रीय काग्रेसके कार्यक्रमका एक अग बन गया और उसने सारी दुनियाका ध्यान आकर्षित किया। अगर विजयी तुर्कीका इतिहास कुछ और हुआ होता, तो भारत खिलाफतके सवालके हल करने मे ठोस हिस्सा लेता। अगर भारतके लोग अलग-अलग गुटोमे बँटे हुए हो तो अन्तर्राष्ट्रीय परिषदोमें उनका कुछ प्रभाव नही हो सकता।

[अंग्रेजीसे]

बॉम्बे क्रॉनिकल, ८-६-१९४५; **हिन्दू** ८-६-१९४५ भी

४२६. पत्र : अमृतकौरको

४ जून, १९४५

चि० अमृत,

कलका पत्र डाकमे डालने के लिए दे देने के बाद तुम्हारी चिट्ठी मिली। मैंने उसे खोला और अपना पत्र रोक लिया।

अजीब बात है कि तुम्हे कोई सूचना नही मिली। तुम्हारा यह विचार ठीक है कि अखबारमे छपी सूचनाकी जबतक पुष्टि न हो,[1] तबतक तुम उसकी उपेक्षा करोगी। और यह भी सच है कि [प्रतिबन्धके] इस तरह हटाये जाने में कोई खुशी नही हो सकती। जहाँतक भाषणका सवाल है, हमे सोचना होगा कि हमें क्या करना चाहिए।

बेशक तुम शिमलेसे तबतक नही जाओगी जबतक कि तुम्हारी वहाँ जरूरत है।

स्नेह।

बापू

मूल अग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ४१५८) से; सौजन्य . अमृतकौर। जी० एन० ७७९३ से भी

१. अमृतकौरपर लगाये प्रतिबन्धको उठाने के सम्बन्धमें। देखिए पृ० १९० भी और "पत्र : प्रभावतीको", ८-६-१९४५।

४२७. पत्र : जयसुखलाल गांधीको

४ जून, १९४५

चि० जयसुखलाल,

तुम्हारा पत्र कल मिला। काम-सम्बन्धी पत्र अभी नही मिला।

लगता है, तुम्हारी तबीयत काफी लस्त हो गई है। ध्यान देना।

चि० मनुका मन दुविधामे है सीधे नागपुर जाया जाये या एक दिन वहाँ रहकर। यदि डॉ० गिल्डर मना करे, तो वह नागपुर अभी तो नही जा सकेगी। मनु बहुत उतावली है। अब उसपर नर्स बनने की धुन सवार है। देखता हूँ क्या होता है।

रुपयेके बारेमे ऐसा करो कि रुपया मनुके ट्रस्टीके रूपमे तुम अपने ही पास रखो। यही ठीक होगा। दो नामोकी जरूरत मैं नही देखता। ट्रस्टमे जो शर्त रखनी हो रखो। मुझे मसौदा दिखाना चाहो तो दिखाना। तुम्हारे मुझसे पहले चले जाने की हालतमे अगर मेरा नाम रखना चाहो, तो मुझे कोई आपत्ति नही है। अगर और किसीको चुनना हो तो वैसा ही करो। अगर छ· रुपया सैकड़ा वही मिले, तो दूसरा प्रबन्ध करने की झझटमे नही पड़ना चाहिए।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी माइक्रोफिल्म (एम० एम० यू० /२४) से

४२८. पत्र : मनु गांधीको

[पचगनी][1]
४ जून, १९४५

चि० मनुडी,

तेरी जैसी मूर्ख लड़की मैंने दूसरी नही देखी। इस पत्रके उत्तरमे तुझे यहाँ आ ही जाना है। बावला[2] तेरे साथ जरूर आये जिससे रास्तेमे कोई कठिनाई न हो।

बापूके आशीर्वाद

[गुजरातीसे]
बा-बापुनी शीळी छायामां, पृ० २३१

१. साधन-सूत्रमें "महाबलेश्वर" है, किन्तु गांधीजी इस दिन पंचगनीमें थे।

२. नारायण देसाई

४२९. पत्र : शान्तिकुमार मोरारजीको

पंचगनी
४ जून, १९४५

चि० शान्तिकुमार,

तुम्हारा पत्र कल मिला। फोटोपर मैंने सही कर दी है। तुम खूब जियो और सेवा करते रहो। "बहुत गई थोडी रही" किसलिए? १२५ वर्षकी आयु कुछ मेरे लिए ही नही है, सबके लिए है। यह सभीका आदर्श होना चाहिए। और शुद्ध जीवनसे यह आदर्श सम्भव होना चाहिए।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी नकल (सी० डब्ल्यू० ४७४०) से। सौजन्य : शान्तिकुमार न० मोरारजी

४३०. पत्र : रेहाना तैयबजी और सरोज नानावटीको

४ जून, १९४५

चि० रेहाना और चि० सरोज,

तुम दोनो बहिनोका कार्ड आज मिला। माँजी गईं यह अच्छा हुआ। उन्होने अपना लेना-देना सब साफ कर लिया। हाँ, साफ करते हुए कष्ट बहुत भोगा। तुम दोनोसे सेवा ली, इसका तो तुम्हे पुण्य मिला। लेकिन माँजीके कष्टकी बदौलत ना? ऐसे पुण्यकी इच्छा हम न करें। अत. मैं तो माँजीका नही रहना सब प्रकारसे शुभ ही मानता हूँ।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (एस० एन० ९६८४) से

४३१. पत्र : जमनादास द्वारकादासको

पंचगनी
४ जून, १९४५

चि० जमनादास,

तुम्हारा पत्र ५ बजे मेरे हाथ आया। यह तुम्हें कल मिलना चाहिए। पण्डितजी ६ तारीखको तीन बजे आयें तो मैं मिल सकूँगा। मौन तो होगा ही। उसके बाद यदि तुम बात करोगे तो चलेगा। अथवा कोई और समय चाहो तो निकालूँगा। ४ बजे एक हरिजन भाई भोले आनेवाले हैं।

बापूके आशीर्वाद

श्री जमनादास द्वारकादास
ग्लेण्डले
महाबलेश्वर

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

४३२. पत्र : पुरुषोत्तम पटेलको

पंचगनी
४ जून, १९४५

भाई पुरुषोत्तम पटेल,

तुम्हारा पत्र आज मिला। यह अंग्रेजीमें क्यों? अपनी उम्मीदवारीमें मुझे मत घसीटना।[1] तुमसे अपनी शक्तिसे जो बने वह करो। तुम तो वहीं रहते हो।

मो० क० गांधीके वन्देमातरम्

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. देखिए "एक पत्र", ९-६-१९४५ भी।

४३३. पत्र : कृष्णचन्द्रको

४ जून, १९४५

चि० कृ० च०,

राजतंत्रको बनानेवाले कोई बाहरके नहीं। वह भी हम है। तुमारी शकाका अर्थ यह हुआ कि राजतंत्र हमारे हाथोमे आना चाहिये। लेकिन अहिंसक राजतंत्र भी अहिंसक प्रवृत्तिसे ही आ सकते है। इसलिये हम एक हो या अनेक, अहिंसक कार्य ही करे। एक के अनेक बन सकते है। शून्यके नहिं।

स्रावके मै ठीक ही समजा था। जल्दी लिखने मे मैने उलटा लिख डाला होगा।[1] फिकर नही करना दोनोके लिये समान है।

एक सूती थान करके नागपुर अवश्य जाओ। मोहनसिंह काममे से बच सके तब ही आवे।

कावडको उपयोगका तुमसे ही सुना।

विनोबाका देखने को उत्सुक हू।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० ४५१४) से

४३४. पत्र : प्रभाकरको

४ जून, १९४५

चि० प्रभाकर,

मजिदको जो उत्तर तुमने दिया सो अच्छा हि था और देना भी क्या था? तुम्हारा शरीर वज्रसा होना चाहिये। प्रयत्नसे हि सम्भव हो सकता है। झोहरा और वीणा मुझे लिखे। प्रकृति कैसे रहती है? वीणा क्या करती है?

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० ९०२९) से। सी० डब्ल्यू० ९१५३ से भी, सौजन्य : प्रभाकर

१. देखिए पृ० २०८।

४३५. पत्र : आसफ अलीको

पचगनी
४ जून, १९४५

भाई आसफअली,

आजकल जहांतक हो सके मैं हिन्दुस्तानीमे नागरी या उर्दू लिपिमें खत लिखता हू। भाषा मेरी ही होती है। मेरे हरफ मुश्केलीसे पढे जाते हैं। इसलिए मेरे खत लिखवा लेता हूं।

तुम्हारा तार मुझे कल पांच वजेके वाद मिला। तुम्हारी वीमारी अच्छी नहीं लगती है लेकिन तुम वहादुर हो, तुमारे और भी देसकी खिदमत करनी है। वीमारीमें से उठोगे। मुझे किसीके भी मारफत खवर भेजते रहो। खुदा जल्दी आराम करे। मेरी उम्मीद है मैं इस महिनेकी आखर तक यहां हुंगा।

बापुकी दुआ

आसफअली
विलिंटन होसपिटल
दिल्ली

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

४३६. पत्र : एम० एस० केलकरको

४ जून, १९४५

भाई वरफ.

तुम्हारा खत मिला। हरिइच्छाके वारेमे तुम्हारी मेहनत खूब है। लेकिन मुझे संतोष नहीं है। वह अच्छी नहीं हो रही है। आखरमें नसीवसे होगा वही होनेवाला है।

ग्रह विद्यामें मेरा विश्वास जमता ही नहीं। करोडों लोग जो इसे नही मानते हैं वे कुछ गमाते नहीं है।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

४३७. पत्र : प्रफुल्लचन्द्र घोषको

पचगनी
४ जून, १९४५

भाई प्रफुल्लो,

महाबलेश्वरमें क० बा० स्मारककी कार्यवाही मिली थी। सब पैसे मध्यमे रखने के बारेमे तुम्हारी शिकायत सुनाई गई थी। मैंने कहा था मैं तुमसे लिखुगा और काम साफ कर लुगा। तुम जानते हैं कि मुंबईके पैसे पूरे मध्यमे रखे गये हैं। इसी तरह कलकत्तेमे होना चाहिये ऐसा मेरा अभिप्राय है। जो कमिटि अब बनी है, जिसमे पैसेका खर्च देहातोमे कैसे किया जाय उसीका विचार करना है। वह पैसे कहा रखा जाय उस झगडेमे क्यो पडे? तुमारा काम योजना भेजना और जो पसार होवे उसको अच्छी तरह अमल करवाने का है। तुमको मालूम होगा कि एकट्ठे करनेवाली समिति और खर्च करनेवाली एक ही नही है। यह ठीक है कि बहुत जगह वही ३ सम्य हैं लेकिन ये तो हमारी दुर्दशा है। काम करनेवाले कम हैं और जो पैसे देते हैं वे खर्चपर अधिकार रखने का हक जमाते है। हम दानीओको समितिमे रखे वह हमारा धर्म हो सकता है जब दानी लायक रहते हैं। और तुमको क्या समझाऊ? मेरी सलाह है कि समितिसे मेरी सलाह समझाओ और सतोषजनक खत लिखो।

बापुके आशीर्वाद

[पुनश्च :]

तुम्हारी तबियत अब अच्छी हो गई होगी।

श्री प्रफुल्लचद्र घोष
१४/८ गरीह रोड
बालीगज
कलकत्ता

पत्रकी नकलसे प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य प्यारेलाल

४३८. पत्र : मीर मुश्ताक अहमदको

पंचगनी
५ जून, १९४५

भाई मुश्ताक अहमद,

तुमने हो सके तबतक अंग्रेजीमें लिखना बोलना छोडा है वह अच्छी बात है।

तुमारे सवालका जवाब तो मैंने मेरी राय बता दी है उसमें आ गया है।[1] मेरी रायमें जबतक कांग्रेस कानूनके बाहर है या अभी लेना ठीक न माना जाय। कांग्रेस एसेंबली अलग बात है। उसमें हरेक सुबा अपनी रायके मुताबिक चले।

आपका,
मो० क० गांधी

जनाब मीर मुश्ताक अहमद
३४, प्रेम हाऊस
कनाट प्लेस
नई दिल्ली

उर्दूकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

४३९. तार : गोविन्ददासको

अविलम्बनीय

पंचगनी
६ जून, १९४५

सेठ गोविन्ददास
जबलपुर

सेवाग्राममें मिलना ज्यादा पसन्द करूँगा।

गांधी

अंग्रेजीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. देखिए पृ० १०४-५।

४४०. पत्र : कंचन शाहको

६ जून, १९४५

चि० कंचन,

मैंने तुझे पत्र लिखा था, अब अगर वह तेरे पास पहुँचा नहीं तो क्या किया जाये? तेरी तबीयत कैसी है? अगर तुझे वहाँ[1] अच्छा न लगता हो तो तुझे अवश्य सेवाग्राम जाना चाहिए।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ४९६) से

४४१. पत्र : प्रेमलीला ठाकरसीको

६ जून, १९४५

चि० प्रेमलीलाबहिन,

तुम्हारा पत्र मिला।

मुझे और मेरे बड़े कुटुम्बको सँभालनेके लिए मुझे तुम्हारा आभार मानना चाहिए या तुम्हें मेरा? मुझे तुमने हमेशा अपने प्रेमसे नहलाया है, लेकिन इस बार तो हद कर दी। तुम अपने सब लोगोंको लेकर इतने समय महाबलेश्वरमें रहीं, मुझे कोई असुविधा नहीं होने दी, और जाते समय दक्षिणा भी दी। इतने सारे प्रेमका उपकार मानना भी मुझे अपराध जैसा लगता है। मौन रहना ही श्रेयस्कर है।

यहाँ सब ठीक है। शान्ताबहिनने मुझे कैद कर लिया है। मैं एक जेलसे निकलकर दूसरी जेलमें बैठ गया हूँ।

सबीको और लड़कियोंको आशीर्वाद, इसमें दमयन्ती भी आ जाती है।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ८०) से। सी० डब्ल्यू० ४८३५ से भी, सौजन्य . प्रेमलीला ठाकरसी

१. देखिए पृ० २४०।

४४२. पत्र : अमतुस्सलामको

६ जून, १९४५

बेटी अमतुल सलाम,

तेरा पो० का० मिला। तू अजीब है। मै उत्तर दू और तुझे न मिले उसकी भी शिकायत? मैंने तो उत्तर दिये हैं। तेरे अगले खतमे तो कचनके भारी खवर तू ने दिये थे। अब दूसरा ही देती है। कंचनको सेवाग्राम अवश्य भेज दे या ले जा। जाने मे तकलीफ है तो कोई जाने पर जाय। अगर शक्ति है तो अकेली आरामसे जा सकती है। जैसा ठीक है वही करो। मुझे कुछ नही है।

बापुके आशीर्वाद

बीबी अमतुल सलाम
कस्तूरबा सेवा मन्दिर
बोरकामता
जि० त्रिपुरा[1]

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० ४९६) से

४४३. पत्र : गोप गुरुबख्शानीको

पचगनी
६ जून, १९४५

चि० गुरबक्सानी,

तुमारा पो० का० मिला है। तुमने हि तो लिखा है कि हरेक खतके उत्तरमे खत नही चाहयो। तो भी मैंने काफी पत्र दिये हैं। मैने जो तुमारे लिये लिखा था उसे प्रगट नही करना था। इंग्रेजी मेरेसे पास करवाना था। तुमारा वीमा कम्पनीके काम करना समजा।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो नकल (जी० एन० १३१५) से

१. पता अंग्रेजीमें है।

४४४. पत्र : रामनारायण चौधरीको

पचगनी
६ जून, १९४५

चि० रामनारायण,

तुम्हारा पो० का० मिला है। मै तुमको यहा नही बुलाऊगा। सेवाग्राम आने का निश्चय दुरस्त है। पुस्तक मिलने पर पढने की कोशीश करूगा। मुझे पता नही था जुगलकिशोर तुम्हारे भाई है। तुम्हारी प्रकृति अच्छी होगी।

बापुके आशीर्वाद

श्री रामनारायण चौधरी
आदर्श प्रेस
अजमेर

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

४४५. तार : सेवाग्राम आश्रमके मैनेजरको

पचगनी
७ जून, १९४५

मैनेजर
आश्रम सेवाग्राम
वर्धा

बलवन्तसिंहका पत्र मिला। मेरा यह अनुरोध है कि होशियारीके पिता उसे मेरे आने तक न ले जाये। पत्र लिख रहा हूँ।

बापू

अंग्रेजीकी नकलसे प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य प्यारेलाल

४४६. पत्र : चोइथराम गिडवानीको

पचगनी

७ जून, १९४५

भाई चोईतराम,

मैंने तुमको लिखा है कि मैं तुम्हारे खतपर काम कर रहा हूं। परिणाममें भुलाभाईने जो खत लिखा है उसकी नकल तुमको भेजता हूं। उसमें जो दलील उन्होंने दी है वही बडे वकील सारी दुनियामें मानते हैं। उसका मैं गवाह हूं। भुलाभाईने जिस तरह यह केस लिया उसे मैं समझ सकता हूं। भुलाभाईके पास काफी पैसे पडे हैं। पैसेके कारण यह केस नहीं लिया है ऐसा मानना ही चाहिए। एक वकीलकी हैसियतसे वकालत की है और राजनीतिको इसमें नहीं आने दी है इसका हम अभिमान रखे और ईश्वरसे प्रार्थना करें कि सत्यका ही जय होवे और अगर भाई खुरो[1] दूषित है तो दूषित ही सिद्ध होवे। आजकलकी कचेरियोंमें ऐसा नहीं होता है। गुनहगार छूटते हैं ऐसा हमने पाया है। इसमें हम शुभेच्छाको कभी न छोडें।[2]

तुम्हारी प्रकृति अच्छी होगी। कृपलानीका और क्या प्रकरण खुलना है मुझे लिखो। जयरामदास देवीबहन और प्रेमी सहित आज मेरे पास आने चाहिये।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

४४७. पत्र : भूलाभाई देसाईको

७ जून, १९४५

भाई भूलाभाई,

सवेरेकी प्रार्थनाके बाद यानी लगभग ६ बजे यह पत्र लिखने बैठा हूँ। तुम्हारा पत्र कल शामको मिला।

तुमने जो उच्च स्थान प्राप्त किया है, वह ऊँचा ही बना रहे, इस दृष्टिसे यह पत्र लिख रहा हूँ। मैं लिखते हुए हिचकिचा रहा हूँ, क्योंकि मुझे यह लिखने का कोई अधिकार प्राप्त नहीं है। तुम्हारी और मेरी पुराने ढर्रेकी वकालतके बीच अथवा

१. मुस्लिम लीगके सदस्य एम० ए० खुरो; उनपर १४ मई, १९४३ को सिन्धके मुख्यमन्त्री अल्लाबख्शकी हत्याका आरोप था, लेकिन अन्तिम सुनवाईमें उन्हें छोड दिया गया था।

२. देखिए अगला शीर्षक भी।

तुम्हारे और मेरे कानूनी ज्ञानमे बड़ा अन्तर है। यह बात मै नम्रताके कारण नही, वल्कि तौलकर कह रहा हूँ। जब मै वकालत पढ रहा था तब और वकील होने के वाद मैंने यही समझा है और इस समझपर मैंने सदा अमल किया है कि झूठे केसकी 'ब्रीफ' स्वीकार कर लेंने के बाद ज्योंही वकीलको यह मालूम पडे कि यह केस सच्चा नही है, त्योंही वह उस केसको छोड़ दे, यानी अपने मुवक्किलके विरुद्ध न्याय मॉगे। मै जानता हूँ कि वकीलोका एक पक्ष इसके विरोधी विचारवाला भी है। वह पक्ष मानता है कि अगर वकील ही इस तरह इन्साफ करने बैठ जाये, तो फिर न्यायाधीशके लिए काम ही क्या रह जायेगा। यह पक्ष भ्रममें है, ऐसा मैंने सदा माना है और आज भी मानता हूँ। यह तो हुई मेरी मान्यता। तुम्हारा सारा-का-सारा तर्क मेरे गले नही उतरता। लीगी मुसलमान या गैर-लीगी मुसलमानका प्रश्न न तुम्हारे सामने उठना चाहिए न मेरे सामने। विरोधी मत रखनेवालेका केस भी सच्चा हो, तो मै सबका मुकावला करके भी उसकी मदद करूँगा, और अगर झूठा हो तो सगे बेटेका केस भी नही लूँगा। मै यह भी मानता हूँ कि भाई खुरोका केस केवल यही मानकर नही छाडा जा सकता कि वे हूरोको भडकाते हैं। लेकिन केस स्वीकार कर लेने के बाद मेरी नैतिक बुद्धिने मुझे यह सिखाया है कि अगर पूरा केस पढने के वाद मुझे लगे कि उसमें दोप है, तो या तो मुवक्किल मुझे अनुमति दे, तो मैं अदालतके सामने अपराध स्वीकार कर लूँ और सजा भोग लूँ, या फिर अगर मुवक्किल ऐसी अनुमति न दे, तो मै उससे कह दूँ कि वह मुझे मुक्त कर दे और दूसरा वकील कर ले। मुझे याद है कि दो मुसलमान मुवक्किलोके सम्बन्धमें मैंने ऐसा किया था। एकके केसमे मैंने अपने मुवक्किलके विरुद्ध न्याय मॉगा, और दूसरेके केसमे मुवक्किलका अपराध स्वीकार करके उसकी सजा वहुत कम कराई, और फिर थोडी सजा भोग लेनेके बाद उसे छुडाया। इसीलिए मुझे तुमसे यह विनती करते सकोच नही होता कि तुम खुरोके केसकी जाँच करके अगर वह निर्दोप हो तो उसके लिए जूझो, लेकिन अगर वह दोषयुक्त हो तो उसे अपराध स्वीकार करने की सीख दो, या फिर उससे छुट्टी मॉगो। लेकिन यह तो हुई मेरी सलाह। इसकी जाँच करने के वाद अगर यह तुम्हे न रुचे, तो इसे मत मानना। सलाह देनेवाले की तरफ मत देखना, केवल सलाहकी जाँच करना।

तुम्हारी इच्छाके अनुसार तुम्हारा पत्र चोइथरामको भेज रहा हूँ। चोइथराम को तुम्हें लिखना चाहिए था, यह मै मानता हूँ। मै यह भी मानता हूँ कि चोइथरामने पूर्वग्रह वना लिये हैं और ऐसा उसे नही करना चाहिए था, लेकिन हमारा-तुम्हारा ही नही, सारी दुनियाका यही हाल है। वडे-वडे सन्तुलित व्यक्ति भी इस मोहसे मुक्त नही हो पाते, यह हमने देखा है। अत. चोइथरामके दोपकी ओर मत देखना। इसके दोपमुक्त तर्कमे भी यदि कोई सार हो तो वह ले लेना। तुम्हारे सामने जो तर्क प्रस्तुत किया है, वह मैंने उसे नही वताया। मैंने उसे जो पत्र लिखा है,[1] उसकी नकल इस पत्रके साथ है।

१. देखिए पिछला शीर्षक।

चिमूर-अष्टीके बारेमें समझा। उन कैदियोंको फाँसी न हो, ऐसा निश्चय करना।

बापूके आशीर्वाद

मूल गुजरातीसे: भूलाभाई देसाई पेपर्स। सौजन्य: नेहरू-स्मारक संग्रहालय तथा पुस्तकालय

४४८. पत्र: मुन्नालाल गंगादास शाहको

७ जून, १९४५

चि० मुन्नालाल,

अमतुस्सलामको तार किया, अच्छा किया। सतीशबाबूको भी किया होगा, या फिर लिखा होगा। कंचन वहाँ अच्छी हो जायेगी और सुखी भी होगी। अच्छा है वहाँ अनुभवसे सीखे। लेकिन अगर उसे आना ही हो, तो सेवाग्राम आने देना।[1]

तुमने अपने कंधोंपर भारी बोझ लिया है। जाग्रत अवस्थामें भी आँखें मूंद कर ध्यानस्थ हो जाओ। भाग्य हुआ तो ईश्वरके दर्शन भी करोगे। लेकिन कुछ भी हो, रोजके कामकाजमें मार्गदर्शन तो मिलेगा ही। एक दिनमें आम नहीं पकते, यह याद रखना। संचालक बदलने की अवधि निश्चित करना, फिलहाल चाहे वह कम-से-कम हो। हिसाबका खाता अलग और स्वतन्त्र रखना। मन्त्री बदलते रहते हैं, लेकिन बैंक ऑफ इंग्लैंड सदियोंसे चल रहा है। इसका इतिहास विचार करने के योग्य है। इसकी वार्षिक सभा साढ़े तेरह मिनट और कुछ सेकेंड चलती है। बोलें कम, करें ज्यादा, यह संस्था इस आदर्शके अधीन चलती है।

बापूके आशीर्वाद

[पुनश्च:]

रामनारायण चौधरी तो आश्रमवासी माने जायेंगे। उनके लिए तो किसी तरह जगह करनी ही चाहिए।

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ८४५०) से। सी० डब्ल्यू० ५५८१ से भी; सौजन्य: मुन्नालाल गं० शाह

[1] देखिए पृ० २६९।

४४९. पत्र : कन्हैयालाल मा० मुन्शीको

७ जून, १९४५

भाई मुन्शी,

तुम्हारा पत्र मिला। जब तुम बुखार और टॉन्सिलके रोगसे कष्ट भोग रहे हो, तो क्या वहाँ अच्छे हो सकोगे? ऐसी हालतमे तो मै तुम्हे बम्बई चले जाने का ही सुझाव दूंगा। जो सहायता तुम्हे वहाँ मिल सकेगी, वह और कही नही मिलेगी। और जूनमे तो वहांका मौसम कुछ बुरा नही होता। लेकिन आखिर "मालिककी सीख फाटक तक"[१]।

कस्तूरबा-स्मारकके आफिसके बारेमें मालूम हुआ। वह सुझाव बापाका था। सुझाव है अच्छा।

अजी विलायत (इंग्लैंड) के मौसमकी क्या बात है!

तुम सबको
बापूके आशीर्वाद

[पुनश्च :]

मैं जुलाईके आरम्भमे सेवाग्राम पहुँचने की आशा करता हूँ।

गुजरातीकी नकल (सी० डब्ल्यू० ७६८७) से। सौजन्य : क० मा० मुन्शी

४५०. पत्र : जहाँगीर पटेलको

पचगनी
७ जून, १९४५

चि० जहाँगीर,

तुम्हारा पत्र मिला। तुम बेकार ही दुखी होते हो। दिनशाका धर्म पूनामे जितना रहा जा सके उतना ही रहना है। उसने मेरी मालिश की। वह कल ही गया। वापस १५ अथवा १६ तारीखको आयेगा।

जो मेरी मालिश कर सकें ऐसे तीन उस्ताद है, सुशीलाबहिन, प्या[रेलाल] और कनु। आजकल तो मुख्य रूपसे कनु ही मालिश करता है। मैं तो मालिशके दौरान ज्यादातर सो ही जाता हूँ।

१. गुजरातीकी एक कहावत जिसका भावार्थ यह है कि मालिककी सीख तभीतक मानी जाती है जबतक नौकर फाटकके बाहर नहीं पहुँच जाता।

माँजी या तो अच्छी हो जाये अथवा दु:खसे छूटे। उनसे कहना कि मैं अक्सर उन्हे याद करता हूँ।

बापूके आ[शीर्वाद]

श्री जहाँगीर पटेल
१०, चर्चगेट स्ट्रीट
फोर्ट, वम्बई

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

४५१. पत्र : रसिकलाल परीखको

७ जून, १९४५

चि० रसिकलाल,

तुम्हारी सव [सामग्री] पढ़ गया। मेरे विचार भिन्न हैं। छोटे राज्योको सत्ता सीधी तरह और खुले तौरपर लोगोके हाथमें सौप देनी चाहिए। उन्हे दिलसे मिलना चाहिए। यही एकमात्र राजमार्ग है जिसपर [चलकर] वे वने रह सकते हैं। तुमने जो कदम उठाय हैं उन्हे मै वेकार मानता हूँ। यह घूँट स्वयं तुम पी नही सकते और यदि पी लो तो राजाओको नही पिला सकते। इसलिए मुझे इसमें न फँसाओ, यही वेहतर है। खेर साहवकी सलाह लो, वे जैसा कहे वैसा करो। डॉ० जयकरकी सलाहको मै समझ गया हूँ। वकीलकी तरह उन्होंने एक नेक सलाह दी है। लेकिन मैं इसमें कही भी समा नही सकता। मैंने तो लीक वाँध ली है। उसपर से मेरी गाडी न उतरे, मेरे लिए इतना ही काफी है।

बापूके आशीर्वाद

श्री रसिकलाल परीख
काठियावाड़ पोलिटिकल कॉन्फरेन्स
जोरावरनगर
काठियावाड़

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

४५२. पत्र : बलवन्तसिंहको

पंचगनी
७ जून, १९४५

चि० बलवतसिंह,

चि० होशियारीका[1] तार मिला था और कल शामको तुम्हारा खत भी मिला।

होशियारीके पिताजीको मेरी सलाह है कि वे मेरे आने तक होशियारीको ले जाने की चेष्टा न करे, और क्योकि आश्रममे आ गये है तो मेरे आने तक ठहर जावे और आश्रमके काममे पूरा हिस्सा ले, जिससे वे कुछ सीखेगे, आश्रमका अनुभव लेगे और आश्रमपर बोझ भी नही पडेगा। होशियारी मुझे तो उतनी ही प्रिय है जितनी अपने पिताको। अगर होशियारीको असतोष रहता तो मै कुछ भी नही कहता। लेकिन होशियारीको सपूर्ण सतोष है। वह शिक्षा ले रही है और उंचे चढती जाती है। आश्रम सपूर्ण नहीं है लेकिन आश्रम बुरा नही है। आश्रमने किसीका बिगाडा नही है। कई लोग आश्रममें रहकर उचे चढे हैं। जो अच्छे है उनको आश्रम कभी कष्टदायी सिद्ध नही हुआ। इसलिये होशियारीके पिताजी इतना इतमीनान रखे कि आश्रममे रहकर होशियारीका अनिस्ट कभी नही होगा। अधिक तो मेरे आने पर मुलतवी रखता हू। आज तो मेरा इतना ही विनय है कि होशियारीके पिताजी महीना भर आश्रममे न भी रह सके तो भी होशियारीको न ले जावे। मेरे आने के बाद ऐसा निर्णय होगा कि होशियारीको वापिस जाना ही चाहिये तो तुम ही उसको ले जाओगे।

आश्रम-व्यवहार ठीक चलता होगा। नौकरोके बारेमें हम बादमे बाते करेगे।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० १९६२) से

१. बलवन्तसिंहकी भतीजी

४५३. पत्र : होशियारीको

पचगनी
७ जून, १९४५

चि० हुशियारी,

तेरा तार मिला था। जैसें बलवर्तसिंहका खत आया मैंने तार[1] दिया और खत लिखा। मेरा निश्चय है कि तुझे मेरे आने तक ठहर जाना। विन[म्रता]से और दृढ़तासे पिताजीको सुनाना। तेरी नम्रता सब कुछ ठीक ही करेगी। सही नम्रतामें अहिंसा भरी है। खूब सब चीज सीख ले। पिताजीको मैंने साथ सलाह दी है ब० सिंहके खतसे मालूम होगा।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

४५४. पत्र : हरेकृष्ण मेहताबको

७ जून, १९४५

भाई महेताब,

तुमने जो अखबारवालोको कहा है वह मुझे अच्छा नही लगता। राजाजीकी निन्दा करनी चाहिये तो सीधी करनी चाहिये। तुम्हारे सेवा करनी है कि अखबारोमें चढना है? दो काम साथ-साथ नही करोगे। कमसे-कम इतना तो समझो कि मैं तुम्हारे आचारको पसद नही करता हू। यह तो मेरा अभिप्राय। करोगे जो तुमको योग्य लगे वह। मुझको कुछ अशमें मानते हो इसलिये इतना लिखना मैंने धर्म समझा है।

बापुके आशीर्वाद

श्री हरिकृष्ण महेताब
द्वारा डाह्याभाई पटेल
६८, मरीन ड्राइव
मुबई

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

1. देखिए पृ० २७१।

४५५. पत्र : राधाको

पचगनी
७ जून, १९४५

चि० राधाबहिन,

इसे पढो। मै तो तुमको राष्ट्रभाषामे हि लिखुगा। तुमारा अग्रेजी खत मुझको दा० महमुदने दिया। सुन्दर है। लेकिन सौदर्य राष्ट्रभाषामें चाहिये। तुम्हारा सुपुत्र अब आ गया होगा। मेरे आशीर्वाद दो।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

४५६. पत्र : श्यामलालको

पचगनी
७ जून, १९४५

भाई श्यामलाल,

तुम्हारा खत मिला। भाई मनोहर धोत्रेको सवा महिनेके लिये हिसावनीस आदिके कामके लिये रखने में मेरी अनुमति है।

हो सकता है तो शाहीसे कोपी उठाने रखो जिससे असली खत सीसा पेनसे न लिखा जाये।

बापुके आशीर्वाद

श्री श्यामलालजी
क० ट्र० आफिस
सिंधिया हाउस
मुबई

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

४५७. पत्र : ताराचन्दको

पंचगनी
७ जून, १९४५

भाई ताराचंद,

आपका खत कल मिला। बहुत स्पष्ट है। मुझे मदद देगा। मैं ढील नहीं करूंगा। खत आई। श्रीमन नारायणको भेजता हूं। उनको पूछकर निर्णय करूंगा। दूसरा खत लिखूंगा।

आपका,
मो० क० गांधी

डा० ताराचंद
११, चैथम लाइन्स

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

४५८. तार : बलवन्तसिंहको

पंचगनी
८ जून, १९४५

बलवन्तसिंह
आश्रम सेवाग्राम
वर्धा

इसके पूर्व मिले तारका[1] और पत्रका[2] जवाब दे दिया। होशियारी के पिताको मेरे लौटने तक ठहरना चाहिए।

बापू

अंग्रेजीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१ और २. देखिए पृ० २७१ और २७७।

४५९. पत्र : लॉर्ड सैम्युअलको[1]

पंचगनी
८ जून, १९४५

प्रिय मित्र,

आपका २५ जुलाई, १९४४ का पत्र मुझे मिल गया था। शायद आपका यह कहना ठीक है कि इतने लम्बे समयके बाद हाउस ऑफ लॉर्ड्समें आपके भाषणसे उठनेवाले विभिन्न प्रश्नोपर बहुत लम्बी बहसमे पडना उपयोगी नही होगा।

लेकिन आपके पत्रमे एक बात ऐसी है जिसका जवाब देना जरूरी है। आपने हाउस ऑफ लॉर्ड्समे अपने भाषणमे अपने कथनके समर्थनमे मेरे लेखोके दो उद्धरण दिये थे। आपने कहा था कि "जब श्री गाधीने ब्रिटिश सरकारसे भारत छोडने की माँग की थी तो उन्होने कहा था कि काग्रेस शासनकी बागडोर सँभाल लेगी।" आपने कहा कि इसका मतलब यह है कि काग्रेसमे एकाधिकारकी भावना पाई जाती है।

आपने अपने पत्रमे 'हरिजन' के जिन लेखोका जिक्र किया है, उन्हे मैंने आद्योपान्त देखा है। इनकी प्रतियाँ सलग्न है ताकि आप उन्हे आसानीसे देख सके।

आपने जिन अशोको उद्धृत किया था वे क्रमश 'हरिजन' के १५ जून, १९४० और ३ दिसम्बर, १९३८ के अकोके है।[2] आपको निश्चय ही पता लग जायेगा कि इन लेखो का विवाद्य विषयसे कोई सम्बन्ध नही है। "भारत छोडो" माँगके सम्बन्धमे काग्रेसका अगस्त १९४२ का फैसला उसके अध्यक्ष मौलाना अबुल कलाम आजादकी उस आधिकारिक घोषणामें किया गया है जिसका उल्लेख मैंने आपको लिखे अपने पिछले पत्रमे[3] किया था। काग्रेस अब भी उस फैसलेकी पाबन्द है और यह समझमे नही आता कि 'हरिजन' मे छपे मेरे लेखोका उससे क्या सम्बन्ध है।

सच बात तो यह है कि आपके द्वारा दिये गये उद्धरणोका यह मतलब निकल ही नही सकता कि काग्रेस एकाधिकारवादी है। ब्रिटिश सरकारने अक्सर ऐलान किया है कि अगर भारतमे कोई ऐसा सगठन हो जो कि सत्ता सँभालने के लिए तैयार और योग्य हो, तो वह खुशीसे सत्ता सौप देगी। अगर काग्रेस अपने-आपको ऐसी भारी जिम्मेदारी सँभालने के योग्य बनाने की कोशिश कर रही है तो इसमे क्या बुराई है? मैने यह बात कि काग्रेस शासन अपने लिए नही, बल्कि

१. ब्रिटेनकी लिबरल पार्टीके नेता हरबर्ट लुई सैम्युअल
२. देखिए खण्ड ६८ और ७२।
३. देखिए खण्ड ७७, पृ० ८०।

सारे भारतके लोगोंके लिए चाहती है, उस लेखमें स्पष्ट कर दी थी जिससे आपने उद्धरण दिये हैं। प्रासंगिक उद्धरण इस प्रकार है:

> **कांग्रेसकी अहिंसा उसे इस बातकी इजाजत नहीं देती कि वह सबसे अलग-थलग अपनी ही शानमें रहे, जैसा कि उसके विरोधी कहते हैं। इसके विपरीत उसे सबको प्रेमपूर्वक समझाना-मनाना है, दूसरोंके सन्देहोंका निवारण करना है और अपनी प्रामाणिकतामें सबका विश्वास जगाना है।**

क्या किसी भी लोकतान्त्रिक देशमें हर दलका स्वाभाविक उद्देश्य यही नहीं होता कि वह सारे देशको अपने विचारोंका बनाये और स्वयं उसका प्रवक्ता बने? क्या हाउस ऑफ कॉमन्समें सत्तारूढ़ दल अधिकारसे निवृत्त होनेवाले अपने पूर्ववर्ती दलसे शासन-व्यवस्था अपने हाथमें नहीं ले लेता? और क्या दलगत शासन-प्रणालीमें मिला-जुला मन्त्रिमण्डल बनाना साधारण नियम होनेके बजाय एक अपवाद ही नहीं है? तो फिर कांग्रेसका दूसरे दलोंके साथ मतैक्य स्थापित करनेकी खातिर अपने आदर्शको त्यागने या न्यून करनेसे इंकार करना एकाधिकारवाद कैसे कहा जा सकता है?

नरेशोंसे सम्बन्धित लेखसे लिये गये दूसरे उद्धरणके विषयमें इतना ही बताना जरूरी है कि दूसरे गोलमेज सम्मेलनमें स्वयं ब्रिटिश सरकारने ही कांग्रेससे कहा था कि वह रियासतोंके साथ समझौता कर ले। इसलिए अगर कांग्रेसने समझौतेकी बातचीतके लिए नरेशोंको निमन्त्रण दिया तो उसमें कोई बुराई नहीं हो सकती।

इस सम्बन्धमें याद रखनेकी मुख्य बात यह है कि कांग्रेसका बल अनुरोध अथवा आत्म-बलिदानमें है, क्योंकि किसी और तरहका बल उसके सिद्धान्तके ही विरुद्ध है। दूसरी ओर क्या हिंसा, जिसे शिष्टतासे शारीरिक बल कह दिया जाता है, एकाधिकारवादका आधार और अवलम्ब नहीं है? यदि है और यदि आपको अहिंसाके विषयमें मेरी और कांग्रेसकी ईमानदारीमें विश्वास है तो आप न मुझपर और न कांग्रेसपर ही एकाधिकारवादका दोष लगा सकते हैं।[1]

हृदयसे आपका,
मो० क० गांधी

१. वाइकाउण्ट सैम्युअलने २ जुलाईको लिखे इस पत्रके जवाबमें लिखा था: "मैं अभी भी यह नहीं मानता. . .आपने कहा कि कांग्रेस शासनकी बागडोर सँभाल लेगी और आपका अनुरोध है कि इसे उचित माना जाये, क्योंकि कांग्रेस वास्तवमें सभी दलोंके साथ मिलकर कार्य करना चाहती है और ऐसा करनेका प्रयास कर रही है। लेकिन जबकि शासनकी बागडोर तत्काल सँभाला जाना निश्चित है, दूसरी बात अभी भविष्यके लिए है, और इस बातसे भी इंकार नहीं किया जा सकता कि अनिश्चित है।"

संलग्न : २

राइट ऑनरेबल वाइकाउण्ट सैम्युअल, जी० सी० बी० और सी०
३२, पोरचेस्टर टेरेस
लन्दन वेस्ट २ (इग्लैंड)

सलग्न · "दो दल" ('हरिजन', १५ जून, १९४०)
"देशी राज्य और प्रजा" ('हरिजन', ३ दिसम्बर, १९३८)

[अग्रेजीसे]
गांधीजीज कॉरेस्पॉन्डेन्स विद द गवर्नमेंट, १९४२-४४, पृ० ८४-८६

४६०. पत्र : भारतन कुमारप्पाको

पचगनी
८ जून, १९४५

प्रिय भारतन,

बेशक, मै तुम्हारी किताब पढ रहा हूँ, लेकिन मेरी गति बहुत धीमी है, जिसके लिए मुझे उम्मीद है कि तुम्हे आपत्ति नही होगी।

मैने अंग्रेजीमे 'हरिजन' का सम्पादन किया, क्योकि यह एक दु खद आवश्यकता थी। मुझे यह कार्य दुबारा भी करना पड सकता है। लेकिन मुझे मालूम है कि मेरी अपूर्ण हिन्दुस्तानी ही ज्यादा अच्छी तरह समझी जायेगी और अधिक बडी सख्यामें पाठको तक पहुँचेगी। यद्यपि तुम्हारे कहने मे वजन है। लेकिन मुझे बहस करने मे समय नही बिताना है।

स्नेह।

बापू

श्रीयुत् भारतन कुमारप्पा
अ० भा० ग्रा० स०
मगनवाड़ी, वर्धा

अंग्रेजीकी नकलसे · प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

४६१. पत्र : मॉरिस फ्रीडमैनको

पंचगनी
८ जून, १९४५

प्रिय भारतानन्द,

आप इसके लिए वचनबद्ध हैं कि ठीक चलेंगे और स्वस्थ हो जायेंगे। बिना विचारे कोई प्रयोग करने की अनुमति नहीं है।

जहाँतक उन १६ पोलैंडवासियोंका प्रश्न है, जिस मसौदेपर आप मुझसे हस्ताक्षर करवाना चाहते हैं, उसे भेज दें। क्या ऐसे मामलेमें मेरे हस्ताक्षरकी कोई कीमत होगी? मैं पहले ही कोई निर्णय नहीं कर डालना चाहता। जब मसौदा मेरे सामने होगा, तभी मैं समझूँगा।

स्नेह।

बापू

श्री भारतानन्दजी
जस्सावाला नेचर क्योर क्लिनिक
खम्वाला हिल्स
बम्बई

अंग्रेजीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

४६२. पत्र : मोहन कुमारमंगलम्को

पंचगनी
८ जून, १९४५

प्रिय मोहन,

तुम्हारी कतरनें मिली हैं। वे दिलचस्प और कुशलतापूर्वक लिखी गई हैं। इस मामलेमें जो-कुछ कर सकता हूँ वह मैं कर रहा हूँ।

इस पत्र-व्यवहारका सार्वजनिक उपयोग मत करना।

स्नेह।

बापू

श्री मोहन कुमारमंगलम्
राजभवन
सैंडहर्स्ट रोड
बम्बई – ४

अंग्रेजीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

४६३. पत्र : माधवदास गोपालदास कापड़ियाको

पचगनी
८ जून, १९४५

चि० माधवदास,

तुम्हारा पत्र पढकर प्रसन्न हुआ। डॉ० कृष्ण वर्मा परोपकारी सज्जन है। मेरे कहने से ही उन्होंने तुम्हे वहाँ रखा है। और कही मै तुम्हे नही भेज सकता था। जहाँतक मुझे मालूम है, वे वहाँ रोगियोको लूटने के लिए नही बैठे है। उन्हे ऐसे रोगोके उपचार करने का शौक है। चाहे जिस कारणसे हो, लेकिन वे तुमसे तो कुछ भी नही लेना चाहते। मैने आग्रह किया है कि उनका जो खर्च हो रहा हो वह तो ले। मणिलालने तुम्हारे सम्बन्धमें रुचि ली, यह मुझे अच्छा लगा। मणिलालने तुम्हारे पाससे चाबी ले ली और तुमने दे दी, यह भी मुझे अच्छा लगा। मैने मणिलालसे कहा है कि जो भी खर्च हो वह पूरा करे, चाहे फिर तुम्हारे हिसाबमें से या और किसी तरह। तुम कोई चिन्ता मत करो। डॉ० कृष्ण वर्मा जो कहे सो करना। उन्हे अपना काम मालूम है। तुम्हारे इलाजके बारेमें उनपर मेरा विश्वास है। याद रखो, तुम तो आत्महत्या करने जा रहे थे। प्रभुने तुम्हे बचाया। अब वही रहकर स्वस्थ हो जाने का सकल्प करना।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० २७२१) से

४६४. पत्र : रामस्वामीको

पचगनी
८ जून, १९४५

चि० रामस्वामी,

तुम्हारे अग्रेजी खतका उत्तर तो हिन्दीमे दू। लेडी टाटा अबतक मौजूद है। वह भी मै तो नही जानता था। उनका इसमें क्या हिस्सा है। वह कहा रहती है, विगैरा मुझे लिखो।

जुलाईमे आश्रममे आ सकते हो।

बापूके आशीर्वाद

पत्रकी नकलसे . प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

४६५. पत्र : मुन्नालाल गंगादास शाहको

पंचगनी
८ जून, १९४५

चि० मुन्नालाल,

साथका पत्र[1] मैंने पढ़ा है। अगर जैसा यह भाई लिख रहा है वैसा ही हो तो इससे कहना चाहिए कि :

"प्रशिक्षणके लिए खादी विद्यालय मत जाओ। यहीं रहो, मजदूरी करो और खाओ, और जितना सीखते बने सीखो।" यदि वह पूरी मजदूरी कर सकता हो और तुम्हें ठीक लगे तो रख लो। अलग कोठरी मत देना। जहाँ जगह मिलेगी, पड़ा रहेगा। कोठरी देने की प्रथा अगर बन्द की जा सके, तो अधिक लोगोंका समावेश हो सकता है। अगर वह सब नियम न पाले, तो उसे मत रखना। इस प्रकार, ऐसे लोग सच्चे हैं या नहीं, इसकी परीक्षा भी हो सकती है।

रामस्वामीका पत्र इस पत्रके साथ है। इसे पढ़कर और सबसे पढ़ाकर नत्थी कर देना।

मैंने उसे मामूली पोस्टकार्ड लिख दिया है।[2]

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ८४४९) से। सी० डब्ल्यू० ५५८२ से भी; सौजन्य : मुन्नालाल गं० शाह

४६६. पत्र : गोविन्द रेड्डीको

८ जून, १९४५

भाई गोविन्द रेड्डी,

तुम्हारा खत आश्रम संचालकको भेजा है उन्हें जो ठीक लगे सो करने को कहा है।[3] आप उनसे मिले।

मो० क० गांधीके आशीर्वाद

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. गोविन्द रेड्डीका
२ और ३. देखिए पिछला शीर्षक।

४६७. पत्र : मीठूबहिन पेटिटको

८ जून, १९४५

चि० मीठूबहिन,

बहुत दिनो बाद तुम्हारा पत्र पाकर खुश हुआ। हम सब आम प्रसादके रूपमें खायेंगे। तुम्हारा कामका वर्णन अच्छा है। लेकिन तुम्हारी तबीयत ढीली रहती है, यह अच्छा नही लगता। इतने साधन होने पर भी तुम बीमार रहती हो। इसमे साधनोका दोष है, तुम्हारा अथवा डाक्टरोका अथवा सबका? कल्याणजीके बारेमे समझा। वह भी खूब काममे लगे रहते हैं। अच्छे हैं क्या?

सबको

बापूके आशीर्वाद

श्री मीठूबहिन पेटिट
कस्तूरबा सेवाश्रम
मरोली

गुजरातीकी नकलसे प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य . प्यारेलाल

४६८. पत्र : निर्मला गांधीको

पचगनी
८ जून, १९४५

चि० नीमू,

तेरा पत्र मिला। मेरा विश्वास है कि [सुमीकी देखभालके लिए] दिल्ली न जाकर तूने समझदारीका काम किया है। तुझे अथवा उपाको शिमलाकी सैर करनी ही नही थी। सुमीकी देखभाल अच्छी तरहसे की जाती है। फिर तेरे वहाँ जाने का कुछ अर्थ ही नहो रह जाता। देवदास तुझे बुलाता है यह उसकी प्रेम-भावना बताता है। ऐसी भावनाओके अधीन न होने मे ही सच्ची भावना निहित है। ऐसा करने से ही आपसमें [प्रेम] भावनामें वृद्धि होती है। [सुमीको] आँखे खराब करके रतजगा न करने की सीख समय-समयपर देती रहना।

उषा मन चाहे तब लिखे।

तुझे और रामदासको अपनी सेहत सुधारनी चाहिए, यह धर्म है। कानम आनन्दपूर्वक है। वह किसीको परेशान नहीं करता। बहुत बोलता है। मैंने [तीन] बन्दर गुरु उसे दिखाये हैं।

बापूके आ[शीर्वाद]

निर्मला गांधी
मार्फत रामदास गांधी
खलासी लेन
नागपुर

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स । सौजन्य : प्यारेलाल

४६९. पत्र : सतीशचन्द्र दासगुप्तको

पंचगनी
८ जून, १९४५

चि० सतीशबाबू,

तुम्हारे पत्रकी नकल मधुकोष[1] वालोंको न भेजी हो, तो क्या मैं भेज सकता हूं, यह लिखना। तुमने जो लिखा है, उससे मैं चौंक तो गया हूं। शहदके दोनों नमूने भी पहुंच गए है।

तुमारी प्रकृति अच्छी होगी।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० १६४३) से

१. महाबलेश्वरके निकटके मधुमक्खी पालन केन्द्र, जहाँ पूरी तरह स्वदेशी साधनोंसे और वैज्ञानिक तरीकेसे कार्य किया जाता था। गांधीजी २ मईको वहाँ गये थे।

४७०. पत्र : देवराज सेठीको

पचगनी
८ जून, १९४५

भाई देवराज,

विद्यावतीजी[1] को नई तालिममे रखना मुझे तो अच्छा लगेगा। मगर मुझे डर है कि नई तालीमका काम सख्त मजदूरीका है। और शायद ही विद्यावतीजी ऐसी मजदूरी कर सके। मेरी सलाह है कि वह आशादेवीको लिखे।

आचार्या अब पंचगनीमे तो क्या मिलेगी, क्योकि इस महीनेके आखिरमे मै यहासे उतर जाऊंगा।

बापुके आशीर्वाद

श्री देवराज सेठी
एम० ए० एल० एल० बी०
झंग सिटी (पंजाब)

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य . प्यारेलाल

४७१. पत्र : जानकीदेवीको

पचगनी
८ जून, १९४५

प्रिय भगिनी,

मै यहां बैठे कुछ नही कर सकता। इतनी शक्ति और सत्ता मै नही रखता। आपका पत्र श्री पुरुषोत्तमदास टंडनजीको भेजा है। वह जो हो सके करेगे। उन्हे मिलना।

मो० क० गांधीके आशीर्वाद

श्री जानकीदेवी
मीरा गोविन्दपुर
जिला रायबरेली
यु० पी०

पत्रकी नकलसे . प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. कन्या गुरुकुल, देहरादूनकी आचार्या

४७२. पत्र : पुरुषोत्तमदास टण्डनको

८ जून, १९४५

भाई पुरुषोत्तमदास टंडनजी,

इसे देखो। उचित लगे सो करो। उस वहनसे तुमको मिलने का लिखा है।[1] हिंदुस्तानी वारेमे मेरे खतके उत्तरकी राह देखता हू।

बापु

पुरुषोत्तमदास टंडनजी
१० क्रासवेय रोड
अलाहावाद

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

४७३. पत्र : कीकीबहिन लालवानीको

पचगनी
८ जून, १९४५

चि० कीकीवहन,[2]

प्यारेलालजी पर तुम्हारा खत आया है। तुम्हारे अंग्रेजी निवेदनोसे मनमे एक वड़ा प्रश्न पैदा होता है। अंग्रेजी तो तुम लिख नही सकती हो फिर लिखवाना और दस्तखत देना उससे क्या फायदा? ज्यादा-से-ज्यादा वा के जैसा करो। हरिलालके वारेमे वा ने अपने दुःखकी कथा देवदासको सुनाई। देवदासने उसका अंग्रेजी किया। और अखवारोंमें दिया यह कहकर कि वा ने जो दुःख सुनाया था उसका करीब-करीव शव्दशः अंग्रेजी देवदासने दिया है। तुमने यह देखा भी होगा इस तरह लिखने का वजन ज्यादा होगा, और मातृभाषाका वजन भी वढ़ेगा। मै तो यहातक जाऊगा कि जैसा विचार तुम्हारे मनमे आवे वे वैसा ही सिंधी या हिन्दी जवानमे प्रगट हो। आखिरकार अंग्रेजीमे जितना होता है वह कृत्रिम हवामे पकाए हुए फलकी मानिन्द निकम्मा सावित होता है।

१. देखिए पिछला शीर्षक।
२. जे० वी० कृपलानीकी वहिन

मेरी तबियत ठीक है।

बापुके आशीर्वाद

श्री कीकीबहन लालवाणी
भारत खादी भंडार
बुरुश रोड
कराची

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

४७४. पत्र : दुनीचन्दको

पंचगनी
८ जून, १९४५

भाई दुनीचंद,

आपका पत्र मिला। आप अच्छा काम कर रहे हैं। 'इम्पीरिअलिजम' के बारेमें तो मैंने जो-कुछ लिखा है, वह अब सिद्ध हो रहा है।

आप जब आना चाहे तब सेवाग्राममे आ जावे। यहांसे तो इस महिनेके आखिर मे मैं उतरूंगा।

अच्छा ही है न कि मेरा संदेशा[1] आपकी धर्मपत्निको मिला ही नही। यह सब बताता है कि मै तो १२५ साल काटू या न काटू आप तो दीर्घायु है ही, और दुखेडी हरिजनोंका दुःख बहुत जल्दीसे दूर करेगे।

आपका,
मो० क० गांधी

लाला दुनीचद अडवोकेट
करीपन्नदास काटेज
अम्बाला सीटी
(पंजाब)

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. देखिए पृ० १३७।

४७५. पत्र : मोहनलालको

पचगनी
८ जून, १९४५

भाई मोहनलाल,

तुम्मारा खत पाकर मैं राजी हुआ। तुमने दुखेडीके हरिजनोके लिये ठीक काम किया है। मेहनत करके उनके दुःख सर्वथा मिटाने चाहिये।

बापुके आशीर्वाद

श्री मोहनलालजी
लाजपतराय भवन
लाहौर

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

४७६. पत्र : श्यामलालको

पंचगनी
८ जून, १९४५

भाई श्यामलाल,

तुम्हारा २ तारीखका पत्र मिला है। आश्रमके पास क्या मैं तो आश्रममें ही लडकियोंको रखूं, मगर वहां जगह नही है। मैं तो अभी भी मानता हूं कि हमारे कोई तो स्थाई मकान ऐसे कामोके लिये बनाना ही होगा। लेकिन जाजूजी को तुमने लिखा है, वह अच्छा ही है। कुछ न कुछ निचोड आयेगा ही।

बापुके आ[शीर्वाद]

श्यामलाल
क० ट्र० आफिस
सिंधिया हाऊस
बेलार्ड एस्टेट, मुंबई

मूल पत्रसे : कस्तूरबा गांधी राष्ट्रीय स्मारक ट्रस्ट पेपर्स। सौजन्य : नेहरू-स्मारक संग्रहालय तथा पुस्तकालय

४७७. पत्र : प्रभावतीको

पंचगनी
८ जून, १९४५

चि० प्रभा,

तेरा दूसरा खत मिला है। तू खामख्वाह छूटने के लिए दुःखी होती है। छूटे तो भी काम करना है और जेलमे भी काम करना है। सच बात तो यह है कि जेलसे बाहिर तेरे-जैसीका काम तो बढ़ता है तो भी क्या हुआ? तू करने लायक है। चिंता मात्रको छोड दे। जयप्रकाशको मिलने मे अगर देरी होनेवाली है तो ऐसे ही आ जा, जब इजाजत मिले तब यहांसे चली जायगी।

पिताजीके बारेमें मेरी तो यही झंखना है कि वे इस अपंग स्थितिसे मुक्त हो जायें।

मेरी तबियत तो अच्छी ही है। इस महिनेके आखिरमे यहांसे उतर जाऊंगा।

चश्मेसे अच्छा रहे तो कभी छोड़ना नही। मेरे पास खत आ रहे हैं। "प्रभावती और राजकुमारी तुम्हारे पास पहुंच गई होगी।" और यहां तो दोनोमें से एक भी नही। रा० कु० को तो सरकारी हुकम नही मिला है। उन्होंने अखबारोंमे ही देखा बंधन उठा लिया गया है। लेकिन सरकारी हुकम मिलने पर भी वह जल्दी नही आ सकेगी, क्योकि सिमलेमे अपने भाई-भाभीके कामके कारण उसे वहा रहना ही चाहिये। जुलाईमे ही आ सकेगी ऐसा लगता है।[1]

बापुना आशीर्वाद

प्रभावतीदेवी
द्वारा श्री विश्वनाथ प्रसाद
बिहार बैंक
पो० ओ० लाहेरी सराई, दरभंगा (बिहार)

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. देखिए पृ० २६२।

४७८. पत्र : सुमतिबाई रायको

पंचगनी
८ जून, १९४५

कुमारी सुमतिबाई,

तुम्हारा खत मिला। अगर तुम्हारेमें शक्ति है, ज्ञान है और इच्छा है तो अवश्य क[स्तूरबा] निधिका काम करो।

भाई रामकृष्ण जाजूसे कहो उनके पत्रका अलग उत्तर नहीं देता हूं। वे जल्दी अच्छे हो जाय।

बापुके आशीर्वाद

श्री सुमतिबाई राय
जैन सेविकाश्रम
सोलापुर

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

४७९. पत्र : उमादेवी अग्रवालको

८ जून, १९४५

चि० ओम,

तुम्हारा खत मिला। तुम्हारे बारेमें अगर मुझे ही निर्णय करना है तो जुलाई में वहीं आने पर करूंगा।

हिंदुस्तानीके बारेमें मैं तुम्हारी बात समजा हूं। देहातोंमें जो शब्द बोले जाते हैं उसका भंडार तो होना ही चाहिये ना? कोई भाषा वगैर शब्दकोशके रह नहीं सकती है। डा० ताराचंद और सुंदरलालजी ही तो कोष नहीं बनायेंगे। इस बातकी तो थोडी चर्चा हम मिलेंगे तब करेंगे। इसी कामके लिए जो कमीटी बनी है उन्हें तो संगमकी रचना करनी है।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

४८०. पत्र : सरोजिनी नायडूको

पंचगनी
९ जून, १९४५

प्रिय गायिका,

मैंने पिछले माहकी १३ तारीखका तुम्हारा पत्र रख छोड़ा था — ताकि तुम्हारे अतिशय मातृवत स्नेहके लिए प्यारकी चन्द पक्तियाँ लिख सकूँ। तुम्हारा तार एक दार्शनिकका तार था जो अपने दर्शनको सही अवसरपर कार्यान्वित कर सकती है।[1] तुम्हारा पत्र माँकी ममताको उत्कृष्ट रूपमे व्यक्त करता है। मुझे नही मालूम कि मै तुम्हे तुम्हारे किस रूपमे सबसे अधिक प्यार करूँ — कवयित्री, दार्शनिक अथवा माताके रूपमे। तुम ही बताओ।

स्नेह।

कतैया

श्रीमती सरोजिनी नायडू
हैदराबाद, दक्षिण

अंग्रेजीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल। महात्मा गांधी — द लास्ट फेज, जिल्द १, भाग १, पृ० १११ से भी

४८१. पत्र : भारतन कुमारप्पाको

पंचगनी
९ जून, १९४५

प्रिय भारतन,

जहाँतक सम्भव हो, मै तुम्हें पत्रिकाके[2] हर अंकके लिए कुछ देना चाहता हूँ। इसलिए अच्छा होगा कि मुझे समयपर याद दिला दो। और जिस विषयपर तुम चाहते हो कि मै लिखूँ, उस बारेमे सुझाव भेज दो।

स्नेह।

बापू

१. सरोजिनी नायडूके पुत्रका देहावसान हो गया था; देखिए पृ० ४२।
२. खादी ग्रामोद्योग पत्रिका

[पुनश्च :]

जे० सी० [कुमारप्पा] तो निस्सन्देह पूरी तरह स्वस्थ होंगे।

श्री भारतन कुमारप्पा
अ० भा० ग्रा० सं०
मगनवाड़ी, वर्धा

अंग्रेजीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

४८२. पत्र : मोहन कुमारमंगलम्‌को

पंचगनी
९ जून, १९४५

प्रिय मोहन,

अवश्य मैं पामदत्तको[1] जानता हूँ — नामसे भी और ख्यातिसे भी। उनके अभियानमें मैं अवश्य उनकी सफलताकी कामना करता हूँ।

स्नेह।

बापू

श्री मोहन कुमारमंगलम्
राजभवन
सैंडहर्स्ट रोड, बम्बई–४

अंग्रेजीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

४८३. एक पत्र

[९ जून, १९४५][2]

यह बात तो मेरे ध्यानमें थी। पामदत्त बहुत प्रख्यात व्यक्ति हैं। वह एमरीका मुकाबला कर सकते हैं। पटेलको[3] मैं नहीं जानता। [चुनावमें] इस तरह

१. रजनी पामदत्त, इंग्लैंडके एक साम्यवादी नेता, जो बर्मिंघमके स्पार्कब्रुक निर्वाचन क्षेत्रसे भारत मन्त्री एल० एस० एमरीके खिलाफ चुनावमें खड़े हुए थे। "अपने चुनाव-अभियानके लिए" गांधीजी से "एक सन्देशके लिए अनुरोध" होनेपर कुमारमंगलम्‌को भेजे गांधीजी के जवाबके रूपमें यह पत्र बॉम्बे क्रॉनिकल, १३-६-१९४५ में छपा था।

२. पामदत्तके उल्लेखसे; देखिए पिछला शीर्षक।

३. पुरुषोत्तम पटेल; देखिए पृ० २६४।

बहुतसे हिन्दुस्तानी खड़े हों, यह भी मैं नहीं चाहता। यह चुनाव बहुत महत्त्व का सिद्ध होनेवाला है। अगर वे हार जायें, तो भी कोई बात नहीं। साथ ही अगर मैं इस मामलेमें भी वही राय दूँ, जो मैंने पटेलके मामलेमें दी थी, तो उसका यह अर्थ लगाया जायेगा कि मैं इसलिए मना कर रहा हूँ, क्योंकि वे कम्युनिस्ट हैं, जबकि मेरे मनमें ऐसी कोई बात नहीं है। यह भेद समझने-जैसा है। समझमें न आये, तो मुझसे फिर पूछना।

इस पत्रको आज न पोस्ट करना हो, तो कल कर देना। तुम समझ जाओ, यह ज्यादा जरूरी है।

गुजरातीकी फोटो-नकल (एस० एन० ९१३०) से

४८४. पत्र : मृदुला साराभाईको

पंचगनी
९ जून, १९४५

चि० मृदुला,

तेरा पत्र बापाकी मार्फत मिला। उसपर बापाकी टिप्पणी है कि "इसमें पहले मृदुलाने कुछ लिखकर नहीं दिया था। अब लिखकर दिया है तो उसके सम्बन्धमें इस बारकी बैठकमें विचार होगा।" ऐसा भले हो। तेरा दफ्तर तो अभी बम्बईमें ही है। अभी वहीं रहने दो। शान्तिकुमारको कोई दिक्कत हो तो लिखना। जो सहायक हैं वे तो रहेंगे ही, ऐसा मान लेता हूँ।

तेरी तबीयत अच्छी होगी। यदि वह ठीक नहीं हुई तो झगड़ा होगा।

बापूके आशीर्वाद

श्री मृदुला साराभाई
कस्तूरबा स्मारक निधि
सिन्धिया हाउस
बैलर्ड एस्टेट, बम्बई — १

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

४८५. पत्र : अमतुस्सलामको

९ जून, १९४५

चि० अ० स०,

तेरा खत मिला। महाबलेश्वर कबसे छुटा। पंचगनी भी इसी माहकी आखरमें तो छुटेगा ही उससे जल्दी भी छुटे तो भी जुलाईमें से० पहोंचुगा। ६ महिनाका ख्याल मत कर तेरे कामका कर। पूरा कर वापिस आ जा।

कंचनको सौदपुर भेज।

सु[शीला] बहेनने लिखा है। तू याद नही रखती है और अधीरी होती है।

खान साहेबके लिये क्या करूं?

बापुके आ[शीर्वाद]

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० ४९७) से

४८६. पत्र : श्रीकृष्णदास जाजूको

पंचगनी

९ जून, १९४५

भाई जाजूजी,

चि० नारणदासका निवेदन देखा होगा। यहां होगा तो उसकी नकल इसके साथ जायगी। मेरी दृष्टिसे यह बडा काम होगा। उसमें मजदूरी बेंककी जड है। अगर बने तो भारी बन सकती है। मैं मानता हूं कि हमारे इसमें पूरा हिस्सा लेना चाहिए। और हमारा हिस्सा तो दान लेने का हि होगा। देने का कुछ नही। अर्थात नारणदासके सूत्रयज्ञमें कम-से-कम एक गुडी देनेवालेसे उसे ले लेना और उसकी पहुंच देना। और उसका हिसाब हप्तावार या माहवार नारणदासको भेज देना। इसमें हमको बहुत महेनत तो है नहीं और आमद बहुत हो सकती है। और इतना ही यज्ञका महत्त्व बढेगा।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी नकल (सी० डब्ल्यू० ८६२४) से। सौजन्य : नारणदास गांधी

४८७. पत्र : विचित्र नारायण शर्माको

पंचगनी
९ जून, १९४५

चि० विचित्र,[1]

तुमारा खत मिला। समस्या कठिन है। गाडोदियाजी से तुम निडर होकर पत्र-व्यवहार करो और लिखो कि वह क्या चाहते हैं। वह निकलना चाहे तो निकलें। जाजूजी से भी पूछो। डा० शर्मा किनकी नियुक्ति चाहते है सो जानना। समय बचाने के लिए एक पत्रसे ही चला लेता हूं नही तो तीन पत्र लिखने पड़ते।

बापुके आशीर्वाद

नकल डा० शर्मा
बापूकी छायामें मेरे जीवनके सोलह वर्ष, पृ० ३३०

४८८. पत्र : प्रभाकरको

९ जून, १९४५

चि० प्रभाकर,

तुम्हारा खत मिला। बाबाजी को साधारण आहार पर लाओ। किसी तरह वे बिलकुल अच्छे होने चाहिये।

भाई रामस्वामीको तो पैसे भेज दिये हैं। वह अपने मात-पिताके लिये थे। और कुछ मांगा है तो मुझे पता नही।

तुम्हारी प्रकृति बिलकुल अच्छी मानी जाये?

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० ९०३०) से। सी० डब्ल्यू० ९१५४ से भी; सौजन्य · प्रभाकर

१. गांधी आश्रम, मेरठके प्रबन्धक

४८९. पत्र : शान्ताको

पंचगनी
९ जून, १९४५

चि० शांता,

तुम्हारा खत अच्छा है। 'दो चार' शब्दका प्रयोग हमारे लिये बुरा है। पेखानाकी जगह बदलने मे या तो दो रु० लगेगे या चार। सचमुच हमारे आने तक जाना चाहिये तब हिसाब सही निकलेगा। वर्णन रसिक और शिक्षाप्रद है।

हां काम जीवन पलटाका है और दो युगों तक चल सकता है। तो भी हम न हारें न छोड़े। प्रौढ शिक्षणका सही अर्थ तुमने खीचा है।[1]

अनासक्ति सही है। और उसे पाने का प्रयत्न करना है इतना निश्चय काफी है।

सच्ची बैंक मजदूरी बैंक होगी। मजदूरीका सिक्का सूत है। इसका मतलब यह नही है कि तुम्हारी अनाज बैंक, पैसा बैंक न चले।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० ५८९९) से; सौजन्य : मुन्नालाल गं० शाह। प्यारेलाल पेपर्ससे भी; सौजन्य : प्यारेलाल

४९०. पत्र : काशीनाथ वैद्यको

पंचगनी
९ जून, १९४५

भाई काशीनाथ वैद्य,

आपका ६ जूनका खत मिला है। मै तो जितना हो सकता है, उतना कर रहा हूं। देखे क्या होता है।

बापुके आशीर्वाद

श्री काशीनाथ वैद्य
१३०७, सुल्तान बाजार
हैदराबाद

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. इसके आगेका अंश प्यारेलाल पेपर्ससे है।

४९१. पत्र : पार्वती डींडवाणियाको

पचगनी
९ जून, १९४५

चि० पार्वतीवहन,

तुम्हारा खत मिला। मेम्वरीके बारेमे तो जो उचित लगे वही करो। मुझको पूरा पता भी नहीं। तुम्हारी व्याधिके बारेमें मुझे दु.ख होता है। इस हालतमे मैं कैसे कहूं कि हुकम तोडो? यह निश्चय भी तुम्हारे सिरपर रखना होगा। तुम्हारी शक्तिका नाप तुम्हे ही करना चाहिए। इतना कह सकता हू कि अगर शारीरिक स्थितिके कारण हुकम मानेगी तो कोई तुम्हारी नदामत नही कर सकता। मेरी उम्मीद है कि शारीरिक प्रकृति विलकुल अच्छी हो जावेगी। वात करने के लिये मेरे पास आने की मैं सलाह नही दे सकता हूं। जो कहना है सो लिखो। कम आदमियो को मैं मेरे पास आने के लिये उत्तेजन देता हूं? और तुमको मनाही करने मे तो तुम्हारा शरीर भी कारण है।

वापुके आशीर्वाद

श्री पार्वती डीडवाणिया
[मार्फत] सी० डीडवाणिया
कश्मीरी गेट, दिल्ली

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य · प्यारेलाल

४९२. पत्र : सुधा कुलकर्णीको

पंचगनी
९ जून, १९४५

चि० लवुस उर्फ सुधा,

तू घोडेपर सवारी करती है। मैं पैदल चलु। कैसे पहोचु? २८ मईको खत भेजती है। एक जूनको मुझे मिले। तुम दोनोंका आश्रम उसी रोज खुले। आशीर्वाद कैसे पहोंचे? इसी तरह समयका हिसाव रखेगी तो घोडेपर से गिरेगी और तेरे

पतिको भी गिरायगी। इतना पाठ देकर दोनोकी सफलताके लिये आशीर्वाद भेजता हूं। याद रखो वालासाहेब खेर जैसे सत्पुरुष अध्यक्ष है।

बापुके आशीर्वाद

अ० सौ० सुधा कुलकर्णी
आदि सेवा आश्रम
पो० ओ० मोखदा
जिला थाना

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

४९३. पत्र : रामनाथ 'सुमन' को

पचगनी
९ जून, १९४५

भाई रामनाथ 'सुमन,'[1]

तुमने लिखा सो अच्छा ही किया। मेरे ख्यालमें तो रहा कि तुम विरारमे ही है। अब तो हिंदी साहित्य समेलनमें आ गए हैं। अच्छा ही है। मेरे विचारोको तुम्हे पता होगा। संमेलनमें से भागने की चेष्टा कर रहा हूं। राष्ट्रभाषाकी व्याख्याका मैंने तो मेरी दृष्टिसे विस्तार कर लिया हैं। इसका विज तो जब मैं संमेलनमें पहली दफा अध्यक्ष हुआ[2] तभी डाला था। ऐसी स्थितिमें मेरी खामोशी ही अच्छी होगी। क्योंकी तुम मम्मेलनके अधिकारी वर्गमें है। इसलिये ज्यादा लिखना मेरे लिये उचित नही होगा।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. प्रसिद्ध हिन्दी कवि
२. २० अप्रैल, १९३५ को इन्दौरमें; देखिए खण्ड ६०।

४९४. पत्र : श्यामलालको

पचगनी

९ जून, १९४५

भाई श्यामलाल,

अगर मुझे मालूम होगा तो मैं भूल गया हू कि रामनाथके तुम छोटे भाई है। अब तो दोनोका चेहरा मेरे सामने खडा करता हूं तो देखता हूं कि उनमें बहुत साम्य है।

रामनाथपर जो खत लिखा है[1] वह इसके साथ है। उनको भेजो। वर्धा दफ्तर देखने को गये है सो अच्छा है। राष्ट्रभाषा प्रचारके मकानोमे या बजाजवाडीमे या मगनवाडीमे मकान मिले तो अच्छा होगा। बापाकी दृष्टिसे मगनवाडी या बजाजवाडी शायद सबसे ज्यादा अनुकुल होगा। लेकिन देखो मैं तो सूचना ही करता हूं।

बापुके आशीर्वाद

श्री श्यामलालजी
श्री कस्तूरबा स्मारक निधि
सिंधिया हाऊस, बेलार्ड एस्टेट
मुंबई

पत्रकी नकलसे . प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

४९५. पत्र : वीणा चटर्जीको

पचगनी

९ जून, १९४५

चि० वीणा,

तेरा खत मिला है। अक्षर अच्छे है, लेकिन उसमें सुधार करने की गुजाइश है। दोनो लिपि अच्छी तरहसे सीख लेना। काम तो सतोषसे तू करनेवाली है ही। शारीरिक प्रकृति अच्छी रखना। जोहराको कहो कि वह मुझे लिखे। मृदुलाबहिन उसको मांगती है। उसको क्या उत्तर दिया?

बापुना आशीर्वाद

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. देखिए पिछला शीर्षक।

४९६. खादी शिक्षाकी आवश्यकता

पचगनी
१० जून, १९४५

खादी काम शुरू हुआ उसके थोड़े समय बाद ही यह आवश्यकता महसूस होने लगी थी कि उसकी सारी प्रक्रियाओका कार्यकर्त्ताओंको शास्त्रीय ज्ञान आवश्यक है। इसलिए १९२७-२८ सालमे ही सावरमती आश्रममे बुनाई कताई आदि सिखाने के लिए विद्यालय खोला गया था। ज्यो-ज्यों खादीका काम बढ़ा त्यो-त्यो उसके अन्य पहलुओके बारेमे यानी उसकी सुंदरता और सस्तेपनके बारेमे ध्यान देने की जरूरत हुई और उसके लिए शास्त्रीय ज्ञानकी आवश्यकता होने से उसकी कमी दिन-ब-दिन ज्यादा खटकने लगी। कुछ कार्यकर्त्ताओंने व्यक्तिगत प्रयत्नसे और अनुभव द्वारा कई बाते जान ली। औजारोके विषयमे भी संशोधन और सुधार हुए। सब खादी प्रेमी जानते है कि स्व० मगनलाल गांधीने इस बारेमे बड़ी मेहनत की। आगे चलकर यह स्पष्ट महसूस होने लगा कि हरएक खादी कार्यकर्त्ताको खादी शास्त्र सीख लेना जरूरी है। मैंने तो इस बातपर शुरू से ही जोर दिया और खादी कार्यकर्त्ताको क्या-क्या जानकारी होनी चाहिए इसकी एक प्रश्नावली बनाई। सन् १९३७ मे 'हरिजन' मे तीन लेख भी मैंने लिखे। उसमें से १३-२-३७ के लेखमे लिखा है[1] कि:

> मेरी रायमे चर्खा संघके किसी भी खादी उत्पत्ति केन्द्रमे काम करनेवाले हरएक कार्यकर्त्ताको खादी शास्त्रीकी मूलगत जरूरी बाते जान लेना लाजमी करना चाहिए।

इस नीतिके अनुसार आगे चलकर खादी विद्यालय खोले गये। केन्द्रीय दफ्तरकी ओरसे एक खादी विद्यालय चलाया गया। 'कताई कार्यकर्त्ता', 'बुनाई कार्यकर्त्ता' और 'खादी प्रथमा' का अभ्यासक्रम तैयार करके पढ़ाने का प्रबन्ध किया गया तब यह आशा थी कि चरखा सघके कार्यकर्त्ता बारी-बारीसे इन विद्यालयोंमे जाकर अपनी पढ़ाई पूरी कर लेंगे। इस काममे कार्यकर्त्ताओको किसी प्रकारकी तकलीफ न हो इसलिए उनका पूरा वेतन चालू रखने के अलावा प्रवास-खर्च तथा पराई जगह रहने के कारण कुछ भोजन-खर्च अधिक आयेगा यह समझकर थोड़ा अधिक भत्ता भी देने का प्रबन्ध किया गया। परन्तु खादी शास्त्र सीखने के विषयमें खादी कार्यकर्त्ताओका उत्साह नही बढ़ा यह दु:खकी बात थी।

लेकिन अब चरखा संघको यह नया काम करना है इस दृष्टिसे तो खादी शास्त्रमे शिक्षित होना खादीके हर कार्यकर्त्ताके लिए अनिवार्य हो जाता है। उसके बिना खादीका नया काम चलना असंभव-सा है।

१. देखिए खण्ड ६४, पृ० ४०५।

संघकी नयी कार्य-प्रणालीके अनुसार अब बिक्री भंडारका स्वरूप भी उत्पत्ति केन्द्रके जैसा बन जाता है। इतना ही नही इससे आगे जाकर खादीकी उत्पत्ति और बिक्रीके सभी केन्द्रोंको अब हम एक प्रकारसे खादीके शिक्षा केन्द्रोमे परिवर्तित करना चाहते है। इस दृष्टिसे कार्यकर्त्ताओको खादी शिक्षाके लिये विद्यालयोमे भेजना बिलकुल आवश्यक है। नये और पुराने सभी कार्यकर्त्ताओको हमे खादीमे शिक्षित करना है।

इसलिये शाखाओके अधिकारियोसे प्रार्थना है कि सारे कार्यकर्त्ताओकी फेहरिस्त इस दृष्टिसे एक बार जाच ली जाय कि किस कार्यकर्त्ताको कितनी शिक्षा प्राप्त करने की आवश्यकता है उसके अनुसार उनकी शिक्षाका प्रबन्ध किया जाय। इस तरह कार्यकर्त्ताओकी एक फेहरिस्त बनाकर केन्द्रीय दफ्तरमे भेज दी जाय। शिक्षाको अनिवार्य बनाने की दृष्टिसे हमे यह करना ही है कि वेतन-वृद्धिकी बात कार्यकर्त्ताकी खादी शिक्षापर अवलंबित रहे। शिक्षा प्राप्त करने मे यह बात हमे स्वीकृत होनी चाहिये कि कार्यकर्त्ताको खादीकी परीक्षामे उत्तीर्ण होना चाहिये अनुत्तीर्ण होने पर उसकी योग्यता न मानी जाय। खादी शिक्षाके बारेमे जबतक हम इतनी गभीरतासे विचार नही करेंगे तबतक कार्यसिद्धिकी आशा हम कैसे रख सकते है? मैने कहा है कि अगर हम सच्चे खादीसेवक है तो हमारेमे इतनी जागृति इतना ज्ञान और इतनी सावधानी होनी चाहिए जितनी कहो आई० सी० एस० मे मानी जाती है।

मो० क० गांधी

हिन्दीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य प्यारेलाल

४९७. पत्र : आनन्द तोताराम हिंगोरानीको

१० जून, १९४५

चि० आनद,

तुमारा खत मिला है। जेरामदास तो अब मेरे साथ है इसलिये तुमको लिखने का उनको कह दिया है।[1] वह तो तुमको सिर्फ आश्वासनके लिये है। तुम अच्छे हो जाओ।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी माइक्रोफिल्मसे। सौजन्य : राष्ट्रीय अभिलेखागार और आनन्द तो० हिंगोरानी

१. आनन्द तो० हिंगोरानीको लिखे जयरामदास दौलतरामके पत्रके लिए देखिए परिशिष्ट २।

४९८. पत्र : हमीदखाँको

पंचगनी

१० जून, १९४५

भाई हमीदखान,

तुम्हारा खत मिला है। गणेशशंकर विद्यार्थीको[1] मैं अच्छी तरह पहचानता था। मेरा आदर भी उनके बारेमें बहुत रहा है। स्मारकके बारेमें मैंने मेरी राय जाहिर की है। वह तुमको मालूम होनी चाहिये। अगर वह नही पढ़ी है तो पढ़ लो। स्मारक कोई मकान बनाकर अर्थात् पैसेसे होता नही है। पैसे देकर आदमी समझ लेता है कि उसने अपना काम कर लिया। इसलिये मेरा अभिप्राय यह है कि गणेश शंकरका सच्चा स्मारक यही होगा कि कम-से-कम कानपुरमें, और सचमुच तो सारे हिन्दुस्तानमें हिंदु-मुसलमान एक हो जावें और एक-दूसरेको काटने के बदले एक-दूसरेके लिए जान दें। ऐसी कोई चीज हो तो मुझे बताइए और मेरे आशीर्वाद मांगिये। सिर्फ पैसे इकट्ठे करने में क्या पड़ा है? मुझे यह भी बताइये कि कमेटीमें कौन-कौन है। और इतने वर्षो तक जो नही बना वह चीज आज बन सकेगी ऐसा मानने का क्या कारण है?

स्मारक कमेटीका उद्देश्य मैंने देखा है। उससे तो मरहूमका नाम अमर नही होगा लेकिन मजाक होगा। दो तीन धनी मिलकर भी ऐसे मकान तो बनाकर, और थोडे आदमियोको दरमाया देकर अपने-आपको और दूसरोको फुसला सकते है कि विद्यार्थीजी का स्मारक बना लिया मगर मैं उसे मजाक मानूंगा।

यह खत तुम्हारे और कमेटीके पढ़ने के लिये है। अखबारोमें देने के लिये नही। इसका मतलब यह नही है कि मैं मेरे ख्यालात अखबारोंमें देना नही चाहता। देना चाहे तो आप दे सकते हैं। यह लिखने में मेरा हेतु तो यह रहा है कि मैं आप लोगोंको जागृत करके, आपसे सच्चा काम करवाना चाहता हूं।

आपका,

मो० क० गांधी

जनाब हमीदखाँ,
मंत्री
गणेश शंकर स्मारक कमेटी
तिल-कहाल
कानपुर

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. २५ मार्च, १९३१ को हिन्दू-मुसलमान दंगेमें दंगाइयोंको शान्त करने के प्रयासमें वे मारे गये थे; देखिए खण्ड ४५।

४९९. पत्र : एन० जी० रंगाको

पचगनी
१० जून, १९४५

भाई रंगा,

तुम्हारा खत मिला। मै हिंदुस्तानी लिखू उसे समझ तो सकते है ना? प्रो० हुमायु कबीरके साथका तुम्हारा पत्र-व्यवहार मुझे अच्छा लगता है। जब मिलोगे तब हम बाते करेगे। दरम्यान थोड़ा-थोड़ा हिन्दोस्तानी सीख लो।

बापुके आशीर्वाद

प्रो० एन० जी० रगा
प्रिन्सिपल, पेजेन्ट्स इन्स्टिट्यूट
निडुब्रोलु[1]

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य . प्यारेलाल

५००. भाषण : राष्ट्र सेवा दलके समारोहमे[2]

पंचगनी
१० जून, १९४५

गांधीजी ने स्वयंसेवकोंको इस बातके लिए बधाई दी कि वे वर्षाके बावजूद वाईसे चलकर पंचगनी आये। उन्होंने कहा कि मुझे इस बातका खेद है कि मैं आप सबको प्रार्थना-भवनमें आने को नहीं कह सकता। यह भवन स्कूलका है। यह प्रार्थना का ही फल है कि स्कूलवालोंने मेरे जैसे विद्रोहीको अपने भवनमें प्रार्थना-सभा करने की इजाजत दी है। मै जानता हूँ कि सब स्वयंसेवक प्रार्थना नहीं करते। मै १९१९ से ही भारतकी स्वयंसेवक संस्थाओंके निकट सम्पर्कमें रहा हूँ। फिर भी मै उनमें प्रार्थना करने की प्रवृत्ति जागृत नहीं कर सका। मै उनमें प्रार्थनाके लिए उत्साह नहीं पैदा कर सका।

१. पता अंग्रेजीमें है।

२. ए० पी० आई० की एक खबरके अनुसार यह गाधीजी के भाषणका "अधिकृत पाठ" है। गाधीजी ने यह भाषण ३०० स्वयंसेवकोंके समक्ष डॉ० बी० डी० सावन्त द्वारा पारसी कन्या हाई स्कूलमें आयोजित समारोहमें दिया था। गाधीजी हिन्दुस्तानीमें बोले और उनके भाषणका मराठीमें अनुवाद किया गया था।

मैं शुरूसे ही आपसे यह कहता आ रहा हूँ कि स्वयंसेवकको सदा लोगोंकी सेवा करनी चाहिए और वह भी केवल सत्य और अहिंसाके द्वारा। फिर भी स्वयंसेवकोंमें ऐसे बहुत थोड़े पुरुष और स्त्रियाँ हैं जिन्होंने सत्य और अहिंसाके सिद्धान्तको अपनाया है। मेरा दृढ़ विश्वास है कि सच्चा स्वराज्य, अर्थात् ऐसा स्वराज्य जो अमीरों और गरीबों दोनोंके लिए हो, सत्य और अहिंसाके सिवाय किसी और तरह प्राप्त नहीं हो सकता।

अभी हालमें आपके सामने एक भयंकर युद्धका अन्त हुआ है। इस युद्धसे लोगोंके मनमें सन्देह पैदा हुआ है कि क्या इस दुनियामें सत्यका भी कोई महत्त्व है। मित्र-राष्ट्र जीत गये हैं, मगर उनकी विजय बढ़िया किस्मके हथियारों और सैन्यशक्तिके आधिक्यका परिणाम है। मैं इसे असत्यपर सत्यकी विजय मानकर खुश नहीं हो सकता। साथ ही मैं यह भी स्पष्ट कर देना चाहता हूँ कि अगर धुरी-राष्ट्रोंकी विजय होती, तो वह और भी बुरी बात होती। धुरी-राष्ट्रोंने हिंसाका अपना सिद्धान्त बनाया था। मित्र-राष्ट्रोंने ऐसा नहीं किया। वे कम-से-कम शान्ति, स्वतन्त्रता, सत्य और अहिंसामें विश्वास रखने का दावा तो करते थे। यह सच है कि उन्होंने जो किया वह उनके दावोंके प्रतिकूल था। आजकल मानव-जातिका अधिकतर भाग उत्पीड़ित और गुलाम राष्ट्र हैं। मेरा यह दृढ़ विश्वास है कि अगर भारत सत्य और अहिंसासे स्वराज्य प्राप्त कर सका, तो वह दूसरे सब उत्पीड़ित राष्ट्रोंको स्वतन्त्र करा सकेगा।

बहुत-से स्वयंसेवकोंने खादी नहीं पहनी है। मैं चरखेको सत्य और अहिंसाका तथा स्वराज्यका प्रतीक कहता हूँ। यही कारण था कि खादी को राष्ट्रीय झण्डेमें स्थान मिला है। इसलिए मैं सबसे अनुरोध करूँगा कि आप सूत काता करें और अपने कपड़ोंके लिए खादी तैयार किया करें। इस तरह आप देशमें कपड़ेकी कमीको दूर करने में सहायता कर सकेंगे और गरीब लोगोंकी मदद कर सकेंगे।

अन्तमें मैं आपसे कहूँगा कि आप हिन्दुस्तानी सीखें। हिन्दुस्तानी वह भाषा है जो उत्तर भारतके हिन्दू और मुसलमान बोलते हैं और जो नागरी और उर्दू दोनों लिपियोंमें लिखी जाती है। वे सबके-सब दोनों लिपियाँ नहीं जानते। लेकिन जो लोग सबकी सेवा करना चाहते हैं उन्हें दोनों लिपियोंको सीखना अपनी मान-मर्यादाकी बात समझनी चाहिए।

[अंग्रेजीसे]
बॉम्बे क्रॉनिकल, ११-६-१९४५

५०१. पुर्जा : भूलाभाई देसाईको[1]

११ जून, १९४५

आसपासका सब-कुछ देखते हुए, लीगके साथकी इस साझेदारीमें मुझे जोखिम दिखाई देता है।

इतना तो निश्चित है कि कार्य-समितिके सदस्योकी रिहाई हुए बिना तथा उनकी सम्मतिके बिना, काग्रेसके नामपर कुछ भी नही किया जा सकता।

और यह भी निश्चित है कि अगर चिमूर-अष्टीके कैदियोको तथा ऐसे ही अन्य कैदियोको फाँसी हो गई, तो मामला बिगड जायेगा। जबतक लीगकी वृत्ति लोभका सर्वथा परित्याग करके स्वच्छ नही हो जाती, तबतक कार्य-समिति यदि सहमत भी हो जाये, तब भी मैं उससे कोई वास्ता नही रखूँगा। यह तुम्हारे खुदके लिए विचारणीय है। इस बातको जितना तुम समझ सकते हो उतना और कोई नही।

लीगी मुसलमान और अन्य मुसलमानोमे जो भेद किया जा रहा है वह मुझे प्रत्येक दृष्टिसे भयावह मालूम होता है। इस स्थितिको स्वीकार करना मुझे खतरेसे खाली नही मालूम होता। इसके बारेमे रातको जो तुमने कहा उसपर विचार करना।

काग्रेसके ४० प्रतिशतमे हिन्दू महासभाके किन्ही सदस्योंका समावेश होगा क्या? क्या हरिजनोका होगा? सिखो, पारसियो, ईसाइयो वगैरहका क्या होगा? लीगसे तुमने इस प्रश्नपर चर्चा की है या नही यह बात यहाँ अप्रासगिक है। जब अन्तिम निर्णयका समय आयेगा, तब काग्रेसको इन सब बातोपर विचार करना पडेगा। काग्रेसकी स्थिति लीगकी स्थितिसे भिन्न है। काग्रेसको समूचे हिन्दुस्तान [के सभी हितो] को देखना है, जबकि लीगको केवल लीगी मुसलमानो [के हितो] को। इन सारी उलझनोके लिए तुम्हे तैयार हो जाना है। लीगके सिवाय और सबकी उपेक्षा करके तुम नैया किनारे नही लगा सकोगे।

मेरी सीमाओको पूरी तरह समझकर आगे बढ़ना। जैसा कि मैंने कहा है, मेरा स्वभाव उग्र होता जा रहा है। "उग्र" शब्दका प्रयोग मैंने उसके शुभ अर्थमे किया है, तुम उसका यह शुभ अर्थ ही लेना। ससदीय योजनाके प्रति मेरी उदासीनता और अहिंसात्मक असहयोगमे मेरे बढ़ते जा रहे विश्वासके विरोधमे तुम अपने प्रति

१. इस दिन गाधीजी का मौन दिवस था। **महात्मा गांधी – द लास्ट फेज**, जिल्द १, भाग १, पृ० १२० में प्यारेलाल लिखते हैं: "अष्टी-चिमूरके कैदियोकी रिहाईके लिए उनकी अपील रद हो जानेपर गाधीजी ने कड़ा रवैया अपनाया। अपने इर्दगिर्दके नैतिक वातावरणमें तनिक भी अन्तर बर्दाश्त न होने के कारण गाधीजी "वर्तमान काल" पर अधिकाधिक जोर देने लगे जब भूलाभाई महाबलेश्वरमें गाधीजी से मिले, तो यह बात अच्छी तरह सामने आ गई।"

मेरी वफादारीको रख सकते हो। वह मुझे, मैंने जो लिखकर दे दिया है, उसके बाहर नहीं जाने देगी। लेकिन मेरी उग्रता मुझे कहाँ ले जायेगी, यह कहना मेरे लिए भी मुश्किल है; क्योंकि अब मेरा विश्वास अदृश्य शक्तिपर अधिकाधिक बढ़ता जा रहा है। इसीलिए अब कलका विचार मैं बहुत कम करता हूँ।

यह मैंने ६ बजेसे पहले शुरू किया था, और अब ६-३० बजे हैं। और भी कुछ सूझा तो लिखूँगा, वरना समझ लेना कि इसीमें सब-कुछ आ जाता है।

मूल गुजरातीसे : भूलाभाई देसाई पेपर्स। सौजन्य : नेहरू-स्मारक संग्रहालय तथा पुस्तकालय

५०२. पत्र : डॉ० दिनशा मेहताको

पंचगनी
११ जून, १९४५

चि० दिनशा,

तुम्हारे पास वनमाला, मनु और आभाको भेजा जा सकता है क्या? कौन तैयार होगा यह तो अभी निश्चित नहीं है।

तुम पर १,००० रुपयेका बोझ किसलिए था? वहाँकी हालत अभी भी नाजुक है क्या?

तुम्हारा मन शान्त है क्या? तुम जीवित प्राणियोंपर प्रयोग करने और ग्रन्थियाँ, कलेजा आदि खानेको नैसर्गिक उपचारमें मानते हो, यह तो मुझे ज्यादती लगती है। यह विचारणीय है। इसका जवाब यदि तुम न लिखो तो चलेगा। यह तो मात्र तुम्हारे विचार करनेके लिए है। मैं ठीक हूँ। मंगलदास पकवासा चला रहे हैं। कदाचित् यहाँ आ जायें। जमीन मैं कल देख आया। पंडितवाली जमीन देखने नहीं गया और न ही जाऊँगा। गुलबहिन मुझे रोज स्नान करवाती है।

बापूके आशीर्वाद

डॉ० दिनशा मेहता
आरोग्य भवन
स्टेशनके पास
पूना सिटी

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

५०३. पत्र : प्रभावतीको

पंचगनी

११ जून, १९४५

चि० प्रभा,

तेरा ६ तारीखका पोस्टकार्ड अभी-अभी मिला। तेरा आना लम्बा खीचता जा रहा है। इस महीनेके आखिरमें मै नीचे आ जाऊँगा। बादमे सेवाग्राम जाऊँगा। आने से पहले तू मेरा पता-ठिकाना जान लेना। तू बीमार पड़ी हुई है, यह भी बात मुझे ठीक नहीं लगती। तू समझदार है। इसलिए अकारण ही मेरे पास आने मे तू ढील नही करेगी, ऐसा मानकर मै सन्तोष करता हूँ। खुर्शेदबहिन यही बैठी हुई थी। वह भी तेरी राह देखती है। पिताजीको[1] नही लिख रहा हूँ।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

५०४. पत्र : जाफर हसनको

पंचगनी

११ जून, १९४५

भाई जाफर हसन,

आपका निबन्ध जो आपने हिन्दुस्तानी प्रचार सभाके सामने पढा था सो मुझे भाई बनारसीदासने भेजा है और लिखा है कि उसे जरूर पढूं। मेरे पास आया छः मईको। मै कल पूरा पढ़ पाया। मैंने रससे पढ़ा और मुझे अच्छा लगा। मै देखता हूं कि आप सभाको बहुत मदद दे सकते है। मै यह भी पाता हू कि हमारा काम जितना कठिन है इतना कामका है।

दोनों लिपियोको आसान बनाने के बारेमे अगर आपने कुछ लिखा है तो मुझे भेज दें।

आपका,

मो० क० गांधी

डा० जाफर हसन
रीडर, उस्मानिया यूनिवर्सिटी
हैदराबाद, दक्षिण

पत्रकी नकलसे प्यारेलाल पेपर्स । सौजन्य . प्यारेलाल

१. ब्रजकिशोर प्रसाद

५०५. पत्र : बनारसीदास चतुर्वेदीको

पंचगनी
११ जून, १९४५

भाई बनारसीदास,

डा० जाफर साहेबका निबंध कल पढ़ पाया। इतना काममें फंसा हूं उनको आज लिखा है। निबंध रसिक है, अच्छा है। अगर पत्रिका रूपमें छपवाया है तो कुछ प्रतियां भेजो। सेहत अच्छी होगी।

बापूके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० २५१९) से

५०६. पत्र : कारखानिसको

पंचगनी
११ जून, १९४५

भाई कारखानिस,

तुम्हारा तार कल शामको मिला। सो हनुमंतराव[1] इस पृथ्वीपर अपना ऋण था उसे चुकाकर चले गये। उनके कुटुंबीजनोंको मेरे तरफसे दिलसोजी दो। उनके पीछे कौन-कौन है? उनका काम अब कौन करेंगे?

बापूके आशीर्वाद

काका कारखानिस
हरिजन आश्रम
बीजापुर (कर्नाटक)

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. हनुमन्तराव कौजलगी, कर्नाटकके प्रसिद्ध कांग्रेसी और गांधी सेवा-संघके सदस्य; उनकी मृत्युपर गांधीजी के समवेदना सन्देशके लिए देखिए पृ० ३१५।

५०७. दो प्रश्न

[१२ जून, १९४५ या उसके पूर्व][1]

यूनाइटेड प्रेसके श्री शैलेन्द्रनाथ चट्टोपाध्यायने मेरे सामने निम्न प्रश्न रखे है "आप १२५ वर्षतक क्यो जीना चाहते है? और रामराज्य क्या है?"

ये प्रश्न इतने उचित और उपयुक्त है कि मै अपनी आजकलकी आदतके प्रतिकूल उनका उत्तर देना चाहता हूँ। कई मिलनेवाले और पत्र-लेखक भी यही प्रश्न करते है। मै अब इस अवसरपर सदाके लिए इन प्रश्नोका उत्तर देना चाहता हूँ, और मुझे आशा है कि मै इनका अपना भरसक ठीक उत्तर दूंगा।

१२५ वर्षतक जीने का विचार मुझे अकस्मात उस समय सूझा था जबकि मै ८ अगस्त, १९४२ को बम्बईमे अखिल भारतीय काग्रेस कमेटीकी बैठकमे भाषण दे रहा था। हो सकता है कि इसके पहले भी मैने व्यक्तिगत बातचीतमे इसका जिक्र किया हो, लेकिन मुझे इसका स्मरण नही है।

मै निरन्तर 'ईशोपनिषद्' का स्वाध्याय करता रहता हूँ। इसमे केवल अठारह मन्त्र है। दूसरे मन्त्रके पूर्वार्धका[2] अर्थ है "इस संसारमे मनुष्यको सेवा-कर्म करते हुए १२० या १२५ वर्षतक जीवित रहने की इच्छा करनी चाहिए।" मन्त्रमे जो सख्या वाचक शब्द है उसका अनुवाद 'सौ' किया जाता है, लेकिन मैने उन्ही दिनो एक टीका देखी थी जिसमे उस शब्दका अर्थ १२० या १२५ किया गया था। मैने उस बैठकमे जान-बूझकर १२५ वर्ष कहा था। उसके पीछे अपने विहित कार्यको पूरा करने के लिए मेरी अधिकाधिक समयतक जीवित रहने की उत्कट अभिलाषा ही बोल रही थी। इस अभिलाषाको व्यक्त करने मे मै जिन सिद्धान्तोपर मेरा विश्वास है उनका पालन करने की अपनी इच्छाको जाहिर करने की अपनी पुरानी आदतका अनुसरण कर रहा था।

इसके अतिरिक्त एक प्राकृतिक चिकित्सककी हैसियतसे मै यह मानता हूँ कि पूर्ण आयु भोगना सम्भव है। मै जानता हूँ कि डाक्टरी दृष्टिकोणसे मेरे लिए ऐसी सम्भावना कम ही है। कारण, मैने हमेशा प्राकृतिक विधिका अनुसरण नही किया। मैने १९०३ में या उसके लगभग दक्षिण आफ्रिकामे प्राकृतिक विधिको अपनाना शुरू किया था। आरम्भिक विवाहित जीवनमे ब्रह्मचर्यका अभाव भी मेरे पूर्ण आयु प्राप्त करने में बाधक होगा।

१. प्रस्तुत लेख दिनाक "पंचगनी, १२ जून" की तिथि-पंक्तिके अन्तर्गत छपा था।
२. कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेत् शतं समाः।

और सब बातोंकी तरह प्राकृतिक चिकित्साके बारेमें भी मेरी धारणा धीरे-धीरे विकसित होती रही है। वर्षोंतक मेरा यह विश्वास रहा है कि यदि मनुष्य अपने भीतर ईश्वरकी सत्ताको अनुभव करे और इस प्रकार निष्काम अवस्था प्राप्त कर ले, तो वह दीर्घायुकी बाधाओंको पार कर लेगा। अपने अनुभव और शास्त्रोंके स्वाध्यायसे मैं इस निष्कर्षपर पहुँचा हूँ कि जब अदृश्य शक्तिमें मनुष्यकी पूर्ण आस्था हो जाती है और वह निष्काम हो जाता है, तब उसके शरीरमें एक परिवर्तन होता है। यह परिवर्तन केवल इच्छा मात्रसे नहीं होता। इसके लिए निरन्तर सतर्कता और अभ्यासकी जरूरत होती है। ये दोनों बातें होते हुए भी जबतक ईश्वरकी कृपा न हो तबतक मनुष्यके प्रयत्न निष्फल रहते हैं।

मनोविकारोंपर विजय पाना अधिक कठिन है। मनोविकारोंसे यहाँ तात्पर्य काम-वासनासे नहीं है; तो भी उसमें काम-वासनापर पूर्ण नियन्त्रण निहित है। यदि इसमें कठिनाई न होती, तो पूर्ण अहिंसाको साधना आसान होता। अहिंसाका ज्ञान होने और अहिंसाका अभ्यास करने के बावजूद मैं विकारोंका दमन ही कर पाया हूँ, उनपर विजय नहीं प्राप्त कर सका। दमनसे शरीर और मन दोनोंपर बड़ा बोझ पड़ता है। असली जरूरत तो विजय पाने की होती है। इसका मतलब यह नहीं कि भावनाका अभाव हो जाये। हर प्राणीके साथ तादात्म्य अनुभव करनेवाले व्यक्तिको हर प्रकारके दुःखकी अनुभूति तो होती है, पर वह दुःखसे विचलित नहीं होता। इस समत्व-बुद्धिसे जो कर्म किया जाता है उसका प्रभाव गहरा, व्यापक और तुरन्त होता है। स्वाभाविक है कि वह पूरी तरह अहिंसक होता है।

सिद्धिमें कठिनाई होने पर घबराने की जरूरत नहीं है, क्योंकि ठीक मार्गपर चलते रहने से आदमी लक्ष्यके निकटतर पहुँचता जाता है।

अतः यद्यपि मैं १२५ वर्षतक जीवित रहने की कामना और आशा करता हूँ, तो भी यदि कल ही मेरा देहान्त हो जाये तो इससे क्या फर्क पड़ सकता है? मुझे कोई खेद या निराशा नहीं होगी। और अकाल मृत्युसे मुझे कोई दुःख नहीं होगा।

दीर्घायुकी कामनाका यह मतलब नहीं है कि दीर्घायुकी आशाके कारण प्रयत्नमें शिथिलता आ जाये। यह कामना तभी पूरी होने योग्य होती है जब आदमी क्षण-भरमें शरीर त्याग करने के लिए तैयार हो। इसका मतलब यह है कि दैनिक कर्त्तव्य प्रतिदिन आसानीसे पूरे होते जायें। शक्तिसे अधिक श्रम करने का मतलब तो मृत्युकी बाट जोहना है।

मृत्युसे मानवके सब प्रयत्नोंका अन्त नहीं हो जाता। यदि मृत्युसे प्रयत्नोंका अन्त हो जाता, तो वह शाश्वत विधान, जिसे हम ईश्वर कहते हैं, एक विडम्बनामात्र बन जाता। परलोक एक रहस्य है जिसे हम समझ नहीं सकते। हममें इतनी श्रद्धा तो होनी ही चाहिए कि हम यह समझ लें कि जीवनको ठीक ढंगसे बिताने के बाद आनेवाली मृत्यु पहलेसे अच्छे और अधिक समृद्ध जीवनका आरम्भ होती है।

अब रामराज्यके सवालको लेता हूँ। इसे हम धार्मिक भाषामें धरतीपर ईश्वर का राज्य कह सकते हैं। राजनीतिक भाषामें इसका मतलब है पूर्ण लोकतन्त्र

जिसमे अमीर-गरीब, रग-जाति, धर्म और स्त्री-पुरुषका भेद नही माना जाता। ऐसे राज्यमे भूमि जनताकी मिल्कियत होती है, राज्य ही जनताका होता है, न्यायमे देर नही लगती, कोई त्रुटि नही रहती और उसपर ज्यादा पैसा नही खर्च होता, ईश्वरोपासना और भाषणकी स्वतन्त्रता होती है, समाचारपत्र स्वतन्त्र होते हैं। यह सब-कुछ इसलिए होता है क्योकि लोग स्वेच्छासे नैतिक संयमके नियमका पालन करते है।

ऐसा राज्य सत्य और अहिंसापर आधारित होगा और उसमे ऐसे गाँव और ऐसे लोग होंगे जो समृद्धिशाली और सुखी हो और अपनी जरूरते आप पूरी कर सकते हो। रामराज्य एक स्वप्न है जो शायद कभी साकार न हो। मै उस स्वप्न-लोकमें विचरने मे सुख अनुभव करता हूँ और सदा यही प्रयत्न करता रहता हूँ कि वह शीघ्रातिशीघ्र साकार हो।

[अंग्रेजीसे]
बॉम्बे क्रॉनिकल, १२-६-१९४५

५०८. समवेदना सन्देश : हनुमन्तराव कोजलगीकी मृत्युपर[1]

पंचगनी
१२ जून, १९४५

हनुमन्तराव कोजलगी चले गये। उन्होने अपना ऋण चुका दिया। शोक-सन्तप्त परिवारके प्रति मेरी समवेदना। आशा करता हूँ कि उनका स्थान कोई उपयुक्त व्यक्ति सँभालेगा।

[अंग्रेजीसे]
हिन्दू, १५-६-१९४५

५०९. पत्र : एम० विश्वेश्वरैयाको

'दिलखुश', पचगनी
१२ जून, १९४५

प्रिय विश्वेश्वरैया,[2]

कल आपका ६ तारीखका लिखा कृपापत्र सलग्न सहित प्राप्त हुआ। मैंने उस सक्षिप्त सारको तुरन्त पढ लिया था। मेरे मनमें निम्नलिखित प्रश्न उत्पन्न हो गये

१. गांधीजी ने यह सन्देश हुबलीसे प्रकाशित होनेवाले कन्नड दनिक पत्र संयुक्त कर्नाटक के आर० के० जोशीको दिया था।
२. मोक्षगुंडम विश्वेश्वरैया (१८६१-१९६२), इंजीनियर तथा राजनेता, मैसूरके भूतपूर्व दीवान

१. क्या आपने तथा आपके सहयोगियोंने अपनी विवरणिकामें दिये विचारोंको किसी गाँव अथवा ग्राम-समूहमें कार्यान्वित किया है? यदि ऐसा किया है तो मैं उन कार्यकर्त्ताओं आदिके नाम, उनकी स्थिति तथा आयके बारेमें पूर्ण विवरण पाना चाहूँगा।

२. उक्त संक्षिप्त सारकी किन्हीं उपधाराओंको पढ़ने पर मुझे उनमें परस्पर विरोध नजर आता है। क्या वर्तमान युद्धने प्रमुख देशोंकी आर्थिक समृद्धि स्थायी होने के विश्वासको डिगा नहीं दिया है? और क्या वह आर्थिक समृद्धि इन्हीं देशोंके विशाल इकाइयोंकी नितान्त कष्टमय गरीबीकी सहवर्ती नहीं है?

३. उस संक्षिप्त सारके अनुसार प्रवृत्ति यह होनी चाहिए कि ग्रामीणोंमें मौजूदा प्रचलनको समाप्त कर दिया जाये और उन्हें अपने औजारोंके स्थानपर मशीनी औजारोंका प्रयोग करना सिखलाया जाये और हस्तकला उद्योगोंके स्थानपर "आधुनिक मशीनोंके जरिये बहुमात्र-उत्पादन" करना सिखलाया जाये।

४. यदि संक्षिप्त सारको मैंने ठीकसे पढ़ा है और यदि वह आपकी विवरणिका के ही स्वरूपको प्रतिबिम्बित करता है, तो क्या उसमें मुझे अपनी उन "तमाम गति-विधियों" को रोकने के लिए नहीं कहा गया है — जिनका मात्र उद्देश्य न्यूनतम व्ययसे न्यूनतम समयमें गाँवोंको अधिकाधिक लाभ पहुँचाना है।

आपने जो उद्देश्य अपनाया है, उसके प्रति आपकी निष्ठा और उत्साहको देखकर मैं हमेशा आश्चर्यचकित रह गया हूँ। लेकिन दुर्भाग्यवश हमारे रास्ते अत्यन्त भिन्न होते जान पड़ते हैं।

इस पत्रको बोलकर लिखवाते समय भी मैं आपकी विवरणिकापर एक सरसरी नजर डाल रहा हूँ और पाता हूँ कि आपने परिशिष्ट १ में "हस्तनिर्मित चीनी", "हस्तनिर्मित कागज" और "हाथकी कताई" आदिका जिक्र किया है। कुछ गड़बड़ कहीं-न-कहीं जरूर है या फिर मैं बिना सोचे-विचारे सतही तौरपर नतीजे निकाल रहा हूँ?

हृदयसे आपका,
मो० क० गांधी

सर एम० विश्वेश्वरैया, के० सी० आई० ई०
अपलैंड्स हाई ग्राउन्ड
बंगलौर

अंग्रेजीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

५१०. पत्र : मीराबहिनको

१२ जून, १९४५

प्रिय मीरा,

तुम्हारा सुखद पत्र मिला। मुझे लिखो कि पत्र पहुँचने के लिए क्या यह एक ही बात होगी कि मैं पता चाहे अंग्रेजीमें लिखूँ अथवा हिन्दुस्तानीमें?

देखता हूँ कि रामप्रसाद ११ तारीखको तुम्हारे यहाँ से रवाना होनेवाला था। वह चल चुका होगा।

समाचारपत्रोंमें बिना बातका बतगड़ उठाया जा रहा है। देखा जायेगा। लगता है तुमने दिल्लीमें अच्छा कार्य किया है। यह एक तकलीफदेह और बुरी बात है कि एक गायको इतनी प्राथमिकता दी जाये जिसका तुमने वर्णन किया है। क्या यह एक आम नियम है?

स्नेह।

बापू

श्री मीराबहिन
किसान आश्रम, मूलदासपुर
पो० ऑ० बहादराबाद, बरास्ता ज्वालापुर
हरिद्वारके पास (यू० पी०)

अंग्रेजीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य प्यारेलाल

५११. पत्र : जे० एच० कजिन्सको

पचगनी
१२ जून, १९४५

प्रिय डॉ० कजिन्स,

आपका पत्र मिला। यद्यपि हमारे बीच काफी मतभेद था, लेकिन जब भी मैंने अपनेको डॉ० एनी बेसेन्टके निकट पाया, ऐसा एक भी मौका नहीं हुआ जब मैं उनसे मिलना चूक गया। लेकिन आपको कुछ भेजना अलग बात है। आपकी

निश्चित अवधि क्या है? मुझे अत्यन्त खुशी है कि श्रीमती कजिन्स बिल्कुल ठीक हैं।

बापू

डॉ० जे० एच० कजिन्स
सेवाश्रम
अदयार, मद्रास

अंग्रेजीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य . प्यारेलाल

५१२. पत्र : सविताको

१२ जून, १९४५

चि० सविता,

तेरा पत्र कल मिला। आमन्त्रण कायम है। मेरा इरादा सेवाग्राम जुलाईमें पहुँचने का है। उस समय मुझे लिखना और मेरा उत्तर मिलने पर आना। आश्रममें कुछएक परिवर्तन हुए हैं। जब तू मिली थी अगर मैंने तुझे तब नहीं बताया तो अब कहता हूँ कि आश्रममें पाखाना साफ करना और मजदूरी प्रमुख कार्य हैं। यह काम यदि तुझे अच्छा नहीं लगता तो तुझे सेवाग्राम रुचिकर नहीं लगेगा।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी नकलसे प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

५१३. पत्र : नारणदास गांधीको

१२ जून, १९४५

चि० नारणदास,

तुम्हारा ६ तारीखका पत्र मिला था। चूँकि मैंने उसके अनुसार काम कर दिया था, इसलिए यह मानकर जवाब नहीं लिखा कि कनैयो[1] तो लिखेगा ही। इसके सम्बन्धमें मैं भी विचार करता ही रहता हूँ। जबतक आवश्यकता होगी, तबतक कनैयो यह काम करेगा। यह भी मेरा ही काम है न?

१. नारणदास गांधीके पुत्र कनु गांधी

तुम्हारा खादी मंडलका अध्यक्ष होना मुझे अच्छा लगा। मैं मानता हूँ कि तुम उस पदकी शोभा बढाओगे। इसके साथ सविताको भी एक पत्र लिख रहा हूँ।[1] वह उसे दे देना।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी माइक्रोफिल्म (एम० एम० यू०/२) से। सी० डब्ल्यू० ८६२५ से भी; सौजन्य : नारणदास गांधी

५१४. पत्र : प्रेमा कंटकको

पचगनी
१२ जून, १९४५

चि० प्रेमा,

तेरा लम्बा खत मिला। मैंने आदर्श बताया है, उसे सामने रखकर सब सवालों का जवाब तू ही दे सकती है, जैसे युक्लिडकी आदर्श लाइन सामने रखकर सब जानवाले दूसरी लाइन बना सकते है। अभी देख।

क्योकि मै आदर्श जानता हूँ, लिखी-पढी बहिनोंका उपयोग आदर्श सिद्ध करने के लिये ही करूँगा। उसमें जीवन-वेतन देना पड़े तो दूंगा। लेकिन वे जो लेगी उससे अधिक देती रहेंगी। अगर नही देंगी तो निकम्मी है। उनको शिक्षिका बनाने के लिए शिविरकी आवश्यकता होगी तो ऐसा करूँगा।

पछात[2] बहनोंके लिए छः महीने दूं, १२ महीने दूं या उससे अधिक, वह तो अनुभवकी बात होगी न? मुझको इसकी दरकार नही होगी, क्योकि उद्योगके मारफत ही सीखेगी। इसलिए अपना खर्च उठाती रहेंगी अथवा जल्दी-से-जल्दी उठाने के लायक बनेंगी।

मै निष्फल हुआ ऐसा माना जाये तो उससे क्या? मेरी निष्फलता तो आदर्श नही है। और जो आदर्शकी तरफ जाता है उसको निष्फल कैसे कहे? तू खुद आश्रममें रहकर आदर्शको नही पहुंची है। तो आदर्शको पहुंचना असम्भव सिद्ध करेगी कि तू नालायक सिद्ध होगी?

अनपढ़ बहनोंको शिविरमे लेने से अशक्यता ही फलित होगी, तो देहातोको आगे ले जाना अशक्य हो जाता है। आचार्य भागवत निष्फल सिद्ध हो जाये या तू कहती है ऐसे ही वह कहते हो, तो भी मुझे कुछ डर नही। जो आज असंभवित-सा लगता है उसीको सम्भवित कर बताने से हमारी योग्यता सिद्ध होगी।

सुशीला पै यही है। उनको मै यह खत देता हूं। वह और लिखेगी।

१. देखिए पिछला शीर्षक।
२. अर्थात् पिछड़ी हुई

अब दूसरी बात। भुलाभाईके बारेमे मैंने तुझे [जो] कहा है उसपर कायम हूँ। वे इस वक्त यही है। अभी प्रातः ६-४० हुए है। वे दस बजे जायेंगे। [जो] जेलमे है वे छूटेंगे ऐसा मै नही जानता हूं। अगर छूटेंगे तो अच्छा ही है। भूलाभाई पर अगर लोग गुस्से होते है तो मुझपर भी होना चाहिए, क्योंकि उनका काम जो मै जानता हूँ वह नापसन्द करूँ तो वे करनेवाले नही है। कार्य-समितिके लोगोंने कहा है ऐसा जो माना जाता है, उसे मै नहीं मानता हूँ। और अगर उन्होंने कुछ कहा भी है तो वगैर अधिकारके कहा है। जेलमे रहनेवाले बाहरकी बात क्या जानें? मेरे कानूनके मुताबिक तो उनको यह जानने को अधिकार भी नही है और मुझसे मतभेद होगा तो क्या हर्ज है? बाहर निकलकर जो करना चाहे वह करने का उन्हे अधिकार है। मुझे तो मत देने का कोई अधिकार है ही नही। मेरी स्थिति तो सलाह-कारकी ही है न? अखबारोंकी बात मानना ही नही, और मानने से फायदा भी क्या है? मै कल मरूंगा ऐसा भविष्य जानने से मुझे नुकसान ही है। ऐसा ही इसमे भी समझो। हां, इतना कहूं [कि] जो अखबारवाले जानते है वह भुलाभाई नही जानते। मै तो जानू ही क्या?

अमुक स्थितिमे क्या करूगा उसका तो मै क्या कहू? दूसरे भी क्या कहे? मै आज जो करता हूं उसपर से अगर भविष्यका परिचय मिले तो ले लेना। मुझको तो वह भी नही, क्योंकि दिन प्रतिदिन मैं समझता जाता हूं कि काल्पनिक बातो पर अभिप्राय बांधकर हम अपना जीवन विगाड़ते हैं। जो चीज बने उसपर हम क्या करते हैं वही सार्थक है। दूसरा सब निरर्थक।'[1]

मेरी मर्यादा और मेरी दृष्टि तू अभीतक नही जानती? कुमारप्पाने इस्तीफा दिया तो मुझे पूछकर ही दिया न? अगस्त १९४२ के प्रस्तावमे सैनिक सहायता देने को लिखा हुआ है, उसमे भी मै था न? मै स्वयं एक चीज करूँ और दुनिया उससे उलटा करे और मै उसका साक्षी बनूं, तो इससे क्या हुआ? मै करूँ भी क्या? मैं तुझे इतना ही कहता हूँ कि इतने समयतक तू मेरे साथ रही और बादमें दूर चली गई, फिर भी तू ऐसा व्यवहार करती है जैसे मेरे साथ ही है; तो भी मै तुझे यही कहूँगा कि मेरा व्यवहार देख, मेरे वचन देख, उनपर विचार कर और फिर तुझे जो ठीक लगे वैसा कर। तू जो कुछ करेगी उसमे मेरा सहयोग है ऐसा समझ, क्योंकि मैं सबको अपने जैसा नही बनाना चाहता। सब जैसे हैं वैसा व्यवहार करे यही मेरी शिक्षा है। मेरा कहा जिसने पचा लिया होगा वह कभी शंकित नही होगा और आगे ही बढ़ता जायेगा।

मणिबहिन भी यहीं है। बाकी सब बातोंका उत्तर देना मैंने सुशीला पै पर डाल रखा है।

बापूके आशीर्वाद

१. यहाँतक का अंश मूल हिन्दीमें है। शेष गुजरातीसे अनूदित है।

[पुनश्च:]

इसे ध्यानपूर्वक पढना। न समझे तो फिर पूछना।

हिन्दी और गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० १०४३५) से। सी० डब्ल्यू० ६८७४ से भी, सौजन्य . प्रेमावहिन कटक

५१५. पत्र: मणिलाल गांधीको

१२ जून, १९४५

चि० मणिलाल,

तेरा पत्र मिला। तूने खूब विस्तृत समाचार दिये है। मेरी तबीयत ठीक है। यहाँ इस समय जयरामदास और उनका कुटुम्ब तथा डॉ० महमूद और उनका पुत्र है। जो अन्य लोग है उन्हे तो तू जानता है। अगर तुम लोग आये, तो मै तुम सबका समावेश कर लूंगा। लेकिन अगर बच्चे मजेमे हों और वही फल-फूल रहे हों, तो मेरा कोई आग्रह नही है। अब तो समय भी बहुत बीत गया। भूलाभाई आज गये।

तुम सबको
बापूके आशीर्वाद

चि० मणिलाल मोहनदास गाधी
मार्फत—नटवरलाल भूखणदास गाधी
पो० ऑ० कडोद (बारडोली ताल्लुका)

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ४९५३) से

५१६. पत्र: डॉ० दिनशा मेहताको

पचगनी
१२ जून, १९४५

चि० दिनशा,

सच पूछो तो साथके कागज[1] तुम्हे भेजने की कोई जरूरत नही है। लेकिन समय है इससे भेज रहा हूँ, ताकि बादमे मुझे अथवा तुम्हे कुछ सोचना न पड़े।

तीसरी धारामें जहाँ मैंने निशान लगाया है वह जैसा मूलमे है वैसा ही रहने

१. यहाँ संकेत नैसर्गिक उपचारगृहके ट्रस्ट डीडकी ओर है, देखिए अगला शीर्षक भी।

देने को मैंने लिख दिया है, क्योंकि मैनेजिंग ट्रस्टीकी [बातको] अधरमें कतई नहीं रखना है।

बाकी सब तो निर्देशानुसार ही है। भाई पकवासाका पत्र और दस्तावेज अपनी टीका समेत वापस भेजना। दस्तावेजके हिन्दुस्तानी अनुवादकी वजहसे अगर देर होती हो तो मैंने हिन्दुस्तानी अनुवादको छोड़ देने के लिए लिखा है।

अर्देशिर[1] रोज शामको मेरे साथ घूमने जाता है। गुलबहिनने अब उसे गोदमें ले जाना बन्द कर दिया है। यह बिलकुल ठीक है।

बापूकी दुआ

डॉ० दिनशा मेहता
आरोग्य भवन
स्टेशनके पास
पूना सिटी

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

५१७. पत्र : मंगलदास पकवासाको

१२ जून, १९४५

भाई मंगलदास पकवासा,

तुमने मसौदा काफी जल्दी भेजा। मैंने वह डॉ० दिनशा मेहताको देखने के लिए भेज दिया है। मैनेजिंग ट्रस्टीके बारेमें मैं समझता हूँ कि जो मूल मसौदा मैंने लिख भेजा है उसीका अनुसरण करना ठीक होगा। क्योंकि इस सम्बन्धमें तो मान्यता ही यह है कि जबतक वे जीवित हैं और समर्थ हैं, तबतक मैनेजिंग ट्रस्टी वही रहेंगे। और इसीके लिए तो यह सारा प्रयत्न हो रहा है।

तीसरी धारा तुम्हारे संशोधनके अनुसार ही रहे।

अगर इसे हिन्दुस्तानी अनुवादके लिए इलाहाबाद भेजना पड़ा तो वह तो बड़ी झंझटकी बात होगी। अगर गुजरातीमें अनुवाद करे तो?[2]

अभी तो मैं तुम्हें यहाँ आने का कष्ट नहीं दूँगा।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० ४६९१) से। सौजन्य : मंगलदास पकवासा

१. दिनशा मेहताके पुत्र
२. देखिए पिछला शीर्षक भी।

५१८. पत्र : किशोरलाल घनश्याम मशरूवालाको

पचगनी
१२ जून, १९४५

चि० किशोरलाल,

तुमने कामलेके बारेमे सारी हकीकत बताकर ठीक किया। बापा भरमाये नही है बल्कि कामले भरमाया है, ऐसा मुझे लगता है। वह तो होगा ही। उसकी स्थिति मे हम भी भरमा जाये। परिणाम तो एक ही निकला। कामलेका स्वास्थ्य जबतक नाजुक रहेगा तबतक वह आश्रममे ही रहेगा, ऐसा मैं मानता हूँ। लेकिन यदि वह इस तरह बीमार रहेगा तो बोझरूप होगा। उसे मासाहार लेने के लिए कहकर तुमने ठीक ही किया। आग्रह करने से वह मास नही छोड़ सकता। यदि उसका पत्र नही आयेगा तो भी मैं उसे एक-दो दिनमे लिखूंगा।

तुम ठीक ही सेवाग्राम वापस गये। तुम दोनो यदि स्वस्थ रह सको तो यह मुझे बहुत अच्छा लगेगा। मैं "जग जीता" लिखने जा रहा था, लेकिन यह कुछ शोभा नही देता। शारीरिक प्रकृतिको इतना महत्व देना भी क्या?

बापूके आशीर्वाद

श्री किशोरलाल मशरूवाला
सेवाग्राम, वर्धा

गुजरातीकी नकलसे . प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य प्यारेलाल

५१९. पत्र : प्रेमलता सेंगरको

पंचगनी
१२ जून, १९४५

चि० प्रेमलता,

तेरा खत मिला। तेरा मार्ग सीधा है। पिताजी लिखते है उसका क्या? कैसे भी हो तुझे धीरजसे पिताजी को कहना है कि तुझे दूसरी जगह शादी करने के लिए मजबूर न करे। मजबूर कैसे कर भी सकते है? बाकीके लिए तुझे ठहरना चाहिए।

पिताजी के खत मुझे नही मिले हैं।

बापुके आशीर्वाद

कु० प्रेमलता सेगर
द्वारा—श्री ओकारसिंहजी सेगर
करोली, करोली स्टेट, राजपूताना

पत्रकी नकलसे प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य · प्यारेलाल

५२०. पत्र : श्यामलालको

पचगनी
१२ जून, १९४५

भाई श्यामलाल,

भाई शैलेनके बारेमें, खत मिला। दरमाह तो ठीक है लेकिन शैलेन बीमार रहता है खर्च ज्यादा होता है, पिताजी को भी पैसे भेजता है, इसलिए रु० २०० देना उचित होगा। आज तो नही पाता है, उसको थोड़े अरसेके लिए मलाड उपचारके लिए भेजना होगा। सो तो हमारे पर नहीं होगा। एक वर्षकी छुट्टी लेकर ही आवे। अगर ठीक नहीं लगे तो उसको हटा सकते हैं। इस शर्तसे उनको हिसाबके लिए रखने में मुझे कोई बाधा नही है।

बापुके आशीर्वाद

श्री श्यामलालजी
कस्तुरबा स्मारक निधि, सिंदिया हाउस
बेलार्ड एस्टेट, बम्बई

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

५२१. पत्र : घनश्यामसिंह गुप्तको

पचगनी
१२ जून, १९४५

भाई घनश्याम सिह,

आपका खत मिला। मेरी राय है कि अब तो समय आया है कि शुद्ध सत्याग्रह किया जाये। उसकी जाहिर नोटिस देना होगा। अगर सच्चा जोग नहीं है या शान्त बलिदानकी शक्ति नही है तो उसे भूल जायें। सत्याग्रह करना ही है तो पहलेसे ही सब बात सोच ली जाये।

बापुके आशीर्वाद

श्री घनश्यामसिह गुप्ता
स्पीकर
द्रुग, सी० पी०

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

५२२. सन्देश

पंचगनी
१२ जून, १९४५

मेरे आशीर्वाद मागनेवाले सिन्धके विद्यार्थी अतिशूद्र बने! उसीमें ब्याह करेंगे? कातते है? खादीका उपयोग करते है? सत्य अहिंसाका पालन करते है? अगर ठीक जवाब देवे तो मेरे आशीर्वाद है ही।

बापु

सन्देशकी नकलसे: प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य: प्यारेलाल

५२३. तार: फेनर ब्रॉकवेको[1]

पचगनी
[१३ जून, १९४५ या उसके पूर्व][2]

भारतीय स्वतन्त्रता-आन्दोलन विश्वकी एशियाई, नीग्रो और अन्य शोषित जातियोकी स्वतन्त्रताके लिए है। यदि भारतको स्वतन्त्र न किया गया तो पश्चिमी मोर्चेपर मिली विजय और पूर्वी मोर्चेपर मिलनेवाली विजय दोनो निरर्थक होगी। मै केवल उस पक्षकी विजयकी कामना कर सकता हूँ जो इस उद्देश्यके लिए सच्चे दिलसे पूरी-पूरी कोशिश करे।

मो० क० गाधी

[अग्रेजीसे]
हिन्दू, १५-६-१९४५

१ और २. यह तार दिनांक "पंचगनी, १३ जून" की तिथि-पंक्तिके अन्तर्गत छपा था। प्यारेलालने यह समाचार दिया था कि फेनर ब्रॉकवेने भारतीय स्वतन्त्रता आन्दोलनकी ओरसे "चर्चिलके चुनाव क्षेत्रमें की जानेवाली चुनाव-पूर्वकी सभाके लिए" एक सन्देश माँगा था, उसीके उत्तरमें यह तार भेजा गया था। फेनर ब्रॉकवे स्वतन्त्र लेबर पार्टीके राजनीतिक सचिव और भारतीय स्वतन्त्रता आन्दोलन समितिके अध्यक्ष थे।

५२४. तार : देवदास गांधीको

अविलम्बनीय

पंचगनी
१३ जून, १९४५

देवदास गांधी
मार्फत : 'हिन्दुस्तान टाइम्स'
नई दिल्ली

भूलाभाईके साथ सलाह-मशविरा समाप्त हो गया है। आगे और कोई दिखाई नहीं पड़ता। फिर भी, यदि खाली हो तो आ जाओ। शायद कोई मौका आ पड़े।

बापू

अंग्रेजीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

५२५. पत्र : अमृतलाल वि० ठक्करको

पंचगनी
१३ जून, १९४५

बापा,

मृदुलाके पाससे एक पुलिन्दा आया है। एक तो उसके दफ्तरकी बातके बारेमें ही है। उसके बारेमें मैं अभी प्रातःकाल ही लिख रहा हूँ। ऑफिसके बारेमें तुमने जो टीका-टिप्पणी की थी वह मैंने उसे भेज दी है और उसने जो आपत्ति उठाई है उसमें वजन है। उसका कहना है कि अगर मिनट (कार्यवाही) में सुधार नहीं होता तो उसका दफ्तर फिलहाल तो सचमुच वर्धा जाना ही चाहिए। मैं तो पहले ही कह चुका हूँ कि ऐसा करने की कोई जरूरत नहीं है और उसका दफ्तर वह जहाँ चाहे वहाँ रह सकता है। यदि यह ठीक हो और मेरी दृष्टिमें तो यह ठीक है, तो यह बात मिनटमें शामिल की जानी चाहिए। और यदि ऐसा नहीं होता तो जबतक कार्यकारिणी समितिकी अगली बैठक नहीं होती, तबतक के लिए उसका दफ्तर वर्धा जाना चाहिए। और ऐसा नहीं हो सकता, यह बात मुझे बिलकुल स्पष्ट है और तुम्हें भी होनी चाहिए। क्योंकि मैंने कहा है कि मृदुलाबहिनका दफ्तर जहाँ वह चाहे वहाँ रह सकता है। इतना परिवर्तन अथवा परिवर्धन वह मिनट (कार्यवाही)

मे करवा सकती है, ऐसा उसका दावा सच्चा है और यह बात हमे स्वीकार करनी चाहिए। अपनी यह आपत्ति यदि वह नियमानुसार उठाती है तो जो बात मैंने कार्य-कारिणी समितिमे अध्यक्षके रूपमे कही थी उससे मै इनकार नही कर सकता। लेकिन मुझे तो जिस पानीमे चावल पके उस पानीका इस्तेमाल करना है, क्योकि मूल बात तो चावल पकाना है, अपना प्रयोजन सिद्ध करना है।

यदि भाई श्यामलालने वास्तवमे मिनटमे इतना परिवर्धन-सुधार न किया हो तो सत्यकी खातिर तो यही ठीक होगा कि उसे किया जाना चाहिए और मिनटमें परिवर्तन करना चाहिए अथवा यदि परिवर्तन न किया हो तो हस्ताक्षर करते समय हमे मेरे कहने पर इतना सुधार करना चाहिए। ऐसा करने पर हम कानूनकी बाधाको लाँघ जायेंगे। और यदि हम ऐसा नही करते तो अध्यक्षके रूपमे मेरा इतना ही कहना है कि बापाके साथ-साथ मृदुलाबहिनको भी अपना दफ्तर वर्धा ले जाना जरूरी नही है। यदि हम ऐसा करते है तो फिलहाल हमे ज्यादा पैसे की जरूरत नही होगी, क्योकि जबतक दूसरा प्रस्ताव पास नही हो जाता तबतक सिन्धिया हाउसमे [दफ्तर] मुफ्तमे रखा जा सकता है। और मृदुलाबहिनके पास आज जितने वैतनिक सहायक है उतने सहायकोसे ही वह काम चलाये। इनमे से जैसा तुम चाहोगे वैसा हम करेंगे। पहली बात तो सत्यके ज्यादा करीब है। दूसरी बात वस्तुस्थितिके अनुरूप है। इतना ही उसका बचाव है।

यह बात तुम्हें ज्यादा अच्छी तरह समझमे आ सके इसके लिए मै तुम्हे मृदुलाबहिनका पत्र भेज रहा हूँ, हालाँकि वह निजी पत्र है। इस सम्बन्धमे मै एक और प्रश्न उठाता हूँ। मन-ही-मन कही तुम यह तो नही महसूस करते कि मृदुलाबहिन दफ्तरसे हट जाये तो अच्छा हो? वह न हटे, यदि तुम ऐसा कहते हो तो हम लिखित रूपसे कुछ स्पष्ट निर्णय कर ले, जिससे कि यह उलझन सदाके लिए दूर हो जाये। इस सम्बन्धमे तुम्हारे मनमे जो हो वैसा एक मसौदा तैयार कर दो अथवा यदि मुझपर छोडो तो मै तैयार कर दूँगा और बादमे सुधार के लिए तुम्हे भेज दूँगा।[1]

बापू

श्री ठक्कर बापा
भारत सेवक समाज (सर्वेन्ट्स ऑफ इडिया सोसाइटी)
पूना

गुजरातीकी नकलसे प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य प्यारेलाल

१. देखिए पृ० ३२९-३०।

५२६. पत्र : चक्रवर्ती राजगोपालाचारीको

पंचगनी
१३ जून, १९४५

प्रिय सी० आर०,

देवदासके तारपर तुम्हारी प्रतिक्रिया ठीक है। प्रार्थना ही एकमात्र और सबसे बढ़िया इलाज है। मैंने भूलाभाईके साथ बहुत खुलकर बातचीत की और मेरा खयाल है कि उससे उनकी तसल्ली हो गई होगी। मैं चिन्ता नहीं करता। मैं इस आदेश का कि "किसी बातकी चिन्ता मत करो"[1] अक्षरशः पालन करता हूँ। अगर हम ठीक काम करें, तो सब ठीक हो जायेगा। क्या आप अब भी अकेले हैं?

मेहताबने जो अप्रत्यक्ष चोट की है वह मुझे अच्छी नहीं लगी। मैंने उसे ऐसा लिख दिया है।[2] ईश्वरका धन्यवाद है कि तुम्हारी चमड़ी गैंडे-जैसी है।

स्नेह।

बापू

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० २१०७) से

५२७. पत्र : चिमनलाल नरसिंहदास शाहको

१३ जून, १९४५

चि० चिमनलाल,

तुम्हारा पत्र मिला। तुमने जमीन संघको दे दी, यह अच्छा किया। मेरी रायमें आश्रमको [उस जमीनका] मुआवजा देना उन लोगोंका धर्म है। कितना देना चाहिए, यह वे ही लोग तय करें। अथवा फिर नाममात्रका किराया दें। यह उनकी न्याय-बुद्धिपर ही छोड़ दिया जाये। जमीनकी नाप सावधानीसे करना।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० १०६३७) से

१. फिलिपियन्स, चौथा, ६
२. देखिए पृ० २७८।

५२८: पत्र : मृदुला साराभाईको

पंचगनी
१३ जून, १९४५

चि० मृदु,

तेरे दो पत्र मिले। अपने दफ्तरके सम्बन्धमे तूने जैसा सुझाव दिया है वैसा नोटिस दे। इसमे मैं कोई दोष नही देखता। मैंने बापाको खास पत्र लिखा है।[1] बापाके दफ्तरको सेवाग्राम ले जाने से मैं नही रोकूँगा। लेकिन तुझे अपना [दफ्तर] वहाँ ले जाने की कोई जरूरत नही। तूने दफ्तरमे जिन बहिनोकी नियुक्ति की है अथवा जब मैं वहाँ आया था उस समय दफ्तरमे जो बहिने नियुक्त की गई थी वे तो रहेगी ही। ऑफिस भी अभी वही है। इसे अभी वही रहने दे।

अपना सकल्प याद कर कि स्त्रीके रूपमे तुझे पुरुषोंके साथ काम करना है, और कामको शोभान्वित करना है। धीरज रखकर ऐसा ही करना और स्वयं सुशोभित होना तथा [कामको] शोभान्वित करना।

तू महाबलेश्वर गई, सो ठीक ही किया। स्वास्थ्यको सँभालना ही चाहिए। यह सीधी-सी बात तू नही समझती, यही आश्चर्यकी बात है। इसमे भारी अहकार छिपा हुआ है। "मै करता हूँ, मै करता हूँ — यह वैसा ही अज्ञान है जैसे बैलगाड़ीके नीचे चल रहे कुत्तेका यह सोचना कि मै ही गाडीका बोझ उठाये हुए हूँ।"[2] यह नरसिंह मेहताका अमर वाक्य है। तेरा कार्यक्रम पढकर मेरा सिर घूमने लगता है।

तुझे मुझे लिखना पडता है, इसका दुःख तुझे नही करना चाहिए। चूँकि मै अध्यक्ष बना बैठा हूँ इसलिए तुझे मुझे लिखना ही होगा। दु.ख तो इस स्थितिसे है जिससे खटराग उत्पन्न होता है। मुझे उम्मीद है कि यह भी दूर हो जायेगी।

मांसाहारकी व्यवस्था होने का प्रचार करने का अर्थ हुआ मांसाहारको न्योता देना और वाद-विवादमे पड़ना। उसके लिए व्यवस्था करना हमारा धर्म है, लेकिन उसका प्रचार करने का धर्म हमारा नही है। यह बात यदि तेरी समझमे न आती हो तो भी इसे आदेश समझकर इसपर अमल करना। जब उचित अवसर आयेगा तब शायद मैं तुझे समझाने मे सफल होऊँगा अथवा अपनी बात मुझे समझाना।

जिन अन्य बातोके सम्बन्धमे तूने मेरा मार्गदर्शन चाहा है यदि मै वह देने बैठा तो मुझे भय है कि डाक छूट जायेगी।

१. देखिए पृ० ३२६-२७।

२. मूल पंक्तियाँ इस प्रकार हैं· "हुँ करुं, हुँ करुं ए ज अज्ञानता शकटनो भार जेम श्वान ताणे", देखिए खण्ड ४४, पृ० १९३।

तू कश्मीर जा सके तो अच्छा होगा।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

५२९. पत्र : कंचन शाहको

१३ जून, १९४०

कंचन,

तू आ गई, यह ठीक हुआ। अब अच्छी तरहसे ठीक हो जा।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

५३०. पत्र : मुन्नालाल गंगादास शाहको

पंचगनी
१३ जून, १९४०

चि० मुन्नालाल,

तुम्हारा पत्र मिला। कंचन आ गई यह ठीक हुआ। अब हमें उम्मीद करनी चाहिए कि वह तुरन्त चंगी हो जायेगी।

पेड़ सूख गये, इसका दुःख है। [ऐसा क्यों हुआ] मैं इस कहानीमें नहीं पड़ता। वहाँ आने पर बात होगी। तुम्हें मैं तो बराबर लिखता रहता हूँ। मैं तुम्हें जितनी हो सके मानसिक शान्ति दूँगा, लेकिन सच्ची शान्ति तो भीतरसे ही आयेगी।

अब फिर भर्ती हुई है। मैं वापस आऊँगा तब क्या होगा? जगह तो है नहीं।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

५३१. पत्र : बलवन्तसिंहको

१३ जून, १९४५

चि० बलवर्तासिह,

तुमने अरजट तार दिया सो तो निरर्थक था। मैंने लिखने मे विलब नही किया। जो हूआसो हूआ।

वृक्ष मर गये उसका खेद है।

कि[शोरलाल] भाई गो[मती] बहिनकी सेवा करो। वे अच्छे होने चाहीये।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० १९६३) से

५३२. पत्र : प्रभाकरको

१३ जून, १९४५

चि० प्रभाकर,

छोटे कमरेमे दस वारका साथ सोना ब्रह्मचर्यकी दृष्टिसे खराब हो सकता है, सही भी। लेकिन स्वास्थ्यकी दृष्टिसे और दूसरी दृष्टिसे खराब है उसका इलाज कर सका जाय तो अच्छा है। वीणा अच्छी होनी चाहिये।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० ९०३१) से। सी० डब्ल्यू० ९१५५ से भी, सौजन्य . प्रभाकर

५३३. पत्र : पुरुषोत्तमदास टण्डनको

पंचगनी
१३ जून, १९४५

भाई पुरुषोत्तमदास टंडन जी,

आपका पत्र[1] कल मिला। आप जो लिखते है उसे मै बराबर समझा हू तो नतीजा यह होना चाहिए कि आप और सब हिन्दी-प्रेमी मेरे नए दृष्टिकोणका स्वागत करे और मुझे मदद दे। ऐसा होता नही है। और गुजरातमे लोगोंके मनमे दुविधा पैदा हो गयी है। और मुझसे पूछ रहे है कि क्या करना? मेरे ही भतीजेका लड़का और ऐसे दूसरे, हिन्दीका काम कर रहे है और हिन्दुस्तानीका भी। इससे मुसीबत पैदा होती है। पेरीनबहनको आप जानते हैं। वह दोनों काम करना चाहती हैं। लेकिन अब मौका आ गया है कि एक या दूसरेको छोड़े। आप कहते है वह सही है तो ऐसा मौका आना ही नही चाहिए। मेरी दृष्टिसे एक ही आदमी हिन्दुस्तानी प्रचार सभा और हिन्दी साहित्य सम्मेलनका मन्त्री या प्रमुख बन सकता है। बहुत काम होने के कारण न हो सके तो वह दूसरी बात है। और यह मै कहता हूं वही अर्थ आपके पत्रका है, और होना चाहिए। तब तो कोई मतभेदका कारण ही नही रहता और मुझको बड़ा आनन्द होगा। आपका जो वक्तव्य आपने भेजा है मैं पढ गया हू। मेरी दृष्टिसे हिन्दुस्तानी प्रचार सभा बिलकुल आप ही का काम कर रही है, इसलिए वह आपके धन्यवादकी पात्र है। और कमसे कम उसमें आपको सदस्य होना चाहिए। मैंने तो आपसे विनय भी किया कि आप उसके सदस्य बने लेकिन आपने इनकार किया है, ऐसा कहकर कि जबतक डाक्टर अब्दुल हक न बनें, तबतक आप भी बाहर रहेंगे। अब मेरी दरख्वास्त यह है कि अगर मै ठीक लिखता हूं और हम दोनों एक ही विचारके है तो हिन्दी साहित्य सम्मेलनकी ओरसे यह बात स्पष्ट हो जानी चाहिए। अगर इसकी आवश्यकता नही है तो मेरा कुछ आग्रह नही है। कमसे-कम हम दोनोमे से तो इस बारेमें मतभेद नही है इतना स्पष्ट होना चाहिए। हिन्दी साहित्य सम्मेलनमे से निकलना मेरे लिए कोई मजाककी बात नही है। लेकिन जैसे मैं कांग्रेसमे से निकला तो कांग्रेसकी ज्यादा सेवा करने के लिए, उसी तरह अगर मैं सम्मेलनमे से निकला तो भी सम्मेलनकी अर्थात् हिन्दीकी ज्यादा सेवा करने के लिए निकलूंगा।

१. अपने ८ जूनके पत्रमें श्री पुरुषोत्तमदास टण्डनने लिखा था कि उन्हें हिन्दी साहित्य सम्मेलन और हिन्दुस्तानी प्रचार सभाके कार्यमें कोई विरोध दिखाई नहीं देता। उन्होंने गांधीजी से यह भी प्रार्थना की थी कि वे हिन्दी साहित्य सम्मेलनसे अलग होने के अपने निर्णयपर पुनर्विचार करें। देखिए खण्ड ८१, "पत्र : पुरुषोत्तमदास टण्डनको", २५-७-१९४५।

जिसको आप मेरे नए विचार कहते हैं वे सचमुच तो नए नहीं हैं। लेकिन जब मैं सम्मेलनका प्रथम सभापति हुआ तब जो कहा था और दोबारा सभापति हुआ तब अधिक स्पष्ट किया, उसी विचार-प्रवाहका मैं अभी स्पष्ट रूपसे अमल कर रहा हूं ऐसे कहा जाये। आपका उत्तर आने पर मैं आखिरका निर्णय कर लूंगा।

आपका,
मो० क० गांधी

राष्ट्रभाषाके प्रश्नपर गांधीजी और टण्डनजीका महत्त्वपूर्ण पत्र व्यवहार, पृ० ४-५; राजर्षि अभिनन्दन ग्रंथ, पृ० ९१ से भी

५३४. पत्र : चाँदरानीको

१३ जून, १९४५

चि० चाद,

तू बराबर आ गई। तेरे प्रश्नका जवाब मेरे वहां आने पर मौकूफ रखता हूं। तू तेरे काममें दत्तचित हो जा। स्वास्थ्य अच्छा रख। मुझे लिखा कर।

बापूके आशीर्वाद

पत्रकी नकलसे प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य. प्यारेलाल

५३५. पत्र : लालमन सिंहको

पचगनी
१३ जून, १९४५

भाई लालमन सिंह,

जैसे मुझे बलवत सिंहका खत मिला मैंने फौरन तार दिया।[1] चि० होशियारीके तारमें था कि बलवंत सिंहका खत देखकर मैं जवाब दूं। वह खत तारके साथ तो मिल नही सकता था। सो जैसे खत आया मैंने होशियारीको जवाब दिया।[2] और बलवंत सिंहको लिखा[3] वह तुम्हारे ही लिए था। अब तुम्हारे खतसे मैं पाता हूं कि तुम निराश होकर घर चले गये हो। मेरी सलाह तो अलग ही थी। और आज भी

१. अनुमानतः यहाँ संकेत सेवाग्राम आश्रमके मैनेजरको भेजे तारसे है, देखिए पृ० २७१।
२. देखिए पृ० २७८।
३. देखिए पृ० २७७।

है कि मेरे आने तक ठहर जाओ, मेरे आने पर होशियारीके बारेमें निर्णय करो, वह छोटी लडकी नहीं है अपनी जिम्मेदारी समझ सकती है। वह मा भी है। जो-कुछ करे उसे समझाकर ही कर सकते हैं। मुझको तो वह पुत्रीके जैसी ही प्यारी है। उसका दिल भी आश्रममें जम गया है। लेकिन तुमको मैं कष्ट देना नहीं चाहता। तुम्हारी बात भी समझना चाहता हू, बादमें होशियारीका धर्म उसे बताऊंगा। मेरी तो उम्मीद है कि मेरा तार और मेरा खत तुम्हारे सेवाग्राममें होते हुए मिल गया होगा। और तुम रुक गये होगे। ऐसा नहीं हुआ है तो यह खत तुम्हें खुर्जा भेजा जायेगा। मेरी सलाह है कि धीरजसे काम करें और जब लड़के-लड़कियां बड़े हो जावे उनपर हुकम न चलावें। यह बात हमें धर्म पुकार-पुकार कह सकता है।

[पुनश्च :]

तुम्हारा पोस्टकार्ड मिला इसलिए।

बापुके आशीर्वाद

श्री लालमन सिंह जी
ग्राम — समरपुर
डा० — खुर्जा
जि० — बुलन्दशहर यू० पी०

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

५३६. पत्र : होशियारीको

१३ जून, १९४५

चि० हुशियारी,

मैंने तो उत्तर देने मे कुछ भी देरी नहीं की थी। तू दृढ़तासे रह गई अच्छा किया। मैंने पिताजीको खुर्जाके पतेसे खत दिया है,[1] बाकी मैं आऊंगा तब सुनूंगा।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. देखिए पिछला शीर्षक।

५३७. पत्र : एम० ऐस० केलकरको

१३ जून, १९४५

भाई बरफ,

मालती चि० हरिइच्छाने ली तो है कहासे लाते हो ? उसका खर्च अपना पिता नही देगा तो मै दूगा। जीना मरना आखिर तो किसीके हाथमे नही। इसलिए तुम्हारी शिकायत क्याकर सकता हू ? तुम्हारी सेवाकी कीमत तो हमेशा मेरे पास है ही। मै तो तुम्हारे ज्ञानके बारेमे निश्चयवान होना चाहता हू। बने सो करो।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी नकलसे प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य प्यारेलाल

५३८. तार : चौंडे महाराजको

अविलम्बनीय

पचगनी
१४ जून, १९४५

चौडे महाराज
पूना सिटी

शनिवारको ४ बजे।

गांधी

अग्रेजीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य प्यारेलाल

५३९. पत्र : अमृतकौरको

१४ जून, १९४५

चि० अमृत,

तुम्हारा पत्र मिला। जब तुम्हारा स्वास्थ्य इतना अधिक गिर गया है तो तुम्हे पत्र नही लिखना चाहिए। तुम्हारे पत्र न आने से मुझे कोई गलतफहमी नहीं हो सकती।

पाबन्दियाँ बुरी हैं। लेकिन जबतक तुम यहाँ मेरे पास न आ जाओ, तबतक कुछ नहीं किया जा सकता।

आशा करता हूँ कि पारिवारिक मामले सब ठीक हो जायेंगे।

मैं जुलाईके आरम्भमें सेवाग्राम जाने की आशा करता हूँ। उस समय तुम्हारे लिए वहाँका मौसम शायद कष्टदायक होगा।

मैं ठीक हूँ।

स्नेह।

बापू

[पुनश्च :]

गोप[1] या उसकी पत्नीको अपने लिए भार-स्वरूप मत बनने दो।

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ४१५९) से; सौजन्य: अमृतकौर। जी० एन० ७७९४ से भी

५४०. पत्र : अमतुस्सलामको

१४ जून, १९४५

चि० अ० सलाम,

तेरा खत मिला। सेवाग्रामसे स्वयं कंचनका खत है। तू शांतिसे आ सके तभी आना। तू मुझसे संदेश[2] क्यों चाहती है? तू खुद वहाँ है। फिर क्या? तुझे दूसरों को सन्देश न माँगने की बात सिखानी चाहिए। यह खत तुझे तुरन्त लिखता हूँ। हमीद[3] (अमीनाका) यहाँ आया है।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ४९८) से

१. गोप गुरबख्शानी
२. कस्तूरबा सेवा मन्दिरके लिए
३. हमीद कुरेशी

५४१. पत्र : हरिलाल गांधीको

१४ जून, १९४५

चि० हरिलाल,

तेरा पत्र मुझे मिला। वैसे, तेरे समाचार तो मुझे मिलते रहे हैं। तू वहाँसे चला जाये, यह मुझे जरा भी पसन्द नही है। कान्ति और सरस्वती तेरी खूब सेवा करते है और तुझे बड़े प्रेमसे रखते हैं। अत. तेरा कर्तव्य है कि तू वहाँ रहे। तू उनके लिए भार-रूप क्यों होगा? फिर, तू वहाँ अपने-आपको नियन्त्रणमे भी रख सकता है। इसलिए तू अभी और कही जाने का विचार मत कर। वहाँकी आबोहवा भी अच्छी है। और सुभीता तो है ही। पड़ा-पड़ा वहाँ उन लोगोकी मदद भी कर। तेरा स्वास्थ्य अब ऐसा नही है कि तू दौड-धूप कर सके। यहाँ बरसात शुरू हो गई है। अखबारोंमे छपनेवाली गप्पोपर बिलकुल विश्वास मत करना।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० ७३७२) से। सौजन्य : कान्तिलाल गाधी

५४२. पत्र : कान्तिलाल गांधीको

१४ जून, १९४५

चि० कान्ति,

तेरा पत्र मिला। तू घर बसाकर बैठा है, गृहस्थीका सारा काम-काज सँभालता है और पढ़ता भी है, यह मुझे अच्छा लगता है। ऐसा बहुत लोग नही कर सकते।

हरिलालको इससे पहले ही क्षय नही हो गया, यही आश्चर्यकी बात है। उसके शरीरका गठन मजबूत था, इसीलिए वह बिलकुल टूट नही गया। इतने दिन तुम दोनो उसे अपने यहाँ रोक सके, यही आश्चर्य है। अगर वह तुम लोगोको छोडकर चला गया, तो फिर अपने पुराने व्यसनमें पड़ जायेगा और बर्बाद होगा। मैंने यह जवाब दो दिन तक रोके रखा, लेकिन फिर विचार करने पर लगा कि अब ज्यादा ढील नही करनी चाहिए। हरिलालको लिखा पत्र[1] उसे दे देना।

तुम सबको
बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० ७३७३) से। सौजन्य : कान्तिलाल गाधी

१. देखिए पिछला शीर्षक।

५४३. पत्र : अमृतलाल वि० ठक्करको

पंचगनी
१४ जून, १९४५

बापा,

मृदुलाबहिनके अन्य कागजातको पढ़ते हुए यह लिख रहा हूँ। उसने ९ तारीखके पत्रमें जो प्रश्न उठाया है उसमें मुझे सचाई तो जरूर दिखाई देती है। वह संयोजक मन्त्री है इसलिए जिसमें उसका कुछ हिस्सा हो ऐसे पत्र तो उसे अवश्य देखने चाहिए और यदि वह देखती है तो तुम्हारे साथ सलाह-मशविरा करने के लिए उन्हें रोक भी सकती है। क्योंकि अमल तो अन्ततः उसे ही करना है न? उसका यह भी कहना है कि जबतक अच्छी तरहसे व्यवस्था नहीं हो जाती तबतक काम करना मुश्किल है और प्रान्तीय कार्यकर्ताओंको दो तरहके आदेश मिले तो वे समझ नहीं सकेंगे और घबरा जायेंगे। यह बात भी ठीक लगती है। इसलिए हमें इसपर अच्छी तरह विचार कर कोई हल निकालना चाहिए।

बापू

श्री ठक्करबापा
भारत सेवक समाज (सर्वेंट्स ऑफ इंडिया सोसायटी)
पूना – ४

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

५४४. पत्र : देवदास गांधीको

पचगनी
१४ जून, १९४५

चि० देवदास,

तेरा तार मिला। जवाब मिला होगा?[1] जब आ सके तब आ जाना। मेरी इच्छा है कि तू थोड़ा-बहुत व्यायाम करता रह।

बापूके आ[शीर्वाद]

देवदास गांधी
'हिन्दुस्तान टाइम्स'
दिल्ली

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. देखिए पृ० ३२६।

५४५. पत्र : जे० एम० जस्सावालाको

पचगनी
१४ जून, १९४५

भाई जस्सावाला,

तुमने मुझे भाई फ्रिडमैनके बारेमें लिखकर ठीक किया। मैं देख लूँगा। वह हठीला तो है ही। उसने अभी यहाँ आने के बारेमें कोई खबर नही दी है।

अब चि० जमनादास गांधी भी उपचार करवाने के लिए आया है।

बापूकी दुआ

डॉ० जे० एम० जस्सावाला
नेचुरल थेरेपी क्लिनिक
सुनामा हाउस, ३री मंजिल
१४०, खंबाला हिल, बम्बई – २६

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

५४६. पत्र : जोरावरसिंहको

पचगनी
१४ जून, १९४५

भाई जोरावरसिंह,

बहुत वर्षोंके बाद तुम्हारी लिखावट देखकर बहुत खुशी हुई। अभी तो भैंस गाँवके बाहर है। इसलिए उसके सौदेकी क्या बात हो सकती है। और अगर वह अन्दर आ जाती है तो मुझे कुछ कहने को रह नहीं जाता। लेकिन एक बात तो जरूर कहूँगा। तुम विधान-सभाके अन्दर रहो या बाहर, लेकिन तुम अपना ज्ञान जनताको अथवा मन्त्रिमण्डलको मुक्त रूपसे दे सकोगे। यह तो मैंने तुम्हें अपने अनुभवसे कहा है। सेवाका क्षेत्र इतना विशाल है कि वहाँ कभी तंगी नहीं होती।

बापूके आशीर्वाद

कर्नल श्री जोरावरसिंह
१९, न्यू कैन्टोनमेंट रोड
देहरादून

गुजरातीकी नकलसे · प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य · प्यारेलाल

५४७. पत्र : रामप्रसाद व्यासको

पंचगनी
१४ जून, १९४५

चि० रा० प्र०,

"मेरी माँगके अनुसार ही करना चाहोगे तो यह अलहदा बात है"[१] का अर्थ यह है: मैंने तो तुम्हे केवल दो महीनोंके लिए जाने को कहा था। यही मेरी माँग थी। अगर तुम मेरी इस माँगको पूरा करते हो तो मुझसे तुम्हे ज्यादा रुकने के लिए नही कहा जा सकता न? इस तरह यदि मै अपनी माँगे बढ़ाता जाऊँ तो मेरा विश्वास कौन करेगा? इसीसे मैंने लिखा था कि यदि तुम उसे पूरा करते हो तो तुम्हे दो महीनोंके बाद छोड़ना चाहिए। यदि मीराबहिन अपनी ओरसे तुम्हे नही रोकती तो रुकने का प्रश्न ही नही उठता। वहाँके खर्चके बारेमे क्या मैंने तुमसे यह नही कहा है कि तुम्हें ही उसकी ओर उसका ध्यान खीचना चाहिए? तुम कहोगे तो मै अवश्य करूँगा।

बच्चेकी रसौलीके बारेमे तुमने ठीक विचार किया है। बम्बईमे दिखाना। रिपोर्ट भेजना। अन्तमे तो कदाचित् शल्य-चिकित्सा ही करवानी पड़ेगी। क्यूनेके विचारानुसार यह पानीके उपचारसे खत्म हो सकती है। बच्चेकी रसौली तो इससे कदाचित् ठीक हो जाये।

तुम सबको
बापूके आशीर्वाद

श्री रामप्रसाद
मार्फत: श्री शान्तिलाल पण्ड्या
रेलवे फार्म
दाहोद

गुजरातीकी नकलसे: प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य: प्यारेलाल

१. देखिए पृ० ३२५।

५४८. पत्र : कृष्णचन्द्रको

पंचगनी
१४ जून, १९४५

चि० कृ० चं०,

नागपुरसे तुम्हारा लम्वा खत मिला। बालकोबाके बारेमें तो ऐसा ही कहा जाय कि परपटीका स्थाई लाभ कुछ भी नही हुआ है। अभी तो देखना है कि कैसे शक्ति बढ़ सकती है। उन्हे कमरेमे वापिस जाने से ताप अधिक न लगे तो अच्छा ही है।

रेल इत्यादिके बारेमें मैंने जो 'हिन्द स्वराज'[1] में लिखा है, उसपर आज भी कायम हू। लेकिन वह आदर्श स्थितिकी बात है। उसको हम कभी न पहुँचे यह हो सकता है। उसकी परवाह न करे, इसलिए मैंने हमेशा कहा है कि रेल-गाड़ी इत्यादि साधन न मिले तो हम उनके अभावसे दुःखित न हो। उन्हे बढाना कभी धर्म न मानें। उनके त्यागको भी धर्म मानकर न चले। ऐसी चीजोमे हमारी सहज स्थिति होनी चाहिए। जहा तक बन पड़े ऐसी वस्तुओका उपयोग कम-से-कम करे। हमारे समाजमे विविध प्रकारके लोग रहेंगे। आज तो रहते ही हैं। उनको साथ रखकर हमे चलना है ऐसी स्थितिमे अनासक्ति ही सही धर्म है। इसमे देखना इतना होगा कि हम अपने-आपको धोखा न दे। तुम्हारा यह वाक्य कि चोरी, व्यभिचार झूठ इत्यादि जैसे त्याज्य हैं उसी तरहसे रेलगाड़ी, मोटर इत्यादि भी है, ठीक नही है। उसका बड़ा सबब तो यह है कि चोरी इत्यादिको हमारी समाजने भी त्याज्य माना है। रेलगाड़ी इत्यादिको इस तरह त्याज्य नही माना, न मानने की आवश्यकता दीख पडती है। रेलगाड़ी इत्यादिको हम भोगका साधन न करे इतना ही कहा जाय। मर्यादा तो मेरे लेखोमे बार बार बताई गई है उसे देखो और विचारसे मर्यादाका पता अपने-आप लग जायका।

'केपीटल' के अभ्यासमें छोटी पुस्तके लिखी गई है। उन्हे पढना मदद देगा।
स्रावकी फिकर नही करना, संयमके पालन के बाद निश्चित हो सकते हैं।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० ४५१५) से

१. देखिए खण्ड १०।

५४९. पत्र : रामेश्वरी नेहरूको

पंचगनी

१४ जून, १९४५

चि० रामेश्वरी वहन,

तुम्हारा ६ठी तारीखका पत्र कल मिला। तुमने जो-कुछ किया है वह ठीक ही है। तुमारे दिल्ली जाने की कोई आवश्यकता नहीं थी।

कुटुम्ब भी हो तो उसके लिए भी कुछ-न-कुछ नियमन तो होना ही चाहिए, इसमें मैं तुम्मारे साथ विलकुल सम्मत हूं, और तुम्हारी सूचना पहले आ गई उसी वक्त मैंने वापाको लिखा था।[1]

प्रभुदास और अम्वासे वापाने खतो-कितावत तो की है। दोनों आ सकें तो वड़ा अच्छा होगा, तुम्हारे सिरसे यह वड़ा वोझ कुछ हलका होगा। तुम्हारी वहन भयमुक्त हुई है यह मुझको वड़ा अच्छा लगता है।

तुम्हारा खत वापाको भेजता हूं, उन्हें प्रिय लगेगा।

वापुके आशीर्वाद

श्री रामेश्वरी नेहरु
श्रीनगर, काश्मीर

पत्रकी नकलसे: प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य: प्यारेलाल

५५०. पत्र : पूर्णिमा वनर्जीको

पंचगनी

१४ जून, १९४५

चि० पूर्णिमा,

तुम्हारी वात तो विलकुल सही है। लेकिन अरुणा भाई आसफअलीकी सेवामें आज तो कहांसे रह सके? देशसेवा और व्यक्तिगत सेवाका मेल वहुत कठिन वस्तु है। और वहुत दफा दोनों विरोधी भी हो जाती हैं। दोनोंने अपना जीवन देशके लिए न्योछावर कर दिया है। इससे मैं यह उम्मीद करता हूं कि इस वियोगको वरदाश्त भली भांति करते होंगे। भाई आसफसे मेरा पत्र-व्यवहार चल रहा है। वे अच्छे हो जायेंगे ऐसी मेरी उम्मीद है।

१. देखिए पृ० २४९।

तुम्हारा काम ठीक चलता होगा।

बापूके आशीर्वाद

श्रीमती पूर्णिमा बैनर्जी
४१, जार्जटाउन
इलाहाबाद

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

५५१. पत्र : लक्ष्मी गांधीको

१४ जून, १९४५

चि० लक्ष्मी,

तू सिमला हो आई। फायदा तुम दोनोंको हुआ होगा। ज्यादा रह सकती तो और भी अच्छा रहता। इतना तो लिखने के कारण है।

बापूके आशीर्वाद

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

५५२. पत्र : रामचन्द्र और राजमोहन गांधीको

१४ जून, १९४५

चि० रामु[1] और मोहन,[2]

तुम दोनोंके खत मिले ऐसा कहा जाये। सही तो यह है कि सीसापेनसे लिखा जाये वह नही लिखा समझना।

अब तो तुमने हिमालयके दर्शन किये और पहाडपर सुनहरी बरफ देखी! उसमें से कुछ सोना मिला? तारा[3] तो बहुत बडी हो गई। उसको लिखने का समय नही मिलता है?

तुम सब पहलवान बने?

बापूके आशीर्वाद

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१ और २. देवदास गांधीके पुत्र
३. देवदास गांधीकी पुत्री

५५३. तार : वाइसरायके निजी सचिवको[1]

अविलम्बनीय

पंचगनी
१४ जून, १९४५

वाइसरायके निजी सचिव[2]
नई दिल्ली

वाइसरायके प्रसारणमें[3] मैंने आमन्त्रित व्यक्तियोंमें अपना नाम पढ़ा है। मैं यह बार-बार स्पष्ट कर चुका हूँ कि मैं किसी संस्थाका प्रतिनिधित्व नही करता। इसलिए मैं कांग्रेसके प्रतिनिधिके रूपमें सम्मिलित नही हो सकता। यह काम कांग्रेस अध्यक्षका या उनके द्वारा नामजद किये गये किसी व्यक्तिका है।[4] मैं यह सूचना तुरन्त भेज रहा हूँ ताकि कोई गलतफहमी न हो।[5]

गांधी

[अंग्रेजीसे]
गांधीजीज कॉरेस्पॉण्डेन्स विद द गवर्नमेंट, १९४४-४७, पृ० १७

१. यह तार रातको भेजा गया था; देखिए अगला शीर्षक।
२. सर एडवर्ड जेनकिन्स
३. देखिए परिशिष्ट ३।
४. देखिए अगला शीर्षक और "वक्तव्य: समाचारपत्रोंको", पृ० ३४७-४९।
५. वाइसरायने अपने १५ जूनके इस तारके जवाबमें लिखा: "आपके १४ तारीखके तारके लिए धन्यवाद। प्राविधिक स्थिति चाहे जो-कुछ भी हो, मैं आपकी मददको महत्त्वपूर्ण समझता हूँ और यह आशा करता हूँ कि जो निमन्त्रण तारसे आपको कल रात्रिको भेजा गया है उसे आप स्वीकार कर लेंगे। जहाँतक कांग्रेसका प्रतिनिधित्व करने का सवाल है उस बारेमें संभवतः आप अपनी अन्तिम राय आगे विचार-विमर्श और आवश्यक सलाह-मशविरा करने के बाद कृपया मुझे बतायेंगे। मैं यह जानता हूँ कि जिस कार्यका जिम्मा मैंने उठाया है, आप उसके महत्त्व और कठिनाईको समझकर मेरी जो सहायता कर सकते हैं, वह पूरी तरह करेंगे।"

५५४. तार : लॉर्ड वेवलको

अविलम्बनीय

पचगनी
१५ जून, १९४५

महामान्य वाइसराय
नई दिल्ली

निमन्त्रणका तार[1] मिला। कल रात आपको भेजे अपने तारमे[2] जो कारण बताये है उनको देखते हुए आपके सम्मेलनमे मेरे लिए कोई जगह नही है। एक व्यक्तिकी हैसियतसे मै केवल सलाह ही दे सकता हूँ। तो क्या मै यह कह सकता हूँ कि ऐसे कोई सवर्ण या अवर्ण हिन्दू नही है जो राजनीतिमे रुचि लेते हो। इसलिए यह शब्द असत्य और अपमानजनक ध्वनित होता है। आपके सम्मेलनमे कौन उनका प्रतिनिधित्व करेगा? काग्रेस तो नही, क्योकि वह बिना भेदभाव किये स्वतन्त्रता चाहनेवाले और स्वतन्त्रता के लिए काम करनेवाले सब भारतीयोंका प्रतिनिधित्व करना चाहती है। तभी तो हिन्दुओकी हैसियतसे हिन्दुओके प्रतिनिधित्वका दावा करनेवाली हिन्दू महासभा अस्तित्व रखती है। मेरा विचार है कि वह भी केवल सवर्ण हिन्दुओका प्रतिनिधित्व करने से इनकार करेगी। और फिर लगता है कि आपके प्रसारणमे[3] स्वतन्त्रता शब्दका उपयोग सावधानीपूर्वक छोड़ दिया गया है। अत. मुझे लगता है कि उसमे सशोधन करने की जरूरत है जिससे कि वह आजके भारतीय विचारके अनुरूप बन सके। मेरा सुझाव है कि हमारे तार प्रकाशित कर दिये जाये।[4]

गांधी

[अग्रेजीसे]
गांधीजीज कॉरेस्पॉण्डेन्स विद द गवर्नमेंट, १९४४-४७, पृ० १८

१. वाइसरायने अपने प्रसारण-भाषणके बाद गांधीजी को भेजे अपने १४ जूनके तारमें विचार-विमर्शके अपने प्रस्तावको पुनः दोहराया था और वाइसराय भवनमें २४ जूनको ३ बजे उनके साथ प्रारम्भिक बातचीत करने का सुझाव पेश किया था। उन्होंने तारके अन्तमें लिखा था कि उन्होंने इस आशासे कि गांधीजी निमन्त्रण स्वीकार कर लेंगे, गांधीजी के लिए "एम्सबेल नामक बंगला उपलब्ध होने की व्यवस्था कर दी है"।

२. देखिए पिछला शीर्षक।

३. देखिए परिशिष्ट ३।

४. वाइसरायके जवाबके लिए देखिए परिशिष्ट ४।

५५५. पत्र : जगन्नाथ दासको[1]

पंचगनी

१५ जून, १९४५

जिन दस्तकारियों और कलाओंका काम गाँवोके घरोंमें किया जा सकता है वे सब सिखाई जा सकती है और सिखाई जानी चाहिए, भले ही ऐसी दस्तकारियों और कलाओसे बननेवाली चीजोंका लाभदायक इस्तेमाल शहरी लोगोंके लिए ही हो और हो सकता हो।

इस प्रकार बढ़ईगिरी, रेखाचित्रकारी, चित्रकारी, मूर्तिकला, राजगीरी, वैज्ञानिक धुलाई आदिके लिए संस्थानमें समुचित स्थान है। ये सब मात्र यान्त्रिक रीतिसे नही सिखाई जानी चाहिए, बल्कि हेतु और मूल शिक्षणार्थियोंको समझाये जाने चाहिए, ताकि विभिन्न दस्तकारियों और कलाओको सीखने और उनपर काम करने की क्रिया मे उनकी बुद्धि पूरी तरह विकसित और अनुशासित हो सके। इस प्रकार इनके माध्यमसे उन्हें नैतिक तथा बौद्धिक शिक्षा दी जाये।

दूसरे, यदि पहलेका पालन शब्द और भावना दोनों दृष्टियोंसे किया जाये तो जो चीजें तैयार होगी उनकी बिक्रीसे पूरा संस्थान स्वावलम्बी अवश्य बन जाना चाहिए। कारण, उन चीजोंके उत्पादनमें व्यवस्था-सम्बन्धी खर्च बहुत कम होगा या कुछ भी नही होगा, क्योकि इसके पीछे विचार यह है कि संस्थानके ऊपरसे नीचे तकके सभी पदोंपर उन भूतपूर्व शिक्षार्थियोको ही रखा जाये, जो अब अपने-अपने विभागके विशेषज्ञ बन गये है।

मो० क० गांधी

अंग्रेजीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

५५६. पुर्जा : वल्लभभाई पटेलको[2]

पंचगनी

१५ जून, १९४५

आपके भोजनके विषयमें मैंने विचार कर लिया है। मेरी राय है कि जिस खुराक मे रेशे वगैरा रहते हों वह न खाई जाये। इसलिए सब्जियोंमें लौकी जैसी सब्जियाँ

१. हरिजन उद्योगशालावाले

२. साधन-सूत्रमें मणिबहिन पटेलने लिखा है: "वल्लभभाई १५ जून, १९४५ को यरवदा जेलसे रिहा हुए थे। वे ११ बजे सुबह गांधीजी से मिलने पंचगनी कार द्वारा पहुँचे थे। उस दिन गांधीजी का मौन था।"

जिनमें अपच्य भाग थोड़ा ही रहता है, ली जाये। मुख्य भोजन दूध, ग्लुकोस, शहद और पचा सके तो मक्खन रहे। मेरे खयालसे बीजोवाली सब्जी भी त्याज्य है, जैसे बैंगन और टमाटर। इनमे बीज होते हैं। बाजरेकी जो यीस्ट (खमीर) मुझे कोयम्बतूर से भेजी गई है, वह शायद अच्छी रहेगी। मतलब यह हुआ कि जिस खुराकका बोझ आँतों पर न पड़े, वह लेनी चाहिए। और हर बार कम। भले ही चार बार ली जाये। कटिस्नान ठडा और गरम लेना चाहिए। पूरे टबमे लेटकर पडे रहे, इससे लाभ होने की सभावना है। इसका अर्थ यह हरगिज नही कि डॉक्टर न देखे या राय न दे। [पर] वे खुराकका विचार नही करते।

[गुजरातीसे]

बापुना पत्रो – २ : सरदार वल्लभभाईने, पृ० २७९-८०

५५७ वक्तव्य : समाचारपत्रोंको

पचगनी

१५ जून, १९४५

वाइसरायके बयानके[1] शुद्ध राजनीतिक पहलूपर मै कुछ न कहना ही अच्छा समझता हूँ, क्योकि अब काग्रेस कार्य-समितिके सदस्य रिहा हो गये हैं। मै उन्हे अपनी सलाह ही दे सकता हूँ और काग्रेसकी नीतिको निर्धारित करना और अधिकारपूर्वक कुछ कहना या करना उनका ही काम है।

ज्योंही मैंने प्रसारण पढा त्योही मैंने वाइसराय महोदयको तार[2] भेजा, जिसमें मैंने उनका ध्यान इस बातकी ओर आकर्षित किया कि मै "काग्रेसका मान्यता प्राप्त प्रतिनिधि" नही हूँ। काग्रेसका प्रतिनिधित्व करना काग्रेसके अध्यक्षका काम है या उस व्यक्तिका काम है जिसे किसी विशेष अवसरपर काग्रेसका प्रतिनिधित्व करने के लिए नियुक्त किया जाये।

कई वर्षोंसे मैं जरूरत पडने पर काग्रेसके अनौपचारिक सलाहकारके रूपमे काम करता आया हूँ। लोगोको याद होगा कि मैं इसी तरह बिना प्रतिनिधिकी हैसियत के कायदे-आजम जिन्नासे बातचीत[3] करने गया था। और ब्रिटिश सरकारके साथ — इस अवसरपर वाइसरायके साथ जो ब्रिटिश सरकारका प्रतिनिधित्व करते है — मैं किसी और स्थितिको स्वीकार नही कर सकता।

वाइसरायके प्रसारणमे दो शब्द ऐसे है जो मेरे कानोंको बुरे लगे और मेरा विश्वास है कि राजनीतिकी चेतना रखनेवाले हर हिन्दूके कानोको बुरे लगेंगे। वे शब्द है "सवर्ण हिन्दू"। मेरा दावा है कि राजनीतिक दृष्टिसे ऐसा कोई व्यक्ति नही है जिसे

१ देखिए परिशिष्ट ३।

२. यह तार वाइसरायके निजी सचिवको भेजा गया था; देखिए पृ० ३४४।

३. सितम्बर, १९४४ में; देखिए खण्ड ७८।

"सवर्ण हिन्दू" कहा जाये, और राजनीतिक स्वतन्त्रताके लिए उत्सुक समस्त भारत का प्रतिनिधित्व करने की इच्छुक कांग्रेसकी तो बात ही अलग रही।[1]

क्या हिन्दू-महासभाके वीर सावरकर, डॉ० श्यामाप्रसाद या डॉ० मुंजे सवर्ण हिन्दुओंका प्रतिनिधित्व करते हैं?

क्या वे वर्ण-भेद किये बिना सभी हिन्दुओंका प्रतिनिधित्व नहीं करते? क्या उनमें तथाकथित अछूत शामिल नहीं हैं? क्या वे स्वयं सवर्ण हिन्दू होने का दावा करते हैं? मैं आशा करता हूँ कि ऐसा नहीं है।

राजनीतिक चेतना रखनेवाले दूसरे हिन्दुओंकी बात तो अलग है, मैं जानता हूँ कि पूज्य पण्डित मालवीयजी भी, यद्यपि वे वर्ण-भेदको मानते हैं, अपने-आपको दूसरे हिन्दुओंसे अलग सवर्ण हिन्दू कहलाने से इनकार करेंगे।

हिन्दू समाजमें आधुनिक प्रवृत्ति सब तरहके वर्ण-भेदका अन्त कर देने की है। ऐसा मेरा दावा है, हालाँकि मैं जानता हूँ हिन्दू समाजमें प्रतिक्रियावादी लोग हैं।

इसलिए मैं यही सोच सकता हूँ कि वाइसराय महोदयने ये शब्द अज्ञानवश ही प्रयुक्त कर दिये होंगे। मैं उन्हें इस अपराधसे मुक्त करना चाहता हूँ कि उन्होंने जानबूझकर हिन्दू समाजकी भावनाओंको ठेस पहुँचाने के लिए या उसमें फूट डालने के लिए ऐसा किया है।

अगर ये शब्द हिन्दुओंके राजनीतिक मानसके मर्म-स्थलपर आघात करनेवाले न होते और अगर उनसे राजनीतिक प्रतिक्रियाकी सम्भावना न होती, तो मैं इस विषयमें विस्तारसे कुछ न कहता।

प्रस्तावित सम्मेलन बहुत अच्छा काम कर सकता है, बशर्ते कि इसे उचित राजनीतिक पृष्ठभूमिमें आयोजित किया जाये और फूटकी प्रवृत्तिसे शुरूसे ही बचा जाये।

निस्सन्देह यह अच्छा हो यदि सब निमन्त्रित व्यक्ति भारतके स्वाभाविक लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए संगठित होकर काम करनेवाले भारतीयोंके रूपमें सम्मेलनमें जाये, न कि भारतीय समाजके विभिन्न वर्गोंका प्रतिनिधित्व करनेवाले व्यक्तियोंके रूपमें।

मैंने भूलाभाई-लियाकत अली समझौतेको,[2] जिसने मेरा खयाल है कि वाइसरायके इस आगामी सम्मेलनका आधार प्रस्तुत किया है, इसी दृष्टिसे देखा है।

श्री भूलाभाई देसाईके प्रस्तावका ऐसा कोई अभिप्राय नहीं था जैसा कि वाइस-रायके प्रसारणका प्रतीत होता है। भूलाभाई देसाईके पूछने पर मैंने उन्हें उनके प्रस्तावके बारेमें जो सलाह[3] दी थी, उसके लिए मैं शर्मिन्दा नहीं हूँ।

श्री भूलाभाई देसाईका प्रस्ताव, जैसा कि मैंने उसे समझा था, मुझे इसलिए अच्छा लगा क्योंकि वह साम्प्रदायिक उलझनको सुलझाने के लिए था, और मैंने श्री देसाईको विश्वास दिलाया कि मैं कार्य-समितिके सदस्योंपर अपने नैतिक बलका

१. देखिए पृ० ३४५ भी।
२. देखिए परिशिष्ट ५।
३. देखिए "पुर्जा: भूलाभाई देसाईको", पृ० ३०९-१०।

प्रभाव डालूँगा और उस प्रस्तावको स्वीकार करने के पक्षमे अपनी दलीले पेश करूँगा। और मुझे इसमे कोई सन्देह नही है कि अगर प्रस्तावसे सम्बन्धित दोनो पक्ष अपने-अपने लोगोका सही प्रतिनिधित्व करे और अपने सामने भारतकी स्वतन्त्रताका समान लक्ष्य रखे, तो मामला ठीक बैठेगा।

मै अपनी बात यहाँ खत्म करता हूँ और इसके आगे कुछ करना कांग्रेसकी कार्य-समितिका काम है। समितिके सदस्योका यह कर्तव्य है कि वे सामने आनेवाले प्रश्नो पर कांग्रेसके विचार प्रस्तुत करे।

[अंग्रेजीसे]
बॉम्बे क्रॉनिकल, १६-६-१९४५

५५८. तार : लॉर्ड वेवलको

अविलम्बनीय

पचगनी
१६ जून, १९४५

महामान्य वाइसराय
नई दिल्ली

आपके कलके तारके[1] जवाबमें डाकसे चिट्ठी[2] भेज रहा हूँ।

गाधी

[अंग्रेजीसे]
गांधीजीज कॉरेस्पॉण्डेन्स विद द गवर्नमेंट, १९४४-४७, पृ० १९

५५९. तार : जे० बी० कृपलानीको

पचगनी
१६ जून, १९४५

आचार्य कृपलानी
मार्फत 'हिन्दू'
कराची

सरदार,[3] देव[4] यहाँ है। आशा है तुम अच्छे हो और आ रहे हो।

बापू

अंग्रेजीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. देखिए पृ० ३४४, पा० टि० ५।
२. देखिए पृ० ३५१-५३।
३ और ४. वल्लभभाई पटेल और शंकरराव देव, जो १५ जूनको यरवदा जेलसे रिहा हुए थे।

५६०. तार : अबुल कलाम आजादको

अविलम्बनीय

पंचगनी
१६ जून, १९४५

मौलाना अबुल कलाम आजाद
बालीगंज

आशा है आप स्वस्थ होंगे। मेरा सुझाव है कि बम्बईमें जल्दी ही कार्य-समितिकी बैठक बुलायें। तिथि विज्ञापित करें। सरदार, देव सहमत हैं।

गांधी

अंग्रेजीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

५६१. तार : जवाहरलाल नेहरूको

अविलम्बनीय

पंचगनी
१६ जून, १९४५

पण्डित जवाहरलाल नेहरू
खली (नैनीताल)

तुम्हारा तार[1] मिला। कार्य-समितिकी बैठक जल्दी बुलाना आवश्यक है। मेरा सुझाव है कि स्थान बम्बई रखो और तिथिकी घोषणा करो। सरदार, देव सहमत हैं। आशा है तुम, मौलाना साहब, नरेन्द्रदेव मजेमें हैं।

बापू

अंग्रेजीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. १५ जूनका, जिसमें जवाहरलाल नेहरूने उसी दिन खली और अगले दिन नैनीताल जाकर सोमवारको इलाहाबाद लौटने की योजना सूचित की थी।

५६२. तार : राजेन्द्रप्रसादको

'दिलखुश', पचगनी
१६ जून, १९४५

बाबू राजेन्द्रप्रसाद
सदाकत आश्रम
पटना

कब आ रहे हो? सरदार, देव, जयरामदास, महमूद यहाँ हैं। आशा है, तुम मजेमें होगे।

बापू

अंग्रेजीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

५६३. पत्र : लॉर्ड वेवलको

'दिलखुश', पचगनी
१६ जून, १९४५

प्रिय मित्र,

आपका तार[1] मुझे कल दोपहर बाद ३.४५ पर मिला। उसके लिए धन्यवाद। इस तारके मिलने से पहले मैंने अपना दूसरा तार[2] दिया था जिसमें मैंने आपके तारसे भेजे निमन्त्रणकी प्राप्तिकी सूचना दी थी। तार द्वारा जवाब देने के बजाय मैं यह पत्र लिख रहा हूँ, क्योंकि मैं चाहता हूँ कि आप मेरी स्थिति अच्छी तरह समझ लें। अलबत्ता इस चिट्ठीके भेजने की सूचना तार[3] द्वारा दे रहा हूँ। कल सबेरे मैंने समाचारपत्रोंके लिए जो सन्देश[4] दिया था वह इस पत्रके साथ संलग्न है ताकि आप इसे आसानीसे देख सकें। मैं चाहूँगा कि आप इसे पढ़ जायें।

१. देखिए पृ० ३४४, पा० टि० ५।
२. देखिए पृ० ३४५।
३. देखिए पृ० ३४९।
४. देखिए "वक्तव्य : समाचारपत्रोंको", पृ० ३४७-४९।

यह सच है कि मेरी स्थिति प्राविधिक है, परन्तु उसकी असलियत और भी ज्यादा सच्ची है। मैंने कांग्रेसके साथ अपना आधिकारिक और कानूनी सम्बन्ध जान-बूझकर और अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटीकी सहमतिसे तोड़ लिया था,[1] ताकि मैं सर्व-सामान्य उद्देश्यके लिए ज्यादा अच्छी तरह काम कर सकूँ। अतः इस स्थितिको मैं अपनी मर्जीसे नहीं बदल सकता। आगामी सरकारी सम्मेलनमें मेरी कोई आधिकारिक जगह नहीं हो सकती। अगर मैं कांग्रेसका अधिकृत प्रतिनिधि बने बिना सम्मेलनमें भाग लूँ, तो सम्मेलनका सरकारी रूप ही बदल जायेगा। लेकिन अगर आप समझते हों कि मेरी सहायता वांछनीय है और सम्मेलनका सदस्य हुए बिना मैं उपयोगी हो सकता हूँ, तो मैं सम्मेलनसे पहले और सम्मेलनके दौरान भी आपकी सेवामें अवश्यमेव उपस्थित रहूँगा, लेकिन शर्त यह है कि कार्य-समिति भी ऐसा ही चाहती हो।

मैं एक मिलती-जुलती मिसाल देना चाहता हूँ। शायद आप स्वर्गीय सी० एफ० एन्ड्रयूजको जानते होंगे जिन्हे हम प्यारसे दीनबन्धु कहा करते थे, उन्होंने कैम्ब्रिज मिशन और चर्चके साथ अपना आधिकारिक सम्बन्ध तोड़ लिया था, और वह इसलिए कि वे धर्म, भारत और मानव-जातिकी ज्यादा अच्छी सेवा कर सकें। भारत और इंग्लैंडके बीच एक महत्त्वपूर्ण सरकारी अथवा गैर-सरकारी कड़ीके तौरपर और सब वर्गों और दलोंके बीच एक कड़ीके तौरपर उनकी जो स्थिति थी वह दिन-ब-दिन मजबूत होती गई। अगर सम्भव हो तो मैं भी अपने लिए ऐसी स्थिति चाहूँगा। हो सकता है कि मुझे ऐसी स्थिति कभी प्राप्त न हो। मनुष्य तो केवल प्रयत्न ही कर सकता है।

आपने सुझाव दिया है कि मैं और सोच-विचार तथा सलाह-मशविरा करूँ। मैंने ये दोनों काम किये हैं। यरवदा सेन्ट्रल जेल, जहाँ हालमें सरदार वल्लभभाई पटेल और श्री शंकरराव देवको अहमदनगर किलेसे लाया गया था, मेरी जगहके बहुत नजदीक है। कल जेलसे रिहा होने के लगभग तुरन्त बाद वे मोटरमें बैठकर पंचगनी आये और अब भी मेरे यहाँ हैं। मैंने उन्हें जरूरी कागज-पत्र दिखा दिये हैं और मैं जो-कुछ लिख रहा हूँ उससे वे सहमत हैं।

आपने जो काम अपने जिम्मे लिया है — मैं भली-भाँति जानता हूँ कि वह कितना कठिन और नाजुक है — निश्चय ही उसे पूरा करने में आपको सब पार्टियोंकी सहायता और सद्भावनाकी जरूरत है। जैसा कि स्वाभाविक है कांग्रेसकी सहायता तो आपको तबतक नहीं मिल सकती जबतक कि कांग्रेसका प्रतिनिधि अधिकृत रूपसे आपके सम्मेलनमें उपस्थित न हो। कार्य-समितिके शेष सदस्योंकी रिहाईका पहला और शायद मुख्य उद्देश्य तबतक पूरा नहीं होगा जबतक कि आपके सम्मेलनमें कांग्रेस अध्यक्ष उपस्थित न हो या कांग्रेस अध्यक्ष और उनकी कमेटीके द्वारा इस कामके लिए नियुक्त किया गया कोई व्यक्ति उपस्थित न हो। अगर मेरा अनुमान ठीक है तो मेरी एकदम सलाह है कि आपको कांग्रेस अध्यक्षको आमंत्रित करना

१. अक्तूबर, १९३४ में; देखिए खण्ड ५९।

चाहिए। मैं आशा करता हूँ कि कांग्रेसपर अब भी जितना प्रतिबन्ध है वह हटा लिया गया होगा या हटा लिया जायेगा।[1]

हृदयसे आपका,
मो० क० गांधी

संलग्न – १
महामान्य वाइसराय
वाइसराय भवन
नई दिल्ली

[अंग्रेजीसे]
गांधीजीज कॉरेस्पॉण्डेन्स विद द गवर्नमेंट, १९४४-४७, पृ० १९-२०

५६४. पत्र : लीलामणिको

पचगनी
१६ जून, १९४५

प्रिय लीलामणि,

तुम्हें याद है कि बहुत वर्ष पहले जब मैं गोल्डन थ्रेसहोल्डमें तुम्हारे साथ रहता था तो तुम मेरी गोदमें बैठा करती थी। अब तुम इतनी बड़ी हो गई हो कि मेरी गोदमें बैठने लायक नहीं हो। लेकिन अगर मैं तुम्हारे पास होता तो मैं तुम्हारा सिर अपनी गोदमें रख लेता और तबतक न उठाने देता जबतक कि तुम सब डाक्टरी हिदायतोंपर अक्षरशः अमल करने का वायदा न करती। तुम्हारे विद्यार्थियोंको तुम्हारी

१. वाइसरायने १७ जूनको तार द्वारा पत्रकी प्राप्तिकी सूचना देते हुए लिखा : "मैं आपकी स्थिति समझता हूँ। मैं २४ तारीखको आपसे मिलने की प्रतीक्षा कर रहा हूँ और मुझे आशा है कि सम्मेलनकी कार्यवाहीमें आपके शामिल होने का कोई रास्ता निकाला जा सकेगा। यदि आप मेरी ओरसे निम्नलिखित सन्देश मौलाना अबुल कलाम आजादको भेज दें तो कृपा होगी : "मैं आपको शिमलाके वाइसराय भवनमें सोमवार, २५ जूनको सुबह १०-३० बजे सम्मेलनमें उपस्थित होने का निमन्त्रण देता हूँ या फिर आप इस कार्यके लिए अपनी ओरसे सही रूपसे अधिकृत कोई प्रतिनिधि नामजद कर दें। प्रतिनिधिके लिए यदि आवश्यकता होगी तो ठहरने के स्थानकी व्यवस्था कर दी जायेगी।" मैंने आपका पत्र या यह तार समाचारपत्रोंको प्रकाशनार्थ जारी नहीं किया है, लेकिन उनके प्रकाशित किये जाने पर मुझे कोई आपत्ति नहीं है।"

जरूरत है, लेकिन तुम्हारी सबसे ज्यादा जरूरत तुम्हारी माँको[1] है जिसे हालमे ही भारी सदमा पहुँचा है। उनकी खातिर 'हाँ' कर दो और जीती रहो।

स्नेह।

बापू

अंग्रेजीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स; सौजन्य : प्यारेलाल। महात्मा गांधी : द लास्ट फेज, जिल्द १, भाग १, पृ० १११ से भी

५६५. पत्र : सरोजिनी नायडूको

पंचगनी
१६ जून, १९४५

प्रिय गायिका,

मैं कोई बहुत अच्छा, या किसी प्रकारका भी, महात्मा नहीं हूँ। लेकिन मै जानता हूँ कि मै अच्छा पिता हूँ और इसीलिए मुझे एक अच्छी मातासे अर्थात् तुमसे सहानुभूति है।

लीलामणिके लिए एक चिट्ठी[2] संलग्न है। आशा करता हूँ कि वह औरोके लिए नहीं तो तुम्हारे लिए जियेगी। उसके स्वास्थ्य-सुधारके बारेमे मुझे सूचित करती रहना।

तुमने जिस चीजका जिक्र किया है वैसी क्षणजीवी घटनाओमे मै बहुत कम रुचि लेता हूँ।

स्नेह।

कतैया

अंग्रेजीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स; सौजन्य : प्यारेलाल। महात्मा गांधी : द लास्ट फेज, जिल्द १, भाग १, पृ० १११ से भी

१. सरोजिनी नायडू, जिनके पुत्रका देहान्त हो गया था; देखिए पृ० ४२।
२. देखिए पिछला शीर्षक।

५६६. पत्र : अमृतकौरको

पंचगनी
१६ जून १९४५

यह अच्छा पत्र है, लेकिन मॉड रॉयडन शॉ कितनी भोली है। ऐसे सपने तो मॉर्फियाके प्रभावमें रहने पर आते हैं? लेकिन वे क्या कोई खास विचार करने लायक हैं? फिर भी यह चीज उस भली महिलाको सहारा देती है। कल्पनाकी शक्ति है ही ऐसी।

स्नेह।

बापू

अंग्रेजीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

५६७. पत्र : कन्हैयालाल मा० मुन्शीको

पंचगनी
१६ जून, १९४५

भाई मुन्शी,

तुम्हारा ११का पत्र आज मिला। तुम्हारा लिखा सब ध्यानपूर्वक पढ़ गया हूँ। सरदार, देव, जयरामदास, डॉ० महमूद यहाँ है। उन्हें भी दिखा दिया है। पत्र स्पष्ट है। मैंने क्या-क्या किया है और क्या कर रहा हूँ, यह देखना। मुझे कोई चेतावनी देनी हो तो निर्भय हो कर देना। मै तो यह भी कहता हूँ कि अखबारोंमें लिखो तो भी कोई हर्ज नही। हाँ, जबतक विचार निश्चित न हों, तबतक मौन रहना चाहिए, यह तो ठीक ही है।

तुम सब खूब आराम कर रहे हो, यह मुझे अच्छा लगता है।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी नकल (सी० डब्ल्यू० ७६८८) से। सौजन्य · क० मा० मुन्शी

५६८. पत्र : आनन्द तोताराम हिंगोरानीको

१६ जून, १९४५

चि० आनंद,

विद्या कब मिलेगी ऐसा प्रश्न क्यों? तुमारी लगन विद्याके शरीरसे थी क्या? उसका तो नाश ही है। अगर आत्मासे था तो आत्मा तो अमर है। नीदसे उठो, जागो और देखो तो विद्या तुमारे साथ ही है।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी माइक्रोफिल्मसे। सौजन्य : राष्ट्रीय अभिलेखागार और आनन्द तो० हिंगोरानी

५६९. पत्र : कुलसुम सयानीको

पचगनी
१६ जून, १९४५

बेटी कुलसुम,

मैं किसको लिखूं? समय कहा? तो भी तुझे मैं कैसे 'ना' कहूं? यह मेरा संदेशा रहबरका काम कि उर्दू और हिंदीको एक बनाना मुझे अच्छा लगता है और उसमें फतह हो। — मो० क० गांधी

बापुना आशीर्वाद

श्री कुलसुम सयानी
रूपा विला
खम्बाला हिल
बम्बई

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

५७०. पत्र : परमानन्दको

पंचगनी
१६ जून, १९४५

भाई परमानन्द,

तुम्मारा खत मिला। अच्छा है कि तुमको सत्य और अहिंसामें इतना विश्वास पैदा हुआ है। अच्छे रहो, खूब कातो, अच्छा कातो, पूनिया बना लो।

मो० क० गांधीके आशीर्वाद

श्री परमानन्द
द्वारा – जेलर डिस्ट्रिक्ट जेल
सुलतानपुर, अवध

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य . प्यारेलाल

५७१. पत्र : श्यामलालको

पंचगनी
१६ जून, १९४५

भाई श्यामलाल,

जो मजूरी तुमने रु० १,००० तक तीन मासके लिए मागी है मुझे मंजूर है। इसमें बापाकी और मृदुलाबहनकी सम्मति होनी चाहिए।

मो० क० गांधी

श्री श्यामलालजी
कस्तूरबा स्मारक निधि
सिंदिया हाउस
बेलार्ड इस्टेट, बम्बई – १

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

५७२. तार: लॉर्ड वेवलको

अविलम्बनीय

पंचगनी
१७ जून, १९४५

महामान्य वाइसराय
नई दिल्ली

आपका तार[1] कल शामको मिला। उसके लिए हार्दिक आभारी हूँ। कार्यविधिको नियमित बनाने के लिए तथा सम्मेलनके सदस्योंकी संख्यामें फेर-बदल किये बिना उसके कामको आसान बनाने के लिए मेरा यह सुझाव है कि आप तुरन्त कांग्रेस अध्यक्षसे अनुरोध करें कि वे सम्मेलनमें आयें या कांग्रेसके प्रतिनिधिको भेजें। अगर सवर्ण हिन्दुओं और मुसलमानोंकी संख्याकी समानतामें फेर-बदल नहीं किया जा सकता, तो इसका यह मतलब होगा कि स्वतन्त्रता मिलने से ठीक पहले धार्मिक भेदभाव सरकारी तौर पर रूढ़ हो जायेगा। व्यक्तिगत रूपसे मैं इस बातको कदापि नहीं मान सकता और कांग्रेस भी— जहाँतक कि मैं उसके विचारोंको जानता हूँ—उसे नहीं मान सकती। हालांकि कांग्रेसमें हिन्दू सदस्योंकी संख्या बहुत अधिक ही है, फिर भी उसने एक शुद्ध राजनीतिक संगठन बनने की कोशिश की है। मैं कांग्रेसको यह सलाह दे सकता हूँ कि वह सभी गैर-हिन्दू प्रतिनिधि नामजद करे। और अवर्ण हिन्दुओंको नामजद करने की सलाह तो मैं निश्चय ही दे सकता हूँ। अगर सवर्ण हिन्दुओं और मुसलमानोंकी तुल्यता नहीं बदली जा सकती, तो आप अनजानमें मगर निश्चित रूपसे सम्मेलनके उद्देश्यको विफल कर देंगे। कांग्रेस और लीगके सदस्योंकी संख्याकी तुल्यता समझमें आ सकती है। मैं आपकी तथा ब्रिटिश राष्ट्रकी सहायता करने को उत्सुक हूँ, पर बुनियादी और सर्वमान्य सिद्धान्तोंको तिलांजलि देकर नहीं। क्योंकि ऐसा करना कोई सहायता न होगी। अगर आप चाहते हों कि

१. देखिए पृ० ३४४, पा० टि० ५।

मेरे कलके पत्रका मूल पाठ आपको जल्दी मिल जाये तो मैं उसे तार द्वारा भिजवा सकता हूँ।[1]

गांधी

[अंग्रेजीसे]
गांधीजीज कॉरेस्पॉण्डेन्स विद द गवर्नमेंट, १९४४-४७, पृ० २२

५७३. तार : लॉर्ड वेवलको

पंचगनी
१७ जून, १९४५

महामान्य वाइसराय
नई दिल्ली

मेरे १६ तारीखके पत्रका[2] जवाब[3] आपने तुरन्त दिया, उसके लिए बहुत-बहुत धन्यवाद। लेकिन आप मानेंगे कि उसी तारीखके मेरे तारका[4] जवाब जबतक न मिले तबतक कांग्रेसकी और मेरी स्थिति अनिश्चित रहेगी। इसलिए जबतक मेरा संशोधन न स्वीकार किया जाये, तबतक मैं आपकी तरफसे भी कांग्रेस अध्यक्षको निमन्त्रण नहीं भेज सकता। आपके १६ तारीखके तारके अनुसार आप सम्मेलनको इस सवालपर न विचार करने देंगे और न करने दे सकते हैं। अतः मुझे भारी खेद है कि आपके तारपर, जिसका कि मैं जवाब दे रहा हूँ, मैंने कोई कार्य-वाही नहीं की। कार्य-समितिकी बैठक अभी बुलाई नहीं गई। गैर-सरकारी तार भेजने में बड़ी देर लगती है। आपने जो तारीख नियत की है, उसके लिए इतना थोड़ा समय रह गया है कि उसका पूरा होना कठिन लगता है। मेरा खयाल है आप यह मानेंगे कि यद्यपि मैं मदद करना चाहता हूँ फिर भी देर तो हो ही जायेगी। मेरा सुझाव है कि आप तारीखमें परिवर्तन कर दें और मेरे द्वारा उठाये गये मामलोंको स्पष्ट कर दें। अगर आपका स्पष्टीकरण सन्तोषजनक हुआ तो मैं कहूँगा कि आप स्वयं निमन्त्रण भेजें ताकि देर न हो। मैं आपको बताना

१. देखिए अगला शीर्षक।
२. देखिए पृ० ३५१-५३।
३. देखिए पृ० ३५३, पा० टि० १।
४. देखिए पिछला शीर्षक।

चाहूँगा कि जबतक कार्य-समिति फैसला नही करती, तबतक कांग्रेसी मुख्यमन्त्री कुछ नही कर सकते। जबतक अन्तिम रूपसे फैसला नही हो जाता तबतक मैं इस पत्र-व्यवहारको प्रकाशनार्थ नहीं दूंगा। लेकिन इसका निर्णय करना आपके हाथमें होगा।[1]

गांधी

[अंग्रेजीसे]
गांधीजीज कॉरेस्पॉण्डेन्स विद द गवर्नमेंट, १९४४-४७, पृ० २३

५७४. तार: चक्रवर्ती राजगोपालाचारीको

अविलम्बनीय

पंचगनी
१७ जून, १९४५

च० राजगोपालाचारी
बजलुल्ला रोड
त्यागराज नगर
मद्रास

मेरी सलाह है कि घटनाक्रम पर दृष्टि रखो, लेकिन अन्तरात्माके आदेशपर चलो।

बापू

अंग्रेजीकी नकलसे: प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य: प्यारेलाल

५७५. तार: अबुल कलाम आजादको

अविलम्बनीय

पंचगनी
१७ जून, १९४५

मौलाना अबुल कलाम आजाद
बालीगंज

किस प्रकारका दाँतका दर्द है? मेरा कार्यक्रम मुख्य रूपसे आपपर और आंशिक रूपसे वाइसरायपर निर्भर करता है। मेरी सलाह है कि कार्य-समितिकी बैठक तत्काल बुलाई जाये और सारी स्थितिपर विचार किया जाये।

बापू

अंग्रेजीकी नकलसे: प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य: प्यारेलाल

१. वाइसरायके जवाबके लिए देखिए परिशिष्ट ६।

५७६. तार : डॉ० बी० पट्टाभि सीतारामैयाको

अविलम्बनीय

पंचगनी
१७ जून, १९४५

डॉक्टर पट्टाभि सीतारामैया[1]
मछलीपट्टम

आशा है तुम ठीक होगे। तारसे बताओ कि कब आ रहे हो।

बापू

अंग्रेजीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

५७७. पत्र : चक्रवर्ती राजगोपालाचारीको

१७ जून, १९४५

प्रिय च० रा०,

इसका पहुँचना तारसे भी अधिक निश्चित है। जितनी जल्दी हो सके यहाँ या बम्बईमें — जहाँ भी मैं होऊँ — आ जाओ। सरदार और दूसरे लोगोंका भी यही कहना है। वाइसरायके साथ लम्बा पत्र-व्यवहार चल रहा है।

स्नेह।

बापू

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० २१०८) से

१. आन्ध्रके कांग्रेसी नेता, अ० भा० कांग्रेस कमेटी और कार्य-समितिके सदस्य

५७८. तार : चक्रवर्ती राजगोपालाचारीको[1]

अविलम्बनीय

पंचगनी
१७ जून, १९४५

चक्रवर्ती राजगोपालाचारी
बजलुल्ला रोड
त्यागराज नगर
मद्रास

यहाँ आ जाओ। मैं समय आने पर तय करूँगा। सरदार सहमत हैं।

बापू

अंग्रेजीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

५७९. पत्र : भूलाभाई देसाईको

पंचगनी
१७ जून, १९४५

भाई भूलाभाई,

मेरे लेख तुम पढ़ते होगे। उनमें मैं जो लिख रहा हूँ उसे ध्यानमें रखना। यदि कांग्रेस हिन्दूको ही नामजद कर सकती है तो हम हिन्दू हो जाते हैं जो उस अर्थमें हम नहीं हैं। हमें चाहे जिस किसीको नामजद करने की पूरी छूट होनी चाहिए। और कुछ लिखने की अभी फुरसत नहीं है।

बापूके आ[शीर्वाद]

भूलाभाई देसाई

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. यह तार हिन्दू के प्रतिनिधि रंगास्वामीको टेलीप्रिन्टरसे भेजने के लिए दिया था।

५८०. तार : लॉर्ड वेवलको

अविलम्बनीय

पचगनी
१८ जून, १९४५

महामान्य वाइसराय
नई दिल्ली

आपके शीघ्र स्पष्ट और पूर्ण उत्तरके[1] लिए तथा मौलाना साहबको स्वयं निमन्त्रण भेजने के लिए कृतज्ञ हूँ। सम्मेलनमे सदस्योको प्रस्ताव स्वीकार या अस्वीकार करने का अधिकार दे दिये जाने से उनके सम्मेलनमे भाग लेने का रास्ता साफ हो गया है। अब उन्हे सम्मेलनमे पक्ष-विपक्षपर विचार करने की स्वतन्त्रता रहेगी। मुसलमानो और सवर्ण हिन्दुओकी सख्याकी अनिवार्य समानतापर मुझे अब भी पहले की तरह आपत्ति है। अगर ब्रिटिश सरकार समानताके विचारको बदल नही सकती तो मैं काग्रेसको सलाह दूंगा कि वह कार्यकारिणी परिषद्के गठनमे योग न दे। काग्रेसने अपने-आपको कभी सवर्ण या अवर्ण हिन्दुओकी सस्था नही बनाया और वह स्वतन्त्रता प्राप्त करने के लिए भी ऐसा नही कर सकती, क्योकि ऐसी स्वतन्त्रता एकपक्षीय, अवास्तविक और आत्मघाती होगी। काग्रेस भारतकी स्वतन्त्रता प्राप्त करने के लिए अपने अस्तित्वका औचित्य तभी प्रमाणित कर सकती है जब वह सभी वर्गोंके अच्छे-से-अच्छे स्त्री-पुरुष चुनने मे स्वतन्त्र हो और मुझे आशा है कि वह इस विषयमे सदा स्वतन्त्र रहेगी। अल्पसंख्यकोको मनाने की खातिर उसने उन्हे प्रतिनिधित्व देने के लिए उनके ही लोग चुने है, हालाँकि वे अच्छे-से-अच्छे नही कहे जा सकते, यह बात तो काग्रेसके लिए श्रेयकी मानी जानी चाहिए। लेकिन वर्ण या धर्मपर आधारित भेदभावको उचित ठहराने या स्थायी बनाने के लिए उसका उपयोग नही किया जा सकता। हिन्दू महासभा ऐसी सस्था है जो केवल हिन्दुओके हितोंका प्रतिनिधित्व करने का दावा करती है। अगर कार्य-समितिने चाहा तो मै २४ तारीखको शिमलेमें उपस्थित होने की कोशिश करूँगा। लेकिन मेरे दृढ़ विचारोको देखते हुए आप चाहे तो मेरी उपस्थिति मसूख कर सकते है। मै इसका

१. देखिए परिशिष्ट ६।

बुरा नही मानूँगा। आशा करता हूँ कि यह तार और इसका जो भी जवाब हो, प्रकाशित कर दिया जायेगा। मंगलको दोपहर दो बजे बाद पूना जा रहा हूँ।[1]

गांधी

[अंग्रेजीसे]
गांधीजीज कॉरेस्पॉण्डेन्स विद द गवर्नमेंट, १९४४-४७, पृ० २४-२५

५८१. तार : हर्षदा दीवानजीको

पंचगनी
१८ जून, १९४५

हर्षदाबहिन दीवानजी
फिफ्टीन्थ रोड
खार, बम्बई

१९ तारीखको दोपहर बाद दो बजे दिनशा मेहता नेचर क्योर क्लिनिक पूनामें पहुँचने की कोशिश करो।

गांधी

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० १०५५०) से। अंग्रेजीकी नकलसे भी: प्यारेलाल पेपर्स; सौजन्य: प्यारेलाल

५८२. पत्र : परिमल सोमको

पंचगनी
१८ जून, १९४५

प्रिय परिमल,

तुम्हारे पत्रसे यह जानकर बहुत दुःख हुआ कि शरत बाबू[2] इतने बीमार हैं। लेकिन तुमने ठीक ही कहा है कि ऐसे मामलोंमें कुछ खास कर सकने की अपनी

१. वाइसरायने १९ जूनको तारसे भेजे अपने जवाबमें लिखा था कि वे "२१ जूनकी बैठकके तत्काल बाद" गांधीजी से जवाब पाने की आशा रखते हैं।

२. परिमल सोमके मामा शरतचन्द्र बोस

क्षमतामें मुझे विश्वास नही है। फिर भी, तुम भरोसा रख सकते हो कि राहत दिलाने मे मुझसे जो-कुछ भी बन पड़ेगा वह मैं अवश्य करूँगा।[1]

हृदयसे तुम्हारा,
मो० क० गांधी

परिमल सोम, बी० काम०
१२-३ हिन्दुस्तान रोड
बालीगंज, कलकत्ता

अंग्रेजीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

५८३. पत्र : ऊषा गांधीको

पचगनी
१८ जून १९४५

चि० ऊषा,

तेरा कार्ड मिला। तेरी माँगमें पागलपन है। मेरे शिमला जाने का कोई ठिकाना ही नही है और अगर जाऊँगा तो केवल कार्यवश। उसमे बच्चोको ले जाने की बात ठीक नही जमती। ऐसा प्रसग होता तो बात अलग थी। तूने लिखावटमे ठीक सुधार किया है, ऐसा कहा जा सकता है। इस प्रकार यदि सारे बच्चे मोतीके दानोकी तरह अक्षर लिखेंगे तो मेरी लिखावट अपने-आप सुधर जायेगी। इसलिए तू उसमे प्रथम स्थान पर आना।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य · प्यारेलाल

५८४. पत्र : निर्मला गांधीको

१८ जून, १९४५

चि० नीमू,

कानम अब तो वहाँ पहुँचने वाला होगा। यहाँ उसने खूब मजे किये और करवाये। तू दिल्ली और शिमला नही गई यह तेरी समझदारी ही थी।

बापूके आ[शीर्वाद]

मार्फत : रामदास गाधी

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. देखिए "वक्तव्य : समाचारपत्रोंको", पृ० ३७७-७८।

५८५. पत्र : सरस्वती गांधीको

१८ जून, १९४५

चि० सुम,

तू नहीं आई। तेरा खत मिला। मैं तो तुझे लिखता रहता हूँ। तुम दोनोंने चि० हरिलालकी बहुत सेवा की है। मेरी आशा तो है कि वहा रह जाय। मैंने लिखा तो है।[1] तू परीक्षामें नापास हुई उसका जरा भी दु:ख न होना चाहिये। पढाई और भी पक्की होगी। अच्छा तो यह है कि घर संसार चलाते हुए तू पढती है और लक्ष्मी व नीमुने भी ऐसे ही किया। खूब अच्छी हो जा और हुशियार भी।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० ६१८८) से। सी० डब्ल्यू० ३४६२ से भी; सौजन्य : कान्तिलाल गांधी

५८६. वक्तव्य : समाचारपत्रोंको

पचगनी

१८ जून, १९४५

मैंने पिछले साल पंचगनीमें अपने निवासके दौरान ब्रिटिश प्रधानमंत्रीको जो पत्र[2] लिखा था उसे प्रकाशनार्थ जारी करने का शायद यह उपयुक्त समय है। वह पत्र १७ जुलाईकी आधी रातके बाद लिखा गया था। कायदे आजम जिन्नाको मैंने गुजरातीमें जो पत्र[3] लिखा था वह भी उस दिन उसी समय लिखा था — और वाइसराय महोदयकी मार्फत भिजवाने के लिए ठीक ढंगसे डाकमें डलवा दिया गया था।

दुर्भाग्यसे वह पत्र रास्तेमें गुम हो गया। बहुत देर इन्तजार करने के बाद १० सितम्बर, १९४४ को जब मैं कायदे आजमसे मुलाकात करने के लिए बम्बई गया हुआ था, मैंने मात्र कौतुहल-वश पत्रकी पहुँचका पता लगाने के लिए एक पत्र[4] लिखा, क्योंकि मनोवैज्ञानिक दृष्टिसे उपयुक्त समय तो अब बीत चुका था। वाइसरायके निजी सचिवने १३ सितम्बरको जवाब दिया कि वह पत्र उसे नहीं मिला था, उससे मुझे बड़ा आश्चर्य हुआ। चूँकि मैं उस पत्रको बड़ा जरूरी समझता था, इसलिए मैंने १७ सितम्बर, १९४४ को उन्हें गुमशुदा पत्रकी नकल[5] भेजी और फिर प्रार्थना की कि इसे प्रधानमन्त्रीके पास भिजवा दिया जाये।

१. देखिए पृ० ३३७।
२ और ३. देखिए खण्ड ७७, पृ० ४१७ और ४१९।
४ और ५. देखिए खण्ड ७८, पृ० ९७-९८ और ११८।

मेरे विचारमे श्री चर्चिलके नाम मेरा १७ जुलाईका पत्र पवित्रता लिए था और जनसामान्य की नजरोंमे लाने के लिए नही था। लेकिन मैं ऐसे अवसर या समयकी कल्पना कर सकता था जब कि उसकी पवित्रताको खत्म किये बिना उसे प्रकाशित करना पड़े।

अत मैंने ३ दिसम्बर,[1] १९४४को वाइसरायसे प्रार्थना की कि वे प्रधानमन्त्रीसे पूछ भेजे कि क्या मुझे उनकी तरफसे यह इजाजत है कि जरूरत पडने पर मैं उसे प्रकाशित कर दूं। उन्होंने अपने सचिवके द्वारा यह जवाब भेजा कि प्रधानमन्त्रीने इस शर्तपर पत्रके प्रकाशित किये जाने की इजाजत दे दी है कि यह तथ्य स्पष्ट कर दिया जाये कि उन्होंने पावती भेजी थी।

पत्रका मूल पाठ निम्नलिखित है :

'दिलखुश', पचगनी
१७ जुलाई, १९४४

प्रिय प्रधानमंत्री,

खबर है आप इस सीधे-सादे "नंगे फकीर" को — मेरा वर्णन करने के लिए ये शब्द आपके ही द्वारा प्रयुक्त बताये जाते हैं — कुचल डालने की इच्छा रखते हैं। मैं बहुत अर्सेसे फकीर — और वह भी नगा, जो और भी कठिन काम है — बनने की कोशिश कर रहा हूँ, इसलिए मैं इस वर्णनको अपनी प्रशंसा ही समझता हूँ, हालाँकि वेइरादतन की गई प्रशसा। तो मैं आपसे उसी हैसियतसे अनुरोध करता हूँ कि मुझपर विश्वास कीजिए और मेरा उपयोग मेरी और अपनी कौमकी सेवाके लिए तथा उसके द्वारा ससारकी सेवाके लिए कीजिए।

आपका सच्चा मित्र,
मो० क० गांधी

[अंग्रेजीसे]
बॉम्बे क्रॉनिकल, १९-६-१९४५

५८७. भेंट : समाचारपत्रोंको

पचगनी
१८ जून, १९४५

प्र० : जब आपने यह कहा था कि देसाई-फार्मूलेका[2] ऐसा कोई अभिप्राय नहीं था जैसा कि वाइसरायके प्रसारणका प्रतीत होता है तो आपका क्या मतलब था? और आप यह कैसे सोचते है कि देसाई-फार्मूला साम्प्रदायिक उलझनको सुलझाने में मदद देगा ?

१. साधन-सूत्र में यहाँ "१३ दिसम्बर, १९४४" लिखा है।
२. देखिए परिशिष्ट ५।

उ० : भूलाभाईके प्रस्तावोंमें सवर्ण-अवर्णके भेदकी बात नहीं है। उनका आधार यह है कि दोनों राजनीतिक संगठनोंका ५०-५० प्रतिशत प्रतिनिधित्व हो। अगर भूलाभाईके प्रस्ताव वही हैं जो कि वाइसरायके हैं, तब तो कहना होगा मैं बड़े भ्रममें हूँ। मैंने उनके प्रस्तावोंका वह मतलब नहीं समझा। देसाई-फार्मूलेके अनुसार अगर कांग्रेस चाहे तो वह ५० प्रतिशत प्रतिनिधि किसी भी सम्प्रदायसे — गैर-हिन्दुओं, सवर्ण हिन्दुओं या अवर्ण हिन्दुओंसे — नामजद कर सकती है। अगर कांग्रेस केवल सवर्ण हिन्दुओं या अवर्ण हिन्दुओंको नामजद करने पर बाध्य हो तो वह भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस नहीं रहेगी।

गांधीजी से पूछा गया कि क्या आप स्वतन्त्रताके सवालपर वाइसराय[1] और भारत-मन्त्रीके[2] द्वारा दिये गये स्पष्टीकरणसे सन्तुष्ट हैं? उन्होंने जवाब दिया कि इस प्रश्नका उत्तर देना कार्य-समितिका काम है। मेरी अपनी राय भी है, लेकिन मैं उसे सबके सामने व्यक्त करके कार्य-समितिकी रायका न पूर्वानुमान करना चाहता हूँ और न उसे प्रभावित ही करना चाहता हूँ।

प्र० : राजनीतिक गतिरोधको दूर करने के लिए लॉर्ड वेवलके व्यक्तिगत प्रयत्न के बारेमें आपकी क्या राय है?

उ० : लॉर्ड वेवलके प्रयत्नके बारेमें कोई नहीं जान सकता जबतक कि वे खुद ही यह बता दें कि उन्होंने इस सम्बन्धमें क्या-कुछ किया है।

प्र० : हिन्दू महासभाकी उपेक्षा किये जाने के बारेमें आपका क्या विचार है?

उत्तर : मैंने इस बारेमें विचार नहीं किया, लेकिन चूँकि आप मुझे प्रेरित कर रहे हैं, इसलिए मैं अब विचार करता हूँ। हो सकता है कि यह कांग्रेसको हिन्दू महासभाकी जगहपर बैठने और उसे एक वर्ग-मात्रकी या हिन्दुओंका संगठन समझनेका तरीका है। अगर है, हालाँकि मैं चाहूँगा कि वह न हो, तो कांग्रेस इस तमाशेसे अलग रहेगी। परन्तु हिन्दू महासभाके अनुल्लेखका एक और मतलब भी समझा जा सकता है और वह यह कि ब्रिटिश सरकार नहीं चाहती कि सम्मेलन धार्मिक भेद-भावपर आधारित हो और इसलिए उसने प्रस्तावकी जाँचके लिए केवल राजनीतिक प्रतिनिधियों को ही निमन्त्रण दिया है। परन्तु मुसलमानों और सवर्ण हिन्दुओंके प्रतिनिधियोंकी संख्याकी समानता निःसन्देह इस अनुकूल धारणाके विरुद्ध है। लेकिन मैंने यह सार्वजनिक घोषणा[3] की है कि यह गलती — चाहे वह कितनी ही बड़ी है — जानकारीके अभावके कारण है। अगर मेरा यह खयाल सही हो, तो गलती दुरुस्त कर दी जायेगी। इस ढंगपर सोचते हुए मैं कहूँगा कि मुस्लिम मजलिस या जमीयतुल-उलेमा और इसी तरहके दूसरे संगठनोंकी उपेक्षाका भी यही कारण है।

१. देखिए परिशिष्ट ४ और ६।
२. देखिए परिशिष्ट ७।
३. देखिए "वक्तव्य : समाचारपत्रोंको", पृ० ३४७-४९।

मै यह कहे बिना नही रह सकता कि इस सम्मेलनकी सरचना इसी तरहके पहले सब सम्मेलनोकी सरचनासे कही अच्छी है, क्योकि इससे पहले ब्रिटिश सरकारने जितने सम्मेलन किये थे उनके सदस्य मुख्यत सरकारने ही नामजद किये थे। इस वार सम्मेलनके सदस्योपर अपनी नामजदगीके लिए सरकारका आभार नही है और उनके लिए यह जरूरी नही है कि सरकारको खुश करने के लिए ही कुछ कहे या वोट दें। मिसालके तौरपर काग्रेसी मुख्य मन्त्रियोका कर्तव्य काग्रेसके प्रति है, जैसे कि मुस्लिम लीगके प्रतिनिधि केवल लोगके प्रति उत्तरदायी हैं। जहाँतक मुझे याद है इस तरहका कोई सम्मेलन पहले कभी नही हुआ।

प्र० : आपके खयालमें शुरूमें मौलाना आजादको न बुलाने का क्या कारण था?

उ० · यही कि वाइसरायके खयालमे काग्रेसका प्रतिनिधि मैं था और लोगोने उन्हे यह सोचने के लिए कारण भी दिया था। लेकिन मैं कहूँगा कि जब भी मैंने गलती बताई[1] उन्होने तुरन्त उसे समझ लिया और दुरुस्त कर दिया।

[अग्रेजीसे]
बॉम्बे क्रॉनिकल, १९-६-१९४५

५८८. भाषण : प्रार्थना-सभामें

पचगनी
१८ जून, १९४५

महात्मा गांधीने यहांसे रवाना होने के पहले दिनकी शामको प्रार्थना-सभामें भाषण देते हुए कहा कि मेरा विचार पंचगनोमें इस महीनेके अन्ततक ठहरने का था, लेकिन मनुष्य कुछ सोचता है और ईश्वर कुछ करता है।

उन्होंने पारसी कन्या हाईस्कूलकी प्रिंसिपल बाथाका इस बातके लिए धन्यवाद किया कि उन्होंने प्रार्थना-सभाके लिए स्कूलके हॉलके इस्तेमालकी इजाजत दी थी। उन्होंने उन छात्राओंका भी धन्यवाद किया जो शामको मधुर स्वरमें धर्मग्रन्थोकी प्रार्थनाएँ गाया करती थीं।

उन्होंने कहा कि हॉल मेरे लिए प्रार्थना-भवन बन गया था जहाँ हर शाम मुझे शान्ति मिलती और दिन-भरके कामकी दिमागी थकावट दूर हो जाती। इसके बदले मैं आपको आशीर्वादके सिवाय कुछ नहीं दे सकता।

उन्होंने आगे बोलते हुए कहा कि आपको मालूम होना चाहिए कि मैं उसी उद्देश्य की पूर्तिके लिए जा रहा हूँ जिसके लिए मैं यहाँ पहाड़पर आया था। वह उद्देश्य है भारतकी स्वतन्त्रताकी प्राप्ति। मेरा १२५ वर्षतक जीने की इच्छा करना या मेरा इसी क्षण मर जाना, या स्वास्थ्य ठीक करने के लिए पहाड़पर जाना — ये सब मेरे

१. देखिए "तार : लॉर्ड वेवलको", पृ० ३४४ और ३४५।

लिए एक ही बात है, जबतक कि मेरा प्रत्येक श्वास उसी उद्देश्यके निमित्त अर्पित है :

मेरी कल्पनाका स्वराज्य केवल राजनीतिक स्वतन्त्रता नहीं है, मैं धर्मराज्य — धरतीपर स्वर्गका राज्य, जीवनके हर क्षेत्रमें सत्य और अहिंसाका राज्य स्थापित हुआ देखना चाहता हूँ। वही इस देशकी भूखी जनताके लिए स्वतन्त्रता होगी।

मैं ऐसा मानना चाहता हूँ कि जो लोग मेरी प्रार्थना-सभामें आते थे, वे केवल तमाशेकी खातिर नहीं आते थे। वे ईश्वरका नाम लेने आते थे ताकि वे ईश्वरका काम कर सकें। मेरी कल्पनाके स्वराज्यके लिए काम करना ईश्वरका काम करने के समान है।

गुलाम रहना मानव-गरिमाके लिए निम्न बात है। एक गुलाम जो यह जानता है कि मैं गुलाम हूँ और फिर भी अपनी जंजीरोंको तोड़ने की कोशिश नहीं करता, पशुसे भी गया-गुजरा है। जो आदमी सच्चे दिलसे प्रार्थना करता है वह कभी गुलाम रहना स्वीकार नहीं कर सकता।

हर कोई कहता है कि अन्ततः अब भारतकी स्वतन्त्रताको अधिक निकट लाने का अवसर आ गया है। मैं स्वभावसे विश्वासी आदमी हूँ और मैं हर बयानको उसके प्रकट रूपमें मान लेता हूँ। बहरहाल आपको मनुष्यकी बातोंकी अपेक्षा ईश्वरपर अधिक आस्था रखनी चाहिए। आपको यह भी मालूम होना चाहिए कि हम सब अपने मनोवेगोंके गुलाम हैं। अगर हम उनपर विजय पा सकें, तब हम विदेशियोंकी या अपने विजेताओंकी गुलामीसे छुटकारा पा सकते हैं।

[अंग्रेजीसे]
बॉम्बे क्रॉनिकल, २०-६-१९४५

५८९. भेंट : पी० रामचन्द्र रावको

पंचगनी
[१९ जून, १९४५ के पूर्व][1]

प्र० : क्या गांधीवादी कार्यक्रमके अलावा कोई "गांधीवादी योजना" भी है, जैसा कि प्रो० अग्रवाल[2] कहते हैं? योजनाके लिए समय-सूची आवश्यक होती है जिसके अन्तर्गत निश्चित उद्देश्य पूरे करने होते हैं। आपने स्वयं तो ऐसी कोई योजना नहीं बनाई है?

उ० : मेरे लिए न कोई गाधीवादी योजना है और न कोई गांधीवादी कार्यक्रम ही है। लेकिन एक मित्रके द्वारा 'गांधीवादी' शब्दके प्रयोगपर आपत्ति करना

१. गांधीजी १९ जूनको पंचगनीसे रवाना हो गये थे। देखिए पिछला शीर्षक।
२. श्रीमन्नारायण; उनकी किताब "*गांधियन प्लान ऑफ इकनॉमिक डिवेलपमेंट फॉर फ्री इंडिया*" १९४४ में छपी थी।

मेरे लिए वालकी ख़ाल निकालने के समान होगा। आपने योजना शब्दपर जो आपत्ति की है, वह प्राविधिक दृष्टिसे ठीक है। लेकिन मैं कहना चाहूँगा कि इस आपत्तिमे कोई सार नही है।

प्र० : गांधीवादी कार्यक्रमका आधार विकेन्द्रीकरण है। लेकिन नियोजनका मूल सिद्धान्त है केन्द्रीकरण, क्या नियोजन और गांधीवाद साथ-साथ चल सकते है?

उ० : मै इस विचारसे सहमत नही हूँ कि केन्द्रीकरण नियोजनका मूल सिद्धान्त है। केन्द्रीकरणकी तरह विकेन्द्रीकरणके आधारपर नियोजन क्यो नही हो सकता?

प्र० : प्रो० अग्रवालका कहना है कि आर्थिक नियोजनके लिए बहुत ही स्वल्प सरकारी नियन्त्रणकी जरूरत होती है। लेकिन उन्होंने जो योजना बनाई है उसमें तो ऐसी सरकारकी कल्पना नहीं की गई जो कम-से-कम शासन करेगी। उनकी सारी योजनामें सर्वत्र सरकारी कार्यवाहीपर जोर दिया गया है। वे उसमें अनेक जगह यह कहते है कि "सरकारकी जिम्मेवारी बहुत बड़ी है।" सचार-व्यवस्था, सार्वजनिक स्वास्थ्य, शिक्षा, व्यापार-वाणिज्य, वैंक और मुद्रा आदिपर सरकारका नियन्त्रण अनिवार्य है। और योजना निश्चय ही मुख्य और आधारभूत बृहत् उद्योगोके राष्ट्रीयकरणके पक्षमें है। इन दो परस्पर-विरोधी बातोमें कैसे मेल हो सकता है?

उ० : भारतके गाँवोमे आर्थिक दृष्टिसे लाभप्रद उद्योगो अथवा दस्तकारियोके यथासम्भव अधिकाधिक विकेन्द्रीकरण और समूचे भारतके लिए आवश्यक और महत्त्वपूर्ण वृहत् उद्योगोके केन्द्रीकरण एव राष्ट्रीयकरणमे मुझे कोई विरोध नही प्रतीत होता। प्रो० अग्रवालने वर्तमान कालके उदाहरण लिये है। जव हम स्वतन्त्र हो जायेगे और वर्तमान नगर-उद्योगोके वजाय ग्रामोद्योगोका अधिक महत्त्व होगा, तवतक जो लोग जीवित रहेगे—जैसा कि मै आशा करता हूँ कि आप और मै जीवित रहेगे—वे एक भिन्न और कही अधिक स्वस्थ वातावरण पायेंगे और उस वातको स्पष्ट देखेगे जो आज प्रो० अग्रवालको और हमें धुँधली दिखाई दे रही है। आज तो हर चीज विदेशी सरकारके नियन्त्रणमे है। कल शासन जनताके हाथमे होगा (और यह अपने आपमे एक महत्त्वपूर्ण परिवर्तन होगा) और अगर प्रो० अग्रवालकी योजना (इस शब्दके प्रयोगके लिए मुझे क्षमा किया जाये) फलवती हो गई तो यह स्पष्ट है कि सरकारका नियन्त्रण वहुत अधिक प्रतीत होते हुए भी वास्तवमें वहुत कम होगा।

जरा मानसिक दृष्टिसे कल्पना करो कि भारतके ७,००,००० गाँव केन्द्रपर हावी हो गये है, जिसमे थोडे-से नगर है जिनका अस्तित्व गाँवोके हितमे जरूरी है।

प्र० : गांधीवादी कार्यक्रमका मतलब गाँवोमें रहनेवाले विभिन्न वर्गोंका पुनरुद्धार करना है ताकि मानव-शक्तिका अधिकाधिक उपयोग हो सके। यह एक विकासात्मक प्रक्रिया है। क्या यह प्रक्रिया सरकारके द्वारा निश्चयात्मक योजनाएँ बनाने की पद्धतिके प्रतिकूल नहीं है? हाँ, अगर घरेलू उद्योगोंका विकास बड़े उद्योगोंके राष्ट्रीयकरणका—जोकि युद्धोत्तर भारतकी समस्याओंके कारण अनिवार्य हो जायेगा—पूरक होकर ही रह जाये, तो बात अलग है।

उ० : तुमने मेरे नामसे सम्बन्धित कार्यक्रमकी ठीक व्याख्या की है। तुमने राष्ट्रीयकरण शब्दको उसकी वर्तमान पृष्ठभूमिसे अलग करके एक जटिल प्रश्न पूछा है। मेरा सुझाव है कि तुम अपनी गलतीको दुरुस्त करो और इस शब्दको उसकी नई ग्राम्य पृष्ठ-भूमिमें रखकर उसके अर्थका विवेचन करो। यह आदर्श इतना व्यापक है कि आधुनिकताका अभ्यस्त हमारा मन उसे समझ नहीं सकता। मेरा यह आदर्श तो केवल दिवा-स्वप्न है जो शायद कभी साकार नहीं हो सके। लेकिन ऐसा कहना तो विवाद-ग्रस्त बातको बिना विचार किये ठीक मान लेने के बराबर है। एक ही पीढ़ीके जीवन-कालमें हम देखते हैं कि ऐसा बहुत-कुछ जो असम्भव था आज सम्भव हो गया है।

प्र० : आपने हालमें उन बड़े-बड़े उद्योगपतियोंके खिलाफ एक जोरदार वक्तव्य[1] दिया है जो सरकारके विरुद्ध भाषण तो देते हैं पर थोड़े-से टुकड़ोंकी खातिर सरकार का समर्थन करके अपने ही कथनको झूठा साबित कर देते हैं। इसके जवाबमें कहा गया है कि कांग्रेस इन बड़े-बड़े उद्योगपतियोंसे मित्रताके सम्बन्ध बनाने के विरुद्ध कभी नहीं रही जो अपना मतलब निकालने के लिए उससे अनुचित लाभ उठाते हैं। क्या आप यह प्रबन्ध नहीं कर सकते कि कांग्रेससे इस तरह अनुचित लाभ न उठाया जाये?

उ० : कांग्रेस बड़े उद्योगपतियोंके विरुद्ध कभी नहीं रही और मेरा खयाल है कि वह तबतक उनके विरुद्ध होगी भी नहीं जबतक कि उसे आशा हो कि वह उनके द्वारा अपने मतलबके लिए प्रयुक्त होने के बजाय राष्ट्र-हितमें उनका प्रयोग कर सकेगी। तुमने मेरे जिस कथनकी चर्चा की है उसीका यह मतलब है कि अगर बड़े उद्योगपतियोंको अन्ततोगत्वा आम लोगोंके हितमें काम करना है तो उन्हें अपना व्यवसाय ठीक रास्तेपर चलाना होगा। आज वे विदेशी शासनको फायदा पहुँचा रहे हैं और उन्हें स्वयं केवल बचे-खुचे टुकड़े ही मिल रहे हैं। यह बड़े दुर्भाग्यकी बात है। लेकिन सब न एक तरह सोच सकते हैं और न एक-जैसे बन सकते हैं। अहिंसात्मक पद्धतिमें दोनों पक्ष एक-दूसरेको अपने विचारका बनाने की कोशिश करते हैं, मगर कोई किसीपर अनुचित दबाव नहीं डालता।

[अंग्रेजीसे]

हिन्दू, २३-६-१९४५

१. देखिए "वक्तव्य: समाचारपत्रोंको", पृ० ८२-८३।

५९०. पत्र : ख्वाजाको

बम्बई
२० जून, १९४५

प्रिय ख्वाजा,

कामकी भीड़के बीच तुम्हे सिर्फ ये दो पंक्तियाँ यह बताने के लिए भेज रहा हूँ कि तुम्हारा पत्र मिल गया। तुम देखोगे ही। आशा है, हैदराबादमें तुम्हारे सभी कुटुम्बी सानन्द हैं, और तुम भी।

स्नेह।

बापू

अंग्रेजीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

५९१. पत्र : मुन्नालाल गंगादास शाहको

बम्बई
२० जून, १९४५

चि० मुन्नालाल,

मुझे ऐसा कुछ खयाल है कि तुम्हारा कोई पत्र अनुत्तरित रह गया है। कंचन मजेमे होगी और तुम्हारा मन शान्त होगा। यहाँ मैं जरा जल्दी चला आया, लेकिन वहाँ अभी जल्दी पहुँचने की आशा नही करता। शायद मुझे शिमला जाना पड़े। नही जाना पडा, तो जरूर वहाँ जल्दी पहुँचूँगा। शायद कल पता चलेगा। देखता हूँ, क्या होता है। चि० चिमनलालकी तबीयत ठीक होगी।

यहाँ बारिश अन्धाधुन्ध हो रही है। ठण्डक भी है। सडके पानीमे न डूब जाये, तो गनीमत। वैसे अभी तो पानी इतने जोरका नही गिरा है।

साथमे चि० द० को लिखा पत्र है, उसमें प्रभाकरके पोस्टकार्डका जवाब भी आ जाता है।

आज कि० को नही लिख रहा।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ८४४७) से। सी० डब्ल्यू० ५५८३ से भी; सौजन्य : मुन्नालाल गं० शाह

५९२. पत्र : कृष्णचन्द्रको

बम्बई
२० जून, १९४५

चि० कृ० चं०,

तुम्मारा खत मिला। किशोरलालभाईने ठीक कहा है। अगर तुमारा दिल कबूल करे तो तुमारे वह स्थान लेना। वह लेने से मेरे साथका और आश्रमके साथका संबंध कायम रहता है इतना ही नहीं लेकिन बढ़ता है।

मिलका समजा। दूसरी आगे देखोगे।

बालकृष्णके बारेमें कुछ चिन्ता रहती है।

बापुके आ[शीर्वाद]

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० ४५१६) से

५९३. पत्र : चाँदरानीको

बम्बई
२० जून, १९४५

चि० चांद,

अब तक तू नहीं गई है सो अच्छा नहीं किया। जाकर कुछ पूछना था तो सु[शीला] ब[हिन] से पूछना था। वह कहती है तुमने जिसमें दस्तखत दिये हैं उसीमें वह सब चीजें थीं। लेकिन जाने के लिए कोई मजबूर तो कर ही नहीं सकते। अगर साड़ी सफेद घर रखकर आई है तो क्या किया जाये। सच्चा तो यह है कि अगर तू नागपुर जाना ही चाहती है तो जा और देखले क्या हो सकता है। आखिरमें तेरा रास्ता तुझे ही निकालना होगा ना? पहुंचने की तारीख तो निकल गई अब जो निश्चय करना है कर ले और काम शुरू कर ले। मेरा आने का कुछ अनिश्चित हो गया।

बापुके आ[शीर्वाद]

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

५९४. पत्र : सर्वेपल्ली राधाकृष्णन्‌को

बम्बई
२१ जून, १९४५

भाई राधाकृष्णन्,

आपका खत मिला। फुरसत न होते हुए भी दो लाइन लिखता हू। आपका खत अच्छा लगता है। श्रद्धा रखो कि मुझसे हो सकता है वह करूंगा। मेरा इरादा भाई जवाहरलालको यह खत बताने का है। आशा है आप अच्छे होगें।

आपका,
मो० क० गांधी

सर राधाकृष्णन्,
३०, एडवर्ड एलियट्स रोड,
मैलापूर, मद्रास

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

५९५. पत्र : धर्मानन्द कोसाम्बीको

बम्बई
२१ जून, १९४५

भाई कोसम्बी,

आपका खत मिला। मुझे प्रिय लगा। जो चीज आपके दिलमे है वही मेरेमें भी है। अगर ईश्वर जैसी कोई भी शक्ति इस जगतमे है तो हमे चिन्ता करने का कोई कारण नही है। गुजरात विद्यापीठमे आ गये है। वही रहो और सेवा करो।

बापुके आशीर्वाद

श्री धर्मानन्द कोसाम्बी
गुजरात विद्यापीठ
अहमदाबाद

पत्रकी नकलसे प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य प्यारेलाल

५९६. पत्र : कुलकर्णी और श्रीमती सुधा कुलकर्णीको

२१ जून, १९४५

चि० लम्बू और कुलकर्णी,

तुम्हारा दूसरा पत्र मिला। खेर साहबको पढ़ने को दिया है।

बापुके आशीर्वाद

[मार्फत] आदिवासी सेवा मण्डल
कन्या छात्रालय
मोरवाडे, जि० थाना

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

५९७. पत्र : विलास काटजूको

बम्बई
२१ जून, १९४५

चि० विलास,

तुम्हारा खत मिला। तुम्हारे नागरी अक्षरोंके लिए मैं तुम्हें धन्यवाद नहीं दे सकता। अंग्रेजी तो ऐसे गन्दे हरफोंमें नहीं लिखती होगी? दोष तो हमारी मातृभाषा का ही होना चाहिए ना? तुम्हारा खत वापस करता हूं। तुमको शिक्षा देने के लिए और बताने के लिए कि पत्र कितना अस्वच्छ है और उसमें कैसा गोलमाल कर दिया है। दो जगहपर मैंने निशानी की है। इसी खतको अच्छा लिखकर मुझे भेजो। तेरा खत देखकर मैं कैसे मानूं कि तू डा० कैलासनाथकी पुत्री है?

बापुके आशीर्वाद

मार्फत: डा० कैलासनाथ काटजू
एडमिन्स्टन रोड
इलाहाबाद

पत्रकी नकलसे: प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य: प्यारेलाल

५९८. पत्र : एस० ए० ब्रेल्वीको

बम्बई
२१ जून, १९४५

भाई ब्रैल्वी,[1]

आपका खत अच्छा है और खराब भी। मुझे फिर भी अंग्रेजीमें क्यों?

आपकी तबियत अच्छी होगी। मेरे फिकरेकी तरफ आपने मेरा ध्यान खींचा है वह मैंने गफलतसे नहीं लिखा। जानबूझकर लिखा है। किसीके लिहाजसे मैं उसमें तबदीली करूं वह दूसरी बात है। मगर वह मेरे ख्यालात जाहिर नहीं करेगा। एक तो यह कि माइनॉरिटिजके[2] माने मुसलमान से लेकर जितनी माइनॉरिटिज[3] कबूल की जाती हैं वह सब हैं। मेरा निजी धंदा तो बचपनसे वही रहा है और मुसलमानोंका ही आपको ख्याल है तो भी मैं कहना चाहता हूं कि बाजीदफे जब मुसलमान चाहिए था तो वह इसलिए नहीं लिया गया कि वह हिंदुस्तानियोंमें बेहतरीन कांग्रेसी था बल्कि इसलिए कि वह मुसलमानोंमें बेहतरीन कांग्रेसी था और मुसलमानोंका नुमाइंदा था। अगर आप यह बात नहीं जानते हैं तो मुझको रंज होगा क्योंकि आप तो खासे तजुर्बेकार हैं और अखबारनवीस हैं। अगर ऐसे माइनॉरिटिजके[4] नाम मांगोगे तो मैं आपके लिये भेजूंगा।

आपका,
मो० क० गांधी

उर्दूकी फोटो-नकल (जी० एन० २२९८) से

५९९. वक्तव्य : समाचारपत्रोंको

बम्बई
२१ जून, १९४५

जब मैं पंचगनीसे रवाना होनेवाला था, मुझे एक दर्द-भरा पत्र[5] मिला जिससे मैं निम्न उद्धरण दे रहा हूँ :

यह पत्र लिखने का मेरा तात्कालिक उद्देश्य आपको अपने मामा श्री शरतचन्द्र बोसकी अत्यन्त गम्भीर हालतके बारेमें सूचित करना है। वे बहुत बीमार हैं और

१. बॉम्बे क्रॉनिकल के सम्पादक

२, ३ और ४. ये शब्द अंग्रेजी लिपिमें हैं।

५. परिमल सोमका; देखिए पृ० ३६४-६५।

उनकी हालतसे हम सबको भारी चिन्ता हो रही है। अगर उन्हें रिहा नहीं किया जाता तो उन्हें कम-से-कम किसी स्वास्थ्यप्रद स्थानमें तुरन्त ले जाया जाना चाहिए। अगर ऐसा न किया गया तो वे ज्यादा दिन नहीं जी सकेंगे।

चूँकि शरत् बाबूपर न कभी मुकदमा चलाया गया है और न वे अपराधी ही पाये गये हैं, इसलिए यह स्पष्ट है कि उन्हें इतने वर्षोंसे केवल सन्देहमें ही नजरबन्द रखा गया है और नजरबन्द भी बंगालसे दूर। साधारण न्यायकी खातिर यह जरूरी है कि शरत् बाबूको बंगालमें किसी स्वास्थ्यप्रद स्थानपर ले जाया जाये और उनके सम्बन्धियोंको उनसे मिलने की सुविधाएँ दी जायें।

[अंग्रेजीसे]
हिन्दू, २२-६-१९४५

६००. तार : लॉर्ड वेवलको

अविलम्बनीय

बम्बई
२२ जून, १९४५

महामान्य वाइसराय
वाइसराय-कैम्प, शिमला

आपके १९ तारीखके तारके[1] जवाबमें निवेदन है कि आपने समाचारपत्रोंमें देखा होगा कि कार्य समितिकी बैठक अभी चल रही है। मैं आज फ्रंटियर मेलसे शिमलेके लिए रवाना हो रहा हूँ। आशा है, गाड़ी ठीक समयपर पहुँच गई तो मैं नियत समयपर आपकी सेवामें उपस्थित हो जाऊँगा। मेरे लिए जगह आरक्षित करने के लिए धन्यवाद। मेरा विचार राजकुमारी अमृतकौरके यहाँ ठहरने का है।

गांधी

[अंग्रेजीसे]
गांधीजीज कॉरेस्पॉण्डेन्स विद द गवर्नमेंट, १९४४-४७, पृ० २६

१. देखिए पृ० ३६४, पा० टि० १

६०१. पत्र : लेडी एमिली किनेर्डको

रेलगाड़ीमे
२२ जून, १९४५

प्यारी मदर,

इतने समय बाद आपने लिखा। बहुत खुशी हुई। रविवारको अमृतकौरसे मिलने की आशा रखता हूँ।

स्नेह।

मो० क० गांधी

डेम एमिली किनेर्ड

अंग्रेजीकी नकलसे . प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य . प्यारेलाल

६०२. पत्र : माणेकलाल गांधीको

रेलगाडीमे
२२ जून, १९४५

चि० माणेकलाल,

तुम तो मेरे साथ होड लगा रहे हो। जो भी अनासक्त रहकर सेवा-धर्मका पालन करता है, उसे १२५ वर्षतक जीवित रहने की आशा करने का अधिकार है। वह अधिकार तुम्हारा हो।

बापूके आशीर्वाद

श्री माणेकलाल
थाना देवली
काठियावाड

गुजरातीकी नकल (सी० डब्ल्यू० ८९२) से। सौजन्य : माणेकलाल गांधी

६०३. पत्र : मथुरादास त्रिकमजीको

२२ जून, १९४५

तुझसे मिले बिना जा रहा हूँ, यह मुझे खटक रहा है, लेकिन लाचार हूँ।[1] इन बातोंमें पड़ना इस समय तेरा कर्तव्य नहीं है, तेरा कर्तव्य है रामनाममें डूबकर आगे सेवा करने के लिए स्वस्थ हो जाना।

[गुजरातीसे]

बापुनी प्रसादी, पृ० २०६

६०४. पत्र : हिल्डा पेटिटको

रेलगाड़ीमें
२२ जून, १९८५

प्रिय बहिन,

तुम्हारा पत्र मिला। माँजी चल बसीं। यह मुझे तो अच्छा ही लगा। उनका दुःख मैंने देखा था। स्वार्थवश हम दुःख मानें यह एक अलग बात है। तुम सब विवेकसे काम लोगे।

मो० क० गांधीकी दुआ

श्री हिल्डा पेटिट

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

६०५. पत्र : सतीशचन्द्र दासगुप्तको

रेलगाड़ीमें
२२ जून, १९४५

चि० सतीशचंद्र,

तुमारा १६-६ का पो० का० आज पढा। मुझे दुःख होगा अगर अबतक हृदय कमजोर है। लेकिन है तो कामका मोह छोडो। शहदवाला खत नहीं बताया। अब

१. गांधीजी वाइसरायसे मिलने के लिए शिमला जा रहे थे।

तो, तुमारे उन्हे लिखना है।[1] मै तो सीमला जा रहा हू। ईश्वर जानता है क्या करवायगा।

सबको
बापुके आशीर्वाद

सतीशचन्द्र दासगुप्त
खादी प्रतिष्ठान
सोदपुर, वाया कलकत्ता

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० १६४४) से

६०६. वक्तव्य : समाचारपत्रोंको

नई दिल्ली
२३ जून, १९४५

मुझे शिमलाकी यात्रामे जरा भी आराम नही मिला। यात्रा तो अभी जारी ही है। भरतपुरसे चलने के बाद मुझे अभी-अभी एक नोट दिया गया है। यथासम्भव थकानसे बचनेके लिए मै मौन रख रहा हूँ। जो शिष्ट-मण्डल मुझसे मिलना चाहता था मै उससे नही मिल सका, लेकिन एक नोट मुझे दिया गया है जिसमें भरतपुरके लोगोंके पक्षका प्रतिनिधित्व करनेवाले व्यक्तियोंकी मुसीबतोका वर्णन किया गया है। ब्योरेमें जाना मेरे लिए ठीक नही है, क्योंकि मुझे दूसरे पक्षकी जानकारी प्राप्त करने का अवसर नही मिला। क्या मै आशा करूँ कि भरतपुर राजके अधिकारी इस आवश्यकताको पूरी कर देंगे और अपना पक्ष भी प्रकाशित कर देंगे?

[अंग्रेजीसे]
हिन्दू, २५-६-१९४५

६०७. पत्र : जॉन हेन्स होम्सको

स्थायी पता . सेवाग्राम, वरास्ता वर्धा
रेलगाडीमे
२३ जून, १९४५

प्रिय मित्र,

यह पत्र अपने मौनके दौरान लिख रहा हूँ। अभी ट्रेनमे बैठा हुआ हूँ — शिमला जा रहा हूँ। आपके २३ अप्रैलके स्नेहपूर्ण पत्रके उत्तरमें मै केवल इतना ही

१. देखिए "पत्र : सतीशचन्द्र दासगुप्तको", पृ० ३८८ भी।

कह सकता हूँ कि भारतकी विशाल, मूक और भूखी जनताकी आजादीकी लड़ाई लड़ने में सत्य तथा अहिंसाको अभिव्यक्ति देने के प्रयत्नमें मैं प्राणपणसे सन्नद्ध हूँ।

आप आसानीसे पढ़ सकें, इसलिए इसे टाइप कर दिया जायेगा।

हृदयसे आपका,
मो० क० गांधी

रेव० जॉन हेन्स होम्स[1]
१०, पार्क एवन्यू
न्यूयार्क १६, एन० वाई०

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० १०९६६) से; सौजन्य : एस० पी० के० गुप्त। प्यारेलाल पेपर्समें उपलब्ध नकलसे भी; सौजन्य : प्यारेलाल

६०८. पुर्जा : प्रेस्टन ग्रोवरको

रेलगाड़ीमें
२३ जून, १९४५

प्रिय ग्रोवर,

मेरी सुविधाके विचारसे पूर्ण पत्रके[2] लिए बहुत-बहुत धन्यवाद। लेकिन मुझे प्राकृतिक गर्मीमें तपने दीजिए। यह तो नियतिकी भाँति निश्चित है कि इस गर्मीके बाद सुखप्रद ठंडक आयेगी जिसका मुझे आनन्द मिलेगा। मुझे तनिक असली भारतका अनुभव करने दीजिए।

आपका,
मो० क० गांधी

अंग्रेजीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स; सौजन्य : प्यारेलाल। हिन्दू, १-७-१९४५ से भी

१. अमेरिकी पादरी; **माई गांधी** के लेखक; अध्यक्ष, अमेरिकन सिविल लिबर्टीज यूनियन; रवीन्द्रनाथ ठाकुर स्मारकमें अतिथि प्राध्यापक, अक्तूबर १९४७ से जनवरी १९४८ तक।

२. **महात्मा गांधी : द लास्ट फेज,** जिल्द १, भाग १, पृ० १२५ में प्यारेलाल लिखते हैं कि प्रेस्टन ग्रोवरने, जो यूनाइटेड प्रेस ऑफ अमेरिकाके संवाददाता थे, गांधीजी के साथ यात्रा करते समय उन्हें निम्नलिखित नोट लिखा था: "दोपहर बाद कांग्रेसियोंके ठंडे डिब्बेमें जाना क्या आपके लिए अधिक बुद्धिमत्तापूर्ण नहीं होगा ताकि आप कुछ देर आराममें लेट सकेंगे? आप २४ घंटोंसे बिल्कुल नहीं सो पाये हैं। यदि आनेवाले स्टेशनोंपर बार-बार आपकी नींदमें बाधा पड़ने से आप पूरी तरह थककर शिमला पहुँचेंगे, तो फायदा नहीं होगा।"

६०९. पत्र : श्यामलालको

रेलगाड़ीमें
२३ जून, १९४५

भाई श्यामलाल,

तुम्हारा ११-६-४५ का खत मेरे सामने है। जिस कानूनकी नकल तुमने मुझे भेजी है उसका जो अर्थ तुमने किया है वह मुझे ठीक लगता है। आफिस वर्धा या उसके इर्द-गिर्द जाये।

मो० क० गाधीके आशीर्वाद

मूल पत्रसे कस्तूरबा गाधी राष्ट्रीय स्मारक ट्रस्ट पेपर्स। सौजन्य : नेहरू स्मारक सग्रहालय तथा पुस्तकालय

६१० पत्र : श्यामलालको

रेलगाडीमे
२३ जून, १९४५

भाई श्यामलाल,

तुम्मारा १२-६-४५ का खत मेरे सामने है। ठक्कर बापाके लिए भाई कल्याण सुन्दरम्को मासिक ७५ रु० पर रोकने की दरख्वास्त मुझे मजूर है। अगर दूसरी तरहसे इस नियुक्तिके लिए और कोई क्रिया बाकी नही रहती है तो इस सम्मतिका अमल किया जाये।

मो० क० गांधीके आशीर्वाद

मूल पत्रसे . कस्तूरबा गाधी राष्ट्रीय स्मारक ट्रस्ट पेपर्स। सौजन्य · नेहरू स्मारक मग्रहालय तथा पुस्तकालय

६११. पत्र : लॉर्ड वेवलको

मैनर विला, शिमला
२५ जून, १९४५

प्रिय मित्र,

मैं इतना थक गया था कि आपके नोटकी[1] तुरन्त पावती न दे सका। और कोई जल्दी भी नहीं थी। सम्मेलनके दिनोंमें मैं शिमलेमें ही रहूँगा।

हृदयसे आपका,
मो० क० गांधी

महामान्य वाइसराय

[अंग्रेजीसे]

गांधीजीज कॉरेस्पॉण्डेन्स विद द गवर्नमेंट, १९४४-४७, पृ० २९

६१२. पुर्जा : मॉरिस फ्रीडमैनको[2]

मैनर विला, शिमला वेस्ट
२५ जून, १९४५

क्या तुम्हारे वायदेका कोई मूल्य नहीं? तुमने मेरे साथ पक्का वायदा किया था। याद है?

स्नेह।

बापू

[पुनश्च :]

नीचे जो सलाह दी गई है, वैसा करना।

बापू

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० ४३) से

१. २४ जूनका नोट, जिसमें लिखा था: "आज दोपहर बाद आपके साथ बातचीतके समय आपने मुझे अपनी योजनाओंके बारेमें जो-कुछ बताया, उसपर मैंने सोच-विचार किया है। सम्मेलन के दौरान यदि आप शिमलामें ही रहेंगे तो मुझपर एहसान होगा।" मैंत्वावधि सम्बन्धमें लॉर्ड वेवलके नोटके लिए देखिए परिशिष्ट ८।

२. गांधीजीने यह पुर्जा उसी पत्रपर जल्दीमें लिख दिया था जो मॉरिस फ्रीडमैनको डॉ० सुशीला नैयरने लिखा था। देखिए "तार : सौन्दरम रामचन्द्रनको", पृ० ४०८।

६१३. पत्र : जयसुखलाल गांधीको

मैनर विला, शिमला वेस्ट
२५ जून, १९४५

चि० जयसुखलाल,

ट्रस्टका अपना तैयार किया सलेख भेज रहा हूँ। वहाँ गुजराती चलती है, इसलिए गुजरातीमे लिखा है। गुजराती सलेख रजिस्टर न होता हो, तो इसका सिंधी या हिन्दुस्तानी तरजुमा करा लेना। अग्रेजीकी कोई जरूरत नही है। शर्तोंमे रद्दोबदल कर सकते हो। मैंने तो तुम्हारे विचार, जैसा मैंने उन्हे समझा है, रखे है।[1]

मनुकी बीमारी जबतक जाती नही, तबतक मुझे चिन्ता बनी रहेगी। अब तो वह दिनशाजी के आरोग्य भवनमें चली गई होगी। हम आशा करे कि वहाँ वह अच्छी हो जायेगी।

बापूके आशीर्वाद

[पुनश्च :]

मै नही समझता कि मै यहाँ बहुत दिन रहूँगा। कितने समय रहना पड़ेगा, यह शायद आज तय हो जायेगा। तुम्हारी तबीयतके बारेमें जो मैंने कहा है वह याद करना।[2] मूँगफली भून लेने पर भी उसमे इतना फर्क नही पड़ जाता। कामकी बात समझा।

गुजरातीकी माइक्रोफिल्म (एम० एम० यू०/२४) से

१. देखिए अगला शीर्षक।
२. देखिए पृ० २२१-२२।

६१४. पत्र : मंगलदास पकवासाको

शिमला
२५ जून, १९४५

भाई मंगलदास पकवासा,

इस पत्रके साथ दिनशा ट्रस्ट-डीड भेज रहा हूँ। इसकी जाँच करके इसका अंग्रेजी अनुवाद कर देना। अभी हिन्दुस्तानी अनुवादका बोझ तुमपर नहीं डालता। अगर यह ठीक लगे, तो अन्य संलेख मातृभाषा या राष्ट्रभाषामें तैयार करना।[1] मैं तुम्हें बहुत कष्ट दे रहा हूँ। लेकिन क्या करूँ, लाचार हूँ।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० ४६९२) से। सौजन्य : मंगलदास पकवासा

६१५. पत्र : कानम गांधीको

२५ जून, १९४५

चि० कानम,

यह तेरे लिए है। अपने तीन गुरुओंको[2] मत भूलना। अपनी उर्दू सुधार, गुजराती लिपि सही लिखना सीख और जो भी लिखे, उसमें प्रत्येक अक्षर मोतीके दाने जैसा हो।

सुमी यहाँ रोज बड़ी हो रही है।

तुम सबको
बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० ९५१८) से। सौजन्य : कानम गांधी

१. देखिए "पत्र : मंगलदास पकवासाको", पृ० ३२२ और पिछला शीर्षक भी।

२. अनुमानतः गांधीजी की तीन बन्दरोंकी मूर्तियाँ

६१६. पत्र : मुन्नालाल गंगादास शाहको

मैनर विला, शिमला
२५ जून, १९४५

चि० मुन्नालाल,

हम लोग कल यहाँ पहुँचे। बहुत परेशानी हुई। प्रत्येक स्टेशनपर झुड-के-झुड लोग — प्रेमसे अथवा उत्साहसे मतवाले, किसीकी सुनते ही नही थे। मणिलालकी तो आवाज बैठ गई है। कल मैं वाइसरायसे मिला। अब आज या कल मे पता चलेगा कि मैं यहाँसे कब छुट्टी पाऊँगा। इस सम्बन्धमें तुम्हे या तो मैं लिखूंगा या फिर और कोई लिखेगा। वहाँ सब ठीक चल रहा होगा। यहाँसे छूटकर मेरा विचार वही आने का है। लेकिन बीचमे कहाँ रुक जाना पडेगा, कुछ कहा नही जा सकता। कचन मजेमें होगी।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ८४४६) से। सी० डब्ल्यू० ५५८४ से भी। सौजन्य . मुन्नालाल ग० शाह

६१७. पत्र : जवाहरलाल नेहरूको

मैनर विला, शिमला
२५ जून, १९४५

चि० जवाहरलाल,

कस्तूरबा स्मारक ट्रस्टमे कई नाम है। ट्रस्ट बनाया गया तब तुम्हारा और सरदारका नाम उसमें दाखल करने की इच्छा मैंने प्रकट की थी। सब ट्रस्टी राजी थे कि जब तुम बाहिर आवोगे, तब मैं दोनोंके नाम दाखल कर दू। तुमको पूछना भूल गया था। आज प्रात काल ख्याल आया। इसमें आना पसद करोगे ? बिल्कुल देहाती औरतो और उनके बच्चोका काम करना है, और वह मेरे ढगसे। इसमें दिलचस्पी लेनेको, तो मैं तुम्हारे देखने के लिये कागजात भेजू। यही बात मैंने सरदारको सुनाई है। वह विचार कर रहे है। मैने कहा है कि इसमे मानकी कोई बात नही है। कामकी ही है।

ऐसे ही हिन्दोस्तानी प्रचारका है। अगर आ सकते हो तो उसमें मुझे तुम्हारे नाम की बहुत दरकार है। इस बारेमें भी कहो तो देखने लायक कागजात भेजूं। तुम्हारे सिरपर बहुत काम पड़ा है इसलिये और बोझ डालने से डरता हूँ। लेकिन क्या करू?

तुमारी गैरहाजरी यहां सबको चुभती है।

बापुके आशीर्वाद

मूल पत्रसे: गांधी-नेहरू पत्र-व्यवहार। सौजन्य: नेहरू स्मारक संग्रहालय तथा पुस्तकालय

६१८. मनु गांधीके लिए मुख्तारनामेका मसौदा

[२५ जून, १९४५ के पश्चात्][1]

मेरे नामसे जो दस हजार रूपिये आपका यहां पांच आना सुदसे रखे हैं उसका ब्योरा। अपने जीतें मेरे पितामह गांधीजी करेंगे बादमें मेरे पिताजी जयसुखलालजी गांधी करेंगे। सुद भी गांधीजी और उनके पश्चात् मेरे पिताजीको दी जायेगा। मेरे सब अखत्यार इनको दिये जाते हैं।

माइक्रोफिल्म (एम० एम० यू०/२४) से

६१९. तार: परिमल सोमको

मैनर विला, शिमला वेस्ट
२६ जून, १९४५

परिमल सोम
१२–३ हिन्दुस्तान रोड
बालीगंज (कलकत्ता)

तुम्हारा तार मिला। पत्र[2] प्रकाशित कर सकते हो।

गांधी

अंग्रेजीकी नकलसे: प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य: प्यारेलाल

१. साधन-सूत्रमें यह पत्र २५ जून, १९४५ के पत्रोंके बाद रखा गया है। देखिए "पत्र: जयसुखलाल गांधीको", पृ० २९२।

२. देखिए पृ० ३९४-९५।

६२०. पत्र : अमृतलाल वि० ठक्करको

शिमला
२६ जून, १९४५

बापा,

भाई नरहरिको लिखा तुम्हारा पत्र मेरे सामने है। क० बा निधिकी कार्यकारी समितिकी बैठकके लिए अगस्तकी जो तारीख तुम्हारे अनुकूल हो उसके अनुसार निमन्त्रण भेजो। मेरे कारण यदि तारीखमें कोई फेरबदल करना पड़ा तो करेंगे।

बापू

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

६२१. पत्र : सुधीर घोषको

२६ जून, १९४५

भाई सुधीर,

तुमारे ११ जूनके खतका उत्तर आज ही दे सकता हूं। मैं क्या कर रहा हूं ओ तो जानते हो।

बंगाल जाने का मैं तो बहुत उत्सुक हूं। लेकिन सब जगह जाना होना।[1]

शांतिको[2] और तुमको

बापुके आशीर्वाद

मूल पत्रसे : सुधीर घोष पेपर्स। सौजन्य : नेहरू स्मारक संग्रहालय तथा पुस्तकालय

१. **गांधीजीज़ एमिसरी**, पृ० ५० में सुधीर घोषने लिखा है: "मैं इस संक्षिप्त पत्रको लेकर गवर्नर केसीसे मिलने पहुँचा। वे बोले कि मैं. . . उन्हें [गांधीजी को] यह आश्वासन दे सकता हूँ कि गवर्नर गांधीजी को चाहे जहाँ आने-जाने की और चाहे जिससे मिलने-जुलने की स्वतंत्रता दिलवाने के लिए अपनी शक्तिभर मदद करेंगे।"

२. सुधीर घोषकी पत्नी

६२२. पत्र : हेमप्रभा दासगुप्तको

शिमला
२६ जून, १९४५

चि० हेमप्रभा,

तुम्हारा १२ तारीखका पत्र मिला है। तुम जो कर रही हो, विचारपूर्वक ही कर रही हो। परिपत्र आने पर पढ़ लूंगा। सतीश बाबू अच्छे होंगे—होने चाहिए।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

६२३. पत्र : कैलाशनाथ काटजूको

शिमला
२६ जून, १९४५

भाई कैलाशनाथ काटजू,

तुम्हारा पहला हिन्दुस्तानीमें लिखा हुआ खत मिला। मुझे बहुत प्रिय लगा। अक्षर अच्छे हैं और भाषा तो है ही। विलासके खतसे मुझको निराशा हुई।[1] उसे दुरुस्त कर सकते हैं तो करो।

तुम्हारी पुस्तिका[2] मैंने कल खतम की। शुरूसे आखिर तक कुछ भी नहीं छोड़ा। मुझे अच्छी लगी है लेकिन मेरी दृष्टिसे उसमें कमी है। इस बारेमें मेरी सलाह है कि सतीश बाबूने जो गायके बारेमें बड़ा पुस्तक[3] लिखा है उसको आप पढ़ें। उसका पहला हिस्सा प्रकट हो गया है, दूसरा होने वाला है। उनका पूरा पता है "...[4] कलकत्ता"। वह पहली पंक्तिके कैमिस्ट हैं। लेकिन सब चीज छोड़ वर्षों पहले उन्होंने खादी काम ले लिया है। बड़े उद्योगी हैं। यह पुस्तक उन्होंने जेलमें लिखी। जिसको देहातोंमें काम करना है उसे यह पुस्तक पढ़ लेना चाहिए। उस पुस्तकमें सतीश बाबूके ही विचार हैं, ऐसा नहीं है। जो है वह सब अंग्रेज

१. देखिए पृ० ३७९।
२. देहाती प्रगति; देखिए पृ० १३८ भी।
३. काउ इन इंडिया, गांधीजी की प्रस्तावनाके लिए देखिए पृ० १५५-५६।
४. साधन-सूत्रमें यहाँ छोड़ दिया गया है।

लोगों और अमेरिकाके लोगोके रिपोर्टोंमे से दिया है। आपकी पुस्तिकामें मवेशीके बारेमे, उनके रोगोके बारेमें और जमीनके बारेमे जो लिखा है, उसमें सुधार और वृद्धिके लिए काफी जगह है। पशुओके रोगोके बारेमें अगर देहातियोंको सरकारी डाक्टरोंपर निर्भर रहना है तो काम चलनेवाला नही है। इसका मतलब यह नही कि उनकी मदद ही नही चाहिए, लेकिन उनका ज्ञान देहाती ढाचेमे उतरना चाहिए। मेरे पास इस बारेमें काफी सामान है, उसे यहां नही देना चाहता हू। धीरेन मजुमदारको शायद आप जानते हैं। यू० पी० मे ही विचित्र नारायणके साथ वे काम कर रहे हैं। आचार्य कृपलानीके आदमी हैं, मेहनती हैं। अपना काम अच्छी तरहसे जानते हैं। अगर आप उन्हें नही मिले हैं तो मिले। हो सकता है तो सतीश बाबूका खादी प्रतिष्ठान भी देख लो, और बादमें दूसरी आवृत्ति निकालो। जैसी है, ऐसी ही पुस्तिका प्रकट करने से बहुत लाभ नही मिलेगा। लोगोमे ख्वाहिश पैदा हुई है, इसलिए आपकी पुस्तिका खरीदेंगे शायद पढे भी। लेकिन बहुत उपयोग नही कर सकते हैं। क्योकि पुस्तिकासे क्या करना चाहिए यह तो समझेंगे, मगर कैसे करना चाहिए उसका ज्ञान नही मिलेगा। और दूसरी आवृत्तिमे मै उस चीजकी आशा करूगा। आपकी पुस्तिकासे मै देख गया हू कि आपको इस काममे बहुत दिलचस्पी है, इसलिए मैंने यह सूचनाए की हैं।

एक बात और। जैसे मै सेवाग्राममे कर रहा हू, ऐसे ही आप कम-से-कम एक देहात लेकर बैठ जायें। और जो चीज आपने पुस्तिकामे लिखी है, उसपर अमल करके देख लें। इस तरहके आपको अनुभव मिलेगा।

मेरी सूचनाका एक नतीजा और भी आता है। वकालतको बहुत कम करना होगा। आप जानते हैं ब्रजकिशोर बाबू, राजेन्द्र बाबू, वल्लभभाई वगैरः ने जब ऐसा काम ले लिया, तब वकालत बिलकुल छोडने के लिए मजबूर हो गये। मेरी सूचना वहा तक जाने की नही है। आपने वकालतका खूब ज्ञान पाया है, अनुभव लिया है तो कुछ परिवर्तनके साथ मोतीलालजीके जैसा करे। देहातमे बैठ-बैठे अच्छे दो-तीन कैस ले लेना। गरीबोकी वकालत बिलकुल मुफ्त करना, और बाकी सब समय ग्राम-सुधारको दे देना। आपकी पुस्तिका पढकर मै तो इतना कह सकता हू।

बापुके आशीर्वाद

डा० कैलाशनाथ काटजू
इलाहाबाद

पत्रकी नकलसे . प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

६२४. पत्र : सुशीला शर्माको

सिमला
२६ जून, १९४५

चि० सुशीला,

तुझे मैं कैसे सलाह दू? मेरे विचार यह हैं : आज लिखे-पढ़े पुरुष औरतोंकी अन्धश्रद्धाका गैरलाभ उठाते हैं। सच्ची औरत अपने व्यभिचारी और दगा देनेवाले पतिका त्याग करेगी। लिखी-पढ़ी औरते भी स्वमान नही जानती, व्यभिचार से दूर भागती नही हैं। जो व्यभिचार करती है वह तो व्यभिचारिणी मानी जाती है, लेकिन जो व्यभिचारको बरदाश्त करती है वह भी व्यभिचारिणी है। इसमें से अगर कुछ पा सकती है तो भले।

बापुके आशीर्वाद

श्री सुशीला शर्मा
बनारस

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

६२५. वक्तव्य : समाचारपत्रोंको

शिमला
२६ जून, १९४५

गत २६ और २७ फरवरीको वर्धामें हुए अखिल भारतीय हिन्दुस्तानी प्रचार सम्मेलन द्वारा प्रस्तावित साहित्य मण्डलके सदस्योंके नाम निम्न प्रकार हैं :

मौलाना सैयद सुलेमान नदवी, आजमगढ़।
डॉ० ताराचन्द, इलाहाबाद।
डॉ० आबिद हुसैन, जामिया मिलिया, दिल्ली।
पण्डित बनारसीदास चतुर्वेदी, टीकमगढ़।
डॉ० जाफर हसन, हैदराबाद (बशर्ते कि विश्वविद्यालय इजाजत दे दे)।
श्रीयुत जितेन्द्र कुमार, दिल्ली।
डॉ० अख्तर हुसैन, रायपुर।
पण्डित सुदर्शन, बम्बई।
प्रोफेसर नजीब अशरफ नदवी, बम्बई (बशर्ते कि सरकार इजाजत दे दे)।

श्रीयुत चन्द्रगुप्त विद्यालंकार, लाहौर।
श्रीयुत सत्यनारायण, मद्रास।
पण्डित हरिभाऊ उपाध्याय, अजमेर।
पण्डित सुन्दरलाल, इलाहाबाद।
आचार्य श्रीमन्नारायण अग्रवाल, वर्धा।

विचार है कि मण्डलकी बैठक यथासम्भव शीघ्र बुलाई जाये। आचार्य श्रीमन्नारायण अग्रवालके सदस्योसे सलाह कर लेने के बाद तिथि घोषित की जायेगी। मूलत. सम्मेलनमें प्रस्तावित नामोमें कुछ परिवर्तन किये गये है। जिन लोगोके नाम प्रस्तावित किये गये उनमे से सभी सम्मेलनमे उपस्थित नही थे, और फलत जिन लोगोके लिए मण्डलमें काम करना सम्भव नही हुआ उनके बदले दूसरे लोगो को लेना पडा। मण्डलके लिए अपना नाम देने मे मैं हिचक रहा था, लेकिन डॉ० ताराचन्द तथा अन्य लोगोके साथ हुए पत्र-व्यवहारके फलस्वरूप मैंने मण्डलके अध्यक्ष के रूपमे शामिल होना स्वीकार कर लिया है। यह भी बता दूं कि सूचीमें कुछ और नाम जोडे जाने की सम्भावना है।

अंग्रेजीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

६२६. पत्र : मनु गांधीको — एक अंश

[२६ जून, १९४५ के पश्चात्][1]

सुशीलाके . . . को[2] लिखे ऊपरके पत्रमे पुनश्चःके रूपमें लिखी अपनी टिप्पणीको डाकखर्च बचाने की खातिर मैं निकाल ले रहा हूँ। जब हम वहाँ पहुँचेंगे तब मुझसे ले लेना। तू ठीक रहना। चोरी-छिपे अथवा खुलेआम रोने की आदत छोडना।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. साधन-सूत्रमें यह पत्र २६ जून, १९४५ के पत्रोंके पश्चात् रखा गया है।
२. नाम पढा नहीं जा सका।

६२७. तार : आगाखाँको

अविलम्बनीय

मैनर विला, शिमला वेस्ट
२७ जून, १९४५

महामान्य आगाखाँ
टंगा (पूर्व आफ्रिका)

कृपापूर्ण तारके लिए धन्यवाद।

गांधी

अंग्रेजीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

६२८. तार : शामलदास गांधीको

शिमला
२७ जून, १९४५

शामलदास गांधी
"वन्देमातरम्", बम्बई

न्यायपूर्ण समझौतेके लिए भोगीलालको बधाई और आशीर्वाद दो। तुमने अच्छा काम किया।

बापू

अंग्रेजीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

६२९. पत्र : मीराबहिनको

शिमला
२७ जून, १९४५

चि० मीरा,

तुम्हारा पत्र मिला। खबरदार, कहीं बूतेसे बढ़कर काम न करना। और न मौसमके प्रतिकूल कोई बात करना। क्योंकि तुम ऐसे मौसमके लिए नहीं बनी हो। मैं तबतक यहाँ रहूँ या न रहूँ तुम शिमला जरूर आओ। मैं किसी भी दिन यहाँ

से जा सकता हूँ। मुझे खुशी है कि तुम्हे दो सहायक मिल गये है। अच्छा होता यदि वलवन्तसिंह यहाँ आ सकता। पर मुझे इसमें सन्देह है।

स्नेह।

बापू

श्री मीरावाई
किसान आश्रम
डाकखाना वहादरावाद, वरास्ता ज्वालापुर
(हरिद्वारके पास)

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ६५०८) से; सौजन्य : मीरावहिन। जी० एन० ९९०३ से भी

६३०. पत्र : ग्लैडिस ओवनको

शिमला वेस्ट
२७ जून, १९४५

प्रिय ग्लैडिस,[1]

मुझे खुशी है कि तुम वहाँ हो और मुझे आशा है कि तुम्हारी कमजोरी दूर हो जायेगी। मुझसे और आशा न करना। हम चाहे या न चाहे, हम सब ईश्वरके हाथमें हैं।

स्नेह।

बापू

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० ६१९९) से

१. क्वेकर शिक्षाशास्त्री, जो १९३६ में भारतमें शिक्षाके बारेमें अध्ययन करने के लिए बनारस आकर थियोसोफिकल स्कूलमें पढ़ाने लगी थीं।

६३१. पत्र : मुन्नालाल गंगादास शाहको

२७ जून, १९४५

चि० मुन्नालाल,

डाक जा रही है, इसलिए ये दो शब्द लिख रहा हूँ। अगर होशियारीबहिन खुशीसे बलवन्तसिंहको जाने देने को राजी हो, तो वह मीराबहिनके पास चला जाये। अब तो मैं कुछ दिनोंमें वहाँ आने की आशा करता हूँ।

सबको
बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ८४४८) से। सी० डब्ल्यू ५५८५ से भी; सौजन्य : मुन्नालाल गं० शाह

६३२. पत्र : नन्दलाल पटेलको

शिमला
२७ जून, १९४५

चि० नन्दलाल,

हरिइच्छा घुल-घुलकर मर रही है, ऐसा तार प्रभाकरने भेजा है। हरिइच्छा स्वयं तो हिम्मतसे काम ले रही होगी। तुम दोनों भी खूब हिम्मत रखे हुए होगे। मौतका भय रखने से ईश्वरमें हमारी आस्था डिगती है। अथवा इससे पता चलता है कि हममें ईश्वरके प्रति आस्था नहीं है। जीवन-मरण उसके हाथमें है। ऐसा समझकर ही हमें चलना चाहिए।

हरिइच्छा चली ही गई है, मैं ऐसा मानकर नहीं बैठा हूँ। "जबतक साँस, तबतक आस", यह वाक्य अनेक बार सत्य सिद्ध हुआ है।[1]

मेरा वहाँ आना कब होगा सो कह नहीं सकता। लेकिन जल्दी आऊँगा, ऐसी आशा रखता हूँ।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. देखिए "पत्र : मुन्नालाल गं० शाहको", पृ० ४०१।

६३३. पत्र : देवप्रकाश नैयरको

शिमला वेस्ट
२७ जून, १९४५

चि० देव,

सु [शीला] चाय पीने के लिए गई है। शायद लिफाफेमें उसका खत आज न जाय। तुम्हारी तबीयत अच्छी होगी। अगर ठडे पानीमें बराबर बैठते हो और मिट्टीका प्रयोग करते हो तो अच्छा हो जायेगा। खुराकका तो है ही।

बापुका आशीर्वाद

पत्रकी नकलसे · प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

६३४. पत्र : लालचन्दको

मैनर विला, शिमला
२७ जून, १९४५

भाई लालचन्द,

तुम्हारा पत्र और चेक मिले। तार भी मिला था। उसका उत्तर देने जैसे नही था। मैं अगर कभी किसीके बारेमें प्रार्थना करता हूं तो उसका दाम नही लेता। किसीको नही लेना चाहिए। प्रार्थना कोई बेचने की चीज हो नही सकती। प्रार्थना जब की जाये, तब हृदयसे ही हो सकती है। लाइसेंस बदलने मे देर हो रही थी, उसमें मैं क्या प्रार्थना करनेवाला था? और कैसे करू? न मेरी शक्ति है, न किसी भी शख्सकी कि वह कुदरतके कानून बदल सके। ईश्वर जानता है कि किसके लिए क्या अच्छा है, और वैसे करता है। इसलिए तुम्हारा चेक मै वापिस करता हू। तुम्हारे दिलमे जो भ्रम पैदा हो गया है कि मैंने प्रार्थना की उससे तुम्हारा काम सफल हुआ, उसे मैं दूर करना चाहता हू। आप जाने कि लाइसेस के बारेमे मैंने प्रार्थना की नही, न उसका प्रार्थनासे कोई सम्बन्ध हो सकता है। यह समझने के बाद हरिजनोके लिए चैक भेजना चाहते है तो साफ कहकर भेज सकते है।

मो० क० गांधीके आशीर्वाद

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

६३५. पत्र : मुहम्मद यासीनको

मैनर विला, शिमला
२७ जून, १९४५

भाई मुहमद यासीन,

तुम्हारा खत मैंने पढ लिया है। अगर प्यारेलालजी तुम्हारी तसल्ली नहीं करा सकते तो मैं और कुछ भी नहीं कर सकता हूं — क्योंकि मेरे पास वक्त ही नहीं है — आपकी बातें तो मैंने सब सुन ली हैं, इसलिये मेरेसे ही बात करने का मोह छोड़ दिया जाय। बाकी सच्ची बात तो काम ही काम है। और काममें भी मरकजी काम है चरखा मिलाना। और दूसरोंसे चलवाना। इसका मतलब यह है कि कपाससे लेकर सूत निकालने का सब सिलसिला सीख लेना और करना।

मो० क० गांधीकी दुआ

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

६३६. पत्र : मुन्शीको

शिमला वेस्ट
२७ जून, १९४५

भाई मुनशीजी,

आपने जो नाम भेजा है मेरे ख्यालमें तो है ही। लेकिन संभव क्या है उसे मैं नहीं जानता। देखें क्या होता है। आश्रम अच्छी तरह चलता होगा।

आपका,
मो० क० गांधी

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

६३७. भाषण : प्रार्थना-सभामें—मसौदा[1]

शिमला

[२७ जून, १९४५][2]

आज शाम प्रार्थना-सभामें भाषण देते हुए महात्मा गांधीने कहा कि प्रार्थनामें सम्मिलित होने में आपका उद्देश्य ईश्वरसे लौ लगाना और आत्म-निरीक्षण करना होना चाहिए, ताकि ईश्वरकी सहायतासे आप अपनी कमजोरियोंपर विजय पा सकें। मेरा विश्वास है कि शुद्ध विचारवालोंके संसर्गसे मनुष्य शुद्ध विचारोंको ग्रहण करता है। इस सभामें अगर एक भी शुद्ध विचारवाला व्यक्ति हो तो बाकी लोगोंपर उसकी शुद्धताका प्रभाव पड़ेगा। मगर शर्त यह है कि आप लोग इसी इरादेसे आयें वरना आपका प्रार्थना-सभामें आना बेमानी होगा।

उन्होने इससे आगे बढकर कहा कि चाहे सब लोगोमें कमजोरियाँ हों किन्तु यदि वे उन्हें दूर करने के इरादेसे आये, तो दिन-प्रतिदिन उनके सामूहिक प्रयत्नसे उनके आत्म-सुधारकी गति तीव्र होगी। कारण जैसे आर्थिक अथवा राजनीतिक क्षेत्रमें सहयोग आवश्यक होता है वैसे ही नैतिक क्षेत्रमे भी सहयोगकी कही ज्यादा आवश्यकता होती है। मै भारत लौटने के समयसे ही जो प्रार्थना-सभाएँ करता रहा हूँ उनका मतलब यही है।

अतः मै आपसे अनुरोध करता हूँ कि आप बिलकुल चुपचाप होकर अपनी आँखें बन्द करके बैठें ताकि कम-से-कम कुछ क्षणके लिए तो बाहरी दुनियाके विचार आपके मनमें न आ सकें। इस सहकारी प्रार्थनामें न होहल्लेकी जरूरत है और न दिखावे की। इसमें ढोंगका लेश-मात्र भी न होना चाहिए।

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ४२०८) से; सौजन्य : अमृतकौर। जी० एन० ७८४४ से भी

६३८. तार : प्रभावती देवीको

शिमला

२८ जून, १९४५

प्रभावती देवी

हरिजन आश्रम, किंग्सवे [कैम्प]

दिल्ली

मै कबतक ठहरूँगा, अनिश्चित है। अखबार देखती रहो और तदनुसार तय करो।

बापू

अंग्रेजीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. मसौदेमें गांधीजी ने संशोधन किये थे, लेकिन दूसरा अनुच्छेद उन्होंने स्वयं लिखा था।

२. हिन्दुस्तान टाइम्स, २८-६-१९४५ से

६३९. पत्र : लॉर्ड वेवलको

मैनर विला, शिमला वेस्ट
२८ जून, १९४५

प्रिय मित्र,

१९४२ के दंगोंके परिणामस्वरूप कुछ व्यक्तियोंको निकट भविष्यमें फाँसी दी जाने वाली है। ऐसे कुछ मामले कार्य-समितिके सदस्य डॉ० राजेन्द्रप्रसादने मेरे सामने रखे हैं। चिमूरवाले मामले शायद आपको याद होंगे। मुझे ठीक-ठीक पता नहीं है कि सम्मेलन अपने अन्तिम चरणमें क्या रूप ले रहा है। वह चाहे कैसा भी हो, मेरा सुझाव है कि जनताकी अपील या आन्दोलनके बिना ही फाँसीकी सब सजाएँ आजीवन कारावासमें बदल दी जायें और इस बातका खयाल न किया जाये कि उनके बारेमें अदालती कार्यवाही चल रही है या नहीं। अगर यह काम आपके सामर्थ्यके बाहर हो, तो मेरा यह सुझाव है कि फाँसीको स्थगित कर दिया जाये, ताकि उनका फैसला राष्ट्रीय सरकार करे, जो कि शीघ्र ही बनने वाली है।[1]

हृदयसे आपका,
मो० क० गांधी

महामान्य वाइसराय
शिमला

[अंग्रेजीसे]
गांधीजीज कॉरेस्पॉण्डेन्स विद द गवर्नमेंट, १९४४-४७, पृ० ३५-३६

१. वाइसरायने अपने २९ जूनके उत्तरमें लिखा: "मैंने प्रान्तीय सरकारोंको हिदायत कर दी है कि जबतक प्रिवी कौंसिल इनमें से किसी मामलेपर अपील करने की विशेष छूटकी याचिकाके बारेमें फैसला नहीं कर लेती, तबतक इनमें से किसीको फाँसी न दी जाये. . . । प्रिवी कौंसिलका निर्णय मालूम हो जाने के बाद जब मैं इस सारे मसलेपर विचार करूँगा तो आपके पत्रमें लिखी बातको ध्यानमें रखूँगा।"

६४०. अनुलेख : "सत्याग्रहियोंके लिए आदेश" के मसौदेपर[1]

सेवाग्राम[2]
२८ जून, १९४५

अगर कार्य-समिति इन्हे पास कर देती तो इन्हे जारी कर दिया जाता। अब तो ये ऐतिहासिक प्रलेखोका अश मात्र है।

मो० क० गाधी

[अग्रेजीसे]
गांधीजीज कॉरेस्पॉण्डेन्स विद द गवर्नमेंट, १९४२-४४, पृ० २८८

६४१. पत्र : मुन्नालाल गंगादास शाहको

२८ जून, १९४५

चि० मुन्नालाल,

तुम्हारा तार मिला। हरिइच्छा मेरे लिए तो अपनी बेटीके समान हो गई थी। लेकिन उसके चले जाने (नही रहने)का दु.ख किसलिए? उसकी आत्मा तो जीवित है। अत. कोई शोक न करे।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ८४४५) से। सी० डब्ल्यू० ५५८६ से भी; सौजन्य : मुन्नालाल ग० शाह

१. इन आदेशोंका मसौदा गांधीजी ने ४ अगस्त, १९४२ को तैयार किया था, (देखिए खण्ड ७६, पृ० ४०६-९) और उसपर ८ अगस्तको कांग्रेस कार्य-समितिमें चर्चा हुई थी। समितिकी अगली बैठक ९ अगस्तको पुनः होनेवाली थी, लेकिन उस दिन सुबह तड़के ही नेताओंको गिरफ्तार कर लिया गया था।

२. स्थायी पता

६४२. पत्र : चाँदरानीको

२८ जून, १९४५

चि० चांद,

तू बहुत नाजुक दिल लगती है। तुझे झूठ बोलने का किसीने नहीं कहा है। तू एक चीज समजे दूसरा दूसरीको और दोनों सच रहे और हकीकत तीसरी है निकल सकती है। लेकिन यह चीज तो खतम हुइ। अब तो प्लुरसी फिरसे शुरू हो गई। इस हालतमें तू कैसे पढ़ सकती है? प्लुरसी कैसे हुई? इस बारेमें विचार करने की आवश्यकता है। किसी तरहसे जल्दबाजी [नहीं] करली। सु० बहन तुझे लिखेगी।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकलसे : चाँदरानी पेपर्स। सौजन्य : राष्ट्रीय गांधी संग्रहालय और पुस्तकालय

६४३. पत्र : जुगलकिशोर बिड़लाको

२८ जून, १९४५

भाई जुगल किशोर,

तुम्हारे तारपर मैंने कल रातको ही तार भेजा सो मिला होगा। अब चि० वसन्तका खत मिला, नोट भी मिली। मेरी तो इतनी आशा है, ईश्वरसे प्रार्थना भी है कि आपको संसारके भारके लिए दीर्घायु रखे और आरोग्यवान भी।

बापुके आशीर्वाद

सेठ जुगल किशोर बिड़ला
नई दिल्ली

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

६४४. पत्र : गोविन्दवल्लभ पन्तको

मैनर विला, शिमला
२९ जून, १९४५

भाई गोविन्द वल्लभ पन्त,[1]

मैने कल सुना कि आप राजाजी के पास गये थे और वहा एकाएक चक्कर आ गया। शरीर तो खराव है ही, मगर उसमे एक कारण मै भी था, ऐसे समझा। ऐसा होना नही चाहिए। मै आग्रही आदमी हू और मुझे ऐसे ही रहना चाहिए। कोई समय ऐसा आ सकता है जव मेरे विचार न जचें तो क्या हुआ? हम सवको, अगर हम मुल्ककी सेवा करना चाहते है तो निजी राय रखनी चाहिए। तव तो मुल्क आगे वढ सकता है, और लोगोको रास्ता भी मिल सकता है। मेरा पूरा विश्वास है कि आपको सेहत विगाडकर काम करना नही चाहिए। चिन्ता छोडनी ही चाहिए और मेरे विचारके साथ नही मिल सकते है, उसका दु:ख छोडना चाहिए।

ज्यो-ज्यो मै विचार करता हू मुझे लगता है कि अगर व[किंग] क[मेटी] जितने मुसलमान उतने ही हिन्दू चुनने की कोशिश करेगी, तो मुल्कमे जातीयताका जहर फैल जायेगा, और हम किसी तरहसे स्वतन्त्रता पा नही सकेंगे। अगर काग्रेस की वहुमति मिटकर अल्पमति हो जाये तो क्या हर्ज है? वहुमति रखने के लिए हम गलत चीज करे क्या? जितने हिन्दू उतने मुसलमान पसन्द करके काग्रेस कौमी नही वनेगी?

कौमी जहर मिटाने के लिए काग्रेस कम-से-कम हिन्दू और अधिक-से-अधिक दूसरी जातिके लोगोको लेकर स्वतन्त्रता आगे लाने मे विलकुल सही वनेगी। मै मानता हू कि अव हमारे सामने स्वतन्त्रताका पहला कदम सल्तनतके मार्फत उठता है। इसमे हमारी तरफमे विलकुल सीधा रास्ता होना चाहिए।

इसे लोग कवूल न करे तो भले लगाम दूसरोके हाथमें चली जाये, जिनको लोग पसन्द करे। थोडे भी सीधे रास्तेपर रहनेवाले होगे तो खैर-ही-खैर है। यह मेरी राय मै कभी छोड़ नही सकूगा।

१. (१८८७-१९६१); अलाहावाद उच्च न्यायालयमें एडवोकेट; उन्हें १९२८ के लखनऊमें साइमन कमीशनके खिलाफ प्रदर्शन करते समय लाठीकी भारी चोट लगी थी, जिससे वे पूरी तरह ठीक कभी नही हो पाये। वे उत्तर-प्रदेश विधान-परिषद्में १९२३ से १९३० तक स्वराज्य पार्टीके नेता पदपर रहे। १९३७-३९ के दौरान उत्तर-प्रदेशके प्रमुख मंत्री रहे और १९४६-५५ के दौरान प्रदेशके मुख्य मंत्री थे; १९५५-६१ के दौरान भारत सरकारके गृहमन्त्री रहे।

आप ऐसा मानकर बैठे हैं कि व[र्किंग] क[मिटी] ने बम्बईमें सम संख्याकी बातको स्वीकार कर लिया था। मैंने उसका इन्कार किया है।

आप अच्छे हो जाइए।

बापूके आशीर्वाद

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

६४५. भेंट : प्रेस्टन ग्रोवरको

शिमला
२९ जून, १९४५

मेरे प्रश्नोंके उत्तरमें गांधीजी ने कहा कि मैं ठीक-ठाक हूँ और शिमलेकी ७,००० फुटकी ऊँचाईका मुझपर अभीतक कोई बुरा असर नहीं पड़ा। मगर मैं इस बातकी जरूर सावधानी रख रहा हूँ कि मेरे दिलपर ज्यादा बोझ न पड़े।

मैंने शुरूमें गांधीजी से प्रार्थना की थी कि वे वार्ताकी वर्तमान स्थितिका विवरण दें। उन्होंने कहा :

चाहता तो हूँ कि मैं विवरण दे सकता, पर मैं तो केवल सलाहकारकी हैसियतसे यहाँ आया हूँ। मैं बहुत वर्षोंसे कांग्रेसको सलाह देता रहा हूँ। लेकिन अब मैं कांग्रेस और वाइसराय दोनोंका सलाहकार बन बैठा हूँ। और वाइसरायके माध्यम से अंग्रेजोंका भी। आप समझ सकते हैं कि इससे मेरी स्थिति असाधारण रूपसे नाजुक हो गई है। मुझे केवल वही जानकारी उपलब्ध है जो मेरे सहयोगी मुझसे मिलने पर मुझे देते हैं। मैं साफ बता दूँ कि मुझे मालूम नहीं कि आज सम्मेलन की ठीक-ठीक स्थिति क्या है। कौतूहल-वश बोल उठना मेरा स्वभाव कभी नहीं रहा है।

उन्हें कहा गया कि कांग्रेसी प्रतिनिधियोंको चाहिए कि वे गांधीजी को घंटे-घंटे बाद सूचना देते रहें। उन्होंने उत्तर दिया :

वे सूचना देते हैं और नहीं भी देते। अगर वाइसरायको मेरी सलाहकी जरूरत न हो तो मुझे इस बारेमें कुछ मालूम न हो कि उनके यहाँ क्या हो रहा है। लेकिन अगर काम निर्बाध रूपसे चलता रहे तो उन्हें मेरी सलाहकी जरूरत नहीं होती। जहाँतक हमारे पक्षका सवाल है [कांग्रेसी प्रतिनिधि] मेरे पास आते तो हैं, लेकिन यह जरूरी नहीं कि वे हर रोज आयें या घंटे-घंटे के बाद आयें। इसलिए यद्यपि मैं यह नहीं बता सकता कि सम्मेलनमें ठीक-ठीक स्थिति क्या है, लेकिन इतना कह सकता हूँ कि मेरी यह आशा और प्रार्थना है कि भारत और ब्रिटेन दोनोंके लिए मामला ठीक बैठे। मैं कहता हूँ 'दोनोंके लिए', क्योंकि मैं नहीं समझता कि अगर कोई समझौता जैसे-तैसे कर लिया तो वह ठीक तरहका होगा।

लेकिन मैं आपको एक बात बताता हूँ। कुछ समय पहले जब मैंने सर फीरोजखाँ नूनके सान फ्रासिस्कोवाले बयानके जवाबमे अपने वक्तव्यमें[1] कहा था कि पडित जवाहरलाल नेहरू मेरे उत्तराधिकारी है तो मैंने मजाक नही किया था। उनमे योग्यता है, ज्ञान है और भारतीय जनताके साथ उनका निकट सम्पर्क है। वह दूसरोको बता सकते है कि भारतीय मानस क्या सोचता है। जैसा कि मैंने लॉर्ड लिनलिथगोको लिखा था,[2] मै पहलेसे ही उन्हे अन्तर्राष्ट्रीय मामलोमे अपना पथ-प्रदर्शक मानता हूँ। वह बाहरी दुनियाके सामने भारतीय विचार-पद्धतिकी जैसी व्याख्या कर सकते है वैसी कोई दूसरा नही कर सकता।

इतना तो मैं कह सकता हूँ कि काग्रेस किसी एक वर्गकी सस्था हरगिज नही बन सकती। इसका यह मतलब नही कि इसमे साम्प्रदायिक विचार रखनेवाले लोग नही है, बल्कि यह कि काग्रेस कभी साम्प्रदायिक ढंगपर काम नही कर सकती। इसलिए आमतौरसे समान-सख्याका सिद्धान्त हरएकको नापसन्द होगा।

वर्तमान सम्मेलनकी संरचनाकी चर्चा करते हुए गांधीजी ने कहा कि इसका "रंग-ढंग राजनीतिक" है न कि साम्प्रदायिक। मै मुस्लिम लीगकी इस दलीलका खण्डन कर रहा हूँ कि सम्मेलनके सारे सदस्य साम्प्रदायिक आधारपर चुने गये है।

अगर वे विभिन्न वर्गोंके प्रतिनिधियोको साम्पदायिक आधारपर चुनना चाहते, तो निमत्रण हिन्दू महासभाको दिया जाता न कि काग्रेसको, क्योकि काग्रेस सदा शुद्ध राजनीतिक सस्था रही है और अब भी है और वह समूचे राष्ट्रके लिए सोचने और काम करने की कोशिश करती है। इस नाजुक घडीमे वह अपने सारे इतिहास पर पानी नही फेर सकती।

यह पूछे जाने पर कि क्या अन्तरिम सरकार बनाने में सहयोग देने का निमन्त्रण इस खयालसे स्वीकार किया गया था कि अन्तरिम सरकार स्वतन्त्रताकी दिशामें एक कदम होगी। गांधीजी ने उत्तर दिया:

निमन्त्रण स्वीकार करने का मतलब इस तथ्यको स्वीकार करना था कि यह स्वतन्त्रताकी दिशामे एक कदम होगा। लेकिन यह सब इस बातपर निर्भर करता है कि वाइसरायके दिलमें क्या है और वह उसकी कैसी व्याख्या या कैसा स्पष्टीकरण करते है। निमन्त्रण स्वीकार करना ऐसे ज्वालामुखीके मुखपर बैठने के समान है जिसके फटने की सम्भावना हो। मैंने यह खतरा भी मोल लिया।

भेंटके अन्तिम चरणमें यह बात कही गई कि बताया जाता है, मुस्लिम लीग के प्रधान श्री जिन्ना इस बातपर कुछ नाराज है कि गांधीजी सम्मेलनसे अलग हो गये है।

अगर श्री जिन्ना वहाँ मेरी उपस्थिति चाहते है, तो वे मुझे वहाँ ले जा सकते है। हम दोनो बाँहमे बाँह डालकर वहाँ जायेगे। वे पहाडपर चढने मे मेरी

१. देखिए "वक्तव्य : समाचारपत्रोंको", पृ० ६६-६८।
२. देखिए खण्ड ७६, "पत्र : लॉर्ड लिनलिथगोको", पृ० ४४८-५३।

मदद कर सकते हैं जिससे कि मेरे दिलपर बोझ न पड़े। श्री जिन्नाके ऐसा करने का यह मतलब होगा कि वे मतभेदों और सम्मेलनकी कठिनाइयोंके बावजूद समझौता चाहते हैं। आप उन्हें बता सकते हैं कि मैं उनके साथ सम्मेलनमें जाने को तैयार हूँ।

मैंने कहा कि न केवल श्री जिन्ना बल्कि लॉर्ड वेवल, अधिकांश भारत और सम्मेलनमें उपस्थित सब प्रेक्षक गांधीजी को कांग्रेसका प्रमुख मानते हैं — चाहे वे प्राविधिक दृष्टिसे कांग्रेसके सदस्य न भी हों — और यह भी मानते हैं कि उनकी स्वीकृतिके बिना कोई समझौता नहीं हो सकता। गांधीजी ने उत्तर दिया:

यह ठीक भी है और गलत भी। लोगोंका ऐसा ख्याल बन गया है, क्योंकि मेरी सलाह आमतौरपर मान ली जाती है। लेकिन प्राविधिक और वास्तविक दृष्टि से यह गलत है। सम्मेलनमें कानूनी प्रतिनिधि लिये गये हैं। इसलिए उसमें मेरी जगह नहीं हो सकती।

जब मैंने इस बातपर जोर दिया कि कांग्रेसमें चलती तो उन्हींकी है, उन्होंने उत्तर दिया:

यह बात नहीं है। वे किसी समय भी मुझे निकाल सकते हैं और मेरी सलाह की उपेक्षा कर सकते हैं। अगर मैं अपनी बात उनपर जबरदस्ती लादने की कोशिश करूँ, तो शायद मैं एक बार सफल हो जाऊँ। लेकिन ज्योंही मैं सत्तासे चिपके रहने की कोशिश करूँगा, मेरा विनिपात हो जायेगा और मैं फिर कभी नहीं उठ सकूँगा। लेकिन ऐसा मेरा स्वभाव नहीं है।

[अंग्रेजीसे]
हिन्दू, १-७-१९४५

६४६. पत्र: कृष्ण वर्माको

[पचगनी][1] शिमला वेस्ट
[१९ जून या उसके पूर्व][2] ३० जून, १९४५

भाई कृष्ण वर्मा,

तुम्हारा ३ तारीखका पत्र मिला। मामाका विवरण दिया, यह अच्छा किया। मैंने तो मामाको तुम्हारे हाथमें सौंप दिया है,[3] इस आशासे कि मामाको तो वहाँ लाभ ही होगा। उपचारके लिए जो कड़ाई जरूरी हो वह अवश्य करना। यह पत्र मैंने पचगनीमें लिखा था। वहाँसे निकल पड़ा इसलिए पोस्ट नहीं किया। अब तो मैं तुमसे मामा और चि० शैलेनके बारेमें जानना चाहता हूँ।[4] शैलेनके लिए

१ और २. पत्रके पाठके अनुसार; गांधीजी १९ जूनको पंचगनीसे रवाना हुए थे।
३ और ४. देखिए पृ० ७२ और १४४।

जो उपचार उचित जान पड़े वह करना। दोनोको ठीक हो जाना चाहिए। तुम्हारे खर्चके वारेमें मुझे देखना होगा। शैलेन मुझे पत्र लिखे। यह पत्र उसे पढाना।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी नकलसे . प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य प्यारेलाल

६४७. तार : मीराबहिनको

शिमला
३० जून, १९४५

मीराबहिन
मार्फत : पोस्ट मास्टर वहादरावाद
ज्वालापुर

अगर इच्छा हो तो आ जाओ। देखता हूँ कि बल्वन्तसिंह मेरे आश्रम पहुँचने से पहले नही आ सकेगा।

बापू

अग्रेजीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

६४८. तार : प्रभावतीको

शिमला
३० जून, १९४५

प्रभावती देवी
हरिजन आश्रम किंग्सवे [कैम्प]
दिल्ली

आ जाओ। आशा है सत्यवती अच्छी होगी।

बापू

अग्रेजीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

६४९. तार : धर्मदेव शास्त्रीको

शिमला
३० जून, १९४५

शास्त्री
आश्रम
कालसी (देहरादून)

अगर यहाँ तुम्हारे ऐसे मित्र हों जिनके साथ तुम ठहर सकते हो तो आ जाओ। मेरे पास तो स्थान नहीं है।

बापू

अंग्रेजीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

६५०. तार : सौन्दरम रामचन्द्रनको

अविलम्बनीय

शिमला
३० जून, १९४५

सौन्दरम रामचन्द्रन
कस्तूरबा गांधी मैटरनिटी होम
अदयार (मद्रास)

फ्रीडमैन भारतानन्द अदयारमें ठहरे हुए हैं। उनकी हालत चिन्ताजनक बताई जाती है। उन्हें देख लो। जो-कुछ जरूरी हो, वह करो। यदि जरूरत हो तो एक नर्स रख दो।

बापू

अंग्रेजीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

६५१. पत्र: नरहरि द्वा० परीखको

शिमला
३० जून, १९४५

चि० नरहरि,

यहाँके समाचार तो तुम्हे चि० प्या०, सु०, म० आदि जो भेज दें, उतने ही मिल सकते है। तुमने अपने कार्डमें जितने समाचार दे सकने थे दिये है। यह पत्र मैं प्रार्थनाके बाद, क्योंकि सोने की इच्छा नही हुई, लिख रहा हूँ। यहाँ काम जरा लम्बा हो गया, लेकिन अन्तमे सब ठीक होगा, ऐसा विश्वास करता हूँ। पूनासे मनुका[1] पत्र आया है। वह तो हिम्मत दिखा रही है कि अच्छी होकर आयेगी। वनुका[2] पत्र नही आया।

मैं वहाँके वातावरणकी शुद्धिको बहुत महत्त्व देता हूँ। शुद्धिमे ज्ञान, भक्ति, कार्यकुशलता तथा धर्मके पन्थसे अपलायनम् आदि बाते है। यह तुम दोनो गहराई मे उतरकर सोचना। मुझे लिखना और पूछना। मुझे वहाँ जुलाईके पहले हफ्तेमे जल्दी आना था। लेकिन वह तो अब होगा नही, इसीलिए यह पत्र लिख रहा हूँ। हरिइच्छाको तुम जीवित अवस्थामें देख सके, यह अच्छा हुआ। और वह तो मुक्त हो गई।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (एस० एन० ९१३३) से। सी० डब्ल्यू० ५८८४ से भी, सौजन्य : नरहरि द्वा० परीख

१. मनु गाधी
२. वनमाला, नरहरि परीखकी पुत्री

६५२. पत्र : लॉर्ड वेवलको

मैनर विला, शिमला वेस्ट
३० जून, १९४५

प्रिय मित्र,

आपके दो पत्र मिले, एक कल जो फाँसीकी सजावाले कैदियोंके[1] बारेमें था और दूसरा[2] आज जो सम्मेलनकी समाप्तितक मेरे शिमलामें ठहरने के बारेमें है। दोनोंके लिए अनेक धन्यवाद।

पहले पत्रके बारेमें मुझे कुछ नहीं कहना है सिवाय इसके कि आपके अविलम्ब और आशाजनक उत्तरके लिए मैं आभारी हूँ।

जहाँतक दूसरे पत्रका सम्बन्ध है, मैं तबतक शिमलासे नहीं जाऊँगा जबतक यह न जान लूँ कि अब आपको मेरी जरूरत नहीं है। जब भी आपको मेरी जरूरत हो, आप मुझे बस सन्देश ही भिजवा दीजिए।

आशा है, आप जानते होंगे कि पण्डित जवाहरलाल नेहरू कल शिमला पहुँच रहे हैं और आप उन्हें अपनेसे और लेडी वेवलसे भेंट करने का निमन्त्रण देंगे।

हृदयसे आपका,
मो० क० गांधी

महामान्य वाइसराय
शिमला

[अंग्रेजीसे]
गांधीजीज कॉरेस्पॉण्डेन्स विद द गवर्नमेण्ट, १९४४-४७, पृ० २७

१. देखिए पृ० ४००, पा० टि० १।

२. जिसमें लिखा था: "आपके साथियोंने अवश्य ही आपको यह बतला दिया होगा कि सम्मेलन १४ जुलाई तक के लिए स्थगित हो गया है, ताकि सभी दल अपने नामोंकी सूचियाँ भेज सकें और मैं यह पता लगा सकूँ कि सभी सम्बन्धित दलोंको स्वीकार्य कार्यकारिणी परिषद् कागज पर तैयार कर सकता हूँ अथवा नहीं. . . आशा है कि आप सम्मेलनकी समाप्तितक शिमला ठहर सकेंगे. . . आपके जाने से पूर्व मैं आपसे पुनः मिलना चाहूँगा।"

६५३. पत्र : शामलदास गांधीको

शिमला
३० जून, १९४५

चि० शामलदास,

तेरा पत्र मिला। भोगीलालको मुबारकबाद तो मैंने जो तार[1] भेजा है उसीमे है। महेन्द्र अभी पैसा न उडाये, यह देखना तुम्हारा काम है। केवलरामभाईके साथ मेरे सम्बन्ध वैसे ही थे जैसे तुम्हारे पिताके साथ थे। बादमे तो दोनो ही चले गये। अब मैंने जो किया है उसे शोभान्वित करना। भोगीलालको तो मेरी ओरसे बधाई देना जिसने स्वर्गीय केवलरामका नाम रोशन किया। भगवान करे और भी रोशन करे। इससे अधिक लिखने का समय नही है।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य प्यारेलाल

६५४. भेंट : एसोशिएटेड प्रेस ऑफ इंडियाको

शिमला
३० जून, १९४५

गाधीजी : मैंने आपका दावा नोट कर लिया है, लेकिन मुझे कुछ नही कहना है। मै आमतौरसे दिनमें नही बोलता, लेकिन आपसे खास रियायतके तौरपर बातचीत कर रहा हूँ। आपको मुझे प्रेरित करते रहना होगा।[2]

संवाददाता : अगर आप जैसा चाहें वैसा कर सकें, तो आप अन्तरिम सरकारका गठन किस प्रकारका करेंगे ?

गा० (हँसते हुए) : अन्तरिम सरकारमे जात-पॉत, धर्म या रंगका खयाल किये बिना चोटीके आदमी लिये जायेंगे। अगर मै भारतका वाइसराय बनाया जाऊँ तो मेरी सूची दुनियाको चौका देनेवाली होगी, मगर फिर भी वह स्वीकार करने-योग्य होगी।

१. देखिए पृ० ३९४।

२. साधन-सूत्रके अनुसार एसोशिएटेड प्रेस ऑफ इंडियाके विशेष संवाददाता ए० एस० भारतनने जब गाधीजी का अभिवादन किया, तब ये वाक्य उन्होंने मजाकमें कहे थे। "महात्मा गाधी . . . एक कमरेमें जहाँसे वर्फसे आच्छादित हिमालयकी . . . पर्वतमाला . . . का नजारा दिखाई दे रहा था . . . एक ऊँचे स्थानपर मामूलीसे गद्देपर बैठे . . . वास्तवमें अपने सामनेकी भव्य दृश्यावलीका आनन्द उठा रहे थे।"

मैंने महात्माजी से यह बताने का कहा कि चोटीके आदमियोंसे उनका मतलब क्या है। उन्होंने अपनी बातका विस्तार करते हुए बताया कि उनका मतलब ऐसे पुरुषों और स्त्रियोंसे है जोकि देशको जिस कामकी जरूरत है उसे करने के लिए सबसे योग्य हों।

मुझे नई सरकार नियुक्त करने का पूर्ण अधिकार हो, इसके लिए कोई मुझे भारतका वाइसराय नियुक्त करने का या कांग्रेसका प्रधान चुनने का कष्ट नहीं करेगा। मैं कांग्रेसका चवन्नी सदस्य भी नहीं हूँ कि नई सरकार बनाने का अधिकारी होऊँ।

महात्मा गांधीने कहा कि आज जो लोग कांग्रेसमें हैं उनमें से किसी भी व्यक्तिको अन्तरिम सरकारमें [न लेने से] मैं झिझकूँगा नहीं, अगर मैं यह समझूँ कि कांग्रेसके बाहर उससे बेहतर ऐसे आदमी मिल सकते हैं जो अपने-अपने क्षेत्रमें काम करते हुए इस बातकी कोशिश करेंगे कि पूर्ण स्वराज्य जल्दी-से-जल्दी मिल सके। मैंने उनसे आगे पूछा:

आपने वाइसरायके प्रस्तावोंके बारेमें उनके साथ अपने पत्र-व्यवहारमें हिन्दू और मुसलमानोंके समान संख्यामें प्रतिनिधित्व करने के मामलेमें "सवर्ण हिन्दू" शब्द पर आपत्ति प्रगट की थी। आपने आगे कहा था कि यदि सवर्ण हिन्दू और मुसलमानों के समानताके सिद्धांतको नहीं बदला जा सकता, तो कांग्रेस नई सरकारमें कोई स्थान नहीं लेना चाहेगी।[1] समाचारोंके अनुसार, सम्मेलनमें भाग लेनेवाले कांग्रेसी प्रतिनिधियोंने अनुसूचित जातियोंको छोड़ शेष हिन्दुओं और मुसलमानोंको संख्याकी समानताका सिद्धान्त स्वीकार कर लिया है। क्या इस बारेमें आप कुछ कहना चाहेंगे?

अगर कांग्रेसी प्रतिनिधियोंने समानताका सिद्धान्त स्वीकार किया है तो वह उस तरहकी समानता नहीं हो सकती जिस तरहकी आप सोच रहे हैं। मैं वाइसरायकी घोषणाका[2] यह मतलब समझता हूँ कि दोनों सम्प्रदायोंमें से कोई भी राष्ट्रीय मन्त्रि-मण्डलमें दूसरेसे अधिक प्रतिनिधि लिये जाने की माँग नहीं कर सकता। इस तरह अनुसूचित जातियोंको छोड़ शेष हिन्दू — अगर वे ऐसा चाहें तो — मुसलमानोंसे कम हो सकते हैं, अधिक नहीं।[3]

कल नेताओंके सम्मेलनमें वाइसरायने नई कार्यकारिणी परिषद् चुनने के लिए जिस विधिका सुझाव दिया है, क्या आप उसे पसन्द करते हैं? विधि यह है कि पहले सब पार्टियाँ नामोंकी अलग-अलग सूचियाँ वाइसरायको दें और वे अन्तिम चयनसे पहले पार्टियोंके नेताओंसे सलाह-मशविरा करेंगे और जिन व्यक्तियोंको अन्तिम रूपसे चुनेंगे, उनकी सूची वे सम्मेलनकी स्वीकृति प्राप्त करने के लिए सम्मेलनके सामने रखेंगे।

१. देखिए पृ० ३४७-४९।

२. देखिए परिशिष्ट ३।

३. संवाददाताने यहाँ लिखा है कि महात्मा गांधीके सचिवने "समय समाप्त" होने की सूचना दी। इसपर उन्होंने "एक अन्तिम सवाल पूछने की" अनुमति माँगी।

मेरे विचारमें लॉर्ड वेवल द्वारा सुझाई गई विधि ठीक है, क्योंकि वाइसराय सम्मेलनपर अपनी मर्जी नहीं लादना चाहते। वाइसरायने प्रतिनिधियोंके सामने अपने प्रारंभिक भाषणमें कहा है कि वे उन्हें, अर्थात् वाइसरायको अपना नेता समझें। लॉर्ड वेवलने एक अच्छे और सम्मानपूर्ण शब्दका प्रयोग किया है। इसका यह मतलब है कि वे सम्मेलनमें सम्मेलनके नेताके रूपमें काम कर रहे हैं, न कि व्हाइट हाल [ब्रिटिश सरकार] के एजेंटके रूपमें।

[अंग्रेजीसे]
हिन्दुस्तान टाइम्स, १-७-१९४५

६५५. तार : खुर्शेदबहिन नौरोजीको

अविलम्बनीय

शिमला
१ जुलाई, १९४५

खुर्शेदबहिन
हरिजन बस्ती, किंग्सवे [कैम्प]
दिल्ली

प्रभाके साथ आ जाओ।

बापू

अंग्रेजीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

६५६. पत्र : मुन्नालाल गंगादास शाहको

मैनर विला, शिमला वेस्ट
१ जुलाई, १९४५

चि० मुन्नालाल

तुम्हारा पत्र मिला। अब तो मेरा वहाँ आना देरमें होगा। शायद १५ तारीख तक यहाँसे छूट नहीं सकूँगा। देखें क्या होता है। बलवन्तसिंहकी बात समझा। वहाँ सब ठीक चल रहा होगा। डॉ० आइस [बर्फ] अगर भैंसके दूधका आग्रह करता हो, तो वह खुद भैंसका दूध प्राप्त करे और पिये। उसकी यह जरूरत पूरी करना मैं किसी प्रकार भी अपना कर्तव्य नहीं समझता। जो हम आसानीसे दे सकते हैं, उसीसे उसे निर्वाह करना चाहिए। कंचन तुम्हारी कुछ मदद भी करती

है या बीमार ही बनी रहती है? मैं उससे पत्रकी और कामके विवरणकी आशा करता हूँ।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ८४४४) से। सी० डब्ल्यू० ५५८७ से भी; सौजन्य : मुन्नालाल गं० शाह

६५७. पत्र : लालमन सिंहको

शिमला
१ जुलाई, १९४५

भाई लालमन सिंह,

तुम्हारे बारेमें बलवन्तसिंहने मुझे लिखा है। अगर मैं दिल्ली ठहर गया तब तो तुमसे मिलना चाहता हूं। लेकिन मुझको ऐसा लगता है कि मुझे दिल्लीमें ठहरना नहीं होगा। इस हालतमें हम कैसे मिलें? मैंने तुमको लिखा[1] तो है कि होशियारीको समझाकर तुम्हारे पास ले जा सकते हो। होशियारीके बच्चोंको उसके पास रहने देना चाहिए। हमारी एक बड़ी आदत यही है औरतोंको हम दबाते हैं, मर्द अपनी आजादी ले लेता है। अगर लड़का होती तो उसके लिए क्या करते? लेकिन मैं खतके मार्फत ज्यादा समझाने की कोशिश करना नहीं चाहता। ऐसा कर सकते हैं कि जब मैं दिल्लीसे जाऊं तब मेरे साथ हो जाओ। निकलने का कुछ निश्चय होगा तब मैं लिखूंगा।

बापुका आशीर्वाद

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

६५८. पत्र : बलवन्तसिंहको

शिमला
१ जुलाई, १९४५

चि० बलवंतसिंह,

तुम्हारा खत मिला। मीराबहिनकी अधीराई मैं समझता हूं क्योंकि उसकी खेती और उसकी गायके बारेमें वह मददकी इच्छा रखती है। लेकिन तुमको मजबूरन नहीं भेजना चाहता हूं। मीराबहिन खुद एक दो दिनमें आ जायेगी। तब सारी बात समझा दूंगा। पीछे जैसे ठीक लगे करो।

१. देखिए पृ० ३३३-३४।

होश्यारीके पिताको अब मैं कैसे मिलूंगा, सो जानता नही। क्योंकि शायद दिल्लीमें मुझे कुछ ठहरना नही होगा। मैं उसे लिखता हु।[1]

बापूके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० १९६४) से

६५९. पत्र : कृष्णचन्द्रको

शिमला
१ जुलाई, १९४५

चि० कृ० च०,

तुम्हारे दो पो० का० मिले है। अच्छा यह है कि एक लीफाफेमे सब खत आवे तो खर्च बच सकता है। बा० कृ० के बारेमें मैं समझा। मुझे अच्छा नही लगता। कही भी गल्ती हो रही है। लेकिन मेरा धर्म यहासे ज्यादा ख्याल न करने का है। मेरा आने का शायद १५ के बाद होगा। लेकिन जल्दी भी हो सके।

तुम्हारा समझा। मेरा सेवाग्राम आने का थोडा दूर गया। इससे कुछ परिवर्तन होता है क्या?

बापूके आ[शीर्वाद]

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० ४५७५) से

६६०. पत्र : महेशदत्त मिश्रको

शिमला
१ जुलाई, १९४५

चि० महेश,

तुम्हारा खत मिला। अब तो मैं यहा फस गया हू। शायद १५ जुलाई तक न निकल सकूं। तुम्हारी तबीयत अच्छी होगी। रास्तेमें कही मिल सकते है तो मिलो। अन्यथा सेवाग्राममे।

बापूके आशीर्वाद

श्री महेशदत्त
हरदा

पत्रकी नकलसे . प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य · प्यारेलाल

१. देखिए पिछला शीर्षक।

६६१. फीनिक्स ट्रस्ट-डीडके संशोधित दस्तावेजका मसौदा

शिमला
२ जुलाई, १९४५

मै, मोहनदास करमचन्द गांधी, वकीलने जो उन दिनो जोहानिसबर्गका निवासी था, १९०२ या उसके आसपास दो टुकड़ोंमे लगभग १०० एकड़ जमीन की जायदाद, जो फीनिक्स आश्रमके नामसे प्रसिद्ध है, पारमार्थिक प्रयोजनोसे खरीदी थी। चूंकि एकमात्र स्वामीके रूपमे कोई भी चीज अपने पास रखने की मेरी इच्छा नही थी, इसलिए मैने उस जायदादका ट्रस्ट बनाकर उसे पीटरमैरित्सबर्ग, नेटालमे विधिवत पंजीकृत करवा दिया।[1]

जोहानिसबर्ग निवासी वकील लुई वाल्टर रिच तथा अधिवासियो (सेटलर्स) के ट्रस्टीके रूपमे मुझको छोड़कर सभी ट्रस्टी स्वर्गवासी हो चुके है।

ट्रस्टके अधीन वहाँ अधिवास करनेवाले सभी लोग फीनिक्स आश्रम छोड़कर चले गये है। मेरे पुत्र मणिलाल गांधी अपनी पत्नी सुशीलाबहिन गांधी तथा अपने बच्चोके साथ आश्रममे रहे है। और उस जायदाद तथा मेरे द्वारा संस्थापित साप्ताहिक 'इंडियन ओपिनियन' की व्यवस्था करते रहे है।

अब मेरा इरादा ट्रस्टका विस्तार करने और नये ट्रस्टी नियुक्त करने का है। इसलिए वर्तमान ट्रस्टकी शर्तें निम्न प्रकार होगी.

१. वास्तविक आवश्यकता तथा सुविधाके अनुसार, जिनमे संशोधनो सम्बन्धी सुविधाका भी समावेश है, जबतक हो तबतक अंग्रेजी तथा गुजराती और अन्य भारतीय एव आफ्रिकी भाषाओमे भी समाचारपत्र 'इंडियन ओपिनियन' को चलाते रहना, लेकिन कभी भी घाटेमे नही चलाना। इस समाचारपत्रसे होनेवाले सारे लाभ संचालन-व्यय निकालने के बाद आश्रमको दे दिये जायेगे।

२. प्रेस विभाग फुटकर काम तथा जनताके और कल्याणकारी जनशिक्षणके हितकी दृष्टिसे ट्रस्ट द्वारा अनुमोदित साहित्यकी बिक्रीका काम हाथमे ले सकता है।

३. ट्रस्ट एक सार्वजनिक पुस्तकालय और विद्यालयकी स्थापना ऐसे नियमोके अधीन कर सकता है जो ट्रस्टियो द्वारा बनाये जायें। इनका निर्माण जनताके अनुदानोसे किया जाये। इनका नाम मेरी स्वर्गीय पत्नी कस्तूरबाके नामपर होगा।

१. देखिए खण्ड ११, पृ० ६० और ३१८-२२।

४ ट्रस्टी नैसर्गिक चिकित्सालय भी खोल सकते है और ऐसी सभी प्रवृत्तियाँ चला सकते है जिनसे नैतिक, सामाजिक, आर्थिक एव आरोग्यकी दृष्टिसे भारतीयो का शिक्षण हो सके।

५. ट्रस्टी सारे निर्णय बहुमतसे करेगे।

उपर्युक्त प्रयोजनोंसे मै निम्नलिखित व्यक्तियोको आजीवन या जबतक मै ठीक समझूं तबतक के लिए ट्रस्टी नियुक्त करता हूँ:

(१) उपर्युक्त लुई वाल्टर रिच,
(२) मणिलाल मोहनदास गांधी,
(३) पारसी जालभाई रुस्तमजी,
(४) सुरेन्द्रराय मेढ
(५) (और एक) मुसलमान

उपर्युक्त मणिलाल गाधी व्यवस्थापक ट्रस्टी होगे और ट्रस्टके व्यवस्थापक तथा 'इडियन ओपिनियन' के सम्पादकके रूपमे वे अपने, अपनी पत्नी और अपने बच्चोके निर्वाहके लिए अधिकसे-अधिक एक सौ पौण्ड प्रतिमास लेगे तथा मुफ्त आवासका लाभ उठायेंगे। उक्त मणिलाल गाधी ट्रस्टकी जायदाद तथा समाचारपत्र 'इडियन ओपिनियन' की व्यवस्था-सम्बन्धी लेखा विधिवत रखेगे। 'इडियन ओपिनियन' और ट्रस्टकी जायदादकी व्यवस्थाके लेखे अलग-अलग रखे जायेगे। उक्त लेखोकी हर छ· महीने बाद जाँच की जायेगी।

यदि किसी ट्रस्टीकी मृत्यु हो जाये या कोई त्यागपत्र दे दे अथवा किसीको मै हटा दूं तो शेष ट्रस्टी उसके स्थानपर अन्य ट्रस्टी नियुक्त करेगे लेकिन उस नियुक्ति पर मेरे जीते-जी मेरी सहमति आवश्यक मानी जायेगी।

गवाह:

अग्रेजीकी नकलसे · प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

६६२. तार: एन० बी० परूलेकरको

अविलम्बनीय

शिमला
२ जुलाई, १९४५

परूलेकर
सम्पादक, 'सकल'
पूना

रामभाऊसे कहिए कि उपवास अनावश्यक है। समय मिला और स्वास्थ्यने साथ दिया तो मामलेका अध्ययन करके मार्गदर्शन करना चाहूँगा।

गांधी

अग्रेजीकी नकलसे प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

६६३. पत्र : रेवरेण्ड फॉस वेस्टकॉटको[1]

मैनर विला, शिमला वेस्ट
२ जुलाई, १९४५

प्रिय मित्र,

आज प्रातः प्रार्थनाके बाद मुझे आपका, आपके सन्निकट अवकाशका और भारतमें शेष जीवन व्यतीत करने के आपके निश्चयका विचार आया। क्या इसका अर्थ यह नहीं है कि अब आप पदकी झंझटों और बन्धनसे मुक्त होकर अधिक व्यापक रूपसे सेवाकार्य कर सकेंगे? ईश्वर करे आप महानतर कार्यके लिए दीर्घजीवी हों।

हृदयसे आपका,
मो० क० गांधी

पुनश्च :

आशा है कि आपके उत्तराधिकारी आपके अनुरूप सिद्ध होंगे। उन्हें मेरा स्नेह।

मो० क० गांधी

मेट्रोपोलिटन
कलकत्ता

अंग्रेजीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

६६४. पत्र : नरेन्द्रदेवको

मैनर विला, शिमला वेस्ट
२ जुलाई, १९४५

भाई नरेन्द्र देव,

तुमको खत लिखने का मौका आज मौनमें प्रार्थनाके बाद सवेरे मिलता है। तुम्मारी प्रकृति कुछ अच्छी है क्या? अगर आराम चाहिए तो सेवाग्राम तो तुमारे लिए है ही। फुरसतसे अपने ख्यालात भी लिखें।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. कलकत्तेके बिशप और भारत, बर्मा तथा सीलोनके मेट्रोपोलिटन

६६५. पत्र : किशोरलाल घनश्याम मशरूवालाको

मैनर विला, शिमला वेस्ट
२ जुलाई, १९४५

चि० किशोरलाल,

आज प्रार्थनाके बाद तुरन्त ही प्रेमपत्र लिखने बैठा हूँ। पहला लिखा बिशप वेस्टकॉटको, दूसरा बीमार नरेन्द्रदेवको, और तीसरा यह तुम्हे लिख रहा हूँ। "त्री" "भी" के समान ही लगता है न? घडा पक जाने के बाद क्या उसकी गर्दन फिरसे बनाई या सुधारी जा सकती है? लेकिन क्या यह कहावत जीवित घड़ेपर भी लागू हो सकती है? और जब पहले-पहल कही गई होगी, तब किसी चतुर आदमीने बूढेके बारेमे ही कही होगी न? तो यह तो हुआ थोडा अर्थपूर्ण विनोद।

मै यहाँ एक बडे काममे लगा हूँ, लेकिन मनमे परम शान्ति है। हिमालयके ठीक सामने मेरी खिड़की है। पन्द्रह दिन यहाँ रहना पड़ेगा, ज्योही यह मालूम हुआ तो मेरा मन इस दृश्यकी ओर दौडा। यह घर कुर्सीपर बैठनेवालोके लिए बनाया गया है, इसलिए जमीनपर बैठे-बैठे तो बाहरका कुछ भी दिखाई नही देता। मै तो शर्मको बलाए-ताक रखकर बैंचपर जा बैठा। अब मेरी दृष्टि स्थिर हो गई है। मन भी स्थिर हो गया है। लेटे-लेटे भी कुछ देख सकता हूँ। जब दिन साफ होता है, तब पहाडपर बर्फ जमी रहती है। इससे अधिक सुन्दर दृश्य देखने के लिए तो शिवजीके कैलाश ही जाना होगा।

यह सब होते हुए भी मेरा कैलाश तो सेवाग्राम है। मेरी जीवनदायिनी गगाका पानी भी वहीसे निकलता है। इसलिए तुम और नरहरि, वहाँ जो कमियाँ है, उन्हें दूर करने मे अपने अवकाशका समय लगाना। नरहरिको मैने जितना कहा जा सकता है, कहा है। बाकी उसने पूरा कर लिया होगा।

तुम और गोमती जैसे थे क्या वैसे ही हो? क्या तुम 'ईशोपनिषद्'को मानते हो? क्या तुम सेवा करने के लिए १२५ वर्ष जीवित रहने की आशा करते हो? और अगर करते हो, तो क्या उसकी शर्तोका पालन करते हो?

यहाँके समाचार तो अखबारोमे काफी विस्तारसे निकल रहे है।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० ५८८५) से। सौजन्य: मुन्नालाल ग० शाह

६६६. पुर्जा : अमृतकौरको

[२ जुलाई, १९४५][1]

कल यहाँ कार्य-समितिकी बैठक होनेवाली है। अगर इससे शम्मीको परेशानी हो, तो मैं आसानीसे बैठक कही और करवा सकता हूँ। बैठक मेरी खातिर यहाँ हो रही है। पर मुझे इसके यहाँ होने की जरूरत नही है। तुम अपनी मानसिक दुर्बलताके कारण इसे यहाँ मत होने दो। यह घर केवल तुम्हारा ही नही है और शम्मी बीमार है। उत्तर देने से पहले अच्छी तरह स्पष्ट रूपसे सोच-विचार कर लो। जैसा कि तुम जानती हो बैठकका मतलब बहुत-कुछ होता है।

सरदार रातको भोजन नही कर सकते। उनके लिए गरम दूध और गरम पानीके सिवाय कुछ रखने की जरूरत नही है। सम्भव है कि देवदास टेलीफोनसे उनके साथ बात करेगा। उसने तीन महिलाओं और सरदारकी यात्राके दौरान — जबतक कि वे यहाँ पहुँच नही जाते — उनकी देखभाल करने का जिम्मा लिया है।

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ४१६०) से; सौजन्य : अमृतकौर। जी० एन० ७७९५ से भी

६६७. पत्र : सत्यवतीको

मैनर विला, शिमला
२ जुलाई, १९४५

चि० सत्यवती,

प्रकृत्ति सुधर रही है क्या? अन्यथा सुधार हुआ सौ क्षणिक ही था। अब तो तेरे पास खुरशेद आई, प्रभा आई। मनुष्य प्रेम अगर तुझे जिला सके तो तुझे जीना ही है। भगवान जाने। यहां क्या चल रहा है। 'हिन्दके लाल'[2] कल आये। देखें क्या होता है।

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. कार्य-समितिकी बैठकके उल्लेखके आधारपर: बैठक ३ जुलाईको हुई थी। यह पुर्जा गांधीजी को शिमलेमें १-७-१९४५ को मिले तारकी उल्टी तरफ लिखा हुआ है।

२. तात्पर्य "जवाहरलाल नेहरू" से है।

६६८. भाषण : प्रार्थना-सभामें

शिमला
२ जुलाई, १९४५

महात्मा गांधीने लोगोंका ध्यान अखिल भारतीय चरखा संघके उस नये नियमकी ओर दिलाया जिसके अनुसार खादीकी कीमतका कुछ अंश सूतके रूपमें देना पड़ता था। यह नियम पहली जुलाईसे शिमलेमें लागू हुआ था। गांधीजी ने कहा कि लोगोंने मुझे बताया है कि शिमला खादी भंडार हर तरहके लोगोंको — जो कि थोड़े या लम्बे समयके लिए यहाँ रहने आते हैं — खादी बेचता है। उनमें से अधिकांश लोग सूत नहीं कात सकते और अगर इस बातका आग्रह किया जाये कि खादीको कीमत का कुछ अंश सूतके रूपमें अदा करना होगा तो खादीकी बिक्री कम हो जायेगी। उन्होंने कहा कि मैं ऐसे परिणामकी परवाह नहीं करता, हालाँकि यह बुरा होगा।

गांधोजी ने कहा कि एक समय था जब हमारा उद्देश्य खादीकी बिक्री बढ़ाना था ताकि गरीबोंको अपनी आय बढ़ाने में सहायता मिले। लेकिन गहरे चिन्तनसे — विशेषतः हालके कारावासके दौरान किये गये चिन्तनसे — मुझे विश्वास हो गया है कि यदि खादीको स्वराज्य-प्राप्तिका साधन बनना है, तो उसके क्षेत्र और अर्थका विस्तार होना चाहिए। मैं अखिल भारतीय चरखा संघ जैसी शक्तिशाली संस्थाको केवल आर्थिक राहत पहुँचाने की खातिर खादी तैयार करने और बेचने के लिए नहीं चला सकता। इस उद्देश्यके लिए तो कोई और धन्धा भी किया जा सकता है। अगर खादीको अहिंसाके द्वारा स्वराज्य-प्राप्तिका साधन बनना है तो लाखों-करोड़ों लोगोंको कताई करनी होगी और साथ ही यह भली-भाँति समझना होगा कि अहिंसा और स्वतन्त्रताकी दृष्टिसे इसका क्या महत्त्व है। अखिल भारतीय चरखा संघने शुरू-शुरूमें यही माँग की है कि खादी खरीदते समय एक रुपयेके पीछे दो पैसेका ही सूत दिया जाये। अगर मैं लोगोंको कायल कर सकूँ तो मैं यह आग्रह करूँगा कि खादीकी सारी कीमत सूतके रूपमें अदा की जाये। अगर आपको स्वतन्त्रताकी चाह है तो इतना काम करना आपको बोझ नहीं मालूम होना चाहिए। और जो लोग स्वतन्त्र नहीं होना चाहते उनका प्रार्थना-सभामें आने से कोई मतलब नहीं है। प्रार्थना करनेवाला व्यक्ति यह स्वीकार नहीं कर सकता कि गुलामी उसके भाग्यमें बदी है।

गांधीजी ने कहा कि अगर सब लोग उस तरह कताई करने लग जाते जिस तरह कि मैं चाहता था, तब कोई और कोशिश किये बिना आपको स्वराज्य मिल गया होता। तब मुझे शिमले न आना पड़ता। लेकिन समाजमें सब तरहके लोग होते है। इसलिए औरोंकी तरह मुझे भी यह देखने के लिए कि क्या सम्मेलनके द्वारा स्वतन्त्रताकी दिशामें गति तेज की जा सकती है, सम्मेलनके लिए आना पड़ा।

खादीके बदलेमें दिया जानेवाला सूत ऐसा होना चाहिए जो सम्बन्धित व्यक्तिने खुद काता हो या उसके परिवारके लोगोंने काता हो। इस बारेमें अखिल भारतीय चरखा संघ ज्यादा-से-ज्यादा यह रियायत दे सकता है कि सूत उनके नौकरोंके द्वारा काता हुआ हो जिन्हें वे अपने परिवार-जन समझते हों। चोर-बाजारमें खरीदा हुआ सूत हमारा उद्देश्य पूरा करने के काम नहीं आ सकता। और यह बात भी है कि अगर भंडार खादी खरीदनेवालोंके हाथ सूत बेचने लग जायें, तो नये नियमको लागू करने का उद्देश्य विफल हो जायेगा।

[अंग्रेजीसे]
हिन्दू, ४-७-१९४५

६६९. पत्र : अमृतलाल वि० ठक्करको

शिमला
३ जुलाई, १९४५

बापा,

आपके दो खत मेरे सामने है — ता० २८, २९ के।

हरिजन-सेवक-संघकी और कस्तुरबा निधिकी कार्यवाहक समितिकी बैठक जैसे आप लिखते है ऐसी अगस्तमे करें। सोमवार छोड़ें।

मृदुलाबहिनके दफ्तरके बारेमे तीन माहके खर्चके लिए ९७५ रु० की मंजूरी है।

आपका,
बापु

मन्त्रीजी
कस्तुरबा स्मारक निधि
बजाजवाड़ी, वर्धा

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

६७०. पत्र : अमृतलाल वि० ठक्करको

शिमला
३ जुलाई, १९४५

बापा,

आज तीन बजे उठा हूँ। आपके दो हिन्दी पत्रोंका हिन्दीमें उत्तर[1] वर्धा भेज रहा हूँ। शैलेनके बारेमें आपका हालका पत्र पढ़ा। उसे खुशी-खुशी १७५ रुपये माहवार देना। मैंने तो सब-कुछ पर विचार किया था। लेकिन आपका हिसाब बिलकुल ठीक मानता हूँ। यदि वह मलाडमें[2] अच्छा हो जाये तो दिक्कत नही होगी। वहाँ दो लड़के बीमार थे, यह बात अच्छी नही लगी। जुगलकिशोर सेठ कुछ अच्छे हैं क्या? और सत्यवती सेविका?

आप बीमार न पड़ना।

बापू

श्री ठक्कर बापा
हरिजन निवास
किंग्सवे [कैम्प]
दिल्ली

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

६७१. पत्र : गोकुलचन्द नारंगको

शिमला
३ जुलाई, १९४५

भाई गोकुलचन्दजी,[3]

आपका २९-६-१९४५ का खत मिला। इतना क्रोधसे भरा है कि आप ऐसा खत इंग्रेजीमें ही लिख सकते थे। राजकुमारीने अगर इंग्रेजीमें लिखा था तो बड़ी गलती की। वह बेचारी क्या करे? पढाई अंग्रेजीसे शुरू हुई। विचार तो मेरे थे।

१. देखिए पिछला शीर्षक।

२. कृष्णवर्माके नैसर्गिक चिकित्सालयमें

३. लाहौरके प्रमुख बैरिस्टर; पंजाब सरकारमें स्वायत्त मंत्री; हिन्दू-महासभाके अध्यक्ष; पंजाब में औद्योगिक विकासके प्रणेता

हार-जीत, न्याय-अन्यायके मानी आपके और मेरे भिन्न होंगे। क्या हरज है? वृक्षका पता उसके फलसे मिल जाता है। देखें क्या होता है।

आपका,
मो० क० गांधी

श्री गोकुलचन्द नारंग
सेवाय होटल
मसूरी

पत्रकी नकलसे: प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य: प्यारेलाल

६७२. पत्र: डॉ० रघुवीरको

शिमला
३ जुलाई, १९४५

भाई रघुवीर,

आपका खत मिला। धन्यवाद। हिन्दी प्रचार नही हिन्दुस्तानी भाषा प्रचार सघ है। डा० ताराचन्द, डा० हुसन इत्यादि भाषा-विज्ञान-शास्त्री नही है? कैसे भी हो आप अगर मदद देना चाहते हैं तो मुझे चाहिए। आपका महाकोष मेरे साथ फिर रहा है। मुझे अच्छा लगा है।

आप किस तरह मदद देंगे, लिखें।

बापुके आशीर्वाद

डा० रघुवीर,
सरस्वती विहार
लाहौर

पत्रकी नकलसे: प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य: प्यारेलाल

६७३. पत्र: शान्ताको

शिमला
३ जुलाई, १९४५

चि० शान्ता,

तुम्हारे दो शब्द मिले। आगे बढते रहो। देखें कब मिलते हैं।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी नकलसे: प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य: प्यारेलाल

६७४. पत्र : लीलावती आसरको

सेवाग्राम[1]
४ जुलाई, १९४५

चि० लीली,

तू दुष्ट है। मैं काममें लगा होऊँ, तब तुझे कैसे लिखूं? और क्या यह मानना चाहिए कि जब मैं तुझे लिखता हूँ, तभी तेरी याद करता हूँ?

लड़का स्वस्थ हो गया, यह अच्छा हुआ।

लक्ष्मीदास तेरा सुभीता देखकर विवाह तय करे, यह तो आश्चर्यकी बात होगी। तुझे नागपुर जाना चाहिए, वैसे अगर टाल सके तो अच्छा हो। पास होना[2] और अपनी तबीयत सँभालना।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ९६०२) से। सी० डब्ल्यू० ६५७४ से भी; सौजन्य लीलावती आसर

६७५. चुन्नीलाल वी० मेहताको

शिमला
४ जुलाई, १९४५

भाई चुन्नीलाल,

तुमने भाई जैसा भाई खोया। मुझे तो मालूम ही न था कि सर मगलदास तुम्हारे भाई थे। मेरे लिए तो वे वैद्यो की सलाहकार समितिके मामलोमें मदद करनेवाले व्यक्ति थे। अब क्या करें? तुम्हारी क्षति भारी कि मेरी? अथवा दोनोमें से एक की भी नही?

बापूके आशीर्वाद

सर चुन्नीलाल वी० मेहता
रिज रोड
मलाबार हिल
बम्बई

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य प्यारेलाल

१. स्थायी पता
२. लीलावती आसर डाक्टरी शिक्षा ग्रहण कर रही थीं।

६७६. पत्र : कन्हैयालाल नानूभाई देसाईको

शिमला
४ जुलाई, १९४५

भाई कानजीभाई,

तो तुम अपनी बहुत अर्सेसे बीमार बहूको खो बैठे। वह तो जाने ही वाली थी। मेरी दृष्टिसे यह अच्छा ही हुआ कि वह स्वयं दुःखसे छूटी और सार-सम्भाल करनेवालोंको भी दुःखसे उबारा।

बापूके आशीर्वाद

श्री कन्हैयालाल ना० देसाई
गोपीपुरा
सूरत

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

६७७. पत्र : वनमाला परीखको

६ जुलाई, १९४५

चि० वनु (या वनुड़ी ?),

जैसी तेरी इच्छा हो। अब तू वहाँ है, तो मैं आशा करता हूँ, मनुडीको भी अपने जैसी हँसमुख और विनोदी बना देगी। तुम दोनो अपने सारे रोग दूर करके ही वहाँसे लौटना।[1] वहाँ तुम फुर्सतमें नहीं हो। सेवा करनेवाला तो, जहाँ रहता है, वहीं सीखता है, और वहाँ तो सीखने को बहुत पड़ा हुआ है। इसलिए इस बातका जरा भी दुःख मत करना कि वहाँ रहना पड़ रहा है। यह एक पत्र तुम दोनोंके लिए है।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ५७९३) से। सी० डब्ल्यू० ३०१६ से भी; सौजन्य : वनमाला देसाई

१. दिनशा मेहताके नैसर्गिक चिकित्सालयसे

६७८. तार : कृष्णवर्माको

अविलम्बनीय

शिमला
७ जुलाई, १९४५

डॉ० कृष्णवर्मा
नैसर्गिक उपचारगृह
मलाड (वम्बई)

शैलेनको छुट्टी वढाने के लिए कहना चाहिए।

बापू

अंग्रेजीकी नकलसे · प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

६७९. पत्र : कान्तिलाल गांधीको

शिमला
७ जुलाई, १९४५

चि० काति,

गाधी सेवा सघकी सूतीयज्ञकी योजनाके लिये मेरे आशीर्वाद है। क्यो न हो? यह तो हिंद स्वराज्यका शुद्ध काम है। संघका सवध चि० नारणदासकी महत योजनाके साथ रखो। अच्छा होगा अगर हरेक व्यक्ति जो कांते वही अपनी पुणीयां वनावे।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० ७३७५) से। सौजन्य कान्तिलाल गाधी

६८०. पत्र : कान्तिलाल गांधीको

मैनर विला, शिमला
७ जुलाई, १९४५

चि० कान्ति,

तेरा पत्र कल शामको मिला। अपेक्षित समयमे मुझसे पत्र प्राप्त कर लेना अव वहुत मुश्किल है। तेरा पत्र मै आज सवेरे प्रार्थनाके वाद ही पढ सका। अव रात-दिन परिश्रम करने की मेरी शक्ति टूट गई समझ।

तू सुन्दर काम कर रहा है। अपने अध्ययनके साथ-साथ अपनी गृहस्थी चलाना है, सामाजिक व्यवहार सँभालता है; दोनों पिताकी भक्ति करते हो और निःस्वार्थ देश-सेवा करते हो, यह सब देखकर मेरे मनमें बड़ा हर्ष उत्पन्न होता है। तू जल्दबाजी करके अपना स्वास्थ्य मत खराब कर लेना। सामर्थ्यके बाहर कुछ मत करना। अनासक्तिका अभ्यास करना।

अगर तू पत्र न लिख सके, तो सरस्वती लिखे।

हरिलाल तेरे यहाँ टिका हुआ है, यह बड़ी बात है। टिक गया, तो उसका उद्धार हो जायेगा। क्या उसकी तबीयत ठीक है?

तेरा माँगा हुआ हिन्दी पत्र[1] इस पत्रके साथ है।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० ७३७४) से। सौजन्य: कान्तिलाल गांधी

६८१. पत्र: श्यामलालको

शिमला
७ जुलाई, १९४५

भाई श्यामलाल,

तुम्हारा दो तारीखका खत मिला। धर्मदेव शास्त्री यहां आये हैं। उनकी योजनाके बारेमें अगर बापाकी सम्मति है तो मेरी भी है।

बापूके आशीर्वाद

श्री श्यामलालजी
कस्तुरबा स्मारक निधि
मध्यस्थ दफ्तर, बजाजवाड़ी, वर्धा

पत्रकी नकलसे: प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य: प्यारेलाल

१. देखिए पिछला शीर्षक।

६८२. पत्र : लॉर्ड वेवलको

मैनर विला, शिमला वेस्ट
८ जुलाई, १९४५

प्रिय मित्र,

प्रस्तावित कार्यकारिणी परिषद्के लिए काग्रेसकी सूची काग्रेस अध्यक्षने कल आपके पास भेज दी थी।

१ मेरे हार्दिक विरोधके वावजूद सख्याकी समानता कायम रखी गई। मुझे इसका अफसोस हुआ। लेकिन इसका यह मतलव नही कि मेरे रवैयेमे कोई परिवर्तन होगा। मेरा पहलेसे कही अधिक दृढ विश्वास है कि गैर-अनुसूचित हिन्दू सदस्योकी सख्या मुसलमानोसे कम होनी चाहिए थी।

२ आप देखेगे कि सूचीमे हिन्दू महासभाके प्रधानका नाम है। मेरे विचारमे उन्हे लेना जरूरी और सौजन्यकी दृष्टिसे उचित था। अगर आप काग्रेसकी सूचीको स्वीकार करे, तो मै आपसे कहूँगा कि आप चालू माहकी १४ तारीखको होनेवाली बैठकसे पहले डॉ० श्यामाप्रसाद मुकर्जीको निमन्त्रित करे।

३ डॉ० राजेन्द्रप्रसादने मुझे वताया है कि श्री महेन्द्र चौधरीको चालू माहकी १२ तारीखको या उसके वाद किसी भी दिन फाँसी दी जानेवाली है। वह भागलपुर सेन्ट्रल जेल, विहारमे है। मेरा विचार है कि आप उनकी सजाको कम कर देगे या तवतक स्थगित रखने का हुक्म देगे जवतक कि प्रस्तावित कार्यकारिणी परिषद् उसपर विचार नही कर पाती।[1]

हृदयसे आपका,
मो० क० गांधी

महामान्य वाइसराय
शिमला

[अग्रेजीसे]
गांधीजीज कॉरेस्पॉण्डेन्स विद द गवर्नमेंट, १९४४-४७, पृ० २८

१. वाइसरायने ९ जुलाईको अपने उत्तरमें लिखा कि फाँसी स्थगित कर दी गई है, ताकि उसकी अपीलपर विचार किया जा सके। प्रिवी कौंसिलने अपील नामंजूर कर दी। देखिए "पत्र : लॉर्ड वेवलको", १५-७-१९४५ भी।

६८३. पत्र : धर्मदेव शास्त्रीको

शिमला
८ जुलाई, १९४५

भाई धर्मदेव शास्त्री,

१० तारीखको आप चौथे वर्षमें प्रवेश करते हैं। जिन पहाड़ी कौमोंमें बहुत कम सेवक काम करते हैं। वहां आप काम कर रहे हैं। सो मुझे अच्छा लगता है। आपका काम प्रतिदिन आगे बढ़ता रहे[1]।

बापूके आशीर्वाद

श्री धर्मदेव शास्त्री

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

६८४. पुर्जा : चाँदरानीको[2]

[८ जुलाई, १९४५][3]

बापूके

आशीर्वाद

पत्रकी नकलसे : चाँदरानी पेपर्स। सौजन्य : राष्ट्रीय गांधी संग्रहालय और पुस्तकालय

१. तात्पर्य धर्मदेव शास्त्री द्वारा जुलाई, १९४२ में संस्थापित अशोक आश्रमसे है। देखिए पृ० २३८, पा० टि० १।

२ और ३. यह पुर्जा चाँदरानीके नाम ८ जुलाई, १९४५ को लिखे डॉ० सुशीला नैयरके पत्रपर लिखा था। देखिए पृ० ४०२ भी।

६८५. पुर्जा : मॉरिस फ्रीडमैनको[1]

शिमला वेस्ट
९ जुलाई, १९४५

तुम जबतक चाहो अदयारमे ठहर सकते हो।

स्नेह।

बापू

श्री भारतानन्दजी
(मॉरिस फ्रीडमैन)
थियोसोफिकल सोसायटी
अदयार
मद्रास

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० ४४) से

६८६. पत्र : सुरेशचन्द्र दासको

शिमला
९ जुलाई, १९४५

प्रिय सुरेश,

तुम्हे अखबारमे छपी खबरोपर विश्वास नही करना चाहिए। प्रश्न क्रोधका था ही नही, आवश्यकताका था। लेकिन मै क्रोध कर बैठा और मूर्खतापूर्ण व्यवहार किया। तो तुमने देख लिया कि कितने दुर्बल आदमीपर तुम भरोसा करते हो?

हृदयसे आपका,
मो० क० गांधी

सुरेशचन्द्र दास

अंग्रेजीकी नकलसे प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य . प्यारेलाल

१. यह पुर्जा मॉरिस फ्रीडमैनके नाम डॉ० सुशीला नैयरकी चिट्ठीपर लिखा हुआ है।

६८७. पत्र : नरहरि द्वा० परीखको

मैनर विला, शिमला वेस्ट

९ जुलाई, १९४५

चि० नरहरि,

तुम आश्रम सँभाल नही सकते, ऐसी कोई बात नही है। तुम्हारा मन उसमे लगना चाहिए और तुममे आत्मविश्वास होना चाहिए। और तो बहुत लिखा जा सकता है, लेकिन समय कहाँ से लाऊँ? आज मौन है, और समितिकी[1] बैठक मेरे निवासपर नही हो रही।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (एस० एन० ९१३४) से

६८८. पत्र : मुन्नालाल गंगादास शाहको

९ जुलाई, १९४५

चि० मुन्नालाल,

तुम्हारा पत्र मिला।

कंचन व्यारा गई, अच्छा हुआ। कही भी जाये, पर पूर्ण स्वस्थ हो जाये तो अच्छा।

यह पत्र तो मै बस लिखने के लिए ही लिख रहा हूँ। तुम स्वस्थ रहना। मै आशा तो करता हूँ कि अब जल्दी ही वहाँ पहुँचूंगा। कामके लिए जितना जरूरी हो, उतना ही तुम बोलो और सब बोलें। बहसमे तो पड़ना ही नही चाहिए।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ८४४१) से। सी० डब्ल्यू० ५५८८ से भी; सौजन्य : मुन्नालाल गं० शाह

१. कांग्रेस कार्य-समिति

६८९. पत्र : कृष्णचन्द्रको

मैनर विला, शिमला
९ जुलाई, १९४५[1]

चि० कृ० च०,

तुम्हारा खत मिला। बुनाई कभी मत छोड़े। 'कपासकी हरेक क्रियामे पूर्ण बनो। खादी विद्यालयका समजा हू। तुमारे तो जो सेवा सहज मिले उसकी तैयार रखनी है।

बालकृष्णको अच्छा बनना ही चाहीये। क्या उसे अब पुना[2] जाने का उत्साह है? मेरे कहने से नही अपने दिलसे।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० ४५१७) से

६९०. पत्र : डॉ० बी० एस० मुंजेको

शिमला वेस्ट
९ जुलाई, १९४५

डाकट[र] साहेब,

आपका तार मिला था, अब खत मिला। मेरे ६० वर्षके अनुभवमें देखा है कि जिन्होंने मेरी बात मानी है उन्होंने कभी आत्महत्या नही की है।

आपका,
मो० क० गांधी

डा० बी० एस० मुजे
भोसले मिलिटरी स्कूल
नासिक

मूलपत्र (सी० डब्ल्यू० ९७६२) से; सौजन्य : नेहरू स्मारक संग्रहालय तथा पुस्तकालय। प्यारेलाल पेपर्स से भी; सौजन्य : प्यारेलाल

१. तारीख गुजरातीमें है।
२. दिनशा मेहताके नैसर्गिक चिकित्सालयमें

६९१. पत्र : बलवन्तसिंह और होशियारीको

शिमला
९ जुलाई, १९४५

चि० बलवन्त सिंह,

तुम्हारा खत मिला। मीराबहनसे वात की है। वह अव तक यही हैं। अगर अबतक आश्रममें ही हो तो मेरे वहा आने तक मत जाओ। मेरे आने के वाद देखेंगे।

चि० होशियारी,

मैं तो इतना काममें फसाहूं कि शायद ही स्मय मिलता है। अव तो उम्मीद है कि मैं जल्दी आश्रम पहुंचूगा। सब ईश्वरके हाथमे है।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

६९२. पत्र : अय्यादेवरा कालेश्वर रावको

९ जुलाई, १९४५

भाई कालेश्वर राव,[1]

आप लोग जो ग्राम उद्योगकी प्रदर्शनी कर रहे हैं वह शुद्ध स्वराजका काम है, ऐसा मेरा मत है।

बापुके आशीर्वाद

श्री कालेश्वर राव
बेजवाड़ा

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. मद्रास विधान[illegible]के सदस्य

६९३. पत्र : प्रभुदत्त शास्त्रीको

९ जुलाई, १९४५

भाई प्रभुदत्त शास्त्री,

आपका खत मिला है। यहा आने की तकलीफ उठाना है तो आ जाइए। चन्द मिनिट आपके लिए निकालूगा। काममे फुरसत कम रहती है। १-३० बजे तक समय मिलता ही नही।

आपका,
मो० क० गांधी

श्री प्रभुदत्त शास्त्री
लाहौर

पत्रकी नकलसे प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य · प्यारेलाल

६९४. पत्र : रमेशचन्द्रको

शिमला
९ जुलाई, १९४५

भाई रमेशचन्द्र,

विद्यार्थियोकी तरफसे आपका खत मिला है। जो सेवाकार्य करते हैं उसमे दूसरेके आशीर्वादकी गुजायश नही रहती। लेकिन आप लोगोके प्रयत्नमे मेरे आशीर्वाद है।

आपका,
मो० क० गांधी

पत्रकी नकलसे प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य प्यारेलाल

६९५. पत्र : राधाकृष्ण बजाजको

शिमला
९ जुलाई, १९४५

चि० राधाकिसन,[1]

तुम्हारे और किसीके छूटने का मुझे उत्साह नहीं है। रामकृष्ण[2] कैसा है? सब हाल दे दो। तुम्हारे छूटने से बहुत तो राजी हुए है, मैं जानता हूं।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

६९६. पत्र : ओमप्रकाश गुप्तको

शिमला
९ जुलाई, १९४५

चि० ओम प्रकाश,

सुनता हूं कि फिर कुछ विह्वलता आई है। वह मनुष्य है जो विविधसे अनुकूल होता है और अलिप्त रहता है और अनासक्त। मैं नहीं जानता कब ईश्वर मुझे आश्रम भेजेगा। आशा तो है कि अब जल्दी आऊंगा।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१ और २. ज[illegible]ल बजाजके क्रमशः भतीजे और पुत्र

६९७. तार : कमलनयन बजाजको

शिमला
१० जुलाई, १९४५

कमलनयन बजाज
मार्फत : श्री
बम्बई

रामकृष्णके बारेमे सुनकर खुशी हुई।

बापू

[अंग्रेजीसे]
पाँचवें पुत्रको बापूके आशीर्वाद, पृ० २९४

६९८. पत्र : जानकीदेवी बजाजको

शिमला
१० जुलाई, १९४५

चि० जानकी मैया,

अब तो रामकृष्ण छूट गया और राधाकिशन भी। तुम्हारा और दादीजी का दिल शान्त हुआ न? देखता हूँ, अब गोसेवा कैसी करती हो?

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ३०३४) से

६९९. पत्र : रामकृष्ण बजाजको

शिमला
१० जुलाई, १९४५

चि० रामकृष्ण,

किसीके छूटने से मेरे अन्तरमे हर्ष नहीं होता। तेरे छूटने से हुआ है। तुझे तो लाभ ही हुआ है। जेल सबसे ज्यादा तुझे ही फली है। [illegible] पढ़ाई तुम जेलमे

कर सके हो,' वह बाहर तो शायद ही कर सकते। मेरा हर्ष तो जानकीबहिन और दादीके लिए है। वे तुम्हारे और राधाकिसनके बिना तड़प रही थीं। मुझे सारा विवरण साफ अक्षरोंमें लिखना।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ३०६६) से

७००. पत्र : मदालसा अग्रवालको

शिमला वेस्ट
१० जुलाई, १९४५

चि० मदालसा,

तेरा क्या हाल है? मुझे लिखती क्यों नहीं? मैं चाहे जिस काममें व्यस्त होऊँ तेरा पत्र तो पढ़ूँगा ही। क्या ओम[2] मसूरी चली गई?

बापूके आशीर्वाद

[गुजरातीसे]
पाँचवें पुत्रको बापूके आशीर्वाद, पृ० ३२५

७०१. पुर्जा : आनन्द तोताराम हिंगोरानीको[3]

१० जुलाई, १९४५

बापूके आशीर्वाद,

तुम्हारी तबीयत अच्छी होगी। शक्ति आइ होगी।

बापू

पुर्जेकी माइक्रोफिल्मसे। सौजन्य: राष्ट्रीय अभिलेखागार और आनन्द तो० हिंगोरानी

१. रामकृष्ण बजाज नागपुर जेलमें बिनोबा भावेके साथ रहकर संस्कृत सीख रहे थे।
२. उमा अग्रवाल, मदालसाकी छोटी बहिन
३. हिंगोरानीके लिए ये पंक्तियाँ डॉ० सुशीला नैयरके पत्रपर लिखी हुई थीं।

७०२. तार : दत्तात्रेय बाल कालेलकरको

शिमला
११ जुलाई, १९४५

काका कालेलकर
'भारती भवन'
वर्धा

तुम्हारा तार मिला। आशा है दोनों ठीक होंगे।

बापू

अंग्रेजीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

७०३. पत्र : दत्तात्रेय बाल कालेलकरको

शिमला
११ जुलाई, १९४५

चि० काका,

तुमने तार भेजा, यह बहुत अच्छा किया।

तुम्हारी तबीयत ठीक होगी। हिन्दुस्तानीका काम तो तुम्हारे पास पड़ा ही है। मैंने तो बड़ी मुश्किलसे जितना बना किया। लेकिन उसके विशेषज्ञ तो तुम्ही हो।

अपना स्वास्थ्य सँभालकर ही सब-कुछ करना।

बालको[1] अब आना चाहिए।

सरदार यहाँ मेरे साथ ही है।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० १०९६३) से

१. दत्तात्रेय बा० कालेलकरके पुत्र

७०४. पत्र : किशोरलाल घनश्याम मशरूवालाको

शिमला
११ जुलाई, १९४५

चि० किशोरलाल,

अपने स्वभावके अनुसार तुमने लम्बा उत्तर दिया। तुमने जो अर्थ किया है उसे मैं स्वीकार करता हूँ। मुझे लगता है तुम्हें कर्तव्य करने की अपेक्षा जीने की आकांक्षा अधिक करनी है। लेकिन उसकी भी मैंने एक सीमा जरूर मानी है। लेकिन यह सब तो फुरसतमें।

तुम दोनों व्यर्थ ही नहीं जी रहे हो, ऐसा मैं मानता हूँ।

पत्रके बारेमें समझा। देखता हूँ कि क्या कर सकता हूँ? अब समय पूरा हो गया है और अभी थोड़ा लिखना बाकी है। विनोबाको काका तो मिले होंगे।

तुम्हारी फैलाव मुझे अच्छी लगती है।[1]

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

७०५. पत्र : मृदुला साराभाईको

शिमला
११ जुलाई, १९४५

चि० मृदु,

तेरा पत्र मिला। हम सेवाग्राममें ही मिलेंगे तब बातें करना और अपना फैसला करवाना। तू, बापा और मैं बैठेंगे।

व्यक्तिकी मौलिकता अथवा सृजन-शक्ति कभी खत्म नहीं होनी चाहिए। लेकिन मेरा अनुभव है कि जिसमें लगन है वह चाहे किसी भी स्थितिमें इस शक्तिका विकास करता है।

तू थकेगी, ऐसा कैसे चलेगा? लेकिन यदि थकावट हो ही जाये तो तुझे थोड़ा आराम कर लेना चाहिए।

मेरी इच्छा तो १५ तारीखको यहाँसे निकलने की और सीधे सेवाग्राम पहुँचने

१. देखिए पृ० ४२९ भी।

की है। लेकिन मैं, तू और सब परमशक्तिके हाथमें हैं। अपनी इच्छाओंको भी यदि हम उसके अधीन कर दें तो बोझ-मात्रसे छूट जायें।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

७०६. पत्र : विनोबा भावेको

शिमला
११ जुलाई, १९४५

चि० विनोबा,

तुम्हारे रिहा होने का तार बापाने दिया। उम्मीद है तुम शरीरसे स्वस्थ होगे। तुम्हारे लिए काम तो तैयार पड़ा ही हुआ है। उसमें बाबा[1] और गोखले तो हैं ही। जैसा ठीक लगे वैसा करना।

मैं कदाचित् १५ तारीखको यहाँ से रवाना होऊँगा।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी नकलसे प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य . प्यारेलाल

७०७. पत्र : रघुवीरको

शिमला
११ जुलाई, १९४५

भाई रघुवीर,

आपका खत मिला। आप तुरत शिमले आ सकें तो अच्छा होगा। हो सकता है कि मैं १५ तारीखको शिमला छोड़ूं। इसलिए आना हो तो शीघ्र ही आना चाहिए। अगर यहा आवें तो आपके ठहरने का प्रबन्ध आप खुद ही कर लेंगे ऐसा मान लेता हू।

आपका,
मो० क० गांधी

श्री रघुवीर
इन्टरनेशनल एकेडमी ऑफ इंडियन कल्चर
सरस्वती विहार
लाहौर

पत्रकी नकलसे . प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. महादेव मोघे

७०८. पत्र : एस० के० पाटिलको

शिमला
११ जुलाई, १९४५

भाई पाटिल,

तुम्हारा खत मिला। सर फीरोजशाहके[1] बारेमें छापने के लायक सन्देशा मैं क्या भेज सकता हूं? समय कहां है? भाई भरुचाने मुझे इस बारेमें लिखा था। उनको भी ऐसा ही कुछ मैंने लिखा था। ऐसे कामोंमें से मुझको भूल जाना चाहिए। बाकी मैं तो सर फीरोजशाह मेहताके गुण और उनकी सेवाएं जानता हूं और उनका अनुरागी हूं।

बापुका आशीर्वाद

श्री एस० के० पाटील
हीराहाउस
३८१, सैंडहर्स्ट रोड
बम्बई-४

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

७०९. पत्र : सत्यवतीको

शिमला
११ जुलाई, १९४५

चि० सत्यवती,

तेरा खत मिला। देशका नाम लेने से देश नहीं बचता, न देह बचती। रामका नाम कंठसे नहीं लेकिन हृदयसे लेने से देश बचता है और देह भी, अगर देहकी ऐसे कामके लिए आवश्यकता है तो। खुरशेद बहन और प्रभावती यहां हैं।

बापुका आशीर्वाद

श्री सत्यवती देवी,
ट्यूबरक्यूलोसिस हास्पिटल,
किंग्सवे [कैम्प], दिल्ली

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. (१८४५-१९१५); भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेसके संस्थापकोंमें से एक। संभवत: यहाँ उनकी जन्म-शताब्दीके बारेमें सन्देश भेजने का जिक्र है।

७१०. पत्र : श्यामलालको

शिमला
११ जुलाई, १९४५

भाई श्यामलाल,

तुम्हारा ६ तारीखका पत्र मिला है। श्री धर्मदेव शास्त्रीकी योजनाके बारेमें मैं सम्मति भेज चुका हूं।[1] प्रो० जगदीशनके[2] बारेमें बापासे ज्यादा माहिती [जानकारी] है। व्यक्तिके भलापन अनुभव और, दक्षतापर ज्यादा आधार रहता है। इसलिए अगर बापाकी पसदगी है और मुझको अधिकार है तो रु० १२५ या रु० १५० से डाक्टरको रोकने और कमिटीके नामोंको पसन्द करनेमें मेरी सम्मति है।

बापुके आशीर्वाद

श्री श्यामलालजी
कस्तुरबा स्मारक निधि दफ्तर
बजाजवाडी, वर्धा

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

७११. तार : मुहम्मद हमीदुल्ला खाँको

अविलम्बनीय

शिमला
१२ जुलाई, १९४५

भोपालके नवाब साहब
भोपाल

शुएबको रोक रहा हूँ।

गांधी

अंग्रेजीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. देखिए पृ० ४३०।
२. टी० एन० जगदीशन, जो कस्तूरबा गांधी राष्ट्रीय स्मारक निधिके कुष्ठ-सेवा कार्यका संचालन कर रहे थे।

७१२. तार : टी० प्रकाशमको

अविलम्बनीय

शिमला
१२ जुलाई, १९४५

टी० प्रकाशम[1]
मद्रास

आशा है कि ठीक होगे। यदि मिलना जरूरी हो तो सेवाग्राम मे मिलिए। मुझे उम्मीद है कि इतवार तक यहाँ से चल दूंगा।

गांधी

अंग्रेजीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

७१३. पत्र : अनन्तराय पी० पट्टणीको

शिमला
१२ जुलाई, १९४५

भाई अनन्तराय,

तुम्हारे पत्रके साथ भाई नरहरिका लिखा पत्र मिला है। जो उचित है वह कर रहा हूँ।

सब कुशलपूर्वक होगे।

बापूके आशीर्वाद

श्री अनन्तराय पट्टणी
दीवान साहब
भावनगर

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. कांग्रेसी नेता; संयुक्त मद्रास राज्यके मुख्यमंत्री थे और आन्ध्र राज्यके प्रथम मुख्यमंत्री बने।

७१४. पत्र : नृसिंहप्रसाद कालिदास भट्टको

शिमला
१२ जुलाई, १९४५

चि० नानाभाई,

इसके साथ भाई नरहरिको लिखे पत्रकी नकल भेजता हूँ। अब मुझे नाम भेजोगे तो बापाके साथ विचार-विमर्श करने के बाद उसके अनुसार तुम्हे भेजूँगा। जवाब मुझे सेवाग्राम भेजना। १५ तारीखको रवाना होने की आशा रखता हूँ।

और अभी बादमें।

तुम सबको
बापूके आशीर्वाद

श्री नानाभाई भट्ट
दक्षिणमूर्ति
आमला (भावनगर स्टेट)

गुजरातीकी नकलसे . प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

७१५. पत्र : अनन्तरामको

शिमला
१२ जुलाई, १९४५

चि० अनन्तराम,

तुम्हारा खत मिला। मैं तो मानता हू कि तुम्हारा ठीक चल रहा है, वचन पालनसे और भी ठीक होगा।

आशा रखता हूं कि अब जल्दी मिलेंगे।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

७१६. भाषण : प्रार्थना-सभामें[1]

शिमला
१२ जुलाई, १९४५

महात्मा गांधीने इस बातका जिक्र किया कि भीड़की अनुशासनहीनताके कारण उनकी मेजबानको भारी कष्ट हुआ। कई लोग मेनरविलाके सामनेवाले मकानमें जोकि राजकुमारी अमृतकौरके भाईका था घुस गये और उन्होंने वहाँ रखे गमलोंको तोड़-फोड़ डाला और बरामदेके जंगलेको नुकसान पहुँचाया। रानी साहिबाने मना किया तो वे उनसे बदतमीजीसे पेश आये। गांधीजी ने कहा कि इन बातोंसे मुझे बड़ा आघात पहुँचा है। मेरा जी चाहता है कि कहीं भाग जाऊँ। लेकिन आखिर मैं जहाँ भी जाऊँगा भीड़ भी मेरे साथ जायेगी। मै लोगोंसे भागकर कहीं नहीं जा सकता। मैं उनका नौकर हूँ और उनकी सेवा करने के लिए जीता हूँ।

गांधीजी ने कहा कि कई लोग प्रार्थना-सभामें केवल मेरे दर्शन करने आते हैं। मैंने बहुत बार लोगोंसे कहा है कि मै महात्मा नहीं हूँ। मै तो आपकी तरह साधारण मनुष्य हूँ। लेकिन मै यह मानता हूँ कि प्रत्येक श्वासके साथ मै ईश्वरका नाम जपता हूँ और जो भी काम करता हूँ ईश्वरको साक्षी मानकर करता हूँ। लेकिन ऐसा करने से मै महात्मा तो नहीं बन गया। हर मनुष्यको वैसा ही आचरण करना चाहिए जैसा कि मेरा दावा है कि मै करता हूँ। मनुष्यका पशुसे यही फर्क है। जो लोग प्रार्थना-सभामें आते हैं उनका कम-से-कम व्यवहार तो शिष्टतापूर्ण होना चाहिए। शस्त्रधारी सैनिक भी अनुशासनका पालन करते हैं और ठीक तरहसे व्यवहार करते हैं। जो लोग प्रार्थना करने आते हैं उनका व्यवहार अपेक्षाकृत अच्छा ही होना चाहिए न कि बुरा। प्रार्थना-सभामें आने का उद्देश्य ईश्वरकी स्तुति करना होना चाहिए और उसके लिए सबसे पहले विचारोंकी शुद्धताकी आवश्यकता होती है। अगर आप मनको वशमें नहीं रख सकते, तो आपको ईश्वरसे प्रार्थना करनी चाहिए कि वह आपको यह सामर्थ्य दे कि आप कम-से-कम प्रार्थनाके समय अपने विचार शुद्ध रख सकें। धीरे-धीरे और अभ्यास करते-करते आप हर समय अपने-आपको वशमें रखने के योग्य हो जायेंगे।

[अंग्रेजीसे]
हिन्दू, १४-७-१९४५

१. भाषणका मूल [illegible] पाठ उपलब्ध नहीं है।

७१७. तार : बलवन्तसिंहको

अविलम्बनीय

शिमला
१३ जुलाई, १९४५

बलवन्तसिंह
समरपुर
खुर्जा (बुलन्दशहर)

बच्चे सत्रह तारीखको दिल्लीसे साथ चले।

बापू

अंग्रेजीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

७१८. तार : सत्यनको

शिमला
१४ जुलाई, १९४५

सत्यनजी
प्रकृति आश्रम
भीमावरम

गोखलेजी के बारेमे अफसोस है। डॉ० राजुसे[1] पूरी जानकारी प्राप्त करके मुझे सेवाग्राम लिखना।

बापू

अंग्रेजीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. कृष्ण राजु

७१९. तार : शौकतुल्ला अन्सारीको

शिमला
१४ जुलाई, १९४५

डॉक्टर शौकतुल्ला अन्सारी
राजपुर रोड
दिल्ली

ईश्वर तुम्हें और जोहराको[1] शोक सहन करने की शक्ति दे।[2]
स्नेह।

बापू

अंग्रेजीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

७२०. पत्र : अमृतलाल वि० ठक्करको

शिमला
१४ जुलाई, १९४५

बापा,

तुम्हारा पत्र मिला। १७ तारीखको तुमसे मिलने की आशा करता हूँ। दिल्ली में कुछ घन्टे ही ठहर सकूँगा। पंजीयनके विषयमें भूलाभाईसे नहीं मिला। कारण मिलने पर बताऊँगा। ज्यादा लिखने का समय नहीं है।

बापू

श्री बापा
'हरिजन निवास'
किंग्सवे [कैम्प]
दिल्ली

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ११९५) से

१. शौकतुल्ला अन्सारीकी पत्नी
२. अन्सारीको पुत्र-शोक हो गया था।

७२१. पत्र : सम्पूर्णानन्दको

शिमला
१४ जुलाई, १९४५

भाई सम्पूर्णानन्द,

आपका खत मिला। आपने पूर्ण विचार नही किया है। खादीवाले शुद्ध होंगे तो खादी काम जड़वत् नही बनेगा। आज खादी हमारे पास बहुत कम है। खादी-शास्त्रका और खादी-कार्यका गहरा अभ्यास कीजिए।

आपका,
मो० क० गांधी

श्री सम्पूर्णानन्दजी
जालपा देवी
काशी
बनारस

पत्रकी नकलसे : सम्पूर्णानन्द कलेक्शन; सौजन्य : राष्ट्रीय अभिलेखागार। प्यारेलाल पेपर्स से भी; सौजन्य : प्यारेलाल

७२२. भेंट : शैलेन्द्रनाथ चट्टोपाध्यायको[1]

[१५ जुलाई, १९४५ या उसके पूर्व][2]

शरीरके भरण-पोषणके लिए भोजनकी जितनी जरूरत होती है, उससे कही अधिक आत्माके कल्याणके लिए प्रार्थनाकी जरूरत होती है। कई बार शरीरके फायदेके लिए भोजन बन्द करना पड़ता है। लेकिन प्रार्थनाको छोड़ने की जरूरत कभी नही पड़ती। यदि हम नश्वर शरीरके लिए भोजन जुटाते है, तो निश्चय ही यह हमारा प्रथम कर्तव्य है कि अनश्वर आत्माके लिए भी भोजनकी व्यवस्था करे और आत्माका भोजन है प्रार्थना। प्रार्थनाका असली मतलब है मन लगाकर आराधना करना।

शैलेन्द्रनाथ चट्टोपाध्याय : आप कभी शीशेमें अपना मुँह क्यों नहीं देखते?

गांधीजी : जब मुझसे मिलनेवाला हर आदमी मेरा मुँह देखता है, तब मुझे शीशा देखने की क्या जरूरत है?

१. यूनाइटेड प्रेस ऑफ इण्डियाके संवाददाता। उन्होंने गांधीजी से पूछा था कि "आपको अपनी दैनिक प्रार्थनासे क्या लाभ होता है और आप प्रार्थनापर इतना जोर क्यों देते हैं।"

२. यह भेंटवार्ता "शिमला, १५ जुलाई" की तिथि-पंक्तिके [illegible] छपी थी।

प्र० : आप मोटा गद्दा इस्तेमाल क्यों नहीं करते ?

उ० : भारतके करोड़ों गरीब लोगोंके साथ मिलकर एक होने के लिए मुझसे जो बन पडता है, करता हूँ।

प्र० : आप रेलके तीसरे दर्जेमें सफर क्यों करते हैं ?

उ० : इसका उत्तर भी पहलेवाले उत्तरमें है।

प्र० : आप भोजनके साथ नमक और मसाले क्यों नहीं खाते ?

उ० : मैं ऐसी कोई चीज क्यों खाऊँ जो मेरे शरीरके लिए जरूरी नही है।

[अंग्रेजीसे]
हिन्दू, १७-७-१९४५

७२३. तार : बलवन्तसिंहको

शिमला
१५ जुलाई, १९४५

बलवन्तसिंह
समरपुर
खुर्जा

निजामुद्दीन [स्टेशन] पर मिलो। हमारी स्पेशल गाड़ी सत्रह तारीखको दोपहर बारह बजे रवाना होगी।

बापू

अंग्रेजीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

७२४. तार : ए० जी० तेन्दुलकरको

शिमला
१५ जुलाई, १९४५

ए० जी० तेन्दुलकर
बेलगाम

इन्दुके खातिर खुशी है। तुम बीस तारीखके बाद मुझसे सेवाग्राम मे मिल सकते हो।

गांधी

अंग्रेजीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

७२५. पत्र : लॉर्ड वेवलको

मैनर विला, शिमला वेस्ट
१५ जुलाई, १९४५

प्रिय मित्र,

आपके १४ तारीखके पत्रके लिए आपको धन्यवाद। मुझे यह सोचकर खुशी होती है कि आपने समान उद्देश्यकी प्राप्तिके लिए मेरे प्रयत्नकी सराहना की है। जैसा कि शायद आप जानते होंगे, मैंने कल यहाँसे चले जाने का प्रवन्ध कर लिया है। कालकासे एक स्पेशल गाड़ी मुझे वर्धा पहुँचा देगी। सम्वन्धित अधिकारियोंके सौजन्यसे इसका प्रवन्ध हुआ है।

मुझे यह सोचकर दु:ख होता है कि जो सम्मेलन इतने अच्छे और आशाजनक ढंगसे शुरू हुआ था, वह प्रकटत: असफल रहा है और — जैसा कि लगता है — उसकी असफलताका विलकुल वही कारण है जो पहले था। इस वार आपने असफलताकी जिम्मेवारी अपने ऊपर ले ली है।[1] लेकिन दुनिया कुछ और ही सोचेगी। भारत निश्चय ही कुछ और सोचता है।

मैं आपसे अपना यह शक नहीं छिपाना चाहता कि असफलताकी तहमें यह वात थी कि शासकवर्ग अधिकार छोड़ने के लिए तैयार नहीं है। अपने भूतपूर्व कैदियोंके हाथमें व्यावहारिक अधिकार देने का मतलव उनका स्वय अधिकार छोड़ना ही होता।

खैर जो हुआ सो हुआ। कितने अफसोसकी वात है कि अगर मित्र-राष्ट्र नहीं तो कम-से-कम ब्रिटेन सम्मेलनकी सफलतासे जिस नैतिक ऊँचाईपर पहुँच गया होता, वह उसपर — कम-से-कम फिलहाल — तो नहीं पहुँच पायेगा।

मैं इस पत्रको विहारके मामलेका स्मरण कराये विना समाप्त नहीं कर सकता। आपने वातों-वातोंमें जो यह कह दिया था कि यह मामला साधारण डकैतीका है, जिसके लिए कानूनको सख्तीसे लागू करना जरूरी है, उससे मुझे वेचैनी हुई। यह कोई ऐसी डकैती नहीं थी। वह नवयुवक जिसे मौतकी सजा सुनाई गई है, पेशेवर डाकू नहीं है। वह गुमराह कांग्रेसी है जिसकी उम्र (मेरे ख्यालमें) २५ वर्षसे कम है और जिसकी पत्नीकी उम्र २० वर्ष है। मुझे दृढ आशा है कि ऐसी सव

१. वाइसरायने १४ जुलाईको सम्मेलनकी अन्तिम वैठकमें सम्मेलन असफल होने की घोषणा कर दी थी।

सजाएँ आजीवन कारावासमें बदल दी जायेंगी। यह मानवताकी न्यूनातिन्यून माँग प्रतीत होती है, चाहे वह उच्च राजनीतिकी माँग न भी हो।[1]

हृदयसे आपका,

मो० क० गांधी

महामान्य वाइसराय
शिमला

[अंग्रेजीसे]
गांधीजीज कॉरेस्पॉण्डेन्स विद द गवर्नमेंट, १९४४-४७, पृ० २९-३०

७२६. भाषण : प्रार्थना-सभामें[2]

शिमला
१५ जुलाई, १९४५

आजका आखरका दिन है। कल मैं सीमला छोडुंगा आप लोग अगर शांतिसे एक पीछे एक हरिजनोंके लिये देंगे तो मैं बैठा हुँ। जिनको दस्तखत चाहिये उन्हें भी दुंगा। आप कैसी शांति रखते हैं उसकी परीक्षा हो जायगी। आप लोगोंने मेरेपर दया की है मैं जानता हुं। अब जो देना चाहते हैं दें।

भाषणकी माइक्रोफिल्म (एम० एम० यू०/२४) से

७२७. पत्र : शान्ता पटेलको

१६ जुलाई, १९४५

चि० शान्ता,

तेरा पत्र कल मिला। यह मैं सवेरे प्रार्थनाके बाद लिख रहा हूँ। इसका जवाब सेवाग्राम भेजना।

१. वाइसरायने १८ जुलाईको उत्तरमें लिखा: "यह एक डकैतीका गम्भीर मामला है। मुंगेरके अतिरिक्त न्यायाधीशने जिस गवाहीके आधारपर महेन्द्र चौधरीको अपराधी पाया था, वह मुझे निर्णायक जान पड़ती है। हाई कोर्टने फाँसीकी सजाकी पुष्टि कर दी थी . . . प्रिवी कौंसिलने विशेष अपीलकी दरख्वास्त नामंजूर कर दी है। मुझे ऐसा कुछ नहीं दिखाई देता जिससे यह लगे कि महेन्द्र चौधरी एक राजनीतिक गुनहगार है . . .। मैंने यह फैसला किया है कि कानूनको अपना काम करने दिया जाये।"

२. उस दिन गांधीजीका मौन था, इसलिए उनका लिखित भाषण पढ़ा गया था।

जैसी पगली बचपनमे थी, वैसी ही पगली-की-पगली कम्युनिस्ट हो गई, और अब माँ हो गई, तब भी पगली ही है।

किस आश्रमने तेरा बहिष्कार किया? आश्रम कहाँ है? किसने बहिष्कार किया? मेरे साथ तो कई कम्युनिस्ट आकर रह गये। वैसे ही तू भी रह सकती है। जयन्ती[1] रह गया, वह तो तुझे मालूम होगा।

तुझे मालूम होना चाहिए कि मेरे पास कई शिकायतें आई है, लेकिन उनके बारेमे मैंने कुछ नही किया। मेरा पत्र-व्यवहार मन्त्रीजीके[2] साथ हो रहा है। उन्होने मुझसे उसे प्रकाशित करने की अनुमति माँगी थी, और मैंने अनुमति दे भी दी है। अब उन्होने प्रकाशित किया या नही, मुझे नही मालूम।

कार्य-समितिने कोई कार्यवाही नही की।[3] विचार करने का समय ही नही मिला।

अगर जवाहरलालजी विरोध करे, तो सब कम्युनिस्टोको आँखें खोलकर सोचना पड़ेगा। उनका झुकाव थोड़ा कम्युनिस्टोके पक्षमे है, लेकिन वे भी कोई अनौचित्य बर्दाश्त नही करेगे। मैं स्वय अभी अन्तिम निर्णयपर नही पहुँच सका। मेरे पास काफी शिकायतें आई हैं। मैंने वे सब मुख्य कार्यालयको भेज दी हैं।

तूने अपना पत्र बिना विचारे लिखा है। तू ठंडे दिलसे विचार करके लिखे, तो कम्युनिस्टोंकी बहुत सहायता कर सकती है।

कम्युनिज्म और कम्युनिस्टके बीच भेद करना। फिर कम्युनिज्म भी मार्क्सका एक है, लेनिनका दूसरा और स्टालिनका तीसरा। फिर तीसरेके भी दो भेद हैं। गाधी एक, गांधीवाद दूसरा, और गाधीवादी तीसरे। ऐसे भेद रहते ही हैं और रहा ही करेगे। कच्ची बुद्धिवाले ही इनमे से किसी भी एक पक्षके साथ हो जाते हैं।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ६६३९) से। सी० डब्ल्यू० ४२८७ से भी, सौजन्य: शान्ता पटेल

१. जयन्ती पारेख

२. पूरणचन्द्र जोशी; देखिए पृ० ६०-६१।

३. कांग्रेस कार्य-समितिने सितम्बरमें हुई बैठकमें कम्युनिस्ट पार्टीके कांग्रेसी सदस्योंके खिलाफ आरोपोंकी जाँच करने के लिए एक उप-समिति बनाई थी, जिसमें जवाहरलाल नेहरू, गोविन्दवल्लभ पन्त और वल्लभभाई पटेल शामिल थे।

७२८. पत्र : कनु गांधीको

शिमला
१६ जुलाई, १९४५

चि० कनैयो,

अभी प्रार्थनाके बाद कुछ पत्र लिख रहा हूँ। उनमे से एक यह है। यहाँका अभी कुछ नही करना है। जाने की तैयारी चल रही है।

मैंने तेरे सारे पत्र पढे है। अन्तिम कलका पढ़ा। मैं देखता हूँ कि तेरी वृत्ति मेरे साथ घूमने की थी। मेरी भी तुझे अपने साथ रखने की थी, लेकिन मैंने उसपर नियन्त्रण किया। चूंकि मुझे ज्यादा रहना था इसलिए तुझे बुलाने की इच्छा नही की। इसे मै उचित नहीं मानता। मैंने जिस खास कामके लिए तुझे रोका था उसमें तू बहुत सफल हुआ नहीं जान पड़ता। यह तो तू जब मिलेगा तब बतायेगा।

वहाँसे यदि तुझे फिर राजकोट जाना पड़ा तो जरूर जाना। एक बार नारणदासका काम पूरा कर दे। तुझे यदि कुछ कहना हो तो इसके बाद ही कहना और तब मैं तुझे अपने साथ घुमाना चाहूँगा। वानरराजकी[1] जरूरत न हो, ऐसा कभी हो सकता है क्या? ऋषि और ऋषि-पत्नीको आशीर्वाद।

बापूके आशीर्वाद

श्री कनु गांधी
मार्फत शान्तिकुमार
सिन्धिया हाउस
बम्बई

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स । सौजन्य : प्यारेलाल

१. श्रीराम भक्त हनुमान्

७२९. पत्र : गोप गुरुबख्शानीको

१६ जुलाई, १९४५

चि० गुरबक्सानी,

तुम दोनोंके बारेमें रा० कु० से बात हुई है। तुमारे उनसे बात करनी है।

विमला मूढसी लगती है सो अच्छा नही लगता। वह न बोलती है, न लिखती है। मुझे कुछ डर-सा लगता है कि तुमारा दबाव तो उसपर नही पडता है। ऐसा होना नही चाहीये। सत्यका पालन यंत्रवत् नही करना है। इच्छा और ज्ञानपूर्वक होना है। ऐसा होने से मनुष्य आगे बढता है।

तुमारे अपना खर्चकी समजपूर्वक मर्यादा बाधनी है।

मुझे सेवाग्राम लिखो।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० १३१७) से

७३०. रोजके विचार[1]

२५ अप्रैल, १९४५

सत्याग्रही कहलाने से मनुष्य सत्याग्रही नही बनता है। शुद्ध सत्यका पालन करने से ही मनुष्य सत्याग्रही बनता है।

२६ अप्रैल, १९४५

क्या देखने मे मैला वही मैला? सफेदमें मैला थोडासा भी आवे तो हम नाराज होते है। कालेमें कितना भी मैल पड़े, उसकी परवाह ही नही?

२७ अप्रैल, १९४५

काला हम दूषित मानते है, सफेद निर्दोष मानते हैं। लेकिन जब काला स्वाभाविक है तब वही गुण बनता है, जैसे सफेद अस्वाभाविक होने पर दोष माना जाता है।

१. गांधीजी ने २० नवम्बर, १९४४ से आनन्द हिंगोरानीके लिए "रोजके विचार" लिखने आरम्भ किये, जिन्हें आनन्द हिंगोरानीने **बापूके आशीर्वाद** शीर्षक पुस्तकके रूपमें प्रकाशित किया। इस खण्डमें सम्बन्धित अवधिके "रोजके विचार" एक ही शीर्षकके रूपमें लेखनकी अन्तिम तिथि अर्थात् १६ जुलाई, १९४५ के अन्तर्गत प्रकाशित किये गये हैं।

२८ अप्रैल, १९४५

अजीव बात है कि जो कहता है कि मैं मौतसे डरता नही हूं, वही बहुत डरता है और न मरने के इलाज करता है।

२९ अप्रैल, १९४५

पुत्र पिता माताको नमस्कार करता है सो प्रार्थना है। तो पिताका भी आदि पिता है, उसे क्या करें? प्रार्थनाका संकुचित अर्थ न करें।

३० अप्रैल, १९४५

आजके 'टाइम्स' का सुभाषित अच्छा लगा। उसका अर्थ यह है: "सचपर विश्वास रखो, सच ही सोचो, सच ही करो। असत्य कैसा भी जीतता जाता लगे, सत्यका मुकाबला कभी नही कर सकता।"

१ मई, १९४५

जिस जगह पाखंड है उस जगह कुछ अच्छा भी है, तो उसे लेने के लोभसे भी वहां मत जाओ। इसीका नाम सहकार है और वह त्याज्य है।

२ मई, १९४५

दूधमें जहर है तो हम दूधको फेंकते हैं। उसी तरह अच्छेके साथ पाखंड रूप जहर है तो उसे फेंको।

३ मई, १९४५

कन्फ्युश्यस कहते हैं: सुव्यवस्थित संस्थानमें धनसे उदय नहीं माना जाता है, लेकिन लोक और लोकनायककी पवित्रता ही उनका सच्चा धन है।

४ मई, १९४५

मन दो प्रकारके हैं—एक नीचे ले जाता है, दूसरा ऊंचे। इसे हम बराबर सोचें और पहचानें।

५ मई, १९४५

जैसे हमारी पीठ दूसरा आदमी ही देखता है, हम नहीं, ऐसे ही हमारे दोष भी हम नहीं देखते हैं।

६ मई, १९४५

क्या मौत हर हालतमे अति दुःखसे मुक्ति नही है? अगर है, तो शोक क्यो?

७ मई, १९४५

जिंदगी गुलाबके समान मनाई जाती है। जिंदगीमे भी काटा भरा है, इसलिये।

८ मई, १९४५

सच कहें तो डर एक ही होना चाहीये। वह है मैला या झुट करने से डरना।

९ मई, १९४५

कच्चा धान फेंकने लायक है। ऐसी [ऐसे] ही कच्चे कामका [को] समझना।

१० मई, १९४५

क्या बात है कि आदमी सच कहने से और करने से डरता है, झूटसे नही?

११ मई, १९४५

अंग्रेजी कहावत ठीक ही है कि मनुष्य सच्चे मोतसे कम मरता है। लेकिन डरके मारे कोई रोज मरते है, कोई रोज नहीं तो बार-बार मरते है। मैने बताया है कि सच्चा मोत तो अशांतिमे से मुक्ति है। डरसे मरना अशांति बढाता है और मनुष्यके हाल बुरे होते है।

१२ मई, १९४५

देवके कोई भी नाम हो, लेकिन उसमे देवके गुण हो तो हम उसे अवश्य नमस्कार करे।

१३ मई, १९४५

तब देव कैसा हो? निरंजन, निराकार, तो भी सब गुणोका भंडार और सब गुण होते हुए निर्विकार। तब देव पुल्लिग क्यो? यह व्याकरणकी बात हुई। हमारा देव निराकार होने के कारण वह न पुरुष है न स्त्री है।

१४ मई, १९४५

मनुष्य जब एक नियम तोडता है तो दूसरे अपने आप टूट जाते है।

२४ मई, १९४५

प्रतिक्षण अनुभव होता है कि "समताके फल मीठे होते हैं।"

२५ मई, १९४५

जिद और आग्रहमें बडा भेद है। जिद उसका नाम है जिससे हम अपनी बात दूसरोपर लादना चाहें। आग्रह उसका नाम है जिससे हम अपनेपर कोई चीज डालते हैं। उसका फल आता है कि दूसरे अपने आप उसे मानने लगते हैं।

२६ मई, १९४५

जब काम बहूत है और समय कम है, तो मनुष्य क्या करे? धैर्य रक्खे और जो ज्यादा उपयोगी माने उसे पूरा करे, और बाकी ईश्वरपर छोड दे। दूसरे रोज जिंदा होगा तो [जो] रह गया है उसे पूरा करेगा।

२७ मई, १९४५

मैंने ऐनक मु[ह] धोने के लिए उतारा। इरादा था कि उठा लूंगा। बादमें मैं भूल गया। क्यों? क्योंकि मैं कुछ भी और विचारमे डूब गया, और असावधान बना। इसीका नाम अव्यवस्था [है] जो भयंकर वस्तु है।

२८ मई, १९४५

जब आदमी कुछ बूरा काम करता है तो शरमीदा होता है। जब अच्छा करता है तो जाहिर होना चाहता है। क्यों?

२९ मई, १९४५

ईर्ष्या करनेवालेको खाती है। जिसकी वह ईर्ष्या करता है, वह अविच्छिन्न रहता है, शायद अनजान भी।

३० मई, १९४५

ईर्ष्यासे उलटी उदारता है। उदारतासे हम किसीका द्वेष नही करते, किसीके पास कुछ गुण है उसकी स्तुति करते है, और हम कुछ पाते हैं।

३१ मई, १९४५

मनुष्य अपनेको कैसे धोखा देता है, इसको मैं प्रतिक्षण पाता हू।

१ जून, १९४५

जो मनुष्य सबको खुश रखना चाहता है, वह किसीको खुश नही करेगा।

२ जून, १९४५

खुश करना तो खुदाको, खुशामद करना तो भी उन्हीकी, तो हम सब चिंता और झनझंटसे छुट जाते हैं।

३ जून, १९४५

खुदाको खुश कैसे करे? खुशामद कैसे करे? खुदाके इंसानकी खीदमत करके खुदाको खुश कर सकते हैं, खुशामद कर सकते हैं।

४ जून, १९४५

आदमीको जब ऐसी आदत होती है कि कब बोलता है, उसकी खबर नही रहती है, तब मु[ह] पर कपड़ा लपेटकर या होंठ सिलवाकर आदत निकाले।

५ जून, १९४५

इच्छा कई प्रकारकी होती है — शुभ, अशुभ और शक्य। शुभ और शक्य इच्छाका ही मनमें स्थान हो सकता है।

६ जून, १९४५

शास्त्रोंका अर्थ अनेक लोग अनेक करते हैं। सीधा रास्ता यह है कि जो अर्थ हमे जंचे वही करें और उसके मुताबिक चलें, भले हमारा अर्थ व्याकरणसे प्रतिकुल सिद्ध हो। शर्त यह है कि हमारा अर्थ नीतिका विरोधि न हो और हमको संयमकी ओर ले जाता हो।

७ जून, १९४५

असत्यवादी अपने लिये अनेक खिड़कीयां रखता है एक नही तो दूसरी खिड़कीसे निकल जाता है और मानता है: "मै कैसा हुशियार?" हकीकतमे अपने लिये बड़ी खड्डी खोदता है जिसमें वह पड़ता है।

८ जून, १९४५

उसके उलटा, सत्यवादी सब खिड़कीयां बन्द करता है, या कहो उसके पास न दीवाल है न खिड़की। आंख मुंदकर भी वह सीधे रास्तेपर जा सकता है। कभी खड्डेमे गिरता ही नही।

९ जून, १९४५

अनासक्ति कठिन है ऐसा कोई कहते हैं। है भी ऐसा। लेकिन जिस चीज की हमे दरकार है वह हमेशा कठिन नही रहती है क्या? जब हम भरसक प्रयत्न करते हैं तब कठिन वस्तु आसान हो जाती है।

१० जून, १९४५

समुदर बिंदुका बना हूआ है। उसका सबब तो यही है कि बिंदुओमे संपूर्ण सहयोग है। यही बात मनुष्यको लागु होती है।

११ जून, १९४५

अज्ञान छुपाने से बढ़ता है। अज्ञान बताने से आशा की जाय कि वह कभी न कभी कम होगा।

१२ जून, १९४५

कंठस्थ ज्ञानकी इतनी किम्मत है जितनी तोताके रामनामकी।

१३ जून, १९४५

अगर यह सही है और अनुभव वाक्य है तो समजा जाय कि जो ज्ञान कंठसे नीचे जाता है और हृदयस्थ होता है, वह मनुष्यको बदल देता है। शर्त यह [है] कि वह ज्ञान आत्मज्ञान है।

१४ जून, १९४५

कोई भी काम करके जब मनुष्य दु.ख मानता है, तो समजना कि वह ज्ञानपूर्वक नही करता लेकिन मजबूरन करता है।

१५ जून, १९४५

अनासक्तिकी सच्ची कसौटी तब होती है जब किसी कामके लिये हमारे मे आसक्तिका पूरा संभव पैदा होता है।

१६ जून, १९४५

मनुष्यकी आदत ऐसी है कि अपने दोषोको भूलकर दूसरोके देखता है, और बादमे निराशा ही रह जाती है।

१७ जून, १९४५

परमेश्वरपर विश्वास रखना सबसे आसान होना चाहीये, लेकीन सबसे कठिन वही दीखता है।

१८ जून, १९४५

बहूत गैरसमजकी जड अविश्वासमें होती है; बहूत अविश्वासकी जडमे भय होता है।

१९ जून, १९४५

भयके सिवाय प्रीत होती नही है ऐसा लौकिक कथन है। वह गलत है। सही यह है कि जहां भय है वहां सच्ची प्रीत होती ही नही।

२० जून, १९४५

मौनमें सर्व अर्थ सिद्धि है ऐसा अनुभव बढ़ता जाता है।

२१ जून, १९४५

आदमी अगर निक्कमी बात छोड़े और कामकी थोड़ेसे थोड़े शब्दोमे कहे तो बहूत समय अपना और दूसरोंका बचा लेता है।

२२ जून, १९४५

कलके वचनका नतीजा यह होता है कि अपने आयुष्यमे इतनी वृद्धि करता है।

२३ जून, १९४५

वही चीज एक निगाहसे देखे, गुस्सा आता है। दूसरी निगाहसे देखे, हंसी आती है। क्या, अच्छा यह नही कि हम न गुस्सा करे, न हंसी?

२४ जून, १९४५

जब कोई सच्चा ही वचन कहता है और वर्तन ऐसा ही करता है उसका असर हम रोज देखते है। फिर भी उस मुताबिक न बोलते है न करते हैं।

२५ जून, १९४५

जो मनुष्य त्याग करता है और दुःख मानता है उसने त्याग किया ही नही है। सच्चा त्याग सुखद होता है मनुष्यको उचे ले जाता है।

२६ जून, १९४५

सच्चा सहारा ईश्वरका ही हो सकता है लेकिन ईश्वर किसीके मार्फत ही मदद दे सकता है। इसलिये कोई जानबूझकर किसी दुर्बलकी मदद न ले।

२७ जून, १९४५

गुरु तेगबहादूर कहते हैं: "जो जीवन कम से कम ईजा करता है वह सादा है। जो कुछ भी ईजा नहीं करता, वही स्वच्छ है।" इसलिये जो मनुष्य कुछ भी बुराई नही करता है, वह शुद्ध धर्मका पालन करता है।

२८ जून, १९४५

कोई कहे इस रास्तेसे सीधे चले जाओ और उसी रास्तेसे आदमी जाये तो अपने ठिकाने पहोंचेगा। ऐसा रास्ता सत्य है। उसपर चलने से आदमी अपने ठिकाने कम से कम समयमें पहोंच जाता है।

२९ जून, १९४५

मुझे तो ईश्वरके बारेमें हर घड़ी प्रतीति होती है। फिर किसीसे डरना क्या?

३० जून, १९४५

एक शख्स आज आये और कहा: अगर मैं सच्ची सेवा न करू तो जीने मे मुझे कुछ रस ही नही है।

१ जुलाई, १९४५

जब तुमे कोई झूठा कहे या मुखालिफत करे तो गरम मत हो जाओ। शाति से अपनी बात कहना है तो कह दो, शायद मौन सबसे बेहतर है। किसीके झूठे बनाने से तुम झूठे नही बनते, अगर तुम सच्चे हो।

२ जुलाई, १९४५

झूठ आत्माको खा जाता है, सत्य आत्माको पुष्ट करता है।

३ जुलाई, १९४५

जो मजे नही खाने मे है वह खाने में नही है। ऐसा अनुभव कौन नही करता?

४ जुलाई, १९४५

अफवा[ह] सुनना नही, सुनना तो मानना नही।

५ जुलाई, १९४५

अपनी ऐब हमेशा सुने, अपनी स्तुती कभी न सुने।

६ जुलाई, १९४५

मैं कब और ईश्वर कब? उसका निश्चय करने मे ज्ञानकी परीक्षा है।

७ जुलाई, १९४५

ईश्वर तो एक ही है और हमेशा एकरूप या अरूप है। हम उसका आइना है। अगर हम सीधे है तो वह सीधा दीखता है। हम तेड़े हैं, तो वह भी तेड़ा लगता है। इसलिये हम हर तरह स्वच्छ ही रहे।

८ जुलाई, १९४५

किसीका एब निकालना एक बात है उसे साबित करना दूसरी बात है।

९ जुलाई, १९४५

एकांतकी खूबी जिसने जानबूझकर उसका सेवन किया है वही जानता है।

१० जुलाई, १९४५

जो आदमी सबकी पगधुली होता है वह ईश्वरके नजदीक है।

११ जुलाई, १९४५

बगैर विचारके विचार मत करो, मत बोलो, मत लिखो, और विचार करो। इससे कितना समय बच सकता है।

१२ जुलाई, १९४५

जैसे पिण्डमें ब्रह्मांड है ऐसे देहातमें हिंदुस्तान है।

१३ जुलाई, १९४५

अगर देहातमें हिंदुस्तान है तो एक देहात संपूर्ण बने तो हम जाण सकते हैं, सारे हिंदुस्तानमें क्या होना चाहीये और कैसे।

१४ जुलाई, १९४५

देहाती दृष्टिसे हिंदुस्तानका विचार करे, तो बहुत सी चीजे जो हम करते हैं निकम्मी मालुम पड़ती हैं।

१५ जुलाई, १९४५

जिंदगी मजा करने के लिये नहीं है लेकिन किर्तारको पहचानने के लिये और जगत्‌की सेवाके लिये है।

१६ जुलाई, १९४५

जिंदगी अगर प्राणी सेवाके लिये और ईश्वरको पहचानने के लिये ही है तो उसे पाक रखना और परहेजगार रखना अपना फर्ज है।

बापूके आशीर्वाद (रोजके विचार), पृ० १५७-२३९

परिशिष्ट

परिशिष्ट १

प्यारेलालका वक्तव्य[1]

परिपत्र देखने के बाद गांधीजी ने कहा कि उन्होने किसी भी प्रान्त या प्रान्तोके काग्रेस कार्यकर्ताओ अथवा कमेटियोको ऐसा अथवा कोई भी परिपत्र कभी नही भेजा। अतः इस बारेमे समाचारपत्रोमे जो बयान छपा है वह गलत है। उनका विचार है, और पत्रकारोसे भी उन्होने यही विचार व्यक्त किया है कि जबतक काग्रेस अध्यक्ष और उनके साथी जेलमे है तबतक काग्रेसजनोको अपनी ही समझ-बूझसे काम करना है। किसी भी व्यक्ति, गुट या संगठनको, चाहे वे स्वयको किसी नामसे भी पुकारे, काग्रेस संस्थाके नामपर या उसकी ओरसे काम करने का अधिकार नही है। काग्रेसका जो आदर्श है उसके हितमे कांग्रेसजनोंको जैसा ठीक समझे वैसा करने का अधिकार है, और यह उनका कर्त्तव्य भी है, पर ऐसा वे अपने बूतेपर और जिम्मेदारीपर करे। अपने निर्णय लागू करने के लिए वे काग्रेसके नामका प्रयोग नही कर सकते। गांधीजी ने आगे कहा कि यह उनकी व्यक्तिगत राय है।

[अग्रेजीसे]
बॉम्बे क्रॉनिकल, ११-५-१९४५

परिशिष्ट २

जयरामदास दौलतरामका पत्र आनन्द तो० हिंगोरानीको[2]

पचगनी
१० जून, १९४५

प्रिय भाई,

यहाँसे जो मैंने पत्र भेजा था वह तुम्हें मिल गया होगा। बापूको भेजा तुम्हारा तीन जूनका पत्र उन्हें आज मिला। उनपर कामका अधिक बोझ होने के कारण उन्होने इस पत्रका उत्तर देने के लिए मुझसे कहा है।

बापूने कहा है कि उन्हे तुम्हारा पहला पत्र भी मिल गया था, परन्तु अत्यधिक

१. देखिए पृ० १२८।
२. देखिए पृ० ३०५।

व्यस्त होने के कारण वह जवाब नहीं दे पाये। यहाँ आनके बाद ही मुझे ज्यादा अच्छी तरह मालूम हुआ है कि उनपर कामका कितना जबरदस्त दबाव है। कार्य-क्षमतामें कमी आने के कारण वह कामको थोड़ा-थोड़ा करके ही निबटा पाते हैं। पहले की तरह उनसे अब तुरन्त कार्य नहीं होता। इसके अलावा देशमें आजकल जो हो रहा है उसमें भी उनका काफी समय चला जाता है।

'रोजके विचार' के बारेमें बापूने पूछा है कि क्या यह केवल हिन्दीमें ही प्रकाशित होगा या साथ-साथ इसका अंग्रेजी अनुवाद भी प्रकाशित किया जायेगा। अगर इसका अंग्रेजी अनुवाद भी होना है तो वह स्वयं इसे देखना चाहेंगे, लेकिन इस समय ऐसा करना उनके लिए सम्भव नहीं है। मुझे ठीक तरह याद नहीं पड़ता कि अंग्रेजी अनुवादके बारेमें हम लोगोंने क्या निर्णय लिया था। अतः तुम कृपया लौटती डाकसे मुझे लिखना। यदि इसका केवल हिन्दी संस्करण ही है तो बापूको इसके लिए प्रस्तावना लिखने में कोई मुश्किल नहीं होगी। शायद इसके लिए समय निकालना उनके लिए आसान होगा।

अपनी पुस्तक 'टु द स्टेट्समैन ऑफ द वर्ल्ड' से सम्बन्धित जो प्रश्न तुमने बापूको भेजे थे उनके बारेमें बापूका कहना है कि उन्हें उत्तर देनेमें प्रसन्नता होती परन्तु इस समय यह बोझ भी उठाने का उनका मन नहीं है। इसलिए तुम्हें अपने प्रश्नोंके उत्तरके बिना ही काम चलाना पड़ेगा।

मैंने बापूसे 'नवजीवन' और "गांधी सीरीज" के बारेमें बात की थी। उन्होंने कहा कि चूँकि नरहरिभाई इस समय यहाँ हैं अतः उनकी बातको मुझे व्यक्तिगत रूपसे सुनना चाहिए। इसलिए कल शाम मैंने उनसे थोड़ी देर बात की थी और आज फिर मैं उनसे आगे विचार-विमर्श करूँगा। तब पता चलेगा कि क्या बात बनती है।

क्या तुम्हारे पास अपनी पुस्तक 'टु द स्टेट्समैन' छपवाने के लिए पर्याप्त कागज है? मुझे पता चला है कि सरकार कागजका कोटा बढ़ा रही है। यह कहाँतक सच है? अपने बारेमें सब समाचार लिखना। हस्साका क्या हाल है?

बापूकी लिखी कुछ पंक्तियाँ इसके साथ भेज रहा हूँ।

बहुत सा प्यार।

तुम्हारा,
जयराम

सिन्धीकी माइक्रोफिल्मसे। सौजन्य: राष्ट्रीय अभिलेखागार और आनन्द तो० हिंगोरानी

परिशिष्ट ३
वाइसराय द्वारा प्रसारण

१४ जून, १९४५

मुझे महामहिमकी सरकार द्वारा भारतीय राजनीतिक दलोके नेताओंके सम्मुख ऐसे प्रस्ताव रखने के लिए अधिकृत किया गया है जिनसे वर्तमान राजनीतिक स्थितिमे सुधार लाया जा सके और भारत पूर्ण स्वायत्त शासनके अपने लक्ष्यकी ओर आगे बढ़ सके। इस समय भारत-मन्त्री द्वारा संसदको इन प्रस्तावोके बारेमे विस्तृत जानकारी दी जा रही है। अत. इस प्रसारणमें मेरा इरादा आपको इन प्रस्तावो और उनकी प्रेरक भावनाओसे अवगत कराना है। साथ ही मुझे इन प्रस्तावोको किस प्रकार कार्यान्वित करना है, उसके बारेमे भी आपको कुछ बताना चाहूँगा।

यह किसी सवैधानिक समझौतेको स्वीकार कराने या थोपने का प्रयास नही है। महामहिमकी सरकारको तो यह आशा थी कि भारतीय [राजनीतिक] दलोके बीच साम्प्रदायिक प्रश्न पर, जो कि हमारे रास्तेमें असली रुकावट है, कोई समझौता सम्भव हो जायेगा, परन्तु ऐसा हुआ नही।

इस समय भारतके सामने लाभ उठाने के लिए अनेक अवसर है और सुलझाने के लिए अनेक बड़ी-बड़ी समस्याएँ है, पर इसके लिए सभी राजनीतिक दलोके नेताओ द्वारा सयुक्त प्रयास आवश्यक है। इसलिए महामहिमकी सरकारके पूर्ण समर्थनके साथ मेरा इरादा है कि मै [शिमला सम्मेलनमे][1] भारतके केन्द्रीय और प्रान्तीय दलोके नेताओंको एक नई कार्यकारी परिषद्की स्थापनाके बारेमे, जोकि सगठित राजनैतिक मतका बेहतर प्रतिनिधित्व कर सके, विचार-विमर्शके लिए आमन्त्रित करूँ। प्रस्तावित परिषदमें [देशके] मुख्य सम्प्रदायोंका प्रतिनिधित्व होगा और इसमें सवर्ण हिन्दुओ और मुसलमानोकी संख्या बराबर होगी। यदि इस परिषद्की स्थापना हुई तो यह वर्तमान सविधानके अन्तर्गत अपना काम करेगी। यह एक पूर्णत भारतीय परिषद् होगी। केवल वाइसराय व कमांडर-इन-चीफ, जो कि पूर्ववत् इसके युद्ध सदस्य बने रहेंगे, इसके अपवाद होंगे। ऐसा भी सुझाव है कि ब्रिटिश-भारतके हितोके ध्यानमे रखते हुए विदेशी मामलोंका कार्यभार, जो अबतक वाइसरायके हाथमें था, अब परिषद्के एक भारतीय सदस्यके हाथमें रहेगा।

महामहिमकी सरकारका अगला प्रस्तावित कदम अन्य अधिराज्योकी तरह भारत मे भी ब्रिटेनके एक उच्चायुक्तकी नियुक्तिका है जो भारतमे ग्रेट ब्रिटेनके व्यापारिक और अन्य हितोंका प्रतिनिधित्व करेगा।

१. देखिए पृ० ३४४, ३४५, ३४७ और ४१३।

आप यह महसूस करेंगे कि इस प्रकार गठित नई कार्यकारी परिषद् स्वायत्त शासनके मार्गपर निश्चित प्रगतिकी द्योतक है। यह लगभग पूरी तरहसे भारतीय होगी, और पहली बार इसके वित्त व गृह सदस्य भारतीय होंगे, तथा भारतके विदेशी मामलोंकी जिम्मेदारी भी किसी भारतीयको ही सौंपी जायेगी। इतना ही नहीं, बल्कि अब ये सदस्य गवर्नर-जनरल द्वारा राजनीतिक नेताओंके साथ विचार-विमर्श करने के बाद चुने जायेंगे; हाँ, उनकी नियुक्ति महामहिम सम्राटकी सहमतिसे ही होगी।

यह परिषद् वर्तमान संविधानके अन्तर्गत ही अपना काम करेगी। गवर्नर-जनरल द्वारा नियन्त्रणके अपने संवैधानिक अधिकारके प्रयोगको छोड़ने का तो कोई सवाल ही नहीं उठता, लेकिन इस अधिकारका बेशक अनुचित प्रयोग नहीं किया जायेगा।

मैं यहाँ यह स्पष्ट कर देना चाहता हूँ कि इस अन्तरिम सरकारकी स्थापना अन्तिम संवैधानिक समझौतेके लिए किसी तरह भी हानिकर साबित नहीं होगी।

इस नई कार्यकारी परिषद्के मुख्य काम इस प्रकार होंगे:

पहला, जापानके विरुद्ध युद्धको पूरी शक्तिसे तबतक चलाना, जबतक जापान पूरी तरहसे हार न जाये।

दूसरा, जबतक ब्रिटिश भारतमें सरकार चलाना—जिसके सम्मुख युद्धोत्तर विकासके अनेक कार्य हैं।

तीसरा, जब सम्भव हो तब सरकारके सदस्यों द्वारा, उन उपायोंके बारेमें विचार करना जिनसे ऐसा समझौता मुमकिन हो सके। यह तीसरा काम सबसे ज्यादा महत्त्वपूर्ण है। मैं यह बात बिलकुल साफ कर देना चाहता हूँ कि न तो मैं और न ही महामहिमकी सरकार इस समस्याके दीर्घकालिक हलकी जरूरतको भूले हैं, और यह कि वर्तमान सुझावोंका लक्ष्य वस्तुतः ऐसा दीर्घकालिक हल ढूँढने का काम आसान करना ही है।

मैंने इसपर विचार किया है कि ऐसी परिषद्में गठनका सर्वोत्तम ढंग क्या हो सकता है और इस बारेमें मुझे सलाह देने के लिए मैंने निम्नलिखित लोगोंको वाइसराय भवनमें आमन्त्रित किया है:

प्रान्तीय सरकारोंके मुख्य मन्त्री या इस समय धारा ९३ के अधीन प्रान्तोंमें इस धाराके लागू होने से पूर्व जो व्यक्ति मुख्य मन्त्रियोंके पदपर थे।

केन्द्रीय व्यवस्थापिका सभामें कांग्रेस दलके नेता और मुस्लिम लीगके उपनेता, राज्य परिषद्में कांग्रेस दल व मुस्लिम लीगके नेता और केन्द्रीय व्यवस्थापिका सभामें नेशनलिस्ट दल व यूरोपीय गुटके नेता।

श्री गांधी और श्री जिन्ना, दो मुख्य राजनीतिक दलोंके मान्य नेताओंके रूपमें।

अनुसूचित जातियोंका प्रतिनिधित्व करने के लिए रायबहादुर एन० शिवराज, तथा सिखोंका प्रतिनिधित्व करने के लिए मास्टर तारा सिंह।

इन सब महानुभावोंको आज निमन्त्रण-पत्र दिये जा रहे हैं। सम्मेलन २५ जूनसे शिमलामें प्रारम्भ करने का विचार है, जहाँ कि मौसम दिल्लीकी अपेक्षा अधिक ठंडा होगा।

मुझे आशा है कि सभी आमन्त्रित महानुभाव इस सम्मेलनमे भाग लेकर मुझे अपना सहयोग देंगे। भारतके भविष्यका निर्धारण करने की दिशामें किये जा रहे इस नये प्रयासकी सफलताके लिए मेरे और उनके ऊपर एक बड़ी जिम्मेदारी होगी।

अगर यह सम्मेलन सफल होता है तो मुझे आशा है कि हम केन्द्रमे नई कार्यकारी परिषद्के गठनके बारेमे सहमत हो जायेंगे। मैं यह भी आशा करता हूँ कि प्रान्तोमें मन्त्रिमण्डल शीघ्र ही फिर पद-भार ग्रहण कर सकेंगे और जो प्रान्त इस समय सविधान अधिनियमकी धारा ९३ के अधीन हैं वहाँ फिरसे सरकार चलाने का काम अपने हाथमे ले लेंगे। ये मन्त्रिमण्डल बहुदलीय होंगे, ऐसी भी मेरी आशा है।

यदि दुर्भाग्यवश यह सम्मेलन सफल नही होता तो जबतक ये दल एक दूसरेसे सहमत नही हो जाते तबतक हमें वर्तमान व्यवस्था कायम रखनी है। अगर किसी और व्यवस्थाके बारे में सहमति नही हो पाती तो वर्तमान कार्यकारी परिषद्, जिसने भारतके लिए इतना बहुमूल्य काम किया है, अपना काम जारी रखेगी।

लेकिन मुझे पूरी आशा है कि अगर विभिन्न दलोके नेता समस्यापर मेरे साथ और अपने अन्य साथियोके साथ मिल-बैठकर सच्ची नीयतसे उसे सुलझाने की कोशिश करेंगे तो यह सम्मेलन अवश्य सफल होगा। मैं उन्हे यह विश्वास दिला सकता हूँ कि इस प्रस्तावके पीछे ब्रिटेनके सभी जिम्मेदार नेताओकी, बल्कि सारी ब्रिटिश जनता की भारत द्वारा अपने लक्ष्य-प्राप्तिमे सहायता करने की इच्छा है। मेरा खयाल है कि यह उस लक्ष्यकी ओर अग्रसर एक कदम ही नही अपितु एक लम्बा कदम है और सही मार्गपर लम्बा कदम है।

यहाँ मैं यह बात स्पष्ट कर दूँ कि इन प्रस्तावोका सम्बन्ध केवल ब्रिटिश भारतसे है और इनसे देशी नरेशो और सम्राटके प्रतिनिधिके बीच सम्बन्धोमें कोई परिवर्तन नही आयेगा।

महामहिमकी सरकारकी अनुमतिसे, और अपनी परिषद्के साथ विचार-विमर्शके उपरान्त, काग्रेस कार्य-समितिके उन सदस्योकी तुरन्त रिहाईके आदेश जारी कर दिये गये हैं जो अभी भी नजरबन्द हैं। १९४२ के उपद्रवोके सिलसिलेमें जो अन्य लोग कारावासमे हैं उनके बारेमें अन्तिम निर्णय मैं, यदि नई केन्द्रीय सरकार बनी तो उसपर और प्रान्तीय सरकारोपर छोड़ता हूँ।

केन्द्रीय और प्रान्तीय विधान मण्डलोंके दुवारा चुनावोंके लिए उचित समयके बारेमे सम्मेलनमे विचार किया जायेगा।

अन्तमे मैं चाहूँगा कि आप सद्भाव और परस्पर विश्वासका वातावरण बनाये रखे जो कि हमारी प्रगतिके लिए अत्यन्त आवश्यक है। भारतके इतिहासके इस नाजुक मोड़पर इस महान देशका और यहाँ बसनेवाले लाखो निवासियोका भविष्य ब्रिटिश और भारतीय नेताओकी बुद्धिमत्ता और समझ-बूझपर — आचार और विचार दोनोमे — निर्भर करता है।

सैनिक दृष्टिसे भारतका यश संसारमें आज जितना प्रद्[illegible] है उतना पहले कभी नही था; इसका श्रेय देशके हर भागसे सेनामे भर्ती उसके सपूतोंको है। अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलनोंमे भारतके प्रतिनिधियोने अपनी राजनीतिज्ञताके कारण काफी सम्मान प्राप्त

किया है। भारतकी उच्चाकांक्षाओं और समृद्धि-पथपर प्रगतिके लिए लोगोकी शुभेच्छा इससे अधिक अथवा इतनी व्यापक पहले कभी नही रही। हमारे पास शानदार सम्पदा है बशर्ते कि हम उनका बुद्धिमानी से उपयोग कर सके। लेकिन यह काम आसान नही है और न यह शीघ्र पूर्ण ही होगा। हमें बहुत-कुछ करना है और हमारे रास्तेमे बहुत-सी अड़चने हैं और खतरे भी। हममे से हर एक पत्रको कुछ-न-कुछ सहन करना है, और कुछ की ओर ध्यान नही देना है।

भारतके भविष्यमें मेरा विश्वास है और जहाँतक मुझसे सम्भव होगा मैं उसकी गौरव-वृद्धि ही करूँगा। मुझे आप सबका सहयोग और सद्भाव अपेक्षित है।

अंग्रेजीकी नकलसे: अ० भा० कांग्रेस कमेटी फाइल स० १४३९, १९४५। सौजन्य : नेहरू स्मारक संग्रहालय तथा पुस्तकालय

परिशिष्ट ४

लॉर्ड वेवलका तार[1]

तुरत

नई दिल्ली
१६ जून, १९४५

श्री मो० क० गांधी
पंचगनी

आपके १५ जूनके तारके लिए अनेक धन्यवाद। आजके अखबारोमें मैंने आपका वक्तव्य भी देखा है। जहाँतक सम्मेलनमें आपकी उपस्थितिका प्रश्न है, मैं आपके उस पत्रकी प्रतीक्षा करूँगा जिसका हवाला आपने अभी-अभी प्राप्त अपने १५ जूनके तारमे दिया है। मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि "सवर्ण हिन्दू" शब्दका प्रयोग किसीका अपमान करने के इरादेसे नही किया गया। इसका अर्थ केवल यह था कि अनुसूचित जातियोके हिन्दुओंको छोड़कर शेष हिन्दुओं और मुसलमानोके साथ समान व्यवहार होना चाहिए। इस बातको ध्यानमें रखते हुए परिषद्के निश्चित गठनके बारेमे निर्णय तो सम्मेलनके बाद ही लिया जा सकेगा। स्वतन्त्रताके प्रश्न पर मैं आपका ध्यान भारत-मन्त्रीके संसदमे दिये गये और भारतीय प्रेसमें छपे १४ जूनके वक्तव्यकी ओर आकर्षित करता हूँ। उसका सम्बन्धित अंश इस प्रकार है: "मार्च १९४२ की पेशकशपर हम अब भी पूरी तरहसे कायम है। यह पेशकश दो मुख्य सिद्धान्तोंपर आधारित है। पहला यह कि न केवल राष्ट्रमण्डलके एक स्वतन्त्र सदस्यके रूपमे, बल्कि इसकी सदस्यतासे बाहर रहकर

1. देखिए पृ० ३४५ और ३६८।

भी भारत अपने भविष्यके वारेमें कोई भी निर्णय लेने के लिए पूरी तरहसे स्वतन्त्र है। दूसरा, यह भारतीयो द्वारा वनाये गये किसी ऐसे सविधान या सविधानो की सीमामें रहकर ही सम्भव है जिसकी रचना विभिन्न दलोकी परस्पर सहमतिके आधारपर की गई हो।" मेरे प्रसारणके मुद्दोमें फेर-बदल व्यवहार्य नही है। यह तो महामहिमकी सरकार द्वारा स्वीकृत प्रस्तावोसे सम्बन्धित सीधा-सादा वक्तव्य है। और मेरा सम्मेलनमे ही ऐसे मुद्दोसे निबटने का इरादा है जिनमे स्पष्टीकरणकी आवश्यकता हो। मै सम्मेलनसे पहले ही किसी मुद्देपर विस्तृत विचार-विमर्श करना उचित नही समझता, क्योकि आपकी ही तरह मुझे भी यही आशा है कि यह सम्मेलन सद्भाव-पूर्ण वातावरणमें और विना किसी दलील कडवाहटके होगा। जैसा कि आपका सुझाव है मै आपके और अपने तार समाचारपत्रोको प्रकाशनार्थ दे रहा हूँ।

वाइसराय

[अग्रेजीसे]
गांधीजीज कॉरस्पॉण्डेन्स विद द गवर्नमेन्ट, १९४४-४७, पृ० २१

परिशिष्ट ५
देसाई-लियाकत समझौता[१]

कांग्रेस और लीग मिलकर केन्द्रमे अन्तरिम सरकारके गठनमे भाग लेनेके लिए सहमत हैं। इस सरकारकी स्थापना निम्नलिखित आधारपर होगी।

(क) केन्द्रीय कार्यकारी परिषद्मे कांग्रेस और लीग द्वारा समान सख्यामे सदस्य मनोनीत किये जायेगे (इस प्रकार मनोनीत सदस्योका केन्द्रीय विधानमण्डलका सदस्य होना आवश्यक नही है)।

(ख) अल्पसख्यकोके (विशेषकर अनुसूचित जातियो और सिखोके) प्रतिनिधि होगे।

(ग) कमाडर-इन-चीफ।

सरकारकी स्थापना और कामकाज वर्तमान भारत सरकार अधिनियमके अनुसार होगा। यह मान लिया गया है कि अगर मन्त्रिमण्डल किसी विशेष विधेयकको विधान-सभा द्वारा पारित नही करा पाता है तो वह उसे लागू कराने के लिए गवर्नर-जनरल अथवा वाइसरायके विशेष अधिकारोका सहारा नही लेगा। इस प्रकार वह गवर्नर-जनरलके प्रभावसे पर्याप्त रूपसे स्वन्त्र रह सकेगा।

कांग्रेस और लीग इस बातके लिए सहमत हैं कि अगर ऐसी अन्तरिम सरकार वनी तो उसका पहला काम कांग्रेस कार्य-समितिके सदस्योको मुक्त कराना होगा।

१. देखिए पृ० ३४८ और ३६७।

यह लक्ष्य प्राप्त करने के लिए जो प्रयास किये जायेंगे वे फिलहाल निम्नलिखित होंगे :—

उपर्युक्त समझौतेके आधारपर कोई ऐसा तरीका निकालना चाहिए जिससे गवर्नर-जनरल यह प्रस्ताव या सुझाव पेश करें कि वह कांग्रेस और लीगके बीच समझौता होने की हालतमें केन्द्रमें अन्तरिम सरकारकी स्थापना चाहते हैं। जब गवर्नर-जनरल श्री जिन्ना और श्री देसाईको इकट्ठे या अकेले आमन्त्रित करें तो उनके सामने उपर्युक्त प्रस्ताव रखकर यह घोषणा की जायेगी कि सरकारमें सम्मिलित होने के लिए वे तैयार हैं।

अगला कदम प्रान्तोंमें धारा ९३ को हटाने का और वहाँ शीघ्रातिशीघ्र मिली-जुली प्रान्तीय सरकारें बनाने का होगा।

अंग्रेजीकी नकलसे: अ० भा० कांग्रेस कमेटी फाइल सं० १८१४, १९४५।
सौजन्य : नेहरू स्मारक संग्रहालय तथा पुस्तकालय

परिशिष्ट ६

लॉर्ड वेवलका तार[1]

१८ जून, १९४५

कलके दोनों तारोंके लिए धन्यवाद। मेरा विचार है कि मेरा निमन्त्रण मौलाना अबुल कलाम आजादको शीघ्रातिशीघ्र मिल जाना चाहिए और इसलिए मैंने उन्हें निमन्त्रण कलकत्ता तार द्वारा भेज दिया है। २. श्री एमरीका संसदमें बयान और रेडियोपर मेरा प्रसारण शिमला सम्मेलनके लिए, जिसके २५ तारीखको शुरू होने की मैं अब भी आशा रखता हूँ, विचारार्थ विषय हैं। स्पष्टतः मैं अपने प्रसारणमें परिवर्तन नहीं कर सकता और यह मैं आपको पहले ही बता चुका हूँ कि इसके बारेमें सम्मेलनसे पहले विस्तृत विचार-विमर्शमें पड़ना मैं वांछनीय नहीं समझता। किसी भी सम्बन्धित व्यक्ति अथवा किसी गुटसे इन प्रस्तावोंका इस समय अनुमोदन या अस्वीकृति अपेक्षित नहीं है। तात्कालिक प्रश्न तो केवल यह है कि क्या ये प्रस्ताव सम्मेलनमें चर्चाके योग्य हैं और इसी प्रश्नके उत्तरसे काफी सहायता मिलेगी। ३. मेरा अब भी यही विचार है कि सम्मेलन २५ को ही होना चाहिए। यह कुछ समय चलेगा, और इसके आरम्भ होने में विलम्बसे इसकी सफलताकी आशा कोई बढ़ेगी नहीं। ४. आपका १६ जूनका पत्र, अपना १७ जूनका तार, आपके १७ जूनके दो तार और यह तार मैं प्रेसको प्रकाशनार्थ दे रहा हूँ।

[अंग्रेजीसे]
हिन्दू, २०-६-१९४५

1. देखिए पृ० ३६०।

परिशिष्ट ७

भारत-मन्त्री द्वारा संसदमें वक्तव्य[1]

१४ जून, १९४५

फील्ड-मार्शल वाइकाउन्ट वेवलकी इस देशकी हालकी यात्राके दौरान ब्रिटिश सरकारने उनके साथ कई समस्याओंकी समीक्षा की और विशेष रूपसे भारतकी वर्तमान राजनीतिक परिस्थितिपर चर्चा की।

सदस्यगण इस बातसे अवगत होंगे कि ब्रिटिश सरकारके मार्च, १९४२ के प्रस्ताव के बाद भारतके सवैधानिक प्रश्नको सुलझाने की दिशामे कोई प्रगति नही हुई है।

जैसाकि उस समय कहा गया था, भारतकी नई सवैधानिक पद्धतिकी रचना एक ऐसा काम है जो केवल भारतीय जनता द्वारा ही सम्पन्न हो सकता है।

जबकि बिटिश सरकार एक नये सवैधानिक समझौतेपर पहुँचने के लिए भारतीयोको हर सम्भव सहयोग देने के लिए सदैव उत्सुक है, ऐसी दशामे इस देश द्वारा अनिच्छुक भारतवासियोपर स्वायत्तशासी संस्थाएँ थोपने की बात सोचना परस्पर-विरोधी चीज होगी। ऐसा करना सम्भव नही है और न ही ऐसे समयमे, जबकि हम ब्रिटिश भारतीय मामलोपर अपना नियन्त्रण छोड़ रहे है—इन सस्थाओका मुख्य उद्देश्य भी तो यही है, हम इन सस्थाओको चलाने की जिम्मेदारी उठा सकते है।

इस तरह भारतकी मूल सवैधानिक स्थिति यथावत् है। हमे मार्च, १९४२ का प्रस्ताव विना किसी परिवर्तन अथवा प्रतिबन्धके अब भी पूरी तरह मान्य है। महामहिमकी सरकारको अब भी यह आशा है कि भारतके राजनीतिक नेता भारतकी भावी स्थायी सरकारके स्वरूपको निश्चित करने की प्रक्रियाके बारेमे सहमत हो पायेगे।

वहरहाल, भारतमे वर्तमान राजनीतिक गतिरोधको समाप्त करने के लिए जो भी योगदान व्यवहार्य हो ब्रिटिश सरकार उसे देने के लिए अत्यन्त उत्सुक है। जबतक यह गतिरोध रहेगा तबतक न केवल राजनीतिक अपितु सामाजिक व आर्थिक प्रगतिमे भी बाधा पड़ेगी।

भारतीय प्रशासन, जिसपर जापानके खिलाफ युद्ध छिड़ जाने से और युद्धके बादके नियोजनसे कामका पहलेसे ही काफी वोझ है, देशमे वर्तमान राजनीतिक तनावकी स्थितिसे और भी कठिनाईमे पड़ गया है।

जबतक भारतीय जनताके सभी समुदायो और वर्गोका पूरा सहयोग प्राप्त नही होता तबतक कृषिके विकासके लिए और भारतीय किसानो और मजदूरोके लिए वह सब कर पाना जिसकी तत्काल जरूरत है, सम्भव नही है।

१. देखिए पृ० ३६८।

अत: ब्रिटिश सरकारने इस बातपर विचार किया है कि क्या वह वर्तमान संविधानके अन्तर्गत ही अन्तरिम कालके लिए — जबतक कि भारतीय अपनी भावी संवैधानिक व्यवस्था तैयार नहीं कर लेते — कोई ऐसा सुझाव दे सकती है जिससे कि देशके प्रमुख समुदाय और दल परस्पर ब्रिटिश सरकारके साथ समस्त भारतीय जनताके कल्याण हेतु अधिक सहयोग कर सकें।

ब्रिटिश सरकारका इरादा कोई ऐसा परिवर्तन करने का नहीं है जो प्रमुख भारतीयोंकी इच्छाके विरुद्ध हो, लेकिन अन्तरिम कालमें वह सब करने के लिए वह तैयार है जिससे बातचीत आगे बढ़ सके बशर्ते कि प्रमुख-भारतीय दलोंके नेता उसका सुझाव मानने के लिए सहमत हों और जापानके विरुद्ध युद्धकी सफलतापूर्ण समाप्ति और अन्तिम विजयके बाद भारतके नव-निर्माणमें उसके साथ हों।

इसके लिए ब्रिटिश सरकार वाइसराय परिषद्के गठनमें एक महत्त्वपूर्ण परिवर्तन करने के लिए राजी है। और यह वर्तमान संवैधानिक कानूनमें कोई फेर-बदल किये बिना ही सम्भव हो जायेगा — केवल १९३५ के अधिनियमकी नवीं सूचीमें एक परिवर्तन करना पड़ेगा। इस सूचीमें एक व्यवस्था यह है कि परिषद्के सदस्योंमें से कम-से-कम तीनको ब्रिटिश साम्राज्यके अधीन न्यूनतम दस वर्षकी सेवाका अनुभव अवश्य होना चाहिए। इस सभाके सम्मुख जो प्रस्ताव मैं अभी रखनेवाला हूँ यदि उन्हें भारतमें स्वीकार कर लिया जाता है तो इस व्यवस्थाको हटाने के लिए उस धाराको संशोधित करना पड़ेगा।

प्रस्ताव यह है कि वाइसरायकी परिषद्का पुनर्गठन किया जाये ताकि वाइसराय भविष्यमें परिषद्की सदस्यताके लिए केन्द्र और प्रान्तोंमें भारतीय राजनीतिक दलोंके नेताओंमें से अपना चयन कर सकें। यह चयन प्रमुख भारतीय समुदायोंको प्रतिनिधित्व प्रदान करेगा और इसमें मुसलमानों और सवर्ण हिन्दुओंका अनुपात समान होगा।

इस लक्ष्यकी प्राप्तिके लिए वाइसराय प्रमुख भारतीय राजनीतिज्ञोंका एक सम्मेलन बुलायेंगे, जिसमें सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण भारतीय दलोंके नेता और हाल ही में जो लोग प्रान्तोंमें मुख्य मन्त्रीके पदपर रह चुके हैं वे शामिल होंगे। साथमें कुछ ऐसे लोग भी होंगे जिन्हें विशेष अनुभव अथवा अधिकार प्राप्त हों। वाइसरायका अभिप्राय इस सम्मेलनके सम्मुख इस आशयका प्रस्ताव रखना है कि वाइसरायकी परिषद्का पुनर्गठन उपर्युक्त ढंगसे होना चाहिए। इस सम्बन्धमें सम्मेलनके सदस्योंमें से ही नामोंकी एक सूची माँगी जायेगी। आशा है कि इस सूचीमें से वे भावी सदस्योंका चयन कर सकेंगे जिनकी परिषद्में नियुक्ति के लिए वे ब्रिटिश सरकारसे सिफारिश करेंगे। इन सिफारिशोंका उत्तरदायित्व चूँकि उनपर होगा, अत: चुनने की स्वतन्त्रतापर कोई प्रतिबन्ध नहीं रहेगा।

इस व्यवस्थाके परिणामस्वरूप उनकी परिषद्के लिए जो सदस्य चुने जायेंगे निस्सन्देह वे अपनी नियुक्ति इस शर्तपर स्वीकार करेंगे कि जापानके विरुद्ध युद्ध चलाने और उन्हें विजयी बनाने में वे पूरे दिलसे सहयोग देंगे।

वाइसराय और कमांडर-इन-चीफ (जो पूर्ववत् युद्ध सदस्य रहेंगे) को छोड़कर अन्य सदस्य भारतीय होंगे। जबतक भारतकी सुरक्षाका उत्तरदायित्व ब्रिटेनपर है, तबतक यह अत्यन्त आवश्यक है।

इन प्रस्तावोंमे से किसीसे भी भारतमे ब्रिटिश साम्राज्यके प्रतिनिधिके रूपमें विद्यमान वाइसरायके भारतीय रियासतोके साथ सम्बन्धपर किसी प्रकारका भी प्रभाव नही पड़ेगा।

भारतीय नेताओंके सम्मुख यह प्रस्ताव रखने का अधिकार वाइसरायको ब्रिटिश सरकारने दिया है। ब्रिटिश सरकारको विश्वास है कि इस सम्बन्धमे भारतीय समुदायोके नेताओंकी प्रतिक्रिया अनुकूल होगी। क्योंकि ऐसे किसी प्रस्तावकी सफलता भारतमे इसकी स्वीकृतिपर और भारतके जिम्मेदार राजनीतिज्ञ इसे एक कामचलाऊ अन्तरिम व्यवस्थाके रूपमे अपनाने मे कहाँतक सहयोग देते है, इसपर निर्भर करेगी। इस प्रकारकी सार्वजनिक स्वीकृतिके अभावमे वर्तमान व्यवस्थाको ही चालू रखना पड़ेगा।

यदि केन्द्रमें ऐसा सहयोग सम्भव हुआ तो इसमे कोई सन्देह नही कि इसका प्रभाव प्रान्तोमें भी पड़ेगा। इससे उन प्रान्तोमे, जहाँ वहुसंख्यक दलके सरकारसे बाहर आ जाने के कारण १९३५ के अधिनियमकी धारा ९३के तहत राज्यपालोके अधिकारोका प्रयोग अनिवार्य हो गया था, उत्तरदायी सरकार की फिर स्थापना सम्भव हो जायेगी। आशा की जाती है कि सभी प्रान्तोकी सरकारोमे प्रमुख दल भाग लेंगे जिससे साम्प्रदायिक मतभेद दूर होंगे और मन्त्रिगण महत्त्वपूर्ण प्रशासनिक कार्योंपर अपना ध्यान केन्द्रित कर सकेंगे।

अगर ये प्रस्ताव स्वीकार कर लिये जाते है तो ब्रिटिश सरकार इसके बाद एक और परिवर्तन लाने के लिए सुझाव पेश करती है।

परिवर्तन यह है कि जहाँतक ब्रिटिश भारतका सवाल है विदेश विभाग (इनमे वे जनजातीय तथा सीमा-सम्बन्धी मामले शामिल नही है जोकि भारतकी सुरक्षा व्यवस्थाके अन्तर्गत आते है) वाइसरायकी कार्यकारी परिषद्के एक भारतीय सदस्यके अधीन होना चाहिए और विदेशोमें भारतके प्रतिनिधित्वके लिए पूर्णत. अधिकार-प्राप्त प्रतिनिधियोकी नियुक्ति की जानी चाहिए।

इस योजनाको स्वीकार करके और इसमे सहयोग देकर भारतीय नेता न केवल भारतीय मामलोके दिशा-निर्देशमे तत्काल योगदान दे सकेंगे, बल्कि यह भी आशा की जाती है कि सरकारके साथ सहयोगके उनके अनुभवसे नई सवैधानिक व्यवस्था तैयार करने के तरीकेके बारेमें उनमे अपेक्षाकृत जल्दी सहमति हो सकेगी।

इस प्रश्नके अत्यन्त सावधानीपूर्वक अध्ययनके बाद ब्रिटिश सरकारका विचार है कि प्रस्तावित योजनासे वर्तमान सविधानके अन्तर्गत अधिकतम प्रगतिकी सम्भावना है। कोई भी प्रस्तावित परिवर्तन भारतके लिए भावी स्थायी सविधान अथवा सविधानोके आधारभूत स्वरूपको किसी प्रकारसे भी विकृत अथवा पूर्वनिर्धारित नही करता है।

ब्रिटिश सरकारको पूरा विश्वास है कि सबकी—ब्रिटिश और भारतीय—सद्भावना और सहयोग करने की हार्दिक इच्छा हो तो ये प्रस्ताव ब्रिटिश और भारतीय

जनताके भारतीय स्वायत्त शासन हेतु सहयोगकी दिशामें अग्रगामी कदम सिद्ध हो सकते हैं तथा राष्ट्रोंकी विमर्श-मंडलीमें भारतका उचित स्थान और प्रभाव स्थापित कर सकते हैं।

[अंग्रेजीसे]

इंडियन एनुअल रजिस्टर, १९४५, जिल्द १, पृ० २४८-५०

परिशिष्ट ८

लॉर्ड वेवलके साथ मुलाकात[1]

२४ जून, १९४५

बातचीतकी शुरुआत मैंने ब्रिटिश सरकारके प्रस्तावों — जिस भावनासे उनका प्रादुर्भाव हुआ, और जिस भावनासे उन्हें स्वीकार और कार्यान्वित करने की मैंने कल्पना की थी, उसके सम्बन्धमें एक संक्षिप्त वक्तव्यसे की। मैंने युद्धके लिए पूरी तरह समर्थन देने की आवश्यकतापर बल दिया और इस बातपर भी जोर दिया कि सभी दलोंको अपने उन श्रेष्ठ व्यक्तियोंको [सरकारमें] लाना चाहिए जोकि भारतकी आर्थिक और अन्य समस्याओंको सुलझाने के लिए कटिबद्ध हों, न कि केवल दलगत भावनासे सरकारमें प्रवेश पाने के लिए उत्सुक हों।

इसके बाद श्री गांधीने एक लम्बा, पेचदार और विस्तृत वक्तव्य दिया, जिसमें कांग्रेसके इतिहास, भारतमें ब्रिटिश शासन, ब्रिटिश चरित्र, एक अच्छे सैनिकके लिए आवश्यक गुण आदि कमोवेश प्रासंगिक विषयोंपर प्रकाश डाला। आधे घन्टेसे अधिक समयके अपने वक्तव्यकी समाप्ति उन्होंने एक तरहसे प्रस्तावोंके लिए अपना आशीर्वाद देकर की। इन प्रस्तावोंके बारेमें उन्होंने बताया कि उन्होंने कांग्रेस कार्य-समितिसे [उन्हें स्वीकार करने की] सिफारिश की है।

इसके बाद कुछ लिखे हुए की सहायतासे उन्होंने कुछ अन्य मुद्दोंपर प्रकाश डाला। मेरे विचारसे यह सूची उनके लिए कांग्रेस कार्य-समिति द्वारा तैयार की गई थी। मुख्य मुद्दे ये थे:

(१) यदि मैंने केवल कांग्रेस कार्य-समितिके सदस्योंको जेलसे रिहा करने के बजाय सभी राजनीतिक बन्दियोंकी रिहाईका आदेश दिया होता तो कहीं ज्यादा बेहतर होता।

(२) "सवर्ण हिन्दू" शब्दका प्रयोग नहीं किया जाना चाहिए था, क्योंकि उनका महान उद्देश्य यह था कि कांग्रेसके भीतर जातिका कोई सवाल नहीं होना चाहिए। "गैर-अनुसूचित हिन्दू" शब्द उनके विचारसे बेहतर होता।

(३) इसके बाद वे प्रान्तोंमें मिली-जुली सरकारोंके बारेमें बोले। इसमें उनका उद्देश्य स्पष्ट रूपसे यह निश्चित करना था कि इनमें अल्पसंख्यकोंका प्रतिनिधित्व कांग्रेसमें उनके अपने धर्मानुयायियों द्वारा ही किया जाना चाहिए।

१. लॉर्ड वेवल द्वारा तैयार की गई रिपोर्टके अनुसार; देखिए पृ० ३८४।

(४) समानताके प्रश्नपर आते हुए उन्होने बताया कि इसके बारेमे उनपर बहुत दबाव डाला जा रहा था पर [फिर भी] वह इसे स्वीकार करने के लिए तैयार थे। उन्होने यह सकेत दिया कि काग्रेसको मुसलमानो अथवा अनुसूचित जातिके सदस्योके नाम पेश करने की छूट होनी चाहिए। मैने इससे सहमति प्रकट की लेकिन यह भी कहा कि गैर-अनुसूचित हिन्दुओ और मुसलमानोमे समानता यथावत रहनी चाहिए।

(५) इसके बाद वे भारतीय सेनाके उन सदस्योके बारेमे एक लम्बी कहानीमे उलझ गये, जो उनसे मिलना चाहते थे और जिन्हे निकोडमसकी भाँति रातको एक साधारण नागरिककी वेशभूषामे आना पडा था। मैने कहा कि किसी भी सरकारके लिए एक बात जो घातक हो सकती है वह है उसकी सेनाका राजनीतिकरण। भारतीय सेनाके एक कमाडर-इन-चीफ हूँ, जिनपर सेनाको पूर्ण विश्वास है और भारतीय सेनाकी प्रसिद्धि इतनी अभूतपूर्व इससे पहले कभी नही रही। मैने उन्हे बताया कि मै उनको यह विश्वास दिला सकता हूँ कि कुल मिलाकर भारतीय सेना हर प्रकारसे सन्तुष्ट है। इन सब बातोपर उन्होने अपनी सहमति प्रकट की।

(६) इसके बाद उन्होने भारतीय रियासतोके सवालको छेड दिया। मैने कहा कि यह सम्मेलन पूर्णत ब्रिटिश भारतके बारेमे है और मै अभी भारतीय रियासतोके बारेमे बात करने के लिए तैयार नही हूँ। उन्होने यह स्वीकार किया कि इस सवालका सम्मेलनसे कोई सम्बन्ध नही है और इसपर अब विचार-विमर्श समयोचित नही होगा।

अन्तमे मैने श्री गाधीसे पूछा कि क्या वह स्वय सम्मेलनमे भाग लेगे? उन्होने कहा कि वह केवल अपने ही प्रतिनिधि है और, हालाँकि अगर मै चाहूँ तो वह स्वय भाग लेने और एक कोनेमे बैठने के लिए तैयार हो जायेंगे, लेकिन उन्होने मुझे जोरदार तरीकेसे यह सलाह दी कि सम्मेलनमे उनकी उपस्थिति अवाछनीय होगी। उन्होने कहा कि आप जब चाहे मुझे बुला सकते है, लेकिन अगर मेरे साथ विचार-विमर्श के लिए आपके पास कोई खास मुद्दा नही है तो मै कल शिमलासे जाना चाहूँगा। मैने इस बारेमे उन्हे बादमे सूचित करने के लिए कहा।

भेट-वार्ता मुख्यत श्री गाधीके एक विस्तारपूर्ण स्वगतकथनके रूपमे थी जिसमे कई बार विषयान्तरसे उन्होने अपने निजी सचिवकी मृत्युके सजीव वर्णनसे लेकर १८९९मे स्पिअन कोपमें अपने एक सम्बन्धी द्वारा जख्मी जनरल वुडगेटको युद्ध क्षेत्रसे ले जाये जाने जैसे किस्से सुनाये। कुल मिलाकर उनके बारेमें मेरी यह धारणा बनी कि उनका रवैया फिलहाल मित्रतापूर्ण है, लेकिन किसी समय भी अपनी बातसे पीछे हटने, या इन्कार करने के लिए वह शत-प्रतिशत तैयार भी है।

[अंग्रेजीसे]

वेवल : द वाइसरायज जर्नल, पृ० १४४-४६

(द) 'इंडियन एनुअल रजिस्टर, १९४५' (अंग्रेजी) : सम्पादक। नृपेन्द्रनाथ मित्रा, द एनुअल रजिस्टर ऑफिस, कलकत्ता।

'काउ इन इंडिया' (अंग्रेजी) : सतीशचन्द्र दासगुप्त, खादी प्रतिष्ठान, कलकत्ता, १९४५।

'कॉरस्पॉण्डेन्स बिटवीन महात्मा गांधी ऐण्ड पी० सी० जोशी' (अंग्रेजी) : पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस, बम्बई, १९४५।

गांधी स्मारक संग्रहालय, अहमदाबाद। गांधीजी से सम्बन्धित दस्तावेजोंका पुस्तकालय तथा आलेख संग्रहालय।

'गांधीजीज कॉरस्पॉण्डेन्स विद द गवर्नमेन्ट, १९४२-४४' (अंग्रेजी) : सम्पादक · प्यारेलाल, नवजीवन पब्लिशिंग हाउस, अहमदाबाद, १९४५।

'गांधीजीज कॉरस्पॉण्डेन्स विद द गवर्नमेन्ट, १९४४-४७' (अंग्रेजी) : सम्पादक: प्यारेलाल, नवजीवन पब्लिशिंग हाउस, अहमदाबाद, १९५९।

'गीतागीतमंजरी' : (गुजराती) जुगतराम दवे, नवजीवन प्रकाशन मन्दिर, अहमदाबाद।

'गीताध्यायसंगति' : विनोबा भावे, ग्राम सेवा मण्डल, वर्धा, १९४५।

'ग्रामोद्योग पत्रिका,' भाग १, १९३९-४६ : सम्पादक : जे० सी० कुमारप्पा, कुमारप्पा मेमोरियल ट्रस्ट, मद्रास, १९७१।

नेहरू स्मारक संग्रहालय तथा पुस्तकालय, नई दिल्ली।

'पाँचवें पुत्रको बापूके आशीर्वाद' : सम्पादक : काका कालेलकर, जमनालाल बजाज ट्रस्ट, वर्धा, १९६३।

प्यारेलाल पेपर्स : नई दिल्लीमें स्व० श्री प्यारेलालके पास सुरक्षित कागजात।

'बा बापुनी शीळी छायामें' (गुजराती) : मनुबहिन गांधी, नवजीवन प्रकाशन मन्दिर अहमदाबाद, १९५२।

'बापुना पत्रो—४ : मणिबहिन पटेलने' (गुजराती) : सम्पादिका : मणिबहिन पटेल, नवजीवन प्रकाशन मन्दिर, अहमदाबाद, १९५७।

'बापुना पत्रो—९ · श्री नारणदास गांधीने,' भाग २ (गुजराती) : नवजीवन प्रकाशन मन्दिर, अहमदाबाद, १९६५।

'बापुना पत्रो—२ : सरदार वल्लभभाईने' (गुजराती) : सम्पादिका : मणिबहिन पटेल, नवजीवन प्रकाशन मन्दिर, अहमदाबाद, १९५२।

'बापुनी प्रसादी' (गुजराती) : मथुरादास त्रिकमजी, नवजीवन प्रकाशन मन्दिर, अहमदाबाद,

'बापू—मैंने क्या देखा क्या समझा?' रामनारायण चौधरी, नवजीवन प्रकाशन मन्दिर अहमदाबाद, १९५४।

'बापूकी छायामें' बलवन्तसिंह, नवजीवन प्रकाशन मन्दिर, अहमदाबाद, १९५९।

'बापूके आशीर्वाद' (रोजके विचार). सम्पादक आनन्द तो० हिंगोरानी, प्रकाशन विभाग, सूचना एव प्रसारण मन्त्रालय, भारत सराकार, १९६८।

'बॉम्बे क्रॉनिकल' बम्बईसे प्रकाशित अंग्रेजी दैनिक।

'भावनगर समाचार' भावनगरसे प्रकाशित गुजराती साप्ताहिक।

'महात्मा गाधी—द लास्ट फेज', जिल्द १, भाग १ (अंग्रेजी) प्यारेलाल, नवजीवन पब्लिशिंग हाउस, अहमदाबाद।

'राजर्षि अभिनन्दन ग्रन्थ'. सम्पादक. गोपालप्रसाद व्यास, हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग, १९६०।

'राष्ट्रभाषाके प्रश्नपर गाधीजी और टण्डनजीका महत्त्वपूर्ण पत्र-व्यवहार' हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग, १९४५।

'राष्ट्रभाषा विषे विचार' (गुजराती) · मोहनदास करमचन्द गाधी, नवजीवन प्रकाशन मन्दिर, अहमदाबाद, १९४५।

राष्ट्रीय अभिलेखागार, नई दिल्ली।

राष्ट्रीय गाधी संग्रहालय और पुस्तकालय, नई दिल्ली, गाधी साहित्य और गाधीजी से सम्बन्धित कागज-पत्रोका केन्द्रीय सग्रहालय तथा पुस्तकालय।

'वर्णव्यवस्था' (गुजराती) मो० क० गाधी, नवजीवन प्रकाशन मन्दिर, अहमदाबाद, १९५६।

'वेवल: द वाइसरायज जर्नल' (अग्रेजी) सम्पादक पेंडेरेल मून, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, लन्दन, १९७३।

'स्वराज्य' मद्राससे प्रकाशित अग्रेजी साप्ताहिक।

'हितवाद'. नागपुरसे प्रकाशित अग्रेजी दैनिक।

'हिन्दुस्तान टाइम्स' नई दिल्लीसे प्रकाशित अग्रेजी दैनिक।

'हिन्दु' मद्राससे प्रकाशित अग्रेजी दैनिक।

तारीखवार जीवन-वृत्तान्त

(२५ अप्रैल – १६ जुलाई, १९४५)

२७ अप्रैल : गांधीजी ने महाबलेश्वरसे, जहाँ वह २१ अप्रैलसे ठहरे हुए थे, श्रीलंकाकी जनताको सन्देश दिया कि उन्हें "चरखे और रचनात्मक कार्यक्रमको समझ लेना चाहिए।"

१ मई : 'राष्ट्रभाषा विषे विचार' की प्रस्तावनामे कहा कि "हिन्दी और उर्दूका सुन्दर सम्मिश्रण" हिन्दुस्तानी "पूर्ण राष्ट्रभाषा" है।

२ मई : मधुमक्खी-पालन गृह गये और उसके वैज्ञानिक तरीके और स्वदेशी भावनाकी प्रशंसा की।

३ मई : डी० एन० बालवेंकटरामको दिये उत्तरमे इस समाचारकी पुष्टि की कि जबतक महाबलेश्वर मन्दिरोंके "दरवाजे हरिजनोके लिए नही खोल दिये जाते" तबतक वे उनमे कदम नही रखेंगे।

४ मई : समाचारपत्रोंको दिये वक्तव्यमे "सान फ्रान्सिस्को सम्मेलनमे सर फिरोज खान नून द्वारा की गई टिप्पणियों" का जवाब दिया।

६ मई : समाचारपत्रोको दिये वक्तव्यमे उन बड़े व्यापारियो, पूँजीवादियो और उद्योग-पतियोकी भर्त्सना की जो बाहरी तौरपर सरकारके विरुद्ध बोलते और लिखते है, लेकिन कार्यवाही सरकारकी इच्छाके अनुरूप करते हैं।

८ मई : एक तारमें घनश्यामदास बिड़लाको, जो जे० आर० डी० टाटा और कस्तूरभाईके साथ औद्योगिक शिष्ट-मण्डलमे इंग्लैंड जा रहे थे, आशीर्वाद दिया। प्रार्थना-सभामे रवीन्द्रनाथ ठाकुरकी ८५वीं जयन्तीके अवसरपर उन्हे श्रद्धांजलि अर्पित की।

११/१२ मई : चक्रवर्ती राजगोपालाचारीके साथ चर्चा की।

१३ मई : दुनीचन्दको लिखे पत्रमे गलतफहमीके कारण श्रीमती दुनीचन्दको भेजी सम-वेदनाके लिए खेद प्रकट किया।

२१ मई : 'ग्रामोद्योग पत्रिका' मे लिखे लेखमे खादीकी तुलना सूर्यसे तथा अन्य ग्राम-उद्योगोंकी तुलना उपग्रहोसे करते हुए उनके बीच अन्तर स्पष्ट किया।

२२ मई : हिन्दुस्तान स्काउट एसोशिएशन प्रशिक्षण-शिविरमे भाषण दिया।

२७ मई : एक पत्रमे सरकारसे अनुरोध किया कि जिस भूमिपर कस्तूरबा गांधी और महादेव देसाईकी समाधियाँ बनी हैं, वह सुरक्षित रहेगी और ऐसी व्यवस्था की जायेगी कि उसका उपयोग दोनो परिवारोंके सम्बन्धियों और मित्रोके द्वारा श्रद्धांजलि अर्पित करने के लिए ही हो।

३० मई या उसके पूर्व : डेटन जे० ब्रूक्स जूनियरको भेंट दी।

३१ मई: पंचगनी पहुँचे; नानजी कालिदासके 'दिलखुश' मे ठहरे।

१ जून: हरेकृष्ण मेहतावके साथ चर्चा की।

२ जून · श्रीमन्नारायणको दिये उत्तरमे विदेशी वस्तुओके उपयोगकी सस्तुतिके पीछे आर्थिक असंगतिको उजागर करने की आवश्यकतापर वल दिया।

३ जून या उसके पश्चात्: ओरिएण्ट प्रेसको दिये वक्तव्यमे कहा कि मुसलमानोको भारतीयोकी हैसियतसे बोलना चाहिए।

७ जून . एक पत्रमे भूलाभाई देसाईसे अनुरोध किया कि वे ऐसा निश्चय करे कि "चिमूर-अष्टीके कैदियोको फाँसी न हो।"

९ जून: एक सन्देशमे वर्मिघमके स्पार्कब्रुक निर्वाचन-क्षेत्रमे एल० एम० एमरीके विरुद्ध चुनावमे खड़े रजनी पाम दत्तकी सफलताकी कामना की।

१० जून वाई राष्ट्र सेवा दलके सदस्योके समक्ष भाषण दिया।

११ जून: मौन-दिवसके पुर्जेमे भूलाभाई देसाईको मुस्लिम लीगके साथ समझौतेमे सम्भावित खतरेके विरुद्ध सावधान किया और कहा कि जवतक कार्य-समितिके सदस्य अपने विचार प्रकट करने के लिए स्वतन्त्र न हो तवतक कुछ भी नही किया जा सकता।

१३ जून पुरुषोत्तमदास टण्डनको लिखे पत्रमे कहा कि मेरे हिन्दी साहित्य सम्मेलनको छोड़ने का मकसद उसकी और अच्छी सेवा करना है।

१४ जून: अपने प्रसारणमे वाइसरायने कार्य-समितिके सदस्योको रिहा करने और राजनीतिक दलोके नेताओका सम्मेलन बुलाने की घोषणा की।

वाइसरायको लिखे तारमे गाधीजी ने सूचित किया कि मै शिमला सम्मेलनमे काग्रेसके प्रतिनिधिके रूपमे शामिल नही होना चाहूँगा।

१५ जून: काग्रेसके नेताओको रिहा कर दिया गया और काग्रेस कार्य-समितिपर लगा प्रतिवन्ध हटा लिया गया।

१६ जून: वाइसरायको लिखे पत्रमे गाधीजी ने कहा कि अगर "कार्य-समिति भी ऐसा ही चाहती हो" तो मै शिमला सम्मेलनमे "अधिकृत प्रतिनिधि वने विना" शामिल हो सकता हूँ।

१८ जून: वाइसरायको भेजे तारमे मुसलमानो और सवर्ण हिन्दुओके वीच समानताके वारेमे अपनी असहमति जाहिर की और अपनी इस सलाहको दोहराया कि काग्रेस इस आधारपर कार्यकारी परिषद्के गठनमे योग न दे।

१७ जुलाई, १९४४ के विन्स्टन चर्चिलको लिखे अपने पत्रके मसौदेको समाचार-पत्रोके लिए जारी किया।

१९ जून पूनामे महादेव देसाई और कस्तूरवा गाधीकी समाधियोपर गये।

२० जून . वम्वईमे।

२१ जून . समाचारपत्रोको दिये वक्तव्यमे अधिकारियोसे शरत्चन्द्र वोसको किसी स्वास्थ्यप्रद स्थानपर ले जाने की अपील की, जहाँ उनके सम्बन्धियोको उनसे मिलने की सुविधाएँ भी हो।

२१ और २२ जून: कांग्रेस कार्य-समितिकी बैठकमें भाग लिया।

२३ जून: शिमला जाते हुए दिल्लीमें रुके।

२४ जून: शिमला पहुँचे; दोपहरमें वाइसरायसे भेंट की।

२६ जून: अखिल भारतीय हिन्दुस्तानी प्रचार सभाकी साहित्य परिषद्के सदस्योंके नाम समाचारपत्रोंको जारी किये।

२७ जून: प्रार्थना-सभामें प्रार्थनाका महत्त्व बताया।

२८ जून: एक पत्रमें वाइसरायसे अपील की कि "१९४२ के दंगोंके परिणामस्वरूप मिली फाँसीकी सब सजाएँ . . . आजीवन कारावासमें बदल दी जाये।"

२९ जून: एसोशिएटेड प्रेस ऑफ अमेरिकाके प्रेस्टन ग्रोवरको भेंट दी।

३० जून: एसोशिएटेड प्रेस ऑफ इंडियाके ए० एस० भारतन्को दी भेंटमें सवर्ण हिन्दुओं और मुसलमानोंके समान संख्यामें प्रतिनिधित्व करने के मामलेपर कांग्रेसके पक्षके बारेमें जानकारी दी।

२ जुलाई: प्रार्थना-सभामें अ० भा० चरखा संघके नये नियमको विस्तारपूर्वक बताया, जिसके अनुसार खादीकी कीमतका कुछ अंश सूतके रूपमें दिया जाना था।

३ और ४ जुलाई: कांग्रेस कार्य-समितिकी बैठकमें भाग लिया।

७ जुलाई: प्रस्तावित कार्यकारी परिषद्के लिए कांग्रेसके सदस्योंकी सूची गांधीजी से विचार-विमर्श करने के बाद वाइसरायको भेज दी गई।

९ जुलाई: जिन्नाने प्रस्तावित कार्यकारी परिषद्के लिए अपने सदस्योंके नामोंको भेजने से इनकार कर दिया।

१२ जुलाई: प्रार्थना-सभामें गांधीजी ने भीड़को उसके दुर्व्यवहारपर डाँटा।

१४ जुलाई: संयुक्त राष्ट्र राहत एवं पुनर्वास प्रशासनके फ्रांसिस सायरको भेंट दी। वाइसरायने शिमला सम्मेलनकी, जिसे जिन्नाने "एक चाल कहा था", विफलता की घोषणा की।

१६ जुलाई: गांधीजी शिमलासे वर्धाके लिए रवाना हुए।

शीर्षक-सांकेतिका

सांकेतिका

ख

घ

च

फ

ब

म

य

र

श

स

ह